جدید فارسی

(जदीद फ़ारसी)

आधुनिक फ़ारसी

(नागरी लिपि द्वारा)

प्रथम भाग

आचार्य धर्मेन्द्रनाथ

آچاریہ دھرمیندرناتھ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

جدید فارسی

(जदीद फ़ारसी)

आधुनिक फ़ारसी

(नागरी लिपि द्वारा)

प्रथम भाग

आचार्य धर्मेन्द्रनाथ

آچاریہ دھرمیندرناتھ

नागरी लिपि परिषद्

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दो शब्द

ऋषि विनोबा के मार्गदर्शन द्वारा हमने पिछले दो वर्षों में नागरी को भारतीय तथा एशिया की भाषाओं के लिए एक अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रचार करने का प्रयास किया है। इन भाषाओं की विशिष्ट लिपियाँ अपने-अपने क्षेत्र में तो चलती ही रहेंगी किन्तु भारतीय तथा एशियायी भाषाओं के व्यापक प्रचार के लिए यह आवश्यक है कि उनका ज्ञान नागरी लिपि द्वारा उपलब्ध कराया जाय। इसी दृष्टि से नागरी लिपि परिषद् के प्रयत्नों से चीनी और जापानी भाषाओं को नागरी लिपि में सीखने के लिए उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अब हम फ़ारसी को भी नागरी के मारफ़त सिखाने के लिए डॉ० धर्मेन्द्रनाथ की पुस्तक प्रस्तुत कर रहे हैं। डॉ० धर्मेन्द्रनाथ ने संस्कृत के अलावा फारसी भाषा का गहरा अध्ययन किया है। नागरी लिपि में उनकी "गुलिस्तान-इ-सादी" कुछ वर्ष पहले प्रकाशित हो चुकी है। वे नागरी में फिरदौसी का "शाहनामा" भी तैयार कर रहे हैं।

हमें पूरी आशा है कि डॉ० धर्मेन्द्रनाथ द्वारा लिखित यह पुस्तक लोकप्रिय बनेगी और उसका लाभ ईरान में जाने वाले बहुत से भारतीय शिक्षक, डॉक्टर, व्यापारी व उद्योगपति सहज उठा सकेंगे। इस पुस्तक को तैयार करने में डॉ० धर्मेन्द्रनाथ ने जो अथक प्रयत्न किया है, उसके लिए हम उनके बहुत आभारी हैं।

अध्यक्ष
नागरी लिपि परिषद्

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative
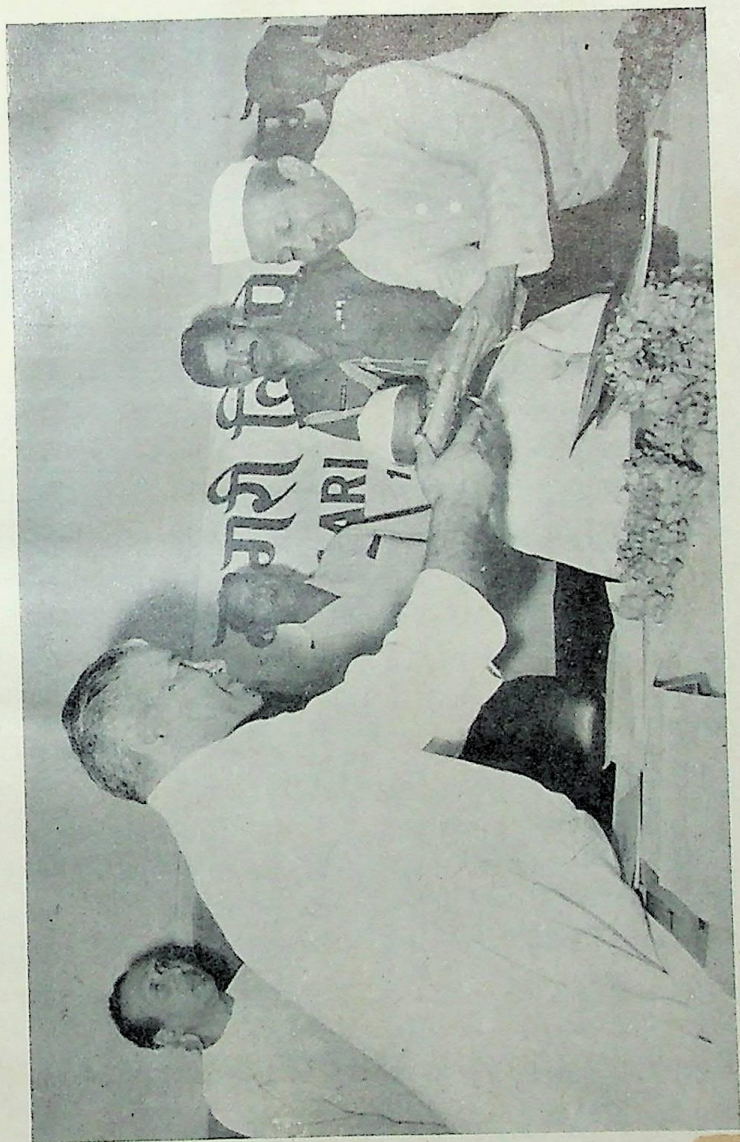
नागरी लिपि परिषद् के दिल्ली अधिवेशन के अवसर पर आचार्य धर्मेन्द्रनाथ अपनी पुस्तक आधुनिक फ़ारसी कार्यकारी राष्ट्रपति श्री बा. दा. जत्ती को भेंट करते हुए।
प्रधानमंत्री वीच में बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

आधुनिक फ़ारसी की भूमिका

पुण्यस्मरण –

मेरे स्वर्गीय पिता श्री पुरुषोत्तमलालजी मेरे दिन-रात के शिक्षक थे। वे प्रायः कहा करते थे कि यदि समस्त आर्यकुल की भाषाओं पर अधिकार चाहते हो तो संस्कृत बहुत ज़रूरी है; और यदि अच्छी संस्कृत जानना चाहते हो तो विना फ़ारसी पढ़े निस्तार नहीं है। फ़ारसी भाषा पर पिताजी का बड़ा अनुराग था। मुझे भी वे बचपन से ही फ़ारसी पढ़ाना चाहते थे, लेकिन मैं तब संस्कृत में उलझा था। संस्कृत के प्रति उन्हें कम प्रेम नहीं था, लेकिन संस्कृत के साथ-साथ वे फ़ारसी को अपरिहार्य मानते थे। प्रायः चाणक्य का यह श्लोक सुनाकर वे हमें भी प्रेरित किया करते थे।

गीर्वाणवाणीषु विशिष्टवुद्धिस्तथापि भाषान्तरलोलुपोऽहम्।
यथा सुधायाममरेषु सत्यां स्वर्गाङ्गनानामधरासवे रुचिः॥

(यद्यपि मेरी संस्कृत में विशेष रुचि है फिर भी मैं दूसरी भाषाओं का लोभी हूँ, जैसे – स्वर्ग के देवताओं को अमृत में प्रेम होने पर भी अप्सराओं के अधरासव में रुचि रहती है।)

लेकिन तव मुझे इतनी समझ नहीं थी। पर शास्त्रों में कहा है कि वर्षाकाल में जो बीज विना उगे रह जाते हैं, वे शरद् में उग सकते हैं।

देवे वर्षत्यपि यथा भूमौ बीजानि कानिचित्।
शरदि प्रतिरोहन्ते तथा पूर्वकृतोदयः॥

इसी न्याय से मेरे फ़ारसी के अनुराग का बीज देर से उगा है। इसे पिताजी के प्रौढ़ ज्ञान की धारा में स्नान करने का अवसर नहीं मिला, शैशव की शिक्षणग्राह्यता की अनुकूल ऋतु नहीं मिली, लेकिन यह पल्लवित हुआ ज़रूर। मैंने अपने पुत्रों को भी स्कूली विषयों के अतिरिक्त फ़ारसी पढ़ाई है। यही मेरा पिताजी के प्रति श्राद्ध है।

फ़ारसी उच्चारण के दस नियम –

जो फ़ारसी भारत में बोली जाती है वह ईरान में बोली जाने वाली फ़ारसी से भिन्न है।

१. हम **दोस्त** कहते हैं, ईरानी **दूस्त**। हम **पेश** कहते हैं, ईरानी **पीश,** अर्थात् फ़ारसी मूल के सारे ओकार ईरान में ऊकार हो जाते हैं और एकार ईकार। भारतीय और

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

पाकिस्तानी फ़ारसीदाँ **हमे कुनद** और **मे कुनद** कहते हैं जबकि ईरानी लोग **हमी कुनद** और **मी कुनद** कहते हैं। **मा दानैम** (हम जानते हैं) ईरान में **मा दानीम** बोला जाता है।

२. उच्चारण में एक दूसरा बड़ा भेद अन्तिम नकार के विषय में है। भारत में **मेहरबाँ, फ़ारसीदाँ, दवाँ, आँ, ईं,** जैसे उच्चारण आम हैं। इनमें अन्तिम नकार को अनुनासिक के समान (नून को ग़ुन्ना करके) बोलने की पद्धति है। ईरानी में **नून** का ग़ुन्ना उच्चारण होता ही नहीं। उसमें **मेहरबान्, फ़ारसीदान्, दवान, आन्, ईन्** ही बोला और लिखा जाता है। आधुनिक फ़ारसी के अध्येताओं को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये।

३. भारत के फ़ारसीदाँ शब्दों के अन्त में लगने वाली छोटी हे (जो संस्कृत भाषा के विसर्गों के तुल्य है) का उच्चारण आकार जैसा करते हैं, जैसे – बच्चः को बच्चा, द्वाज्दः को दवाज़दा, ननः को नना, जूजः को जूज़ा, आमदः को आमदा, ख़ानः को ख़ाना, ताज़ः को ताज़ा आदि। ईरान में इस विसर्गस्थानीय छोटी हे का उच्चारण आ न होकर **ए** होता है। मैंने हेकारान्त शब्दों को विसर्गान्त रखा है। पाठक बच्चः को **बच्चे,** द्वाज्दः को **द्वाज़्दे,** ननः को **नने,** जूजः को **जूजे,** आमदः को **आमदे,** ख़ानः को **ख़ाने** और ताज़ः को **ताज़े** पढ़ें।

४. आकार का उच्चारण ईरान में **औ** जैसा होता है। सड़कों और गलियों में यह उच्चारण **'ऊ'** जैसा भी होता है। नान (रोटी) पढ़े लिखे लोगों के द्वारा **नौन** बोली जाती है और सर्वसामान्य के द्वारा **नून** कही जाती है। खियावान (गली) को **ख़ियौबौन** या **ख़ियौबून** कहा जाता है, ख़ानः (घर) को **ख़ूने** कहा जाता है और शानः (कन्धे) को **शूने**।

५. फ़ारसी में अकार का उच्चारण लघुप्रयत्नतर **ऐ** जैसा होता है। तरसा का ईरानी उच्चारण **तैरसौ** जैसा होगा। अनार का उच्चारण **ऐनौर** जैसा होगा। उच्चारणों का यह भेद ईरानी भाषा बोलने वालों के सान्निध्य में रहकर आसानी से सीखा जा सकता है।

६. ईरानी भाषा में **क़** (क़ाफ़) का उच्चारण **ग़** होता है। **आक़ा** को **आग़ा** कहा जाता है, **वक़्त** को **वैग़त, उताक़** (कमरे) को **उतौग़,** **क़द्र** को **ग़ैद्र, क़स्द** को **ग़ैस्द**। हमने इस पुस्तक में जहाँ जहाँ **क़** लिखा है, पाठक उसे **ग़** ही पढ़ें। दक्षिण पश्चिम ईरान में **क़** को **ख़** बोला जाता है, जैसे **आक़ा** को **आख़ा**। लेकिन आज सारे ईरान में उत्तरी उच्चारण वाली फ़ारसी ही स्वीकृत है, इसलिये तेहरान के उच्चारण के अनुसार **क़** के स्थान पर **ग़** ही बोलना चाहिये।

७. फ़ारसी में विशेषण को विशेष्य के पीछे लगाने की प्रथा है। संस्कृत में सामान्यतः विशेषणों को विशेष्य के पहले लगाने की पद्धति अधिक प्रचलित है। संस्कृत में

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

श्यावः अश्वः (काला घोड़ा) कहेंगे, फ़ारसी में **अस्ब सियाह** (घोड़ा काला)। फ़ारसी की यह पद्धति संस्कृत के मयूरव्यंसक समासगण में (जो कि एक आकृति गण है) दिखाई पड़ती है। मयूर-व्यंसक समास में **अश्वश्याव** भी शुद्ध है। संस्कृत में ये दोनों शैलियाँ (श्यावाश्व और अश्वश्याव) प्रचलित हैं, लेकिन फ़ारसी में केवल मयूरव्यंसक शैली ही प्रचलित है और इसके अनुसार **अस्ब सियाह** ही शुद्ध है।*

अस्ब सियाह का अर्थ है – घोड़ा जो कि काला है। इस शैली में अस्ब और सियाह के बीच एक इज़ाफ़े या ज़ेर की इज़ाफ़त (इकारवाचक स्वर चिह्न) अस्ब के नीचे लगायी जाती है। लिखने में बहुधा ये इज़ाफ़तें छोड़ दी जाती हैं, लेकिन इनका उच्चारण होता है। भारत के फ़ारसीदाँ इसका उच्चारण **अस्बे सियाह** करते हैं, जबकि ईरान में इसका उच्चारण **अस्बि सियाह** (यथार्थ उच्चारण – **ऐस्बि सियौह**) होता है। हमने इस इज़ाफ़त को सर्वत्र 'इ' के रूप में, दो शब्दों के बीच में, शिरोरेखा के स्तर से नीचा रखकर, छोटे टाइप में अलग से लिखा है जैसे – **अस्ब इ सियाह**।'

इज़ाफ़त को एकार की मात्रा के रूप में (जैसे कि **अस्बे सियाह** में एकार की मात्रा कुछ लोग लगाते हैं) हमने दो कारणों से नहीं लिखा। एक तो इसलिये कि ईरान में इज़ाफ़त का उच्चारण एकार के रूप में न होकर इकार के रूप में होता है; दूसरे इसलिये कि जिन शब्दों में 'एक' वाचक या 'कोई' वाचक 'ये' लगता है जैसे – **शख़्से** = एक आदमी, **ज़ने**=एक स्त्री, **चीज़हाये**=एक भी चीज़, **कसे** = कोई आदमी; उस एकवाचक 'ये' से यह इज़ाफ़त का इकार गडमड न हो जाय।

अकारान्त शब्दों के परे ही यह इज़ाफ़त 'इ' के रूप में लगती है।

आकारान्त शब्दों के परे इस इज़ाफ़त का उच्चारण 'यि' हो जाता है। जैसे – **बाबा यि पीर**। भारत के फ़ारसीदाँ इसको **बाबा ए पीर** कहते हैं, जो कि ईरानी उच्चारण से भिन्न होने के कारण अमान्य है। इसी प्रकार ईकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के परे भी इज़ाफ़त का उच्चारण यि ही होता है। जैसे – **गर्मी यि बुख़ारी** या **तरसू यि बीकार**। **गर्मी ए बुख़ारी** और **तरसू ए बेकार** अशुद्ध उच्चारण हैं। हेकारान्त या विसर्गान्त शब्दों के परे भी इज़ाफ़त का उच्चारण 'यि' हो जाता है। जैसे **बच्चः यि बीमार, मीवः यि ताज़ः** आदि। **बच्चा ए बीमार** और **मेवा ए ताज़ा** अशुद्ध उच्चारण हैं। इज़ाफ़े का यह इकार या यिकार छन्द के अनुरोध से दीर्घ भी हो जाता है, जैसे – **'ख़ाक बर सर कुन् ग़म ई अय्याम रा'** या **'कुहन जामः यी ख़ीश पैरास्तन्'**।

---

* फ़ारसी में यदि विशेषण पहले और विशेष्य बाद में लगे तो उससे बहुव्रीहि समास का अर्थ निकलता है। जैसे – **सियाह अस्ब** का अर्थ होगा – काले घोड़े वाला। संस्कृत में भी बहुव्रीहि समास इसी प्रकार बनता है जैसे – **रोहिताश्वः** (लाल घोड़े वाला) **कृशाश्वः** (दुबले घोड़े वाला) आदि।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

८. बोल-चाल की फ़ारसी में क का उच्चारण कभी-कभी कुछ शब्दों में **च** हो जाता है । जैसे – कम कम (थोड़ा-थोड़ा) को **चैम चैम** कहा जाता है । चि: कर्दी ? (क्या कर डाला ?) को **चि: चैंर्दी** कहा जाता है ।

९. थ्से (से) का उच्चारण भारत, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और ईरान में समानरूप से 'स' होता है । लेकिन अरबी भाषा के प्रभाव से प्रभावित ईरानी तथा पश्चिमी ईरान के निवासी 'मसलन्, मिस्ल इ ऊ, मिसाल' आदि 'से' वाले शब्दों को अरबों के ढंग से मथ्सलन्, मिथ्सल इ ऊ, मिथ्साल आदि बोलते हैं । अशिक्षितों के हाथों में पड़कर यह 'मथलन्, मिथ्ल इ ऊ, मिथाल' आदि हो जाता है । मैंने इसे इस पुस्तक में **थ्स** के रूप में लिखा है ।

१०. ईरानियों ने ऐ़न वर्ण के उच्चारण के क्लेश से बचने के लिये उसका लोप ही कर डाला है । हाँ, ऐ़न के पूर्व यदि दो ह्रस्व वर्ण हों तो आदि ह्रस्व को दीर्घ कर दिया जाता है । जैसे – शमअ़ में से अ़ ग़ायब हो जाता है तथा उसे **शाम** कहा जाता है । हिन्दुस्तान के फ़ारसीदाँ शमा या शम्मा कहते हैं, जो कि ईरान के उच्चारण से विपर्यस्त है । हाँ, बअ़द को **बाद** ही कहा जाता है, जैसे कि भारत में कहते हैं ।

उच्चारण भेद का कारण –

भारतीय फ़ारसीदानों और ईरानी फ़ारसीभाषियों के उच्चारण में आज जो भेद दिखाई देता है, इसका एक ऐतिहासिक कारण है । भारत में फ़ारसी का प्रचार और प्रसार मुग़ल शासकों द्वारा अधिक हुआ जिनके दरबार की भाषा फ़ारसी रही है । दरबारी भाषा होने के कारण सर्वसामान्य के लिये भी फ़ारसी पढ़ना ज़रूरी हो गया ।

भारत के मुग़ल शासक ईरानी जाति के नहीं थे बल्कि उज़बेक जाति से सम्बन्धित थे । फ़ारसी सारे मध्य एशिया में समझी और बोली ज़रूर जाती रही है, लेकिन मुग़लों के कुल की अपनी भाषा फ़ारसी न होकर तुर्की थी । तुर्की भाषा, फ़ारसी भाषियों की दृष्टि में तब गँवार भाषा समझी जाती थी और फ़ारसी भाषा 'लिसान उल् अशराफ़' (सभ्यों की भाषा) मानी जाती थी । मसल मशहूर है – **'तुर्की बि तुर्की-फ़ारसी बि फ़ारसी'** (जो अशिष्ट भाषा बोले उसका जवाब तुम भी अशिष्टता से दो, जो सभ्यतापूर्वक बोले उसे तुम भी सभ्यतापूर्वक उत्तर दो) । अत: मुग़लों ने भारत में आकर अपनी भाषा को छोड़ दिया और उस समय की सभ्य भाषा को अपनाया, जिसे उनके पूर्ववर्ती तुग़लक, खिलजी, लोदी आदि वंश पहले से अपनाये हुए थे । यह ठीक है कि बाबर ने अपनी आत्मकथा-बाबरनामा-तुर्की भाषा में लिखी, पर उसके परवर्त्तियों ने फ़ारसी भाषा के सामने अपनी भाषा को बिसर जाने दिया ।

उज़बेकिस्तान से आये हुए मुग़लों को फ़ारसी भाषा माता के दूध के साथ नहीं मिली थी बल्कि अपने ताजिक पड़ौसियों के माध्यम से प्राप्त हुई थी । ताजिक भाषा उन दिनों

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

भी फ़ारसी की एक उपभाषा थी और कुछ अंशों में आज भी है। इसीलिये भारत में ईरानी फ़ारसी के उच्चारण प्रचलन में नहीं आ सके। भारत के फ़ारसीदानों को गुमान भी नहीं है कि वे फ़ारसी के नाम से जो कुछ लिखते, पढ़ते और बोलते हैं वह वास्तव में फ़ारसी की चचेरी बहिन ताजिक है और वह भी आज से पाँच सौ वर्ष पुरानी ताजिक। फ़ारसी में उच्चारण का झुकाव इकारानुवर्ती तथा उकारानुवर्ती है। जबकि ताजिक में अकार, एकार तथा ओकार सपाट रह जाते हैं। फ़ारसी में चाबी को **किलीद** या **चिलीद** कहेंगे, ताजिक में **कलीद**। फ़ारसी में **बि मन्** कहेंगे, ताजिक में **ब मन्**। फ़ारसी में दोस्त को **दूस्त** कहते हैं, ताजिक में **दोस्त**। फ़ारसी में अपने लिये **ख़ीश** कहते हैं, ताजिक में **ख़ेश**। यह ठीक है कि ताजिक को फ़ारसी की उपभाषा कहते हैं, लेकिन इस उपत्व की सत्ता के कारण ही ताजिक का अस्तित्व फ़ारसी से भिन्न हो जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक फ़ारसी भाषा के आधुनिक उच्चारणों के साथ लिखी गयी है। आधुनिक फ़ारसी का केन्द्र तेहरान है जो कि कैस्पियन तटवर्ती उत्तरी क्षेत्र में विद्यमान है। इसके पूर्व इस्फ़हान ईरान की राजनैतिक राजधानी रहा है और शीराज़ सांस्कृतिक राजधानी रहा है। एक समय था जब शीराज़ का उच्चारण शेष ईरान के लिये आदर्श माना जाता था। आज तेहरान का उच्चारण सारे ईरान में अनुकरणीय माना जाता है। आकार को औकार (यहाँ तक की ऊकार तक खींच कर) बोलना तेहरान वालों की विशेषता है।

ईरान के राज्यतन्त्र की स्थापना की पच्चीस सौ वीं वर्षगाँठ के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ईरान विद्याविद् सम्मेलन में मैं भी ईरान बुलाया गया था। उस अवसर पर हालैण्ड स्थित उटरेख्ट विश्वविद्यालय की वृद्धा प्रोफ़ेसर कुमारी कोह्लब्रुख़ भी आयी थीं। वे प्रायः ईरानियों से बात करते करते उनके जन्मस्थान का पता बता देतीं और उनसे बात करने वाला सहसा चमत्कृत हो जाता। मैंने उनसे पूछा कि आपको ईरान की क्षेत्रीय बोलियों के इतने सूक्ष्म अन्तर का ज्ञान कैसे हुआ। प्रोफ़ेसर ने कहा निरन्तर अभ्यास से ऐसी बहुत सी बातें सुगम हो जाती हैं जो सामान्यतया कठिन लगती हैं। इसके उपरान्त मैंने भी अपने कानों को इस प्रकार साधने की चेष्टा की, लेकिन पहली बार में बहुत सफलता नहीं मिली। इसके पश्चात् मैं कई बार ईरान गया। मैंने महीनों तक गलियों में खेलते हुए बच्चों, लड़ती हुई स्त्रियों, हाट बाज़ार में मोलभाव करते हुए ग्राहकों और दूकानदारों आदि की बातें ध्यान से सुनीं। क्षेत्रीय बोलियों के मोटे-मोटे भेद अब मैं पहचान सकता हूँ, लेकिन बहुत से सूक्ष्म भेदों का पता पाना मुझे अभी भी बाक़ी है।

इस पुस्तक में विभिन्न क्षेत्रीय उच्चारणों का निर्वचन करना न सम्भव है और न यहाँ उसकी आवश्यकता ही है। इतना ही कहना पर्याप्त है कि सर्वत्र लिखित भाषा से भिन्न एक भाषा का अस्तित्व और भी विद्यमान रहता है जो कि थोड़े-थोड़े अवान्तर भेद से सारे क्षेत्र में व्याप्त रहता है। उस अलिखित भाषा के सम्पर्क में आये बिना लिखित भाषा पर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अधिकार प्राप्त नहीं किया जा सकता। उच्चारण के नियमों में मैंने उसी अलिखित भाषा के नियमों की ओर संकेत किया है।

फ़ारसी भाषा एक आर्य भाषा है; वैसी ही आर्यभाषा जैसे कि संस्कृत या पाली या प्राकृत या बांगला या मराठी है। यह संस्कृत के अत्यन्त निकट है। यह सच है कि फ़ारसी पढ़े बिना वैदिक भाषा का विद्वान् नहीं हुआ जा सकता। वेदों में ऐसे अनेक शब्द हैं जो संस्कृत भाषा में प्रचलित नहीं हैं लेकिन फ़ारसी में उनका प्रचलन आज भी है। वैदिक **पाक** शब्द (यो मां पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे····) पवित्र के अर्थ में संस्कृत में प्रचलन नहीं पा सका, लेकिन फ़ारसी में पाक शब्द अभी तक पवित्र के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार धातुओं के छन्दोमात्रगोचर लेट् लकार के प्रयोग संस्कृत व्याकरण में नहीं देखे जाते। लेकिन फ़ारसी में उनका प्रयोग आज भी होता है। कभी ईरान की अपनी लिपि थी जिसके कीलाक्षर लेख आज भी अजायबघरों में सुरक्षित हैं। लेकिन ऐतिहासिक कारणों से, अरबों की विजय के अनन्तर ईरानियों ने अपनी भाषा के लिये विजेता अरबों की अरबी लिपि अपना ली। अरबी भाषा आर्य भाषा नहीं है। उसकी प्रकृति और उच्चारण फ़ारसी भाषा से भिन्न है। फारसी भाषा को लिखने के योग्य कई ध्वनिचिह्न अरबी लिपि में नहीं थे। इनके साथ ही अरबी लिपि में कुछ ऐसे भी वर्ण थे जिनकी फ़ारसी भाषा में बोलने की परम्परा ही नहीं थी। इसके लिए ईरानियों ने अरबी लिपि का थोड़ा विस्तार करके अपनी भाषा की ध्वनियों के लिये कुछ और ध्वनिचिह्नों का आविष्कार किया, जैसे कि अरबी लिपि में **'प', 'च'** तथा **'श्ज़'** के लिये कोई चिह्न नहीं था, इसलिये ईरानियों ने एक बिन्दु वाले 'ब', 'ज' और 'ज़' अरबी अक्षरों के ऊपर-नीचे यथास्थान तीन-तीन बिन्दु लगाकर इनके लिये ईरानी ध्वनिचिह्न बनाये हैं। इसके साथ ही अरबी के **थ्से, हे़** (बड़ी), **ज़ाल, स्वाद, द्ज़्वाद, तो़य, ज़ोय** और **ऐ़न** वर्णों की फ़ारसी भाषा में आवश्यकता नहीं थी, न ईरानी में इनके अवितथ उच्चारण की कोई परम्परा ही थी, लेकिन इन आठ ध्वनियों के चिह्नों को फ़ारसी भाषा ने अपने अन्दर रहने दिया है। एक भी ईरानी मूल का शब्द इन वर्णों के योग से नहीं बनता, लेकिन इन वर्णों से बने हुए जो अरबी भाषा के शब्द हैं वे अब फ़ारसी भाषा में प्रवेश पा गये हैं। उपर्युक्त आठ ध्वनिचिह्नों को फ़ारसी भाषा में शामिल करने के उपरान्त भी ईरानी इनका अपने ढंग से उच्चारण करते हैं। फ़ारसी में **ज़ाल, ज़्वाद** और **ज़ोय** का उच्चारण **ज़े** (ज़) जैसा होता है। **थ्से** और **स्वाद** का उच्चारण **सीन** (स) जैसा होता है। **बड़ी हे़** का उच्चारण **छोटी हे** (ह) जैसा होता है और **तो़य** का उच्चारण **ते** (त) जैसा होता है तथा **ऐ़न** को कहीं **अलिफ़** के समान (बअ़द=बाद), कहीं विसर्ग-स्थानीय हे के समान (मोक़अ़=मोग़े) तथा कहीं लोप करके (शमअ़=शाम) काम चलाया जाता है।

ईरानी भाषा में **अलिफ़, बे, पे, ते, जीम, चे, ख़े, दाल, रे, ज़े, श्ज़े, सीन, शीन, ग़ैन, फ़े, क़ाफ़, काफ़, गाफ़, लाम, मीम, नून, वाव, हे, ये** इन चौबीस वर्णों का ही प्रयोग होता

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

है। ईरानी भाषा के निजमूल के समस्त शब्द इन चौबीस वर्णों के योग से ही बनते हैं। इस भाषा में संस्कृत के ही समान सारे स्वर हैं जिनको अलिफ़ पर मद, ज़बर, पेश लगाकर तथा अलिफ़ वाव और अलिफ़ ये के योग से व्यक्त किया जाता है।

संस्कृत में पाँच वर्ग हैं – **कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग**। इनके अतिरिक्त चार अन्तःस्थ वर्ण **य, र, ल, व**। तीन ऊष्मवर्ण हैं – **श, ष, स**; और एक महाप्राण है – **ह**। इस प्रकार संस्कृत भाषा या देवनागरी लिपि में कुल ३३ व्यंजन हैं, जब कि फ़ारसी में कुल २४ वर्ण हैं।

कवर्ग के पाँच व्यंजनों (**क ख ग घ ङ**) में से फ़ारसी में **क** (काफ़) और **ग** (गाफ़) का ही प्रयोग होता है। **ख** के स्थान में **ख़** (ख़े) का प्रयोग होता है। जैसे – संस्कृत–खर= फ़ारसी–ख़र। **घ** के स्थान में प्रायः **ग़** (ग़ैन) का प्रयोग होता है। जैसे – संस्कृत–मेघ= फ़ारसी–मेग़। **ङ** का प्रयोग फ़ारसी में नहीं होता।

चवर्ग के पाँचों व्यंजनों (**च छ ज झ ञ**) में से ईरानी में केवल **च** (चे) और **ज** (जीम) का ही प्रयोग होता है। शेष **छ, झ** और **ञ** का फ़ारसी में प्रयोग नहीं होता। हाँ, संस्कृत का **छ** फ़ारसी में कहीं कहीं **च** के रूप में अवश्य देखा जाता है जैसे – संस्कृत–छत्र=फ़ारसी–चत्र।

टवर्ग फ़ारसी में बिल्कुल है ही नहीं।

तवर्ग के पाँचों व्यंजन (**त थ द ध न**) में से ईरानी में केवल **त** (ते), **द** (दाल) और **न** (नून) का ही प्रयोग होता है। शेष **थ** और **ध** का प्रयोग नहीं होता। अरबी में ज़रूर **थ** के लिए **थ्से** का तथा **ध** के लिये **ज़ोय** का प्रयोग होता है।

पवर्ग के पाँच व्यंजनों (**प फ ब भ म**) में से ईरानी में केवल **प** (पे), **ब** (बे), तथा **म** (मीम) का ही प्रयोग होता है। **भ** के तद्भवों के लिये फ़ारसी में बे और छोटी हे मिलाकर काम लिया जाता है। संस्कृत का **अभि** फ़ारसी में 'भि' हो गया है, जिसको कि **बिह्** के रूप में लिखा जाता है। संस्कृत में अभि श्रेष्ठ के अर्थ में प्रयुक्त होता है; फ़ारसी में भी बिह् अच्छे के अर्थ में आता है, जैसे – संस्कृत–**अभिजात**=फ़ारसी–**बिह् ज़ाद**; संस्कृत–**अभिमन्यु** (श्रेष्ठ है मन्यु जिसका)=फ़ारसी–**बिह्मन**; संस्कृत–**अभितर**=फ़ारसी–**बिह्तर** आदि। अभि के कर्मप्रवचनीया के जैसे प्रयोग संस्कृत में होते हैं, वैसे ही फ़ारसी में भी होते हैं। **अभि माम् उक्तवान् अस्ति=बि मन् गुफ़्तः अस्त। अभि मातरं रयितः अस्ति=बि मादर रफ़्तः अस्त।**

फ़ारसी में **बि** के दो भेद हैं। एक **बि** कर्मप्रवचनीयस्थानीय है – जैसे–**बि मन् गुफ़्त**; दूसरा **बि** संस्कृत के **वि** उपसर्ग के सदृश उपसर्गस्थानीय है, जैसे – **बिगू** (कह), **बिया** (आ), **बिख़ुर** (खा), **बिज़न्** (मार)। हमने कर्मप्रवचनीयस्थानीय **बि** को विभक्ति

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

के समान व्यवहित (अलग) रखा है और उपसर्गस्थानीय **बि** को क्रिया से अव्यवहित (सटाकर) रखा है।

य र ल व के लिये फ़ारसी में **ये, रे, लाम, वाव** का प्रयोग होता है। **श** के लिये **शीन** का प्रयोग होता है। **ष** के लिये **श्ज़े** का प्रयोग होता है। जैसे – संस्कृत–**निषण्ण**=फ़ारसी–**निश्ज़न्द**; संस्कृत–**विष्णु**=फ़ारसी–**बीश्ज़न**; संस्कृत–**मनीषा**=फ़ारसी **मनीश्ज़ः**; संस्कृत **द्विष, द्विष्म**=फ़ारसी **दुश्ज़म** आदि। **स** के लिये **सीन** का प्रयोग होता है। ह के लिये **छोटी हे** का प्रयोग होता है तथा **विसर्गों** के लिये भी **छोटी हे** का प्रयोग होता है।

संस्कृत का **सकार** फ़ारसी में ह में बदल जाता है। संस्कृत–**सोम**=फ़ारसी–**होम** आदि। संस्कृत का **धकार** फ़ारसी **ज़** में बदल जाता है। संस्कृत–**इध्म**=फ़ारसी–**हैज़म**। संस्कृत का **ज्ञ** फ़ारसी में **ज़िय** हो जाता है। संस्कृत–**कृतुज्ञाः**=फ़ारसी **कातूज़ियान्**। संस्कृत का **शास्** फ़ारसी में **खास्** में बदल जाता है। संस्कृत–**शास्ता, शास्तारः**=फ़ारसी–**खास्ता, ख़्वास्तार**। संस्कृत का **शार** फ़ारसी में **ख़र** हो जाता है; संस्कृत–**विशारदान्**=फ़ारसी–**बिख़रदान**। कहीं कहीं संस्कृत का **शकार** फ़ारसी में **स** बन जाता है; संस्कृत–**अश्व**=फ़ारसी **अस्ब**; संस्कृत–**शोक**=फ़ारसी–**सोक, सोग**। कभी-कभी संस्कृत का **षकार** फ़ारसी में **श्ज़** के रूप में न बदल कर **श** में भी बदल जाता है। संस्कृत–**मेष**=फ़ारसी–**मेश**। कभी-कभी संस्कृत का ह फ़ारसी में **ग़** बन जाता है, जैसे – संस्कृत–**दोह** (दूध)=फ़ारसी–**दोग़** (दही)।

संस्कृत और फ़ारसी के तुलनात्मक भाषाविज्ञान पर हम इस पुस्तक के तीसरे खण्ड में, फ़ारसी और संस्कृत की धातुओं और संज्ञाशब्दों के निर्वचन के प्रसंग में विस्तार से प्रकाश डालेंगे।

संस्कृत भाषा और फ़ारसी भाषा में जो रिश्ता है वह इतने निकट का है कि यदि अरबी लिपि का व्यवधान न हो तो इसकी धातुएें और संज्ञाएें संस्कृत जैसी ही लगने लगती हैं। अवश्य ही यह वहम अब मुझे नहीं है कि विश्व की हर भाषा संस्कृत से ही निकली है और फ़ारसी भी संस्कृत से ही निकली है। हाँ, इतना अवश्य है कि इन दो भाषाओं की गठन आश्चर्यजनक रूप से समान है। सुधीजन दोनों भाषाओं का अध्ययन करें और फिर किसी निष्कर्ष पर पहुँचे।

फ़ारसी भाषाः अरबी लिपि बनाम नागरी लिपि –

नागरी लिपीकरण के विषय में मेरा पुनः निवेदन है कि फ़ारसी भाषा एक आर्य-भाषा है; और प्रत्येक आर्यभाषा की भाँति फ़ारसी भाषा को भी देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है। प्रत्येक भाषा के कुछ विशिष्ट उच्चारण होते हैं। अतः उस भाषा के यथातथ उच्चारण के लिये उस भाषा के बोलनेवालों को ही प्रमाण मानना चाहिये, और उन्हीं के उच्चारण आदि को सीखने की चेष्टा करना उचित है। किन्तु हम देवनागरी वाले जो दावा करते हैं कि हमारी लिपि के द्वारा प्रत्येक भाषा को लिखा जा सकता है, और फिर ज्यों का

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

त्यों पढ़ा जा सकता है, यह केवल अर्धसत्य है। पूरी सचाई यह है कि विना कुछ चिह्न लगाये और उच्चारण की परम्परा निश्चित किये, हम हर भाषा को ज्यों का त्यों नहीं बोल सकते। कम से कम फ़ारसी भाषा का अवितथ उच्चारण तो वर्तमान लिपि में थोड़ा विस्तार किये विना नहीं कर सकते।

फ़ारसी भाषा ने अपनी वर्तमान लिपि अरवी भाषा से ली है। पहले बताया जा चुका है कि अरवी वर्णमाला में कुछ अक्षर नहीं थे, इसलिये फ़ारसी भाषा-भाषियों ने अपनी आवश्यकतानुसार इस लिपि में कुछ और चिह्न शामिल किये। इसी प्रकार फ़ारसी भाषा के चिह्नों से उर्दू का काम पूरा नहीं होता था, इसलिये उर्दू ने भी कुछ और चिह्न **ट ठ ड ढ, ख घ, छ झ, थ ध, फ भ,** ड़ आदि आविष्कृत किये हैं। फ़ारसी उच्चारणों को नागरी में अविकल रूप से अवतरित करने के लिये हमें भी नागरी का सीमान्तोल्लंघन करना होगा।

देवनागरी में **ख़े, ज़े, ग़ैन, फ़े, क़ाफ़** और **श्ज़े** को व्यक्त करने वाले ध्वनिचिह्न नहीं हैं। ये ध्वनियाँ फ़ारसी में प्रयुक्त होती हैं। प्रचलित परम्परा के अनुसार – **श्ज़े** को छोड़कर– देवनागरी के **ख ज ग फ क** के नीचे एक-एक बिन्दु लगाकर इन ध्वनियों को व्यक्त किया जाता है। यह पद्धति उर्दू से आये हुए कुछ शब्दों को अविकल रूप में लिखने के अनुरोध से स्वीकृत हो चुकी है। देवनागरी के कुछ अत्याग्रही लोग विना बिन्दु लगाये ही इनका उच्चारण करना चाहते हैं। यह सम्भव नहीं है। जो लोग अपनी लिपि में बिन्दुमाग का परिवर्तन नहीं चाहते, वे कैसे अन्य भाषा-भाषियों से अपनी लिपि स्वीकार करवा सकेंगे।

श्ज़े की ध्वनि आर्यों की एक विशिष्ट ध्वनि है। इसका उच्चारण अंग्रेज़ी के **प्लैश्ज़र, मैश्ज़र, विश्ज़न** आदि में; रूसी में **श्ज़दानोव** के नाम में या फ्रैंच के **पोताश्ज़** (शोरबा), **लाक्तोश्ज़ेन** और **बैल्श्ज़ीक** (फ्रैञ्च भाषा-भाषियों द्वारा बोला जाने वाला बेल्जियम देश का फ्रैञ्च नाम) में द्रष्टव्य है। ईरानी भाषा में **श्ज़ाल-श्ज़ालः, आश्ज़दन्, श्ज़र्फ़, श्ज़ियान, निश्ज़न्द** आदि में भी यह ध्वनि द्रष्टव्य है। मानो **श** कहते-कहते **ज़** की ध्वनि निकल जाय या **ज़** कहते-कहते **श** की ध्वनि निकल जाय, ऐसा इसका उच्चारण है।

श्ज़ की ध्वनि भारतीय **ष** का ईरानी रूप है। प्राय: संस्कृत में **ष** के स्थान में फ़ारसी का **श्ज़** (श्ज़े) वर्ण ही काम में आया है।

आर्य भाषाओं में ष वर्ण दो प्रकार से बोला जाता है। अंग्रेज़, फ्रैञ्च, ईरानी और रूसी इसका उच्चारण **श्ज़** के रूप मे करते हैं। भारतीय, जर्मन, नौर्वेजियन तथा बेल्जियम के व्लाम्स (फ़्लेमिश) भाषा-भाषी आदि इसका उच्चारण मूर्धाप्रयत्न से करते हैं और, इसकी ध्वनि **ख़शह** जैसी होती है। जर्मन (डौइट्श) भाषा के **इष्** (मैं) में, नौरवे के **हैमरषोल्ड** (एक नाम) में, **बैल्षीए** (वेल्जियम का निजनाम) तथा वेदों के **पुरुष** शब्द में यह ध्वनि द्रष्टव्य है। हिन्दी भाषा-भाषियों के **षकार** का उच्चारण या तो **सकार** जैसा होता है या **शकार** जैसा (भासा-भाशा)। इसका उच्चारण **ख** जैसा भी नहीं है जैसा कि कुछ संस्कृतज्ञ करते हैं – आदित्यवर्णं **पुरुखं** महान्तम्। इसका उच्चारण हमें मूर्धाप्रयत्न से ही करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

श्ज़े के लिये मैंने गुलिस्तानइ सादी के देवनागरीकरण में **श्ज़** लिखने का सुझाव दिया था। अनेक विद्वानों ने इसका अनुसरण भी किया है; यदि इसके लिये **ष** के नीचे बिन्दु लगाना उचित समझा जाय तो भी अनुपयुक्त नहीं होगा (श्ज़े=श्ज़ या **ष़**)।

शेष आठ वर्णों – **थ्से, हे़, द्ज़ाल, स्वाद, द्ज़्वाद, तो़य, ज़ोय** और **ऐ़न** का सम्बन्ध फ़ारसी भाषा से विशेष नहीं है। ये अरबी की ध्वनियाँ हैं। गुलिस्तान इ सादी की भूमिका और शब्दसूची में मैंने इनके उच्चारण और लिपीकरण के विषय में विस्तार से विचार किया है। अरबी भाषा सीखने वालों को ये उच्चारण अवश्य सीखने चाहियें, लेकिन फ़ारसी भाषा में इनका उच्चारण अरबी ढंग से न होकर फ़ारसी के ढंग से जिस प्रकार होता है, वह मैं बता चुका हूँ।

फ़ारसी का नागरी लिपीकरण : प्रयत्न और प्रयोग –

१. छन्द के अनुरोध से अनेक शब्दों का रूप परिवर्तन हो जाता है। संस्कृत की एक उक्ति है – अपि मासं मसं कुर्यात् छन्दोभंगं न कारयेत्। छन्द के अनुरोध से फ़ारसी में भी **दीगर** का **दिगर** हो जाता है और **राह** का **रह**। **कि अज़्-क'ज़्, अगर–'गर, व अगर-व'र, किः अस्त-की'स्त** और **नँ अस्त-नी'स्त** हो जाता है। छन्द के अनुरोध के अतिरिक्त भाषा के प्रवाह में भी वर्णलोप की सामर्थ्य होती है। जहाँ-जहाँ वर्णलोप के कारण रूप परिवर्तन हुआ है वहाँ-वहाँ हमने लोपवाचक चिह्न लगा दिया है – **(क'ज़, 'गर व'र, की'स्त, नी'स्त** आदि)।

२. भाषा के प्रवाह से वर्णलोप ही नहीं वर्णवृद्धि भी होती है। **बि** के बाद **ईन्-आन्-ऊ-ऐशान्** आदि आने पर **द** वर्ण की वृद्धि हो जाती है और **बिदीन्, बिदान्, बिदू, बिदैशान्** जैसे रूप बन जाते हैं। व्याकरण की भाषा में इसे **दकार का आगम** कह सकते हैं।

३. फ़ारसी भाषा में, स्वतन्त्र रूप से लिखे जाने पर कुछ शब्द वैकल्पिक रूप से यकारांत होते हैं, लेकिन उनके बाद जैसे ही कोई स्वर वाला शब्द लगता है, जैसे – इज़ाफ़े का इकार या तथावाचक वाव, वे निश्चिततः यकारान्त हो जाते हैं; जैसे – रू+इ+ख़ीश=**रू यि ख़ीश**; रू+व+दस्त=**रूयो दस्त**; रूज़हा+इ+ख़ुश=**रूज़ हा यि ख़ुश**; पा+इ+ऊ=**पा यि ऊ**; पा+अम्=**पाय'म्**; रू+अत्=**रूय'त्**; बि+आयद=**बियायद**; न+आमद=**नयामद**। इनमें रू–रूय, हा–हाय, पा–पाय वैकल्पिक रूप से यकारान्त माने जाते हैं। बियायद और नयामद में बि और न यकारान्त नहीं, अतः यहाँ क्रिया संयोग परे होने पर **यकारागम** मानना चाहिये।

४. फ़ारसी में संस्कृत के कुछ प्रत्यय उन्हीं प्रत्ययार्थों में देखे जा सकते हैं, जैसे **वान्** (वतुप्) प्रत्यय **पहलवान्, हूयवान्, सारवान्** में द्रष्टव्य है। **दरबान्, शुतुरबान्** जैसे

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शब्दों में यह **बान्** के रूप में बदल जाता है। हमने इस प्रत्यय को संस्कृत के समान हलन्त ही रखा है। इनके साथ ही **मन्, चुन्, गरान्** (संस्कृत–गरीयान्), **ईन्-आन्, चुनीन्-चुनान्, हमीन्-हमान्** को भी हमने ईरानी उच्चारण के अनुरूप नकारान्त (हलन्त) रखा है, **नून** को गुन्ना करके **ईं–आँ** जैसा नहीं रखा। **कस्** (आदमी, कोई) को भी हमने संस्कृत उच्चारण और ईरानी उच्चारण के अनुसार सकारान्त (हलन्त) रखा है। संस्कृत का **कस्** भी इसी अर्थ में हलन्त (सकारान्त) ही लिखा जाता है। **अज़्** (से) को भी हमने ईरानी उच्चारण और संस्कृत के अनुरूप हलन्त रखा है। संस्कृत में यह विभक्ति **अस्** (ङसि-पंचमी एकवचन) के रूप में उपलब्ध होती है।

५. फ़ारसी के **आन** और **ईन** प्रत्ययों को हमने संस्कृत के तद्रूप प्रत्ययों (**शानच्–चानश्; ख=ईन**) के सम्बन्ध और अनुरोध के कारण हलन्त नहीं रखा। **पिनहान-निहान** (छुपा हुआ–छुपा रहने वाला), **कुनान** (करता हुआ, करता रहने वाला), **दमान** (बल धारण करने वाला–बल धारण करता हुआ), **रवान** (जाता हुआ, जाने वाला), **जहान** (चलता हुआ, चलता रहने वाला अर्थात् संसार) जैसे शब्दों में यह **आन** प्रत्यय द्रष्टव्य है। यह प्रत्यय भी फ़ारसी और संस्कृत में एक ही अर्थ में लगता है। संस्कृत में यह प्रत्यय हलन्त नहीं होता, अतः फ़ारसी **आन** प्रत्यय को शानच् या चानश् का स्थानापन्न मानकर हमने इसे फ़ारसी में भी हलन्त नहीं किया है। **अव्वलीन, नुख़ुस्तीन, पीरीन, पायीन, रास्तीन, ज़ीरीन, कुदामीन** जैसे फ़ारसी शब्दों में संस्कृत के **कुलीन, कालीन** शब्दों में लगने वाला **ईन** (ख) प्रत्यय देखा जा सकता है। संस्कृत में **ईन** प्रत्यय हलन्त नहीं होता, अतः फ़ारसी में भी हमने इसे हलन्त नहीं रखा। उत्तम पुरुष के बहुवचनों, के अन्त्य मकार को भी हमने हलन्त नहीं रखा है, क्योंकि संस्कृत और फ़ारसी दोनों ही भाषाओं में इनके रूप एक समान हैं, जैसे – संस्कृत—**भवेम**=फ़ारसी–**बुवीम**। उत्तम पुरुष के एकवचन के मकार को हमने हलन्त रखा है क्योंकि संस्कृत और फ़ारसी दोनों में यह हलन्त मिलता है, जैसे – संस्कृत–**भवेयम्**=फ़ारसी–**बुवम्**। संस्कृत के सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, विंशतितम, त्रिंशत्तम, चत्वारिंशत्तम, पंचाशत्तम, षष्ठितम, सप्ततितम, अशीतितम, नवतितम, शततम आदि शब्दों में अन्तिम मकार हलन्त नहीं है, इसलिए पूरणी के तदर्थ एवं तद्भव फ़ारसी प्रत्ययों के मकार को भी हमने हलन्त नहीं रखा है (देखो पाठ दस)।

फ़ारसी को नागरीलिपि में लिखने की कोई पूर्व परम्परा नहीं है, न किसी पूर्वाचार्य का इस विषय में कोई उपदेश या निर्देश है; अतः मैंने प्रथम-चरण-निक्षेप-कर्त्ता के रूप में कुछ पद्धति प्रचार करने की चेष्टा की है। उत्तरमुनियों के निरन्तर पाद संचार से एक सुनिश्चित पद्धति का निर्माण हो सकेगा और कालान्तर में हिन्दी और फ़ारसी भाषा के बीच में एक राजमार्ग बन सकेगा ऐसी मेरी भावना और शुभांशसा है।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

आभार

प्रस्तुत पुस्तक के प्रणयन में निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता ली गयी है :—

१. शाहनामः यि फ़िरदौसी
२. दीवान इ हाफ़िज़
३. गुलिस्तान इ सादी
४. बूस्तान इ सादी
५. रुबाइ़यात इ उमरख़य्याम
६. फ़रहंग इ जामिअ़ फ़ारसी इंगलिसी–ह़य्यम
७. तित्ग़े ज़े नौम प्ग़ौप्ग़े आन् ईग़ानियान् आँशियाँ–बैँवैनिस्ते
८. अष्टाध्यायी–पाणिनि
९. धातुपाठ–पाणिनि
१०. उणादिकोष–अज्ञात
११. महाभाष्य–पतञ्जलि
१२. महाभारत–वेदव्यास
१३. वैदिक कौनकौर्डेन्स–ब्लूमफ़ील्ड
१४. ऐटीमौलौजिकल डिक्शनरी
आफ़ दी इंगलिश लेंग्वेज–स्कीट्स
१५. ए संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी–मोनियर विलियम्स
१६. ए डिक्शनरी इंगलिश एण्ड संस्कृत–मोनियर विलियम्स
१७. दी स्टूडेन्ट्स संस्कृत–इंगलिश डिक्शनरी–आप्टे
१८. फ़ारसी दबिस्तान (अव्वल, दुवुम, सिवुम, चहारुम, पंजुम) वज़ारत आमूज़िश,ईरान
१९. ऋग्वेद संहिता

सहयोग और प्रेरणा के लिये लेखक इन व्यक्तियों का आभारी है :—

१. श्री मुज्तबा मिनूवी, बुनियाद इ शाहनामः, तेहरान
२. श्री महदी मुह़क़्क़िक़, डीन आफ़ लैटर्स, तेहरान विश्वविद्यालय, तेहरान
३. श्री शुजाइद्दीन शफ़ा, संस्कृति मंत्री, ईरान सरकार, तेहरान
४. श्री श्रीमन्नारायण, अध्यक्ष, गान्धीनिधि, नई दिल्ली
५. श्रीमती उजला अरोड़ा, जयपुर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

विषय सूची

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नाम इ शुमा ची'स्त ?

नाम इ शुमा ची'स्त ?
नाम इ मन् बीश्ज़न अस्त ।
नाम इ ईन् पिसर ची'स्त ?
नाम'श् फ़रीदून अस्त ।
मन् फ़रीदून रा दूस्त दारम् ।
नाम इ पिदर'त् ची'स्त ?
नाम इ पिदर'म् फ़ारुख़ अस्त ।
पिदर'म् दूकानदार अस्त ।
नाम इ किश्वर'तान् ची'स्त ?
नाम इ किश्वर इ मा हिन्दुस्तान'स्त ।
मा दर हिन्दुस्तान ज़िन्दगी मी कुनीम ।
मा माल इ हिन्दुस्तान हस्तीम ।
मा मीहन इ मारा ख़ेली दूस्त दारीम ।
मीहनपरस्ती जज़्ब: यि मुक़द्दस अस्त ।

आपका नाम क्या है ?

आपका नाम क्या है ?
मेरा नाम बीश्ज़न है ।
इस लड़के का नाम क्या है ?
इसका नाम फ़रीदून है ।
मैं फ़रीदून को प्यार करता हूँ ।
तेरे पिता का नाम क्या है ?
मेरे पिता का नाम फ़ारुख़ है ।
मेरा पिता दूकानदार है ।
तुम्हारे देश का नाम क्या है ?
हमारे देश का नाम हिन्दुस्तान है ।
हम हिन्दुस्तान में रहते हैं ।
हम हिन्दुस्तान की प्रजा हैं ।
हम अपने देश को बहुत प्यार करते हैं ।
देश प्रेम एक पवित्र भावना है ।

नाम=नाम
शुमा=आप
ची'स्त=(चि:+अस्त)=क्या है
मन्=मैं
बीश्ज़न=(संस्कृत विष्णु=फ़ारसी बीश्ज़न) एक नाम
अस्त=है
ईन्=यह
पिसर=लड़का (संस्कृत–पुत्र)
नाम'श्=उसका नाम
फ़रीदून=(संस्कृत प्रद्युम्न–फ़ारसी फ़रीदून) एक नाम
फ़रीदून रा=फ़रीदून को
दूस्त दारम्=(मैं) प्यार करता हूँ
पिदर=पिता
पिदर'त्=तेरा पिता
पिदर'म्=मेरा पिता

फ़ारुख़=एक नाम
दूकानदार=दूकानदार
किश्वर=देश
किश्वर'तान्=तुम्हारा देश
मा=हम
दर=में
ज़िन्दगी मी कुनीम=जीवनयापन करते हैं, रहते हैं
माल=प्रजा
हस्तीम=(हम) हैं
मीहन=देश, स्वदेश
मारा=हमारा
ख़ेली=बहुत
दूस्त दारीम=(हम) प्यार करते हैं
मीहनपरस्ती=देश प्रेम
जज़्ब:=भाव, भावना
मुक़द्दस=पवित्र

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

चि: मी कुनद ?	क्या कर रही है ?
मादर'त् चि: मी कुनद ?	तेरी माँ क्या कर रही है ?
मादर'म् ख़ानः तकानी मी कुनद ।	मेरी माँ घर (की) सफ़ाई कर रही है ।
शुमा दर दबिस्तान चि: मी कुनीद ?	तुम स्कूल में क्या करते हो ?
मा दर दबिस्तान दर्स भी ख़्वानीम ।	हम स्कूल में पाठ पढ़ते हैं ।
ख़्वाहर'त् चि: मी कुनद ?	तेरी बहिन क्या कर रही है ?
ख़्वाहर'म् मादर रा कुमक मी कुनद ।	मेरी बहिन माँ की सहायता कर रही है ।
तू ईन् जा चि: मी कुनी ?	तू यहाँ क्या कर रहा है ?
मन् बा दूस्तान'म् तूपबाज़ी मी कुनम् ।	मैं अपने दोस्तों के साथ गेंद खेल रहा हूँ ।
दुख़्तरान् चिरा तूपबाज़ी न मी कुनन्द ?	लड़कियाँ गेंद क्यों नहीं खेल रही हैं ?
दुख़्तरान् तनावबाज़ी मी कुनन्द ।	लड़कियाँ रस्सीकूद खेल रही हैं ।
तूपबाज़ी बाज़ी यि पिसरानः अस्त ।	गेंद का खेल लड़कों का खेल है ।
तनाबबाज़ी बाज़ी यि दुख़्तरानः अस्त ।	रस्सीकूद लड़कियों का खेल है ।

मादर'त्=तेरी माँ • चि:=क्या

मी कुनद=करता है, करती है, कर रहा है, कर रही है

मादर'म्=मेरी माँ • ख़ानः=घर

तकानी=झाड़पोंछ, सफ़ाई

दर=में • दबिस्तान=विद्यालय

कुनीद=(आप) करते हैं (कुनी='तू करता है' का बहुवचन)

दर्स=पाठ

ख़्वानीम=(हम) पढ़ते हैं (ख़्वानम् का बहुवचन)

ख़्वाहर'त्=तेरी बहिन (संस्कृत–स्वसृ)

कुमक=सहायता

तू=तू • ईन्=यह • जा=जगह

ईन् जा=यहाँ • बा=साथ, के साथ, सहित

दूस्तान्=(दूस्त का बहुवचन)=मित्रों

तूपबाज़ी=गेंद का खेल

दुख़्तरान्=(दुख़्तर=सं. दुहितृ का बहुवचन) =पुत्रियाँ, लड़कियाँ

चिरा=क्यों

कुनन्द=(कुनद='करता है' का बहुवचन)

बाज़ी=खेल, क्रीड़ा

पिसरानः=लड़कों के योग्य

बाज़ी यि पिसरानः=लड़कों का खेल

बाज़ी यि दुख़्तरानः=लड़कियों का खेल

विशेष :–

कुनद=(वह) करता है, करती है, कर रहा है, कर रही है

कुनन्द=(वे) करते हैं, करती हैं, कर रहे हैं, कर रही हैं

कुनी=(तू) करता है, करती है, कर रहा है, कर रही है

कुनीद=(आप, आप लोग) करते हो, करती हो, कर रहे हो, कर रही हो

कुनम्=(मैं) करता हूँ, करती हूँ, कर रहा हूँ, कर रही हूँ

कुनीम=(हम) करते हैं, करती हैं, कर रहे हैं, कर रही हैं

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ुश आमदीद !

ख़ुश आमदीद ! अम्मूजान ! ख़ुश आमदीद !
सफ़ा आवुरीद ! पिदर इ बुज़ुर्ग ! सफ़ा
आवुरीद !
पिदर इ बुज़ुर्ग वा अम्मूजान आमद ।
पिदर इ बुज़ुर्ग बि दीदन् इ बीश्ज़न आमद ।
पिदर इ बुज़ुर्ग बीश्ज़न रा ख़ेली दूस्त दारद ।
पिदर इ बुज़ुर्ग दर ख़ुर्दी यि फ़ारुख़ आन्‌रा
ख़ेली दूस्त दाश्त ।
पिदर इ बुज़ुर्ग बराय फ़ारुख़ असबाब इ बाज़ी
आवुर्दे ।
पिदर इ बुज़ुर्ग अकनून् बीश्ज़न रा दूस्त दारद ।
बीश्ज़न हम पिदर इ बुज़ुर्ग रा अह़तराम मी
कुनद ।
बीश्ज़न दर दबिस्तान रफ़्त ।
ख़्वाहर'श् हम दर दबिस्तान रफ़्त ।
ज़ंग इ दबिस्तान रा ज़दन्द ।
ह़र दू अज़् दबिस्तान बर गश्तन्द ।
पिदर इ बुज़ुर्ग मुन्तज़िर इ शुमा ह़स्त ।

स्वागत है !

स्वागत है ! चाचाजी ! स्वागत है !
हर्ष लाये हैं ! बाबाजी ! आप हर्ष लाये हैं !

बाबा चाचा के साथ आये ।
बाबा बीश्ज़न को देखने आये ।
बाबा बीश्ज़न को बहुत प्यार करते हैं ।
बाबा फ़ारुख़ के बचपन में उसे बहुत चाहते थे ।

बाबा फ़ारुख़ के लिये खेलने का सामान लाया
करते थे ।
बाबा अब बीश्ज़न को बहुत चाहते हैं ।
बीश्ज़न भी बाबा का आदर करता है ।

बीश्ज़न स्कूल गया ।
उसकी बहिन भी विद्यालय गयी ।
स्कूल की घण्टी बजी ।
दोनों विद्यालय से वापिस आये ।
बाबा तुम्हारी प्रतीक्षा में है ।

ख़ुश आमदीद=(आप) अच्छे आये
जान=आदरवाचक सम्बोधन जैसे–जी
अम्मूजान=चाचाजी
सफ़ा आवुरीद=(आप) हर्ष लाये
पिदर इ बुज़ुर्ग=बाबा • आमद=आया
बि=के लिये (संस्कृत 'अभि'=फ़ारसी बि)
दीदन्=देखने, देखना
दर=में • ख़ुर्दी=छुटपन, बचपन
आन्‌रा=(उच्चारण–उन् रा) उसे, उसको,
उसका • दाश्त=रखता था
दूस्त दाश्त=प्यार करता था
बराय=के लिये
असबाब=(सबब का बहुवचन) उपकरण,
सामग्री, सामान

बाज़ी=खेल
असबाब इ बाज़ी=खेल का सामान
आवुर्दे=लाया करता था
अकनून्=अब
ह़म=भी • अह़तराम=आदर
रफ़्त=गया
ज़ंग=घण्टी
ज़दन्द=बजायी, (उन्होंने) बजायी
ज़ंग रा ज़दन्द=घंटी बजायी गयी, बजी
ह़र=प्रत्येक, ह़र एक (संस्कृत–सर्व)
ह़र दू=दोनों
बर गश्तन्द=लौटे, वापिस आये
मुन्तज़िर=प्रतीक्षा करने वाला
ह़स्त=है (विद्यमानार्थक)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

की'स्त ?	कौनसा है ?
ईन् शहर ॰ बुज़ुर्ग की 'स्त ?	यह महानगर कौनसा है ?
ईन् शहर जयपुर अस्त ।	यह नगर जयपुर है ।
जयपुर पा ॰यि तख़्त ॰ राजस्थान अस्त ।	जयपुर राजस्थान की राजधानी है ।
बीमारिस्तान कुजा 'स्त ?	दवाख़ाना कहाँ है ?
मुस्तक़ीम बुरौ, क़रीब हस्त ।	सीधे चले जाओ, निकट ही है ।
दानिशगाह ॰ राजस्थान कुजा 'स्त ?	राजस्थान विश्वविद्यालय कहाँ है ?
अव्वल पाईन बुरौ ।	पहले नीचे उतरो ।
सिपस राह ॰ चप बिगीर ।	फिर बाईं सड़क पर मुड़ो
सिपस ख़ियाबान ॰ रास्त बिगीर ।	फिर दाईं सड़क पकड़ो ।
बाद मुस्तक़ीम बुरौ ।	फिर सीधे चले जाओ ।
दानिशगाह हमीन् अस्त ।	विश्वविद्यालय यही है ।
ईन् ख़ियाबान कुदामीन ?	यह गली कौनसी है ?
ईन् ख़ियाबान बापूबाज़ार अस्त ।	यह गली बापूबाज़ार है ।
ईन् शाहराह कुदामीन ?	यह राजमार्ग कौनसा है ?
ईन् शाहराह जौहरी बाज़ार अस्त ।	यह राजमार्ग जौहरी बाज़ार है ।
ईन् बाजार जा ॰यि तिजारत अस्त ।	यह बाजार व्यापार का केन्द्र है ।

शहर ॰ बुज़ुर्ग=बड़ा शहर, महानगर
की'स्त=कौनसा है
पा ॰यि तख़्त=राजधानी
राजस्थान=भारत का एक प्रान्त
बीमारिस्तान=अस्पताल, दवाख़ाना
कुजा'स्त=(कुजा+अस्त)=कहाँ है
मुस्तक़ीम=सीधा, सीधी, सीधे
बुरौ=चले जाओ
क़रीब=निकट, पास
दानिशगाह=विश्वविद्यालय; यूनिवर्सिटी
अव्वल=पहले, प्रथम, प्रथमतः
पाईन (उच्चारण–पायीन)=नीचे
सिपस=फिर, इसके पश्चात्
राह=रास्ता, सड़क

चप=बायाँ, बायीं (संस्कृत–सव्य)
राह ॰ चप=बायीं सड़क
बिगीर=पकड़
ख़ियाबान=(उच्चारण–ख़ियाबून)=गली
रास्त=दाईं, सीधी (संस्कृत–ऋत)
बाद=फिर, तब, इसके पश्चात्
हमीन्=(हम+ईन्) यही
कुदामीन=कौनसा, कौनसी (संस्कृत–कतम=
फ़ारसी–कुदाम; कतम+ईन (ख प्रत्यय)
=कतमीन्=कुदामीन)
शाहराह=राजमार्ग, बड़ी सड़क
जौहरी बाज़ार=जयपुर का एक बाज़ार
जा=जगह, केन्द्र (संस्कृत–ज्या)
तिजारत=व्यापार

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बाबा नान ख़ुरद ।

बाबा नान ख़ुरद ।
बाबा आब ख़ुरद ।
राजेश पनीर ख़ुर्द ।
लता करः ख़ुर्द ।
मादर मास्त ख़ुर्द ।
अम्मू दोग़ ख़ुर्द ।
पिदर बुज़ुर्ग आश ख़ुर्द ।
हमः सुब्ह्ानः ख़ुर्दन्द ।
मन् तुख़्म ड मुर्ग़ मी ख़ुरम् ।
शुमा चिः मी ख़ुरीद ?
बाद अज़् सुब्ह़ानः मा चाये मी ख़ुरीम ।
बाबा वि जा यि चाये शीर मी ख़ुरद ।

पिताजी रोटी खाते हैं ।

पिताजी रोटी खाते हैं ।
पिताजी पानी पीते हैं ।
राजेश ने पनीर खाया ।
लता ने मक्खन खाया ।
माँ ने दही खाया ।
चाचा ने छाछ पी ।
बाबा ने खिचड़ी खायी ।
सबने नाश्ता किया ।
मैं अण्डा खाता हूँ ।
आप क्या खाते हैं ?
नाश्ते के बाद हम चाय पीते हैं ।
पिताजी चाय की जगह दूध पीते हैं ।

बाबा=पिता, पिताजी
नान=(उच्चारण-नून)=रोटी
ख़ुरद=खाता है, पीता है (आदरवाचक में–खाते हैं)
आब=पानी (संस्कृत – आपः, संस्कृत में 'आपः' नित्य बहुवचनान्त है)
पनीर=पनीर, किलाट
ख़ुर्द=खाया, पिया
करः=मक्खन
मास्त=दही
दोग़=छाछ
आश=खिचड़ी (संस्कृत–आश=भोजन)
हमः=(उच्चारण–हमे, संस्कृत–समः, समे) सब, सबने
सुब्ह़ानः=नाश्ता, प्रातराश
ख़ुर्दन्द=खाया (ख़ुर्द का बहुवचन)
तुख़्म=बीज • तुख़्म ड मुर्ग़=अण्डा
ख़ुरम=खाता हूँ
मी ख़ुरम्=खाया करता हूँ, खाता हूँ
मी ख़ुरीद=(आप) खाया करते हैं, खाते हैं
बाद अज़्=के बाद • चाये=चाय
मी ख़ुरीम=(हम) खाते हैं, खाया करते हैं
वि जाय=बजाय, के स्थान पर
शीर=दूध (संस्कृत–क्षीर)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दानद–न दानद ।	**जानता है–नहीं जानता ।**
बिरादर'म् फ़ारसी दानद ।	मेरा भाई फ़ारसी जानता है ।
ख़्वाहर'म् फ़ारसी न दानद ।	मेरी बहिन फ़ारसी नहीं जानती ।
मन् अनार दारम् ।	मैं अनार रखता हूँ ।
मन् पिस्तः न दारम् ।	मै पिस्ता नहीं रखता हूँ ।
बिरादर इ ख़ुर्द'म् शीर मी ख़ुरद ।	मेरा छोटा भाई दूध पीता है ।
ऊ नान न मी ख़ुरद ।	वह रोटी नहीं खाता ।
पिदर'म् कार मी कुनद ।	मेरे पिताजी काम करते हैं ।
मन् कार मी कुनम् ।	मैं काम करता हूँ ।
बिरादर'म् कार न मी कुनद ।	मेरा भाई काम नहीं करता ।
ऊ कूदक इ ख़ुर्द'स्त ।	वह छोटा बच्चा है ।
मन् दुचर्ख़ः सवारी मी कुनम् ।	मैं साइकिल सवारी करता हूँ ।
कमल दुचर्ख़ः सवारी न मी कुनद ।	कमल साइकिल सवारी नहीं करता ।
मन् दुचर्ख़ः दारम् ।	मैं साइकिल रखता हूँ ।
कमल दुचर्ख़ः न दारद ।	कमल साइकिल नहीं रखता ।
पिदर'म् दुचर्ख़ः दाद ।	मेरे पिताजी ने मुझे साइकिल दी ।
पिदर'म् साअ़त न दाद ।	मेरे पिताजी ने मुझे घड़ी नहीं दी ।

बिरादर'म्=मेरा भाई
दानद=जानता है (संस्कृत–जानाति)
न दानद=नहीं जानता, नहीं ज़ानती
कार=काम (संस्कृत–कार; कृञ्+घञ्), कार्य
न मी कुनद=(वह) नहीं करता
ऊ=वह
कूदक=बच्चा, बालक

ख़ुर्द=छोटा
दुचर्ख़ः=साइकिल
सवारी=चढ़ना
दारम्=(मैं) रखता हूँ
न दारद=(वह) नहीं रखता
दाद=दी, दिया
साअ़त=घड़ी
न दाद=नहीं दी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कुन्–म कुन् ।

रास्त बिगू ।
दरूग़ म ज़न ।
कसान् रा मददगार बाश ।
कसी रा दिल म ख़राश ।
मर्द इ खुदा बाश ।
मुनकिर म शौ ।
हक़ परस्त बाश ।
बातिल परस्त म बाश ।
किश्वर इ मा ज़िन्द: बाद ।
कसी अज़् मा ग़द्दार म बाद ।
हिन्दुस्तान पायिन्द: बाद ।
हिन्दुस्तानियान् ख़ुश बाशन्द ।
दर मीहन इ मा निफ़ाक़ म बाद ।
नीकी रा अ़मल कुन् ।
कुनी कुन्, म कुन् ।

कर–मत कर ।

सच बोल ।
झूठ मत बोल ।
लोगों का सहायक हो ।
किसी का दिल मत दुखा ।
ईश्वर भक्त हो ।
नास्तिक मत हो ।
सत्य का पुजारी हो ।
असत्य का पूजक मत हो ।
हमारा देश चिरञ्जीवी हो ।
हममें से कोई देशद्रोही मत हो ।
हिन्दुस्तान स्थिर रहे ।
हिन्दुस्तानी ख़ुश रहें ।
हमारे देश में फूट मत हो ।
भलाई का आचरण कर ।
(तू) करे (तो) कर, (न चाहे तो) मत कर ।

रास्त=सच (संस्कृत, वैदिक-ऋत)
बिगू=बोल, कह
दरूग़=झूठ (संस्कृत–दुरुक्त)
म=मत (संस्कृत–मा)
ज़न=मार, कह
म ज़न=मत मार, मत कह
कसान्=(कस् का बहुवचन)=लोगों
मददगार=सहायक
बाश=हो
कसी=(शब्दार्थ=कोई एक) किसी का भी, किसी एक का भी
म ख़राश=मत दुखा
मर्द इ ख़ुदा=ईश्वर भक्त
मुनकिर=(शब्दार्थ – इन्कार करने वाला) ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करने वाला, नास्तिक
म शौ=मत हो
हक़ परस्त=सत्य का पूजक
बातिल परस्त=असत्य का पूजक
ज़िन्द: बाद=चिरञ्जीवी हो
अज़् मा=हममें से • ग़द्दार=द्रोही
म बाद=मत हो (वैदिक–मा भवाद्, लेट् लकार) • पायिन्द:=स्थिर, दृढ
बाशन्द=(बाशद का बहुवचन) हों
निफ़ाक़=फूट, अन्तर्विग्रह
अ़मल=आचरण

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शुमारः ।	गिनती ।
मरा यक नान बिदिह् ।	मुझे एक रोटी दे ।
दू मर्द आमदन्द ।	दो आदमी आये ।
सिह् गुर्बः दर ख़ानः ह्स्तन्द ।	तीन बिल्लियाँ घर में हैं ।
चहार किताब दर उताक़ हस्तन्द ।	चार किताब कमरे में हैं ।
पञ्ज चिनार दर ईन् बाग़ अन्द ।	पाँच चिनार इस बाग़ में हैं ।
शिश रूज़ मा कार मी कुनीम ।	छै दिन हम काम करते हैं ।
हफ़्त रूज़ दर यक हफ़्तः बुवन्द ।	सात दिन एक सप्ताह में होते हैं ।
हश्त कबूतर बर दीवार हस्तन्द ।	आठ कबूतर दीवार पर हैं ।
नुह लिबास दर दूकान हस्तन्द ।	नौ पोशाकें दुकान में हैं ।
दह गाव दर ख़ानः यि फ़रीदून हस्तन्द ।	दस गायें फ़रीदून के घर में हैं ।
याज़्दह जवानान् मी बाज़न्द ।	ग्यारह आदमी खेल रहे हैं ।
द्वाज़्दह दिरख़्त दर ईन् ख़ियाबान अन्द ।	बारह पेड़ इस गली में हैं ।
सीज़्दह साल पीश यक तूफ़ान आमद ।	तेरह वर्ष पूर्व एक तूफ़ान आया ।
चहारदह सुतून दर बिना यि ईन् जिस्र अस्त ।	चौदह खम्भे इस पुल के आधार में हैं ।
पांज़्दह दानिश पिश्ज़ूह दर क्लास अन्द ।	पन्द्रह विद्यार्थी क्लास में हैं ।
शांज़्दह पञ्जरः दर ईन् ख़ानः हस्तन्द ।	सोलह खिड़कियां इस घर में हैं ।
हिफ़्दह मर्दुमान् दर तूफ़ान हलाक शुदन्द ।	सत्रह आदमी तूफ़ान में मारे गये ।
हीज़्दह तुमान यक चिलू ! ख़ेली गरान'स्त ।	अठारह रुपये किलो ! बहुत मँहगा है ।
नूज़्दह सालः पहलवान् ज़ूर इ ज़ियाद दारद ।	उन्नीस वर्षीय पहलवान् ज़्यादा ज़ोर रखता है।
बीस्त सफ़ह़ः मन् ख़्वान्दः बूदम् ।	बीस पृष्ठ मैं पढ़ चुका हूँ ।

मरा=मुझको
बिदिह्=(तू) दे (संस्कृत–देहि)
आमदन्द=(आमद का बहुवचन) आये
गुर्बः=बिल्ली • उताक़=कमरा
बर=पर, के ऊपर
लिबास=पोशाक, परिधान
गाव=गाय, गायें (सं – गो, गावः)
मी बाज़न्द=खेलते हैं, खेला करते हैं, खेल रहे हैं
दिरख़्त=पेड़ (संस्कृत–वृक्ष; वृक्ष-विरख़्त-दिरख़्त)
सुतून=खम्भे, थून (संस्कृत-स्थूण)

बिना=आधार, नींव • जिस्र=पुल
दानिश पिश्ज़ूह=विद्यार्थी
पंजरः=खिड़की
मर्दुमान्=(मर्दुम का बहुवचन) पुरुष, लोग
हलाक शुदन्द=मारे गये
तुमान=दस रियाल मूल्य का, एक रुपये के बराबर का सिक्का
ख़ेली=बहुत
गरान्=भारी, मँहगा (संस्कृत-गरीयान्)
ज़ूर=ज़ोर, शक्ति
ज़ियाद=अधिक
ख़्वान्दः बूदम्=(मैं) पढ़ चुका हूँ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शुमारः ।	**गिनती ।**
बीस्तो पंज सरबाज़ान् हमलः आवुर्दन्द ।	पच्चीस सिपाहियों ने आक्रमण किया ।
बीस्तो दू परिन्दः दर आसमान परवाज़ मी कुनन्द ।	बाईस चिड़ियाँ आकाश में उड़ रही हैं ।
बीस्तो सिह साल बाद दौलत इ पिदर याफ़्त ।	तईस वर्ष बाद उसे पिता का राज्य मिला ।
सी साल फ़िरदौसी दर शाहनामः रंज बुर्द ।	तीस वर्ष फ़िरदौसी ने शाहनामे में श्रम किया ।
सी ओ चहार शुमारः उताक़ ख़ाली नी'स्त ।	चौंतीस नम्बर का कमरा ख़ाली नहीं है ।
सी व पंज अस्ब दारद ।	पैंतीस घोड़े रखता है ।
चिहल सालः शुद वले नाबालिग़ हस्त ।	चालीस साल का हो गया, पर नाबालिग़ है ।
चिलो शिश रूज़ दर शीराज़ मी मानम् ।	छियालीस दिन शीराज़ में रहूँगा ।
चिलो हफ़्त तुमान हक़्क़ु'ल उ़बूर दाद ।	सैंतालीस रुपये यात्रा का भाड़ा दिया ।
पञ्जाह साल रफ़्त व हनूज़ दर ख़्वाब हस्ती ।	पचास वर्ष बीत गये और अब तक नींद में है ।
पञ्जाहो हश्त तुमान दर ईन् माह फ़राहम आवुर्द ।	अठावन रुपये इस मास में इकट्ठे किये ।
पञ्जाहो नुह तुमान बाक़ीदार शुद ।	उनसठ रुपये का देनदार निकला ।
शस्त तुमान बाक़ी आवुर्द'स्त ।	साठ तुमान की कमी पड़ती है ।
हफ़्ताद तुमान बाक़ी बूद ।	सत्तर तुमान बचे ।
हश्ताद सालः पीर ज़न कर्द ।	अस्सी वर्ष के बुड्ढे ने विवाह किया ।
नवद तुमान जमा कुल आमद ।	नव्वे रुपया पूर्ण योग हुआ ।
सद साल बिज़ी ।	सौ साल जियो ।
हज़ार कूशिश कर्द वले कामयाब न बूद ।	हज़ार कोशिशें कीं पर कामयाब नहीं हुआ ।
बीवर अस्बसवारान् दाश्त ।	दस हज़ार घुड़सवार रखता था ।

सरबाज़ान्=(सरबाज़ का बहुवचन) सिपाही
हमलः=आक्रमण
आवुर्दन्द=(आवुर्द का बहुवचन) लाये
परिन्दः=पक्षी • परवाज़=उड़ान
दौलत=राज्य
रंज बुर्द=परिश्रम किया, रंज उठाया
उताक़=कमरा
अस्ब=घोड़ा (संस्कृत–अश्व)
वले=लेकिन • मी मानम्=(मैं) रहूँगा
हक़्क़ु'ल् उ़बूर=पार उतराई, भाड़ा
हनूज़=अभी तक, आज तक

ख़्वाब=नींद, स्वप्न (संस्कृत–स्वापः)
फ़राहम आवुर्द=इकट्ठे किये
बाक़ीदार=देनदार
बाक़ी आवुर्दः=कमी पड़ी हुई है
बाक़ी बूद=बचा, बचे • पीर=बूढ़ा
ज़न कर्द=विवाह किया
जमा कुल=पूर्णयोग
बिज़ी=जीता रह, जियो, जीते रहो ।
कामयाब=सफल (संस्कृत–आप्तकाम)
अस्बसवारान्=(अस्ब सवार का बहुवचन) घुड़सवारों

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शुमारः ।	पूरणी ।
यकुम रूज़ इ माह् आमद ।	पहला दिन महीने का आया ।
दुवुम किलास इ दबिस्तान शुरूअ़ शुद ।	विद्यालय की दूसरी कक्षा प्रारम्भ हुई ।
सिवुम माह् इ साल इ नौ रसीद ।	नये वर्ष का तीसरा महीना लगा ।
चहारुम रूज़ जामः यि नौ दाश्त ।	चौथे दिन नये कपड़े पहने ।
पंजुम ख़्वान इ रुस्तम ख़ेली पुरख़तर बूद ।	रुस्तम का पाँचवाँ पराक्रम बहुत भयंकर था ।
शिशुम बिरादर'तान् मरा बिगीरीद ।	अपना छठा भाई मुझे मान लो ।
हफ़्तुम उताक़ ख़ाली बूद ।	सातवाँ कोठा ख़ाली था ।
हश्तुम रूज़ रूज़ इ फ़त्ह् अस्त ।	आठवाँ दिन विजय का दिन है ।
नुहुम सुरूद ख़ेली ख़ुश मी आमद ।	नवाँ गीत बहुत अच्छा लगा ।
दहुम फ़रमान दर बाब इ जराअत अस्त ।	दसवीं आज्ञा खेती विषयक है ।
याज़्दहुम वाज़िन्दः मजरूह् शुद ।	ग्यारहवाँ खिलाड़ी घायल हो गया ।
बीस्तुम दर्स बिख़्वानीद ।	बीसवाँ पाठ पढ़िये ।
पंजाहुम जश्न बि पायान शुद ।	पचासवाँ उत्सव समाप्त हुआ ।
सदुम किश्तज़ार मन् पैमूदः अम् ।	मैंने सौवाँ खेत नाप लिया ।
हज़ारुम हि़स्सः बि दरवीशान् दाद ।	हज़ारवाँ भाग भिक्षुकों को दिया ।

रूज़=रोज़, दिन
शुरूअ़=शुरू, प्रारम्भ
माह्=महीना (संस्कृत–मास)
साल=वर्ष • नौ=नया (संस्कृत–नव)
रसीद=आया, प्राप्त हुआ, लगा
जामः=कपड़ा, वस्त्र, परिधान
दाश्त=रखा, धारण किया
ख़्वान=अध्याय, काण्ड, पराक्रम
बिरादर'तान्=तुम लोगों का भाई, अपना भाई
बिगीरीद=(आप) ग्रहण कर लीजिये
ख़ाली=रिक्त, रीता
रूज़ इ फ़त्ह्=विजय का दिन
सुरूद=गीत
ख़ुश आमद=सुखकारी लगा
फ़रमान=आदेश
दर बाब=के विषय में, विषयक
जराअत=खेती
वाज़िन्दः=खिलाड़ी
मजरूह्=घायल
बिख़्वानीद=(आप) पढ़िये
जश्न=उत्सव
बि पायान=समाप्ति को
किश्तज़ार=खेत
पैमूदः=नापा हुआ, नाप लिया
हि़स्सः=भाग
दरवीशान्=भिक्षुकों, साधुओं

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

यक ।	एक ।
यक रूज़ वारान वारीद ।	एक दिन वर्षा हुई ।
यक वक़्त चुनान् शुद कि पादशाह बराय-ख़ुर्दन् हीच न याफ़्त ।	एक समय ऐसा हुआ कि राजा को खाने को कुछ नहीं मिला ।
बि यकबार गर्दन'श् अज़् तन जुदा कर्द ।	एक ही बार में उसकी गर्दन शरीर से अलग कर दी ।
यक मर्तबः दुज़्दान् अज़् कूह बि दर आमदन्द ।	सहसा डाकू पहाड़ से निकल पड़े ।
यकमुश्त सरबाज़ान् मुक़ाबिलः न तवान कर्द ।	मुट्ठी भर सिपाही सामना नहीं कर सके ।
यक ख़ुर्दः सब्र कुन् ।	थोड़ी देर सब्र कर ।
यक साअ़त बाद अज़् ज़ुह्र मा बर गिर्दीम ।	दोपहर के एक बजे हम वापिस लौटे ।
यक दर सद (सदी यक) दूकानदार याफ़्त ।	एक प्रतिशत दूकानदार को मिला ।
दुरुश्कः यक अस्बः दीदम् ।	एक घोड़े वाला तांगा (मैंने) देखा ।
हर यक बि नौबत इ ख़ुद'श् सुख़ुन मी रान्द ।	हर कोई अपनी बारी आने पर बोला ।
हीच यक कारी न कर्द ।	किसी ने कोई काम नहीं किया ।
यकायक हमः यि दास्तान रा नक़्ल कुन् ।	एक-एक करके पूरी बात बताओ ।
यकबार हमः यि हिन्दुवानः ख़ुर्द ।	एक ही बार में सारा तरबूज़ खा गया ।
यकी बराबर बाज़ पस ख़्वाहम् दाद ।	पूरा का पूरा लौटा दूँगा ।
यक बर दू अगर ख़्वाही ह़राम बाशद ।	एक के दो यदि (तू) चाहता है तो ह़राम है ।
यकता अ़ालिम बूद ।	अद्वितीय विद्वान् था ।
मा यक जानिबः जंगबन्दी कर्दीम ।	हमने इकतरफ़ा युद्ध विराम कर दिया ।
यकरास्त पीश इ रईस रफ़्तो–गुफ़्त ।	सीधे अध्यक्ष के पास गया और बोला ।
यकज़नी ख़ुसूसियत इ आर्यायी हस्त ।	एकपत्नीव्रत आर्यों की विशेषता है ।
यकसर कार'श् ख़राब शुद ।	पूर्णतया उसका काम बिगड़ गया ।
यक नवाख़्त ज़िन्दगी बार मी बाशद ।	एकरस जीवन भार हो जाता है ।
यक कारः आमदम् बि दीदन् इ शुमा ।	एक मात्र आपके दर्शनों के लिये आया हूँ ।

बारान=वर्षा • बारीद=बरसी
चुनान्=(चुन्+आन्)=ऐसा
हीच=कुछ नहीं
दुज़्दान्=(दुज़्द का बहुवचन)=डाकू
कूह=पर्वत • बिदर=बाहर
तवान कर्द=कर सके (शब्दार्थ–सकना किया)
ज़ुह्र=दोपहर
दुरुश्कः=ताँगा (यह रूसी मूल का शब्द है)
नौबत=बारी

सुख़ुन मी रान्द=व्याख्यान दिया ।
नक़्ल=दुहराना
हिन्दुवानः=तरबूज (ईरानियों के मत से तरबूज़ भारत से गया हुआ फल है ।)
बाज़ पस=वापिस • ख़्वाहम् दाद=दूँगा
ख़्वाही=(तू) चाहता है • ह़राम=निषिद्ध
अ़ालिम=विद्वान् • जंगबन्दी=युद्ध विराम
आर्यायी=आर्यों की • ख़राब=नष्ट, बरबाद
बार=भार, भारस्वरूप (संस्कृत–भार)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

चिः मी कुनीद ?	क्या किया करते हो ?
शुमा दर ख़ाली वक़्त चिः मी कुनीद ?	तुम ख़ाली समय में क्या करते हो ?
मन् बादबादक ह्वा कुनम् ।	मैं पतंग उड़ाता हूँ ।
शुमा दर ख़ाली वक़्त चिः मी कुनीद ?	तुम ख़ाली समय में क्या करती हो ?
मन् कुमक इ मादर मी कुनम् ।	मैं माँ की सहायता करती हूँ ।
मन् सुफ़रः रा तमीज़ मी कुनम् ।	मैं दस्तरख़्वान को सजाती हूँ ।
मन् बुशक़ाब व क़ाशुक़ रा मी आवुरम् ।	मैं प्लेटें और चम्मचें लगाती हूँ ।
मन् क़न्दान रा पुर अज़् क़न्द मी कुनम् ।	मैं चीनीदान को चीनी से भरती हूँ ।
शुमा दर खाली वक़्त चिः मी कुनीद ?	तुम ख़ाली समय में क्या करती हो ?
मन् उ़रूसकबाज़ी मी कुनम् ।	मैं गुड़ियों से खेलती हूँ ।
मन् तनावबाज़ी मी कुनम् ।	मैं रस्सीकूद खेलती हूँ ।
उ़रूसक इ मन् क़शंग अस्त ।	मेरी गुड़िया अच्छी है ।
मन् बा हमबाज़ियान् उ़रूसकबाज़ी मी कुनम् ।	मैं अपने साथ खेलने वालियों के साथ गुड़िया खेलती हूँ ।
शुमा दर ख़ाली वक़्त चिः मी कुनीद ?	तुम ख़ाली समय में क्या करते हो ?
मन् दर दबिस्तान दर्स मी ख़्वानम् ।	मैं विद्यालय में पाठ पढ़ता हूँ ।
मन् दर हियात इ दबिस्तान तूपबाज़ी कुनम् ।	मैं विद्यालय के खेल के मैदान में गेंद खेलता हूँ ।
बाद अज़् ईन् बराय इ अह्वालपुर्सी यि दूस्तान् मी रवम् ।	इसके बाद मित्रों के हालचाल पूछने जाता हूँ ।
मन् ख़ाली वक़्त न दारम् ।	मेरे पास खाली समय नहीं है ।

बादबादक=पतंग	क़न्द=चीनी
ह्वा कुनम्=उड़ाता हूँ	उ़रूसकबाज़ी=गुड़ियों का खेल
सुफ़रः=दस्तरख़्वान	उ़रूसक=गुड़िया
तमीज़ मी कुनम्=सजाती हूँ	क़शंग=अच्छी, चंगी (हिन्दी–चंगा, चंगी)
बुशक़ाब=प्लेट	हमबाज़ियान्=खेल के साथी
क़ाशुक़=चम्मच	हियात=हाता, अहाता, खेल का मैदान
क़न्दान=चीनी दानी, चीनी का बरतन	अह्वालपुर्सी=हालचाल पूछना
पुर=पूर्ण (संस्कृत–पूर, पूर्ण)	मी रवम्=(मैं) जाता हूँ ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बिरादर'त् चिः मी कुनद ?

बिरादर'त् चिः मी कुनद ?
बिरादर'म् कशावर्ज़ अस्त ।
ऊ कशावर्ज़ी मी कुनद ।
पिदर'त् चिः मी कुनद ?
पिदर'म् दूकानदार अस्त ।
ऊ ग़ल्लः मी फ़ुरूशद ।
कसान् अज़् ऊ ग़ल्लः मी ख़रन्द ।
ऊ दर ख़रीदो-फ़ुरूख़्त पञ्जयक मुनाफ़अ् मी गीरद ।
पञ्जयक बराबर बीस्त-दर-सद मी शवद ।

मादर'म् दर दबिस्तान आमूज़गार अस्त ।
दर दबिस्तान बच्चः हा ह़र्फ़ गूश मी कुनन्द ।
मा दर ह़ियात इ ख़ानः यि मा यकी पालीज़ दारीम ।
मा दर पालीज़ कार मी कुनीम ।
पालीज़ मारा यक सबद सब्ज़ी हर रूज मी दिह्द ।
पालीज़ इ मा क़शंग अस्त ।

कशावर्ज़=किसान
कशावर्ज़ी=खेती, किसानी
ग़ल्लः=अनाज
कसान्=(कस् का बहुवचन)=लोग
(संस्कृत--कस्-कः)
ख़रन्द=खरीदते हैं
ख़रीदो–फ़ुरूख़्त=लेना बेचना, क्रय-विक्रय
पञ्जयक=एक बटा पाँच, पाँचवाँ भाग
मुनाफ़अ्=(उच्चारण–मुनाफ़े)=लाभ,
गीरद=लेता है

तेरा भाई क्या करता है ?

तेरा भाई क्या करता है ?
मेरा भाई किसान है ।
वह खेती करता है ।
तेरा पिता क्या करता है ?
मेरा पिता दूकानदार है ।
वह ग़ल्ला (अनाज) बेचता है ।
लोग उससे ग़ल्ला ख़रीदते हैं ।
वह क्रय-विक्रय में एक बटा पाँच भाग लाभ कमाता है ।
एक बटा पाँच, बीस प्रतिशत के बराबर होता है ।
मेरी माता विद्यालय में शिक्षिका है ।
विद्यालय में बच्चे पाठ सीखते हैं ।
हमारे घर के अह़ाते में एक सब्ज़ी खेत है ।

हम सब्ज़ी खेत में काम करते हैं ।
सब्ज़ी खेत हमको एक टोकरी सब्ज़ी प्रतिदिन देता है ।
हमारा सब्ज़ी खेत अच्छा है ।

बीस्त दर सद=बीस प्रतिशत
(इसे 'सदी बीस्त' भी कहते हैं)
आमूज़गार=शिक्षक, शिक्षिका
बच्चःहा=बच्चे
ह़र्फ़=पाठ, शब्द, उच्चारण
गूश मी कुनन्द=सुनते हैं, सीखते हैं
ह़ियात=हाता, अह़ाता
ह़ियात इ ख़ानः=घर का अह़ाता
पालीज़=सब्ज़ी खेत, किचन गार्डन
सबद=टोकरी
हर रूज़=प्रतिदिन

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कुजा अस्त-कुजा'स्त ?	कहाँ है ?
लता मादर ॰ शुमा कुजा'स्त ?	लता तुम्हारी माता कहाँ है ?
मादर'म् दर दबिस्तान रफ़्तः अस्त ।	मेरी माता विद्यालय गयी हुई है ।
शुमा चिः कार मी कुनीद ?	तुम क्या काम कर रही हो ?
मन् आश मी पज़म् ।	मैं खिचड़ी बना रही हूँ ।
ख़्वाहर ॰ ख़ुर्द'म् कुमक मी कुनद ।	मेरी छोटी बहिन मेरी सहायता कर रही है ।
मन् चिलू मी शूयम् ।	मैं चावल धोती हूँ ।
ख़्वाहर'म् सब्ज़ी पाक मी कुनद ।	मेरी बहिन सब्ज़ी काटती-छीलती है ।
मन् सब्ज़ी रा दर चिलू मी रीज़म् ।	मैं सब्ज़ी को चावलों में डालती हूँ ।
आश सर बर आमद ।	खिचड़ी उफनने लगी ।
आश पुख़्तः शुद ।	खिचड़ी पक गयी ।
आश क़शंग अस्त ।	खिचड़ी अच्छी है ।
शुमा हम आश बुख़ुरीद ।	आप भी खिचड़ी खाइये ।
मन् खानः दुरुस्त कर्दः अम् ।	मैंने घर ठीक-ठाक कर दिया है ।
मन् आश रा पुख़्तः कर्दः अम् ।	मैंने खिचड़ी पका ली है ।
मन् सुफ़रः साख़्तः अम् ।	मैंने खाने की मेज़ लगा दी है ।
हर कसी कि बिख़्वाहद बियायद व आश बिख़ुरद ।	जिसका जी चाहे आये और खिचड़ी खाये ।

कुजा=कहाँ
रफ़्तः अस्त=गयी हुई है, गया हुआ है
आश=खिचड़ी, ताहिरी (संस्कृत का आश सामान्य भोजन वाचक है, कभी आश का अर्थ लप्सी रहा होगा)
पज़म्=पकाती हूँ (संस्कृत-पचामि)
ख़्वाहर ॰ ख़ुर्द'म्=मेरी छोटी बहिन
पाक मी कुनद=छीलती-बनारती है
चिलू=चावल (पूरा शब्द 'चिलाव' है; संस्कृत-शालिः, शालयः)
सर बर आमदन्=उफनना
पुख़्तः=पकी हुई, पक चुकी (संस्कृत पच्+क्त=पक्व)
बुख़ुरीद=(आप) खाइये
दुरुस्त=ठीकठाक, सँवारा हुआ
कर्दः अम्=कर चुकी हूँ
सुफ़रः साख़्तः=दस्तरख़्वान लगा चुकी
हरकसी=कोई भी, हर कोई
कि=जिसका कि, जो कि
बिख़्वाहद=चाहता हो, चाहे
बियायद=(बि+आयद) आजाये, आये
बिख़ुरद=खाजाये, खाये

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हाल इ शुमा ख़ूबे ?	आप कुशल से हैं ?
अस्सलाम अलैकुम् बिरादर जान !	नमस्ते भाई साहब !
व अलैकुम् अस्सलाम बिरादर'म् !	और नमस्ते आपको भी मेरे भाई !
हाल इ शुमा ख़ूबे, आग़ा !	आपके हालचाल ठीक हैं, श्रीमान् !
खेली मुतशक्किर'म्, ख़ूबे ।	बहुत आभारी हूँ मैं, अच्छे हैं ।
व अह़वाल इ शुमा ख़ूबे, आग़ाजान !	और आपके हालचाल ठीक हैं, श्रीमान्जी !
क़ुरबान इ शुमा, ख़ूबे, खेली ममनून !	मैं आपकी बलिहारी, अच्छे हैं, बहुत उपकृत हूँ ।
बच्च:गान् इ शुमा, ख़ूबेन, आग़ाजान !	आपके बच्चे सकुशल हैं, श्रीमान्जी !
मरह़मत ज़ियाद ! हम: ख़ुशेन !	बड़ी कृपा है ! सब सकुशल हैं ।
बच्च: हा यि शुमा बुज़ुर्ग मी शेन, ख़ुशह़ाल'न्द आग़ा !	आपके बच्चे बड़े हो गये होंगे । अच्छे हैं न, श्रीमान् !
हम: ख़ुशह़ाल'न्द ! तशक्कुर बिस्यार ! खेली ममनून !	सब प्रसन्न हैं ! बहुत-बहुत धन्यवाद ! बहुत उपकृत हूँ ।
अज़् मन् पिदर इ शुमा रा सलाम बिरसान् !	मेरी ओर से अपने पिताजी को प्रणाम कह देना ।
व ख़ानुम रा ! व बच्च: हा रा !	और श्रीमतीजी को ! और बच्चों को !
चश ! चश ! ख़्वाहिश मी कुनम् !	जी हाँ ! जी हाँ ! मेरी यही कामना है !
बि ख़ुशी तमाम !	बड़ी ख़ुशी से !

अस्सलाम अलै कुम्=(अल्+सलाम+अलै +कुम्)
=सलामती हो, ऊपर, आपके

व अलै कुम् अस्सलाम (व+अलै+कुम्+अल्+सलाम)=और ऊपर, आपके (भी) सलामती हो ।

ह़ाल=हालचाल

ख़ूबे=('ख़ूब+अस्त' का बोलचाल का रूप)

खेली=बहुत

मुतशक्किर=आभारी

अह़वाल=(ह़ाल का बहुवचन) हालचाल

आग़ाजान=श्रीमान्जी (आदर और अन्तरंगता में, जान)

क़ुरबान=बलिहारी, धन्य हो

ममनून=उपकृत हूँ

खेली ममनून=बहुत उपकृत हूँ

बच्च:गान्=बच्चे

ख़ूबेन=('ख़ूब+अन्द' का बोलचाल का रूप)

मरह़मत ज़ियाद=बड़ी कृपा है (प्रभु की एवं आपकी)

ख़ुशेन=('ख़ुश+अन्द' का बोलचाल का रूप)

बुज़ुर्ग=बड़े

मी शेन=('मी शवन्द' का बोलचाल का रूप)
=हो गये (होंगे)

ख़ुशह़ाल'न्द=सुखी हैं, अच्छे हैं

तशक्कुर=धन्यवाद

बिस्यार=बहुत-बहुत

बिरसान्=पहुँचा देना

ख़ानुम=श्रीमतीजी, (पत्नी)

चश् ! चश् !=(शब्दार्थ-मेरी आँखों पर-चश्म, चश्म)=जी हाँ, जी हाँ !

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रूज हा यि हफ़्तः ।

इमरूज़ जुमुअ़: अस्त ।

जुमुअ़: रूज़ इ तातील अस्त ।

दर रूज इ तातील मा विजुज़ इ़बादत इ खुदा हीच कार न मी कुनीम ।

दीरूज़ पञ्जशम्ब: बूद ।

परीरूज़ चहारशम्ब: बूद ।

पसपरीरूज़ सिहशम्ब: बूद ।

फ़र्दा शम्ब: मी शवद ।

पसफ़र्दा यकशम्ब: मी शवद ।

यक हफ़्तः हफ़्तरूज़ अस्त ।

नाम इ रूज़हा यि हफ़्तः ईन् त़ोर अस्त ।

शम्ब:

यकशम्ब:

दुशम्ब:

सिहशम्ब:

चहारशम्ब:

पञ्जशम्ब:

जुमुअ़:

सप्ताह के सात दिन ।

आज शुक्रवार है ।

शुक्रवार छुट्टी का दिन है ।

छुट्टी के दिन हम ईश्वरोपासना के अतिरिक्त कोई काम नहीं करते ।

कल वृहस्पतिवार था ।

परसों बुधवार था ।

अतरसों मंगलवार था ।

कल शनिवार होगा ।

परसों रविवार होगा ।

एक सप्ताह सात दिन का होता है ।

सप्ताह के दिनों के नाम इस प्रकार हैं ।

शनिवार

रविवार

सोमवार

मंगलवार

बुधवार

बृहस्पतिवार

शुक्रवार

इमरूज़=आज

तातील=छुट्टी

बिजुज़=सिवा, अतिरिक्त

इ़बादत=प्रार्थना, उपासना

इ़बादत इ ख़ुदा=ईश्वरोपासना

हीच कार=कोई भी काम

(हीच के बाद अनिवार्यतः 'न' आता है, जैसे हिन्दी संस्कृत में 'कदापि' के पीछे 'नहीं' अवश्य आता है । यदि केवल 'हीच' कहा जायगा, तो उसका अर्थ होगा– "कुछ नहीं ।")

दीरूज़=कल (बीता हुआ दिन, संस्कृत-ह्यः)

परीरूज़=परसों (बीता हुआ दिन)

पसपरीरूज़=अतरसों (बीता हुआ दिन)

फ़र्दा=कल (आगामी दिन)

पसफ़र्दा=परसों (आगामी दिन)

यक हफ़्तः=एक सप्ताह (संस्कृत-सप्ताह)

रूज़हा=(रूज़ का बहुवचन)=दिन

ईन् त़ोर=इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

इमशब–दीशब ।	आज रात–कल रात ।
इमशब मा दावत दारीम ।	आज रात को हमारा निमन्त्रण है ।
ख़ाल: मारा रुक़: यि दावत फ़िरिस्ताद ।	मौसी ने हमको निमन्त्रण भिजवाया ।
ख़ाल: क़िज़ी अज़् विलायत आमद: अस्त ।	मौसेरी बहिन विदेश से आयी हुई है ।
मा दर दावत इ महमानी मी रवीम ।	हम भोजन के निमन्त्रण में जा रहे हैं ।
दीशब बर्फ़ बारीद ।	कल रात बर्फ़ पड़ी ।
परीशब बर्फ़ बारीद ।	परसों रात बर्फ़ पड़ी ।
दर ईन् फ़स्ल बर्फ़ हमी बारद ।	इस ऋतु में बर्फ़ पड़ती ही है ।
ईन् फ़स्ल इ ज़मिस्तान अस्त ।	यह हेमन्त ऋतु है ।
बामदाद आफ़ताब तुलूअ़ कर्द ।	सुबह सूर्य उदित हुआ ।
हम: जा रौशन शुद ।	सब जगह प्रकाश फैल गया ।
दर मोक़अ़ यि ज़ुह्र मा बर्फ़बाज़ी मी कुनीम ।	दोपहर के समय हम बर्फ़ पर खेलेंगे ।
मा अज़् ज़ुह्र ता अ़स्र बाज़ी मी कुनीम ।	हम दोपहर से शाम तक खेलेंगे ।
मा बामदादान् सुब्हान: मी ख़ुरीम ।	हम सुबह प्रातराश (नाश्ता) करते हैं ।
बि ज़ुह्र नाहार मी ख़ुरीम	दोपहर को मध्याह्न भोजन करते हैं ।
बि मोक़अ़ यि अ़स्र नाहार मी ख़ुरीम	शाम को हम सायं भोजन करते हैं ।
वराय तन्दुरुस्ती सिह् बार ख़ुर्दन् बस अस्त ।	स्वास्थ्य के लिये दिन में तीन बार भोजन करना काफ़ी है ।

इमशब=आज रात, आज रात को

दावत=निमन्त्रण, आह्वान

दारीम=(हम) रखते हैं

दावत दारीम=(हम) निमन्त्रित हैं, बुलाये गये हैं

ख़ाल:=मौसी

रुक़:=(उच्चारण-रुग़े) पत्र

फ़िरिस्ताद=भिजवाया

ख़ाल:क़िज़ी=मौसी की लड़की (उर्दू-ख़ाला की धी)

अज़् विलायत=विदेश से

दावत इ महमानी=भोजन का निमन्त्रण

दीशब=कल रात को

परीशब=परसों रात, परसों रात को

ईन् फ़स्ल=यह ऋतु, इस ऋतु

ज़मिस्तान=हेमन्त, हेमन्त ऋतु

बामदाद=सवेरे

आफ़ताब=सूर्य

तुलूअ़=उदय

हम: जा=सब जगह

मोक़अ़=(उच्चारण-मोग़े) अवसर, समय

ज़ुह्र=दोपहर

बर्फ़बाज़ी=बर्फ़ का खेल, हिमक्रीडा

अ़स्र=सन्ध्या

बामदादान्=प्रातःकाल, प्रभातकाल में

नाहार=आहार, भोजन, दिन का या रात का भोजन

सिह्बार ख़ुर्दन्=तीन बार खाना

बस=काफ़ी, बहुत

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

फ़स्लहा ए ईरान व हिन्दुस्तान।	ईरान और भारत की ऋतुएें।
दर ईरान यक साल चहार फ़स्ल दारद।	ईरान में एक वर्ष में चार ऋतुएें होती हैं।
दर हिन्दुस्तान यक साल शिश फ़स्ल दारद।	भारत में एक वर्ष में छै ऋतुएें होती हैं।
दर ईरान यक फ़स्ल सिह् माह् दारद।	ईरान में एक ऋतु तीन मास की होती है।
दर हिन्दुस्तान यक फ़स्ल दू माह् दारद।	भारत में एक ऋतु दो मास की होती है।
नामहा ए फ़स्ल इ ईरान ईन् तौर अस्त :–	ईरान में ऋतुओं के नाम इस प्रकार हैं :–
फ़स्ल इ बहार	वसन्त ऋतु
फ़स्ल इ ताबिस्तान	ग्रीष्म ऋतु
फ़स्ल इ पायीज़	शरद् ऋतु
फ़स्ल इ ज़मिस्तान	हेमन्त ऋतु
नामहा ए फ़स्ल इ हिन्दुस्तान ईन् तौर अस्त :–	भारत में ऋतुओं के नाम इस प्रकार हैं :–
शिशिर, कि दर अवाख़िर इ ज़मिस्तान निशान मी दिह्द।	शिशिर, जो ज़मिस्तान के अन्त में आती है।
वसन्त, कि दर ज़िम्न इ बहार निशान मी दिह्द।	वसन्त, जो कि बहार के समय में आती है।
ग्रीष्म, कि दर ज़िम्न इ ताबिस्तान निशान मी दिह्द।	ग्रीष्म, जो कि ताबिस्तान के समय आती है।
वर्षा, कि दर अवाख़िर इ ताबिस्तान निशान मी दिह्द।	वर्षा, जो कि ताबिस्तान के अन्त में आती है।
शरद्, कि दर ज़िम्न इ पायीज़ निशान मी दिह्द।	शरद्, जो कि पायीज़ के समय में आती है।
हेमन्त, कि दर ज़िम्न इ ज़मिस्तान निशान मी दिह्द।	हेमन्त, जो कि ज़मिस्तान के समय आती है।
दर ईरान फ़स्ल इ बारान निशान न मी दिह्द।	ईरान में वर्षा ऋतु नहीं होती।

फ़स्ल=ऋतु
दारद=रखती है, होती है।
नामहाय=(नाम का बहुवचन) नाम
दर अवाख़िर=अन्त के दिनों में, अन्त में
निशान मी दिह्द=प्रकट होती है, आती है।
दर ज़िम्न= के समय में, उसी समय में
फ़स्ल इ बारान=वर्षा ऋतु

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

माहहा यि ईरान।

फ़स्ल इ बहार सिह् माह् दारद ।
फ़रवरदीन, कि माह् इ अव्वल इ साल अस्त।
उर्दविहि्श्त, कि माह् इ दुव्वुम इ साल अस्त।
व ख़ुरदाद, कि माह् इ सिवुम इ साल अस्त।

फ़स्ल इ ताबिस्तान हम सिह् माह् दारद ।
तीर, कि माह् इ चहारुम इ साल अस्त ।
मुर्दाद, कि माह् इ पन्जुम इ साल अस्त ।
व शह्‌रीवर कि माह् इ शिशुम इ साल अस्त ।

फ़स्ल इ पायीज़ हम सिह् माह् दारद ।
मिह्‌र, कि माह् इ हफ़्तुम इ साल अस्त ।
आबान, कि माह् इ हश्तुम इ साल अस्त ।
व आज़र, कि माह् इ नुहुम इ साल अस्त ।

फ़स्ल इ जमिस्तान हम सिह् माह् दारद ।
दी, कि माह् इ दहुम इ साल अस्त ।
वह्मन, कि माह् इ याज़्दहुम इ साल अस्त ।
व इस्फ़न्द, कि माह् इ द्वाज़्दहुम इ साल अस्त ।

यकसाल द्वाज़्दह् माह् दारद ।

ईरान के मास।

वसन्त ऋतु में तीन मास होते हैं ।
फ़रवरदीन, जो कि वर्ष का प्रथम मास है ।
उर्दविहि्श्त, जो कि वर्ष का दूसरा मास है ।
और ख़ुरदाद, जो कि वर्ष का तीसरा मास है ।

ग्रीष्म ऋतु में भी तीन मास होते हैं ।
तीर, जो कि वर्ष का चौथा मास है ।
मुर्दाद, जो कि वर्ष का पाँचवाँ मास है ।
और शह्‌रीवर, जो कि वर्ष का छठा मास है ।

शरद् ऋतु में भी तीन मास होते हैं ।
मिह्‌र, जो कि वर्ष का सातवाँ मास है ।
आबान, जो कि वर्ष का आठवाँ मास है ।
और आज़र, जो कि वर्ष का नवाँ मास है ।

हेमन्त ऋतु में भी तीन मास होते हैं ।
दी, जो कि वर्ष का दसवाँ मास है ।
वह्मन, जो कि वर्ष का ग्यारहवाँ मास है ।
और इस्फ़न्द, जो कि वर्ष का बारहवाँ मास है ।

एक वर्ष में बारह मास होते हैं ।

(३१ दिन के सौर मास)

फ़रवरदीन	,,	,,	=चैत्र-मार्च
उर्दविहि्श्त	,,	,,	=वैशाख-अप्रेल
ख़ुरदाद	,,	,,	=ज्येष्ठ-मई
तीर	,,	,,	=आषाढ-जून
मुर्दाद	,,	,,	=श्रावण-जुलाई
शह्‌रीवर	,,	,,	=भाद्रपद-अगस्त

(३० दिन के सौर मास)

मिह्‌र	,,	,,	=आश्विन-सितम्बर
आबान	,,	,,	=कार्तिक-अक्टूबर
आज़र	,,	,,	=आग्रहायण-नवम्बर
दी	,,	,,	=पौष-दिसम्बर
वह्मन	,,	,,	=माघ-जनवरी
इस्फ़न्द	,,	,,	=फाल्गुन-फ़रवरी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

माहहा यि ईरान व हिन्दुस्तान ।	ईरान और भारत के मास ।
फ़रवरदीन, दर माह इ चैत्र इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	फ़रवरदीन, भारत के चैत्र मास में पड़ता है ।
उर्दबिहिश्त, दर माह इ वैशाख इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	उर्दबिहिश्त, भारत के वैशाख मास में पड़ता है ।
दर हिन्दुस्तान, ईन् दू माहहा यि फ़स्ल इ बहार अन्द ।	भारत में ये दो मास वसन्त ऋतु के मास हैं ।
खुरदाद, दर माह इ ज्येष्ठ इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	खुरदाद, भारत के ज्येष्ठ मास में पड़ता है ।
तीर, दर माह इ आषाढ इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	तीर, भारत के आषाढ मास में पड़ता है ।
दर हिन्दुस्तान ईन् दू माहहा यि फ़स्ल इ ताबिस्तान'न्द ।	भारत में ये दो मास ग्रीष्म-ऋतु के मास हैं ।
मुरदाद, दर माह इ श्रावण इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	मुरदाद, भारत के श्रावण मास में पड़ता है ।
शहरीवर, दर माह इ भाद्रपद इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	शहरीवर, भारत के भाद्रपद मास में पड़ता है ।
दर हिन्दुस्तान ईन् दू माहहा यि फ़स्ल इ बारान अन्द ।	भारत में ये दो मास वर्षा-ऋतु के मास हैं ।
दर हिन्दुस्तान फ़स्ल इ बारान दर पय इ ताबिस्तान मी उफ़्तद ।	भारत में वर्षा-ऋतु ग्रीष्म के अनुपद पड़ती है।
दर ईरान फ़स्ल इ बारान निशान न मी दिहद ।	ईरान में वर्षा-ऋतु नहीं होती ।
दर ईरान ईन् हर दू नीज़ माहहा यि फ़स्ल इ ताबिस्तान अन्द ।	ईरान में ये दोनों मास भी ग्रीष्म-ऋतु के ही मास हैं ।
मिह्र दर माह इ आश्विन इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	मिह्र, भारत के आश्विन महीने में पड़ता है।
आबान, दर माह इ कार्तिक इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	आबान, भारत के कार्तिक मास में पड़ता है ।
दर हिन्दुस्तान ईन् दू माहहा यि फ़स्ल इ पायीज़ अन्द ।	भारत में ये दो मास शरद् ऋतु के मास हैं ।
आज़र, दर माह इ आग्रहायण इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	आज़र, भारत के आग्रहायण मास में पड़ता है।
दी, दर माह इ पौष इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	दी, भारत के पौष मास में पड़ता है ।
दर हिन्दुस्तान ईन् दू माहहा यि फ़स्ल इ ज़मिस्तान अन्द ।	भारत में ये दो मास हेमन्त ऋतु के मास हैं ।
बहमन, दर माह इ माघ इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	बहमन, भारत के माघ मास में पड़ता है ।
इस्फ़न्द, दर माह इ फाल्गुन इ हिन्दी मी उफ़्तद ।	इस्फ़न्द, भारत के फाल्गुन मास में पड़ता है ।
दर हिन्दुस्तान ईन दू माहहा यि फ़स्ल इ शिशिर अन्द ।	भारत में ये दो शिशिर ऋतु के मास हैं ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नौरूज़ ।

दर माह इ फ़रवरदीन जश्न इ नौरूज़ बरपा मी शवद । हमः यि ईरानियान् नौरूज़ रा जश्न मी गीरन्द । अज़् ज़मानहा यि बास्तान नौरूज़ दर ईरान बरपा शुदः अस्त । ईन रा नौरूज़ मी नामन्द ज़ीरा ईन रूज़ इ आग़ाज़ इ साल इ नौ अस्त । ज़नो-दुख़्तरान् दर ईन् मोक़अ् उताक़ रा तमीज़ मी कुनन्द । दर हर खानः यकी सुफ़रः यि बुज़ुर्ग मी साज़न्द । व ऊरा सुफ़रः यि हफ़्तसीन मी नामन्द । सब्ज़ः, समनू, सिन्जिद, सुमाक़, सीर, सुम्बुल व सिरकः रा हफ़्तसीन मी नामन्द । बराय ईन् सुफ़रः यि हफ़्तसीन गन्दुम व अ़दस रा सब्ज़ मी कुनन्द । चुन् गन्दुम सब्ज़ मी शवद अज ऊ समनू मी साज़न्द । चुन अ़दस सब्ज़ मी शवद ऊरा सीर मी नामन्द । ग़ैर अज़् हफ़्तसीन चीज़हा यि दीगर हम दर सुफ़रः मी गुज़ारन्द । मिथ्सलः – नान, सब्ज़ी, तुख़्म इ मुर्ग़ रंग कर्दः व आयीनः, इस्पन्द, शम्अ़हा यि रंगी, ज़र्फ़ इ बिलूर इ पुर आब, गुलहा यि गूनागून, मीवः हा यि मौसम, माहीहा यि क़ुरमुज़ इ ज़िन्दः, शीरीनी व किताब इ आसमानी । ज़रदुश्ती ज़िन्द अवीस्तः रा किताब इ आसमानी शनासन्द, व अह्‌ल इ इस्लाम क़ुरआन रा । दर ईन् मोक़अ़ हर यक लिबास इ नौ मी पूशद । बाद अज़् ईन् हमः वि इन्तज़ार इ तह्‌वील इ साल इ नौ निशीनद । हमीन् कि सदा यि तूप शुनीदः शुद हमः यकदीगरी रा तबरीक मी गूयन्द व यकदीगरी रा शीरीनी मी दिहन्द ।

शुमा रा ईद इ नौरूज़ मुबारक बाद ।
बराय शुमा हम सफ़ा आवर बाद ।

नव वर्ष ।

फ़रवरदीन के महीने में नौरोज़ का पर्व पड़ता है । समस्त ईरानी नौरोज़ का उत्सव मनाते हैं । प्राचीन काल से नौरोज़ ईरान में मनाया जाता है । इसको नौरोज़ इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह नव वर्ष के प्रारम्भ का दिन है । स्त्रियां और बालिकाऐं इस अवसर पर घर को सजाती हैं । हर घर में एक दस्तरखान सजाया जाता है । और उसको सात सकार का सुफ़रा (दस्तरख़ान) कहा जाता है । सब्जः (दूब), समनू (गेहूँ के कुल्लों की लपसी), सिन्जिद (एक पौधा), सुमाक़ लता, सीर (लहसुन), सुम्बुल (एक घास) और सिरका को सात सकार कहते हैं । इस सात सकार के सुफ़रा के लिये गेहूँ और लहसुन बोया जाता है । जब गेहूँ के कुल्ले फूट जाते हैं, उससे गेहूँ की लपसी बनाई ज़ाती है । जब लहसुन के कुल्ले फूट जाते हैं तो उसे सीर कहते हैं । इन सात सकारवाली चीज़ों के अलावा अन्य वस्तुऐं भी सुफ़रे पर लगायी जाती हैं । जैसे कि – रोटी, शाक और रंगा हुआ मुर्ग़ी का अण्डा और दर्पण, इस्पन्द नामक वनस्पति, रंगीन मोमबत्ती, पानी भरा बिलौरी बर्तन, रंग-बिरंगे फूल, मौसम के फल, लाल रंग की जीवित मछलियाँ, मिठाई और धर्मपुस्तक । ज़रदुश्ती लोग ज़िन्द अवीस्ता को धर्मपुस्तक मानते हैं, और मुसलमान क़ुरआन को । इस अवसर पर सब कोई नये कपड़े पहनते हैं । इसके पश्चात् सब नये वर्ष के आगमन की प्रतीक्षा में बैठ जाते हैं । जैसे ही तोप की आवाज़ सुनाई पड़ती है, सब एक दूसरे को बधाई देते हैं और एक दूसरे को मिठाई देते हैं ।

आपको नववर्ष शुभ हो ।
आपको भी ख़ुशी लाने वाला हो ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

मिह्‌रगान् ।

रूज़ इ मिह्‌रो माह इ मिह्‌रो जश्न इ फ़र्रुख़
मिह्‌रगान् ।

मिह्‌र बिफ़ज़ा, ऐ निगार ई मिह्‌रचेह्‌र
ई मिह्‌रवान् !

दर ईरान इ क़दीम हर रूज़ इ माह इस्म इ ख़ास्सी दाश्त । मथ्सलन्—रूज़ इ अव्वल इ माह 'हुरमुज़्द' नाम दाश्त । या कि, रूज़ इ दुवुम इ माह 'बह्‌मन' ख़्वान्दः मी शुद । हरगाह कि नाम इ माह बा नाम इ रूज़ यकी मी शुद, ईरानियान् आन् रूज़ रा जश्न मी गिरिफ़्तन्द । रूज़ इ शांज़्दहुम इ हर माह बि नाम इ मिह्‌र नामीदः मी शुद । कलमः यि 'मिह्‌र' या 'मित्र' बि मानी यि ख़ुरशीद व दूस्ती अस्त । 'मित्र' यकी अज़् ख़ुदायान् इ आर्यायीहा नीज़ बूदः अस्त । दर अह्‌द इ ज़रदुश्त, 'मित्र' फ़रिश्तः यि निगहवान इ दूस्ती व रास्ती, व दुश्मन इ दरूग़ शुमुर्दः मी शुद । पस रूज़ इ मिह्‌र अज़् माह इ मिह्‌र रा ईरानियान् जश्न मी गिरिफ़्तन्द व ईन् रूज़ रा 'मिह्‌रगान' मी नामीदन्द । 'मिह्‌र-गान्' चुन् 'नौरूज़' जश्न इ मुहिम्म अस्त । जश्न इ नौरूज़ अज़ अव्वल इ बहार बर गुज़ार मी शवद । जश्न इ मिह्‌रगान दर आग़ाज़ इ पायीज़ बरपा मी शवद ।

जश्न ई मिह्‌रगान् जश्न इ अ़ज़्म ई दूस्ती व रास्ती अस्त ।

मिह्‌रगान्=दो मिह्‌र, दो मिह्‌र एक साथ पड़ने पर मनाया जाने वाला शरद् उत्सव ।

फ़र्रुख़=भाग्यशाली, धन्य

बिफ़ज़ा=बढ़ा

मिहिरगान् ।

मिह्‌र का दिन है, मिह्‌र मास है, मिह्‌र
गान् का धन्य पर्व है ।

प्रेम में वृद्धि कर, हे सूर्यवदने ! प्रेममयी
सुन्दरी !

प्राचीन ईरान में मास के प्रत्येक दिन का एक विशेष नाम होता था । जैसे कि, मास के पहले दिन का नाम 'हुरमुज़्द' होता था । या जैसे कि – मास के दूसरे दिन को बह्‌मन कहा जाता था । जब कभी मास का नाम, और दिन का नाम एक हो जाता, ईरानी उस दिन को उत्सव के रूप में मनाते थे । प्रत्येक मास के सोलहवें दिन का नाम 'मिह्‌र' हुआ करता था । 'मिह्‌र' या 'मित्र' शब्द का अर्थ सूर्य या मित्र है । 'मित्र' आर्यों का एक देवता भी हुआ करता था । ज़रदुश्त के समय में 'मित्र' मैत्री और ऋत की रक्षा का उपदेवता तथा असत् का शत्रु गिना (माना) जाता था । अतः 'मिहर' मास के 'मिह्‌रवासर' को ईरानी उत्सव मनाते थे तथा इस दिन को मिह्‌रगान कहते थे । 'मिह्‌रगान्' नौरूज़ की भाँति एक बड़ा त्यौहार है । नौरूज़ का उत्सव वसन्त के आरम्भ में मनाया जाता है । मिह्‌रगान् का उत्सव शरद् के आरम्भ में मनाया जाता है ।

मिह्‌रगान् का उत्सव मैत्री और सचाई के
संकल्प का पर्व है ।

नामीदः मी शुद=नामवाला होता था

कलमः=शब्द

ख़ुरशीद=सूर्य

दूस्ती=एक मित्र

ख़ुदायान्=(ख़ुदा का बहुवचन) देवता

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अज़् ।	**से (संस्कृत–ङसि=अस्)**
अज़् जयपुर **ता** देह्ली सीसद किलूमीटर'स्त ।	जयपुर **से** देहली तीन सौ किलोमीटर है ।
जयपुर **अज़्** देह्ली कूचकतर अस्त ।	जयपुर देहली **से** ज्यादा छोटा है ।
अज़् हवा यक तूप पैदा कर्द व बियन्दाख़्त ।	हवा में **से** एक गेंद पैदा की और फेंक दी ।
ईन् ज़र्फ़ इ बिलूर **पुर अज़् आब** अस्त ।	यह बिलौरी बर्तन **पानी से भरा** हुआ है ।
कसी **अज़्** दूस्तान् इ ख़ुद जुदा म बाद !	कोई अपने मित्रों **से** दूर न हो !
यकी **अज़्** आ़लिमान् इ ईरान बूद ।	ईरान के विद्वानों में **से** एक था ।
सगहा **अज़् आवाज़** इ पा आक़ा यि ख़ुद रा मी शनासन्द ।	कुत्ते पैर की **आहट के द्वारा** अपने स्वामी को पहचानते हैं ।
तू ई **अज़् मा** जुज़ ईन् न मी दानम् ।	तू **हमारा** है, इसके अतिरिक्त मैं (कुछ) नहीं जानता ।
दूस्त'म् **अज़्** नर्दबान् पर्त शुद ।	मेरा मित्र नसेनी **से** गिर पड़ा ।
अज़् आशनायी यि शुमा मन् ईन् कार रा कर्द: बूदम् ।	आपसे **परिचय के कारण** मैंने यह काम किया है ।
मन् **अज़् यक साल क़ब्ल** ईन् रा मुन्तज़िर बूदम् ।	मैं **एक वर्ष से** इसकी प्रतीक्षा में था ।
अज़् आन् पस ऊ बि रास्ती न ख़ुर्दो – न ख़ुफ़्त ।	**इसके बाद** वह ठीक से न खाता था और न सोता था ।
अज़् हमीन् जा ऊ नाराहती शुद ।	**इसी कारण** वह बीमार पड़ गया ।
अज़् ईन जिहत (या 'रू') ऊ नयामद ।	**इसी कारण** वह नहीं आया ।
अज़् आन् जुम्ल: ख़ुरशीदफ़श् रुस्तम नीज़ बूद ।	**उन सबमें** सूर्य के सदृश रुस्तम ही था ।
अज़् बराय आन् (कि) बीचार: बार मी बुरद व ख़ार मी ख़ुरद ।	**क्योंकि** बेचारा बोझा ढोता है और काँटे (कँटीली झाड़ी) खाता है ।
अज़् बराय चि: मरा हक़ीर शुमुर्दी ?	**किसलिये** मुझे हीन समझा ?
आग़ा **अज़् कुजाई** ?	श्रीमान् ! आप **कहाँ के हैं** ?
चुन् कार'श् ख़राब शुद **अज़् सर** शुरूअ़ कर्द ।	जब काम बिगड़ गया तो **नये सिरे से** प्रारंभ किया ।
ख़ानुम आमूज़गार हरचि: गुफ़्त **अज़् बर** कर्द ।	शिक्षिका ने जो कुछ कहा, **कण्ठस्थ** कर लिया ।

अज़्····ता=से····तक । अज़्=की अपेक्षा । अज़्=में से । अज़्=से (करण) । अज़्=से (अपादान) । अज़्=में से (अधिकरण) । अज़्=के द्वारा । अज़्=का (सम्बन्ध) । अज़्=से (तसिलर्थक) । अज़्=के कारण (निमित्त, हेतु) । अज़्=से लगाकर (आरभ्य) । अज़्=ततपश्चात् । अज़्=अत: । अज़्=अतः । अज़्=उन में । अज़्=क्योंकि । अज़्=कारण से । अज़्=कहाँ से, कहाँ के । अज़् सर=नये सिरे से । अज़् सर इ नौ=नये सिरे से ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बर।

वर – १

चि: **बर सर' त्** उफ़्ताद कि चुनीन् परीशान ह़ाल हस्ती ?

वाय! **बर आन्** कि राह इ रास्त न गिरिफ़्त।

असबाब'म् **बर सर बिगुज़ार** व बि दुम्बाल' म् बिया।

या रह़ीम! **बर मन्** रह़मत बिनुमा।

वह्थ्सी **बर ऊ** नी'स्त।

ऊ **बर सुख़ुन** इ **मन्** ईराद गिरिफ़्तो-गुफ़्त।

वर – २

आमदो – **दर बर'म्** निशस्त।

चुन् मार रा कुश्त: नज़्दीक इ पिसर दीद ऊरा **दर बर** गिरिफ़्त।

ईन् पारच: ख़ेली **कम बर** अस्त।

ईन् कार ज़ह़मत इ ज़ियाद **दर बर** दारद।

वर – ३

हरगिज़ अज़् शाख़ इ बीद **बर** न ख़ुरी।

वर – ४

बर सबील इ **तमथ्सील** गुफ़्त – 'बि शुस्तन् ख़र अस्वी न मी शवद।

बर हस्ब इ **ख़िरद** कार कुनीद ता खजिल न बाशीद।

हर कसी **बर लह:** रफ़अ़ इ रवाज इ रूबन्दी राय दाद।

चुन् मजलिस इ अयान चुनीन् शुनीद **बर अ़लैहि** सीज़र क़याम कर्दन्द।

बिना बर ख़्वाहिश इ शुमा कार कर्दम्।

अगर फ़िरदौस **बर रू** यी **ज़मीन**'स्त।

अलान् **बर सर** इ आन'म् कि मुसाफ़िरत इ जहान कुनम्।

पादशाह चु नीयत इ शहन: चुनान् दीद ऊरा **बर तरफ़** कर्द।

चातुर्थिक बर।

वर – १

तेरे ऊपर क्या (संकट) आ पड़ा कि ऐसा उद्विग्न हो रहा है ?

अफ़सोस **उस पर** है जिसने सन्मार्ग अङ्गीकार नहीं किया।

मेरा सामान **सिर पर उठा ले** और मेरे पीछे पीछे चला आ।

हे! कृपासिन्धु! **मुझ पर** कृपा कर।

विवाद **इस विषय पर** नहीं है।

उसने **मेरे कहे पर** आपत्ति की और कहा।

वर=हृदय, निकट – २

आया, और **मेरे निकट** बैठ गया।

जब साँप को पुत्र के निकट मरा देखा तो उसे (पुत्र को) **छाती से** लगा लिया।

यह कपड़ा बहुत **कम चौड़ा** है।

यह कार्य बड़े श्रम की **अपेक्षा रखता है।**

वर=फल – ३

कभी भी बेंत की शाखा से **फल** नहीं खायेगा।

वर=मुहावरेदार प्रयोग – ४

रूपक के द्वारा कहा – 'धोने से गधा एक घोड़ा नहीं हो जाता।'

बुद्धि के अनुसार काम कीजिये ताकि लज्जित न हों।

सब ने पर्दाप्रथा उठाने **के पक्ष में** राय दी।

जब सामन्त सभा ने ऐसा सुना तो वे सीज़र **के विरुद्ध** हो गये।

आपकी इच्छा **के अनुसार** मैंने काम किया है।

यदि स्वर्ग (कहीं) **पृथिवीतल पर** है।

अब मैंने **योजना** यह बनायी है कि विश्व-भ्रमण करूँ।

बादशाह ने जब कोतवाल की ऐसी नीयत देखी तो उसे **हटा** दिया।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अशआ़र अज़् सादी ।	सादी के कुछ पद ।
करम बीन् व लुत्फ़ो–ख़ुदावन्दगार ।	ईश्वर की कृपा और करुणा देख ।
गुनह बन्द: कर्द'स्त ऊ शर्मसार ।।	अपराध सेवक करता है और वह लज्जित होता है ।
ज़बान बुरीद:, बि कुन्जी निशस्त: सुम्मुम् बुक्म ।	ज़बान कटा हुआ, कोने में बैठा हुआ, गूँगा और बहरा ।
बिह् अज़् कसी कि न दारद ज़बान'श् अन्दर हु्क्म ।।	बिहतर है उस आदमी से जिसकी जिह्वा उसके वश में नहीं है ।।
दु चीज़ तीर: यि अ़क्ल'स्त, दम फ़ुरू बस्तन् ।	दो वस्तुएँ बुद्धि का अन्धकार हैं, साँस रोक लेना (चुप रह जाना) ।
बि वक़्त इ गुफ़्तनो–गुफ़्तन् बि वक़्त इ ख़ामूशी ।।	बोलने के समय और बोल पड़ना चुप रहने के समय ।।
फ़र्क़'स्त मियान इ आन् कि यार'श् दर बर ।	अन्तर है, उनके बीच में कि जिसका मित्र हृदय के निकट है ।
बा आन् कि दु चश्म इ इन्तज़ार'श् बर दर ।।	उसके साथ कि जिसकी दोनों आँखें द्वार पर लगी हैं ।।
क़ारून् हलाक शुद कि चिहल खान: गंज दाश्त ।	क़ारून् मर गया जो कि चालीस कोठे धन के रखता था ।
नौशीरवान् न मुर्द कि नाम ई निकू गुज़ाश्त ।।	नौशेरवान नहीं मरा क्योंकि (वह) भला नाम छोड़ गया है ।।
नै मर्द'स्त आन् बि नज़दीक ई ख़िरदमन्द ।	बुद्धिमान् के निकट मर्द (वीर) वह नहीं है ।
कि बा पील ई दमान पैगार जूयद ।।	जो कि बलिष्ठ हाथियों के साथ युद्ध की कामना करता है ।
बले, मर्द आन् कस'स्त अज़् रू यि तह़क़ीक़ ।	हाँ, वीर वह पुरुष है, विवेक की रू से ।
कि चुन् ख़िश्म आयद'श् बातिल न गूयद ।।	कि जब उसे क्रोध आता है तो (वह) अप-शब्द नहीं बोलता ।।
मरा बि मर्ग इ अ़दू जा यि शादमानी नी'स्त।	मुझको शत्रु की मृत्यु से प्रसन्नता का कोई अवसर नहीं है ।
कि ज़िन्दगानी यि मा नीज़ जाविदानी नी'स्त ।।	क्योंकि हमारा जीवन भी सदा रहने वाला नहीं है ।।

करम=कृपा

लुत्फ़=दया करना

ख़ुदावन्दगार=परमात्मा

शर्मसार=लज्जित

बुरीद:=कटा हुआ

कुन्ज=एकान्त, कोना

निशस्त:=बैठा हुआ

सुम्म=गूँगा

बुक्म=बहरा

बिह्=अच्छा है

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बर ।	**बर के सामासिक प्रयोग ।**
ऊ दर बाग़ शुदो-गुलहा **बर चीद** ।	वह बाग़ में गयी और **फूल चुनने लगी** ।
मन् बरात इ सदतुमानी गिरिफ़्तम् व **बरगश्तम्** ।	मैंने सौ रुपये का चैक लिया और **वापिस चला आया** ।
दर अ़हद् इ शाहरिज़ा ईरानियान् रसूम इ बद रा **बर अन्दाख़्तन्द** ।	शाहरज़ा के समय में ईरानियों ने कुप्रथाओं को **छोड़ दिया** ।
ईन् दस्तूर इ ज़बान अलान् **बर उफ़्तादः** अस्त ।	यह मुहावरा अब प्रयोग से **बहिष्कृत** है ।
बर आमदन'श् चिः ख़्वाहद बूद, ईन् हम फ़िक्र कर्दी ?	इसका **परिणाम** क्या होगा यह भी सोचा है ?
बर आमदः यि ईन् साख़्तमान ख़ेली फ़राख़माय: अस्त ।	इस भवन का **बरामदा** बहुत लम्बा चौड़ा है ।
ऊ ईन् साख़्तमान रा दू हज़ार तुमान **बर आवर्द** कर्द ।	उसने इस भवन का दो हज़ार तुमान का **तख़मीना** लगाया ।
बर बस्त इ ईन् किश्वर हमीन् अस्त ।	इस देश का **चलन** यही है ।
नै, गुर्बः अज़् शुस्तो-शूरी न मुर्द, बले मन् ऊरा चुन् **बरताफ़्तम्** ऊ मुर्द ।	नहीं, बिल्ली नहलाने धुलाने से नहीं मरी बल्कि मैंने जब उसे **निचोड़ा** तब मरी ।
सर अज़् इताअ़त इ बुज़ुर्गान् **बर ताफ़्तन्** 'ख़ूब नी'स्त ।	बड़ों की आज्ञा पालन से **मुँह मोड़ना** अच्छी बात नहीं है ।
दर ईन् **बरनामः** सुरूद इ जश्न कुजा'स्त ?	इस **कार्यक्रम** में उत्सवगीत कहाँ है ?
सरबाज़ान् इ मन् ह़मलः आवुर्दन्द व दुश्मन **बर मालीद** ।	मेरे सैनिकों ने आक्रमण किया और शत्रु **भाग गया** ।
बर्ग इ दुज़्दी हम **बरामद बूद** ?	चोरी का माल भी **मिला** ?
हमीन् ह़ाल'स्त, बख़्त बर गश्तः व **बरहनः** ख़ुशह़ाल ।	वही हाल है, कर्म फूटा हुआ और **फक्कड़पन** में ख़ुश ।
ईन् **बर गुज़ार** अज़् मन'स्त ।	यह **छोटी सी भेंट** मेरी ओर से है ।
बराय नुत्क़ कर्दन् शख़्सी रा **बर गुज़ीद** कि **बर** मजलिस जादू कर्द ।	भाषण के लिए एक ऐसा आदमी **चुना** जिसने सभा **पर** जादू कर दिया ।
लिबास इ ख़ुद रा **दर बर कुन्** ।	अपने कपड़े **पहनो** ।
बि कूशिश हा यि अक़्वाम इ मुत्तहि़दः सुल्ह **बर क़रार** शुद ।	संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयत्नों से शांति **स्थापित** हुई ।
महमान रा **बर निशानीद**, अलान् कार इ लाज़िम दारम् ।	अतिथि को **बिठाइये**, अभी मुझे आवश्यक काम है ।
ईन् कार **बर आवर** न मी नुमायद ।	यह कार्य **फलप्रद** प्रतीत नहीं होता ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बुर्दन् ।	**उठाना, ढोना, जीत कर ले जाना आदि ।**
शुतर, ख़र व गावहा बार मी **बुरन्द** ।	ऊँट, गधे और बैल बोझा **ढोते हैं** ।
बाज़ी रा किः बुर्द ?	**खेल में कौन जीता** ?
हरचिः पूलो-रख़्त दाश्तम् **बुर्दन्द** ।	जितना रुपया पैसा और सामान मेरे पास था **चोरी चला गया** ।
हनूज़ **ज़न न बुर्दी** ?	अभी तक **विवाह नहीं किया** ?
हरचिः सई़ कर्दम् **बि सर न बुर्द** ।	कितनी ही मैंने कोशिश की पर **पूरा नहीं पड़ा** ।
मन् **ऐतिक़ाद न मी बुरम्** कि तू मारा फ़रामूश कर्दी ।	मैं **विश्वास नहीं करता** कि तू हमें भूल गया होगा ।
ईन् अफ़ज़ार रा कै **बि कार मी बुरन्द** ?	इस यन्त्र का **प्रयोग** कैसे **करते** हैं ?
पनाह बि ख़ुदा **बिबुरीद** कि जहानपनाह ऊय'स्त ।	ईश्वर की **शरण में जाइये** क्योंकि विश्व का शरण्य वही है ।
दानिशगाह इ तेहरान अज़् दानिशगाह इ पह्लवी **पीश बुर्द** ।	तेहरान विश्वविद्यालय पहलवी विश्वविद्यालय से **जीत गया** ।
बाद अज़् आज़ादी शुमा चिः कारी **अज़् पीश बुर्दः ईद** ?	स्वतन्त्रता के पश्चात् आपने क्या **उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं** ।
ऊ बि मालूमात इ दूस्त इ ख़ुद **हसद मी बुरद** ।	वह अपने मित्र की योग्यता से **ईर्ष्या करता है** ।
बि मोक़अ़ यि शब महसूरीन् बर मुहासिरीन् **हमलः बुर्दन्द** ।	रात के समय में घिरे हुओं ने घेरेवालों पर **आक्रमण किया** ।
दरख़ुर्दीय'त् तुरा **राह बुर्दम्** ।	तेरी शैशवावस्था में मैंने तुझे **चलना सिखाया** ।
बा फ़ुरूमायः **रूज़गार म बुर** ।	नीचों के साथ **कालयापन मत कर** ।
गुमान म बुर कि हर बीशः अज़् शीर ख़ाली'स्त ।	यह **मत सोच** कि प्रत्येक वन सिंहों से खाली है ।
शर्त इ इन्साफ़ न बाशद कि तू **फ़रमान न बुरी** ।	यह न्याय नहीं है कि तू **आज्ञा पालन न करे** ।
नामबुर्दः अबयात रा तफ़सीर कुनीद ।	**पूर्वोल्लिखित** छन्दों की व्याख्या कीजिये ।
बाद अज़् मर्ग इ पिदर पिसरान'श् हर चीज़ रा **ख़ुर्द-बुर्द** कर्दन्द ।	पिता की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों ने हर चीज़ **नष्ट-भ्रष्ट** कर दी ।
दिल बुर्दः रा अहवाल चिः मी पुर्सी !	**जिसका दिल लुट गया हो** उसके हाल क्या पूछते हो !
दिल इ मन् तू **बुर्दी, दिलबर** इ मन तू ई ।	मेरा चित तूने **चुराया है,** मेरा **चितचोर** तू है ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बूदन् ।

ख़ुदा बूद, हस्त व ख़्वाहद बूद ।

ह़ाल

ऊ बुवद, ऊ ह़स्त, ऊ'स्त — ऐशान् बुवन्द, ह़स्तन्द

तू बुवी, तू ह़स्ती, तू' ई — शुमा बुवीद, ह़स्तीद

मन् बुवम्, मन् ह़स्तम्, मन'म् — मा बुवीम, ह़स्तीम

माज़ी

ऊ बूद — ऐशान् बूदन्द

तू बूदी — शुमा बूदीद

मन् बूदम् — मा बूदीम

ऊ बूदः अस्त — ऐशान् बूदः अन्द

तू बूदः यी — शुमा बूदः ईद

मन् बूदः अम् — मा बूदः ईम्

मुस्तक़बिल

ऊ ख़्वाहद बूद — ऐशान् ख़्वाहन्द बूद

तू ख़्वाही बूद — शुमा ख़्वाहीद बूद

मन् ख़्वाहम् बूद — मा ख़्वाहीम बूद

सीग़ः यि इस्म इ फ़ैल

बूदनी कार बूद

इमकानी

अगर ऊ बूदे — अगर ऐशान् बूदन्द

अगर तू बूदी — अगर शुमा बूदीद

अगर मन् बूदमे — अगर मा बूदीम

बूदो बाश

बूदो नाबूद

नी'स्तो-नाबूद

बूदिश

होना (संस्कृत-भू धातु) ।

ईश्वर था, है और रहेगा ।

वर्तमान

वह होता है, वह है — वे होते हैं–हैं

तू होता है, तू है — तुम होते हो–हो

मैं होता हूँ, मैं हूँ — हम होते हैं–हैं

भूतकाल

वह था (थी) — वे थे (थीं)

तू था–थी — तुम थे–थीं

मैं था–थी — हम थे–थीं

वह हो चुका है — वे हो चुके हैं

तू हो चुका है — तुम हो चुके हो

मैं हो चुका हूँ — हम हो चुके हैं

भविष्यत्

वह होगा–होगी — वे होंगे–होंगी

तू होगा–होगी — तुम होगे–होगी

मैं होऊँगा–होऊँगी — हम होंगे–होंगी

कृत्यप्रत्यय – अनीयर्

होने वाली बात होकर रही

हेतुहेतुमद्भूत

यदि वह होता — यदि वे होते

यदि तू होता — यदि तुम होते

यदि मैं होता — यदि हम होते

ठौर ठिकाना

भाव और अभाव

न है और न था

सत्ता, अस्तित्व, हस्ती

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बिहम ।

ईन् दू **बिहम न मी ख़ुरन्द** ।

ज़र्फ़ हा **बिहम ख़ुर्दो**-शिकस्त ।

ईन् दू रंग **बिहम न मी ग्रायद** ।

सूराख़'श् **बिहम ग्रामद** ।

दिल'श् **बिहम बर ग्रामद** ।

गुर्बः रा मन् **बिहम पीचीदम** व ऊ मुर्द ।

दर दौरान इ गुफ़्तो-गू ईन् हम **बिहम पैवस्त** ।

दर ज़ियारतगाह ख़ेली शुलूक़ बूद, हमः **बिहम ग्रामीख़्त** ।

दर फ़स्ल इ ज़मिस्तान मीवः **बिहम न मी रसद** ।

पादशाह मजलिस इ अयान रा **बिहम ज़द** ।

आतिश रा **बिहम ज़न्** ।

ऊ ईन् थ्सरवत रा अज़् कुजा **बिहम ज़द** ।

बीस्त साल बाद बा पिसर'श् **बिहम शुद** ।

रईस इ इदारः **बिहम ख़ुर्दः** अस्त ।

बिहम ख़ुर्दगीय'श् सियासी हस्त ।

दिल'म् नीज़ **बिहम मी ख़ुरद** ।

बिहम=परस्पर, एक दूसरे के विपरीत (यह बिहम बाहम से भिन्न है और प्रतिपर्यायार्थक है)

शिकस्त=टूट गये

गुफ़्तो-गू=बातचीत, वार्तालाप

ज़ियारतगाह=तीर्थस्थान

एक दूसरे के मुकाबले में, परस्पर विरुद्ध ।

ये दोनों **एक जोड़ के नहीं हैं** ।

बरतन **टकरा गये** और टूट गये ।

इन दोनों रंगों का **मेल नहीं मिलता** ।

उसका घाव **भर ग्राया** ।

उसका दिल **भर ग्राया** ।

बिल्ली को मैंने **निचोड़ा** तो वह मर गयी ।

वार्तालाप के बीच में यह और **जोड़ दिया** ।

तीर्थस्थान में बहुत भीड़ थी, सब **गड्डमड्ड हो गये** ।

हेमन्त की ऋतु में फल **उपलब्ध नहीं होते** ।

राजा ने सामन्त सभा को **भंग कर दिया** ।

आँच **कुरेद दे** ।

उसने यह वैभव कहाँ से **प्राप्त किया** ।

बीस वर्ष बाद अपने पुत्र से **मिला** ।

आफ़िस मैनेजर **बीमार** है ।

उसकी बीमारी राजनैतिक **है** ।

मेरा भी जी **घबरा रहा** है ।

शुलूक़=भीड़-भाड़, भीड़-भड़क्का

मजलिस इ अयान=सामन्त सभा

थ्सरवत=वैभव

रईस इ इदारः=विभागाध्यक्ष, मैनेजर

सियासी=राजनैतिक

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बि ।	**'वि' (उपसर्ग) तथा 'अभि' (कर्मप्रवचनीया)**
इजाज़: बिदिहीद कि **बिरवम्**	आज्ञा दीजिए कि **मैं जाऊँ ।**
अगर **बिरवम्** माज़ूर दारीद ।	यदि **मैं चला जाऊँ** तो क्षमा कीजियेगा ।
ख़ुदा हाफ़िज़, **बुरौ** ।	परमात्मा तेरी रक्षा करे । **जाओ !**
बिबीन् आफ़ताब तुलूअ़ कर्द ।	**देख** ! सूरज निकल आया ।
पिदर'म् **बिरफ़्त** व हनूज़ बाज़ पस नयामद ।	पिताजी **चले गये** और आज तक वापस नहीं लौटे ।
हरचि: बाक़ी बूद **बि मन्** दाद ।	जो कुछ बचा था वह **मुझको** दे दिया ।
बि ऊ बिगू बियायद ।	**उससे** कहो कि आ जाय ।
ईन् पारच: **निस्बत बि** पारच: यि दीगर विह्तर अस्त ।	यह कपड़ा दूसरे कपड़े **की अपेक्षा** ज्यादा अच्छा है ।
निस्बत बि दीगरान् चि: तसमीमी गिरिफ़्तीद?	दूसरों **के विषय में** आपने क्या निर्णय किया ?
यकरूज़ **बिदू** (बि+ऊ) गुफ़्त कि.... ।	एक दिन **उससे** कहा कि.... ।
....**बिदैशान्** (बि+ऐशान्) नाराहती रसीदम् ।	....**उनसे** मुझे कष्ट पहुँचा है ।
बिदान् (बि+आन्) गुफ़्त कि.... ।	**उससे** कहा कि.... ।
बिदीन् (बि+ईन्) कार फ़ायद: नी'स्त ।	**इस बात से** कोई लाभ नहीं है ।
बि साअ़त इ मन् पंज दक़ीक़: बि पंज अस्त ।	मेरी **घड़ी के अनुसार** पाँच बजने में पाँच मिनट हैं ।
रूज़ बि रूज़ फ़रब: बूद ।	**दिन प्रतिदिन** मुटाता गया ।
बि ख़ुदा क़सम मी ख़ुरम् ।	**भगवान् की** क़सम खाता हूँ ।
बि नाम इ ख़ुदावन्द इ जानो-ख़िरद ।	प्राण और बुद्धि के स्वामी (परमात्मा) का **नाम लेकर ।**
अ़दद इ हश्त रा **बि दू** तक़सीम कुनीद ।	संख्या आठ को **दो से** भाग दो ।
बि मोक़अ़ आमदीद ।	(आप) **ठीक समय पर** आये ।
बि मन् निगाह कुन् ।	**मेरी ओर** देख ।

१-२-३-४-५ में वि का प्रयोग क्रिया के पूर्व हुआ है । यह संस्कृत के 'वि' उपसर्ग जैसा है । आदेशवाचक (लोट् लकार) में तथा विधिलिङ् में इसका प्रयोग होता है । भूतकाल में 'वि' का प्रयोग ज़ोर देने के लिए होता है ।

प्रातिपदिकों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) में बि का प्रयोग संस्कृत के अभि (कर्मप्रवचनीया) के समान होता है ।

तसमीम=निर्णय

नाराहती=कष्ट

दक़ीक़:=मिनट

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बा (१)

बा मन् क़दम बिज़न्।

बा दस्त ꜰ ख़ुद'त् बिख़ुर।

पादशाह **बा दुश्मन** ꜰ सावरू जंगीद।

बा हमः महारत'श् न तवानिस्त विसाज़द।

बा ऊ हस्ती या बर अ़लैहि ऊ ?

साथ।

मेरे साथ चल।

अपने **हाथ से** खा।

राजा एक प्रबल **शत्रु से** लड़ा।

अपनी **पूरी योग्यता के साथ** भी उसे बना नहीं सका।

(तू) **उसके साथ है** या उसके विरुद्ध है ?

बा (२)

फ़िरदौसी शायरी **बा अज़मत** बूदः अस्त।

भोज पादशाही **बा इल्म** बूद।

युक्त, सहित, सम्पन्न (२)

फ़िरदौसी **महानता से युक्त** एक कवि हुआ है।

भोज राजा एक **विद्या सम्पन्न** राजा था।

बा (३)

दुज़्दान् ऊरा **बा तनाब** खफ़: कर्दन्द।

ईन् दानिशआ़मूज़ **बा मिदाद** ईन् शक्ल कशीद।

के द्वारा (३)

डाकुओं ने उसका **रस्सी से** गला घोंट दिया।

इस विद्यार्थी ने **पेन्सिल से** यह चित्र बनाया है।

बा (४)

बावुजूद ꜰ शुस्तो-शू बिस्यार ज़ंगी फ़िरंगी न बूद।

बा हमः ज़हमात'श् मुवफ़्फ़िक़ न शुद।

बा आन् कि मा दर किश्वरहा ꜰि मुख़्तलिफ़ ज़िन्दगी मी कुनीम।

आलमान **बा शरायत** ꜰ **नामुसाइद** सुल्ह पिज़ीरफ़्त।

तथापि (४)

बहुत नहलाने धुलाने **के बाद भी** ज़ंजीबार वासी फिरंगी नहीं हुआ।

अपने **सारे** श्रम के **उपरान्त भी** सफल नहीं हुआ।

यद्यपि हम विभिन्न देशों में रहते हैं।

जर्मनी ने **प्रतिकूल शर्तों पर भी** सन्धि स्वीकार की।

बा (५)

दू सरबाज़ान् **बा यकी** दूर अज़् इन्साफ़ अस्त।

मुकाबिले (५)

दो के **मुक़ाबिले** एक सिपाही न्यायविरुद्ध है।

बा (६)

बा पन्ज तुमान मी तवान ईन् रा ख़रीद।

बा लिबास ꜰ **सियाह** आन् जा रफ़्त।

में (६)

पाँच तुमान में यह ख़रीदी जा सकती है।

काले कपड़ों में वहाँ गया।

बा (७)

बी अदब बी नसीब, **बा अदब बा नसीब**।

वाला, वान् (७)

शिष्टाचार हीन भाग्यहीन होता है, **शिष्टाचार वाला भाग्यवान् होता है**।

ज़ंगी=ज़ंजीबार का निवासी अर्थात् हब्शी

फ़िरंगी=फ्रांसदेश का वासी अर्थात् गोरा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बी (१)

बीरफ़्तन् इ मन् कार वि सर न मी बुरद ।

बी मुर्दन् इ खुद जन्नत निशान न मी दिहद ।

बी (२)

बीपूल रा कसी न मी ख़्वाहद ह़ाल पुर्सीद ।

क़ाज़ी रा **बी तरफ़** बायद बूद ।

बी सब्री सूदी न दारद ।

इ़ल्म **बी अ़मल** बीमानी अस्त ।

मुद्दई़ **बी इलाक़ः** व गवाह पुरजूश ।

साख़्तमानहा यि **बी इजाज़ः** रा शिकस्तन्द ।

वसी **बी आबरूयी** दीदन्दो-विदर आमदन्द ।

अवलह इ **बीकल्लः** अस्त ।

ऊरा **बीहूश कर्दः** शुरूअ़ बि अ़मल कर्दन्द ।

दर तरबियत इ नासज़ायान् **बीहूदः** कुशिश मी कुनीद ।

ज़न इ **बीनमाज़** न मी तवानद नमाज़ बिख़्वान्द ।

ईन् ह़र्फ़ ईन् जा **बीमौरिद** अस्त ।

निस्बत वि ऊ **बीमैल** बूद ।

क़हवाख़ानः इस्म **बीमुसम्मा** अस्त, चुन् कि आन् जा चाय मी फ़ुरूशन्द ।

वीम आन् मी रवद कि **बीचारगान्** हनूज **बीचारगान'न्द** ।

बी ज़हमत दर रा बिबन्दीद ।

ईन् कफ़्श **बीदवाम** अस्त अगरचिः अरज़ान'स्त ।

जा यि **बीगानः** बूद पस बीख़्वाबी कशीदम् ।

विना ।

मेरे **विना गये** काम पूरा नहीं होगा ।

अपने **मरे विना** स्वर्ग नहीं दिखता ।

निर्, निस्, अ

निर्धन का हाल कोई नहीं पूछता ।

क़ाज़ी को **निष्पक्ष** होना चाहिए ।

अधैर्य से कोई लाभ नहीं होता ।

आचरण रहित ज्ञान निरर्थक है ।

मुद्दई **सुस्त** और गवाह चुस्त ।

अनधिकृत भवन तोड़ दिये गये ।

वहुत **अपमानपूर्वक** निकाले गये ।

निर्बुद्धि मूर्ख है ।

उसको **मूर्च्छित करके** आपरेशन किया ।

(आप) अयोग्यों को शिक्षा देने की **निरर्थक** चेष्टा कर रहे हैं ।

ऋतुमती (मासिक धर्मवाली) स्त्री नमाज़ नहीं पढ़ सकती ।

यह शब्द यहाँ **अनुपयुक्त** है ।

उससे अनिच्छापूर्वक **बेमेल** विवाह हुआ ।

क़हवाख़ाना **अयुक्त नाम** है क्योंकि वहाँ तो चाय बिकती है ।

ख़तरा यह है कि **निरुपाय** आज भी **निरुपाय** हैं ।

(यदि आपको) **कष्ट न हो तो** द्वार बन्द कर दीजिये ।

यह जूता **कम चलने वाला** है, यद्यपि सस्ता है।

स्थान **अपरिचित** था सो मैं जागता रहा ।

ह़ाल पुर्सीदन्=हाल पूछना

वायद बूद=होना चाहिये

मुद्दई़=वादी

बि अ़मल=आपरेशन

तरबियत=शिक्षा

नासज़ायान्=अयोग्यों को

निस्बत-=विवाह, सम्बन्ध

बीम=भय, ख़तरा (संस्कृत-भी, भयम्)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

पा ।

दू पा दराज़ी यि ईन् तख़्त: अस्त ।
दलील'श् **बी पा** अस्त ।
चुन् हर कसी दिहात रा हिश्त रूस्ताई **अज़् पा दर आमद ।**
ईन् यक क़लम **बि पा** यि बिरादर'म् हिसाब कुनीद ।
यक पा यि **बदी** बराय दूस्त'म् उफ़्ताद ।
हर कसी कि **पा** यि **दूस्तान् रा ख़ुरद** ख़्वार मी शवद ।
ईन् बर आवर्द **अज़् सर ता पा** ग़लत अस्त ।

चारपायी बरू किताबी चन्द ।

रद्द इ **पा** यि शीर दीदो-बर मालीद ।
कफ़्श इ ख़ुद रा **पा कुन्** ।
पा शौ, बुरौ मद्रिस: ।
इमरूज़ सुब्ह् शुमा चि: साअ़ती **पा शुदीद** ?
चुन् जायी याफ़्त **पा दराज़ी** आग़ाज़ कर्द ।

बि क़द्र इ गिलीम'त् **पा दराज़ कुन्** ।
हीच कस् **न मी तवानद** आन् जा **पा गुज़ाश्त** ।
इंगलिसी दर मामलात इ हिन्द **पा मियान गुज़ाश्तन्** शुरूअ़ कर्दन्द ।
बराय हर शख़्सी यक मर्तब: **यकपायी मी दिहद** ।
दर अ़ह्द इ शाहजहान इमारतहा यि बुज़ुर्ग रा **बर पा कर्दन्द** ।
ऊ बि चर्बगूयी **पापूश** बराय इ मन् **दुरुस्त कर्द**।

ईन् रस्म रा कै **बर पा कर्द** ?

हिश्त=छोड़ दिया (संस्कृत-ओ हाक् त्यागे)
रूस्तायी=ग्रामीण

पैर, फ़ुट का नाप ।

इस तख़्ते की लम्बाई **दो फ़ुट** है ।
उसके तर्क **निराधार** हैं ।
जब हर किसी ने गाँव छोड़ दिया तो ग्रामीण **निस्सम्बल हो गया ।**
यह रक़म मेरे भाई **के नाम पर** डाल दीजिये ।

मेरे मित्र के साथ **एक दुर्घटना** हो गई ।
जो कोई **मित्रों के साथ धोखा करता है** वह ख़्वार होता है ।
यह तख़मीना **ऊपर से लेकर नीचे तक** ग़लत है ।
(वह) **ऐसा पशु** है, जिस पर कुछ पुस्तकें लदी हैं ।
शेर के **चरणचिह्न** देखे और भाग खड़ा हुआ ।
अपने जूते **पहनो** ।
खड़े होओ और विद्यालय चलो ।
आज सवेरे आप कितने बजे **उठे थे** ?
जब एक जगह मिल गयी तो **पैर फैलाना** शुरू कर दिया ।
अपने कम्बल के अनुसार **पैर फैलाओ** ।
कोई भी वहाँ **पैर नहीं रख सकता** ।
अंग्रेज़ों ने भारत के मामलों में **पैर घुसेड़ना** शुरू कर दिया ।
हर व्यक्ति को एक बार **एक अवसर दिया जाता है** ।
शाहजहान के समय में बड़ी-बड़ी इमारतें **बनाई गयीं** ।
उसने अपने मिठबोलेपन से मुझे **संकट में फँसा दिया** ।
यह प्रथा कैसे **पड़ गयी** ?

यक क़लम=एक खाते की रक़म, किसी के खाते में वसूल करने के लिये डाली गयी रक़म

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

पाक ।	**पवित्र, बिलकुल** ।
ईन् बुशक़ाब रा **पाक** कुन् ।	इस प्लेट को **साफ़** करो ।
ख़ियांलात इ क़ल्ब'श् **पाक** अस्त ।	उसके हृदय के विचार **पवित्र** हैं ।
ध्साबित शुद कि ऊ **पाक** बूद ।	सिद्ध हो गया कि वह **निरपराध** था ।
ऊ **पाक** दीवानः अस्त ।	वह **बिलकुल** पागल है ।
ख़त्त् इ ख़ुद'श् **पाक कर्द** ।	अपने स्वयं के लिखे को **मिटा दिया** ।
मन् **दैन** इ ख़ुद रा पाक कर्दम् ।	मैंने अपनी **देनदारी चुका दी** हैं ।
बर इ शाहराह् **बीनी पाक** म कुनीद ।	सड़क पर **नाक साफ़** मत कीजिये ।
बच्चः हा रा **पाक व पाकीज़ः** दाश्तन् कार इ बुज़ुर्गान् अस्त ।	बच्चों को **साफ़ सुथरा** रखना बड़ों का काम है ।
युधिष्ठिर **पाक बाज़** बूद ।	युधिष्ठिर **सर्वस्व दाँव पर लगाने वाला जुआरी** था ।
पाकदामनी यि सीता मशहूर अस्त ।	सीता की **पवित्रता** प्रसिद्ध है ।
अगर **पाकलिबास** नेई **पाकदिल** बाश ।	यदि **शुद्ध कपड़े वाला** न हो तो **शुद्ध हृदय वाला** हो ।
रुस्तम पहलवान् इ **पाकज़ाद** बूद ।	रुस्तम **कुलीन** मल्ल था ।
पाकनिहादी निस्बत वि पाकनिश्ज़ादी बिह्'स्त ।	ऊँचे कुल में जन्म लेने वाले एक आदमी से **एक भला आदमी** होना अच्छा है ।
मनीश्ज़ः दुख़्तर इ **पाकरू** बूद ।	मनीश्ज़ा (मनीषा) **सुन्दरी** कन्या थी ।
मन् मिदाद दारम्, **पाककुन्** न दारम् ।	मेरे पास पेन्सिल है, **रबर** नहीं है ।
क़ह्रमानान् इ शाहनामः हमः **पाकसिरिश्त** अन्द ।	शाहनामा के समस्त नायक **कुलीन वंश** के हैं ।
पाकिस्तानियान् व हिन्दुस्तानियान् अज़् यक निश्ज़ाद अन्द ।	**पाकिस्तानी** और हिन्दुस्तानी एक वंश के हैं ।
मन् **तर्जुमः** यि **पाकीज़ः** यि शाहनामः मी कुनम् ।	मैं शाहनामे का **शुद्ध अनुवाद** कर रहा हूँ ।
दरवीश रा **पाकरौ** बायद बूद ।	साधु को **सच्चरित्र** होना चाहिए ।
ऊ **पाकदिल** नी'स्त वले **पाकदहन** अस्त ।	उसका **दिल** तो **साफ़** नहीं है किन्तु **बोलने में अच्छा** है ।

क़ल्ब=हृदय
ध्साबित=सिद्ध
दैन=ऋण, देनदारी
बीनी=नाक
क़ह्रमानान्=नायकों
निश्ज़ाद=वंश
तर्जुमः=अनुवाद

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

पीश ।	**सम्मुख, समक्ष, आगे, पूर्व, पूर्ववर्ती ।**
दर पीश ᵢ आ़लिमान् रफ़्तो-पुर्सीद ।	विद्वानों **के समक्ष** गया और पूछा ।
क़ुशून **पीश रफ़्तन्द** व ह़मलः आवुर्दन्द ।	फ़ौजें **आगे बढ़ीं** और आक्रमण किया ।
अज़् ईन् पीश शुमा रा न दीदः बूदम् ।	**इसके पूर्व** आपको नहीं देखा ।
मन् पूल'श् रा **पीश दादम्** ।	मैंने उसको **पेशगी** दी ।
क़द्री बिरवीद **पीश** ।	थोड़ा **आगे** सरकिये ।
शब पीश बर्फ़ बारीद ।	**पिछली रात** को बर्फ़ पड़ी ।
मर्दुमान् ᵢ **पीश रा** राहो-रविश दीगर बूद ।	**पुराने लोगों** की चाल-ढाल और थी ।
चिः वाक़अः **पीश आमदः अस्त** ?	क्या **हुआ** ?
दलीली **पीश** ᵢ **शुमा** आवुर्दः अम् ।	एक तर्क **आपकी सेवा में** लाया हूँ ।
पिदर'श् मुर्द पस **पीश** ᵢ **ख़ुद** तह़सील मी कर्द ।	उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी अतः **स्वयं ही** पढ़ाई की ।
मसलः मुहिम्म बूद पस ख़ेली **पसो-पीश** कर्द ।	समस्या बड़ी थी अतः बड़े **असमंजस** में पड़ गया ।
पिसर ᵢ ख़ुद रा **पीश** ᵢ **मन्** बिगुज़ार ।	अपने पुत्र को **मेरे पास** छोड़ जाओ ।
गुर्बः रा **पीश कुन्** ।	बिल्ली को **भगाओ** ।
वक़्त ᵢ नाहार यक **पीशअन्दाज़** बर ज़ानू बायद गुज़ाश्त ।	भोजन के समय एक **नैपकिन** टाँगों पर रख लेना चाहिये ।
ऊ **पीशअन्दीश** न बूद पस शिकस्त ख़ुर्द ।	वह **अग्रिम सोची** नहीं था इसलिए हार गया ।
तक़्दीम ᵢ तर्जुमः रा **दर पीशगाह** ᵢ आला ह़ज़रत आवुर्दम् ।	अनुवाद के समर्पण को मैंने सम्राट् **की सेवा में** उपस्थित किया ।
हर कि **पीशइमाम** कर्द जमात ऊरा मुकर्रर कर्द ।	जो कुछ **पेश इमाम** ने किया जमात ने उसको दुहराया ।
पीशनिहादी अज़् वज़ीर रसीदः शुद ।	**एक प्रस्ताव** मंत्री महोदय की ओर से आया है ।
ईन् कार **पीश** ᵢ **अहाली** कारी न दारद ।	यह काम **ग्रामीणों के लिये** बहुत सामान्य है ।
पीशवा रा पुर्सीदन्द कि निशान ᵢ मंज़िल ᵢ मक़सद कुजा'स्त ।	**नेता** से पूछा कि अभीष्ट गन्तव्य का पता कहाँ है ।

क़ुशून=सेना, सेनाएँ
पूल=धन
क़द्री=ज़रा सा, थोड़ा सा

राहो-रविश=चाल-ढाल
तह़सील=शिक्षाप्राप्ति
मुहिम (मुहिम्म)=बड़ा, बड़ी (संस्कृत-महिम्न)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ता ।	**तक** (संस्कृत-तावान्, तावत्)
अज़् सुब्ह् **ता ज़ुह्र** ज़हमत कशीद ।	सुबह से लेकर **दोपहर तक** कड़ा परिश्रम किया ।
अज़् शीराज़ **ता तबरीज़** मुसाफ़िरत कर्द ।	शीराज से **तबरीज़ तक** की यात्रा की ।
ता बि ह़ाल चहार मर्तबः ऊरा मुलाक़ात कर्दः अम् ।	**अब तक** उससे चार बार मिला हूँ ।
ता बि ह़ाल न शुनीदः अम् कि ऊ शिकायती दारद ।	**आज तक** नहीं सुना कि उसे कोई शिकायत है।
ता ह़द्दी रास्त अस्त ।	**कुछ अंशों तक** ठीक है ।
ता ईन् दरजः ख़्वाहद रफ़्त न दानिस्तम् ।	**इस सीमा तक** पहुँचेगा, मैं नहीं जानता था ।
ता बि कै गिरियः मी कुनीद ?	**कब तक** रोओगे ?
ता चन्द बाज़ार इ सितम गर्म मी बाशद ?	**कब तक** अत्याचार चलते रहेंगे ?
आब न मी तवानद पायीन कुनद **ता चिः रसद** बि ग़िज़ा ?	पानी **तक** तो गले के नीचे उतार नहीं सकता खाने की **क्या चले** ?
ता अबद नाम इ गान्धी पायिन्दः बाशद ।	**सर्वदा** गांधी का नाम स्थिर रहेगा ।
ता पंज दक़ीक़ः दीगर सब्र कुन् मन् हम बा तू मी रवम् ।	**पाँच मिनट तक** और ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ ।
ता मोक़अ़ (या 'वक़्ती') कि ह़ालत इ रूस्तगान् मुबद्दिल न मी शवद ।	**जब तक** कि ग्रामीणों की स्थिति नहीं बदलती ।
ता मी तवानी दस्तगीरी यि बीचारगान् कुन् ।	**जहाँ तक हो सके** असहायों की सहायता कर ।
ता मरा दीद पिनहान शुद ।	**जैसे ही मुझे देखा** छुप गया ।
ता तुरा दीदम्, ऐ! निगार इ अ़ज़ीज़ ।	**जब से मैंने**, हे ! सुन्दरी प्रिये ! **तुझे देखा है** ।
अला ता ! नश्नवी मद्ह़् ई सुख़ुनगूय ।	**सावधान !** चारणों के प्रशस्ति पाठ पर ध्यान मत देना ।
इन्तज़ार मी कुनीम **ता चिः पीश आयद !**	प्रतीक्षा करें, **देखें तो आगे क्या होता है !**
ता बिबीनम् वले कार मुश्किल अस्त ।	**देखूँगा** (कि क्या हो सकता है) पर काम मुश्किल है ।
दस्तमाल इ मन् **ता न दारद** ।	मेरा रूमाल **तह किया हुआ नहीं है** ।
दह़ो-दू **चन्द ता** अस्त ?	दस और दो **कित्ते** हुए ?

पायीन कर्दन्=गले के नीचे उतारना, पीना
मुबद्दिल=परिवर्तित, बदली हुई
दस्तगीरी=सहायता (हाथ पकड़ना-शब्दार्थ)
निगार=चित्र (चित्र के समान अर्थात् सुन्दरी)
अ़ज़ीज़=प्रिय, प्रिया

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

तर (१)	तर=गीला-ताज़ा (१)
क़ूदक रा दर बरकर्दम् कि लिबास'म् **तर कर्द**।	बच्चे को गोद में लिया ही था कि उसने **मेरे** कपड़े **तर कर दिये**।
चाये गुलिस्तान बिख़ुरीद व **तरो-ताज़ः** बिशवीद।	गुलिस्तान की चाय पीजिये और **तरोताज़ा** होइए।
तरदामनी यि रिन्द म वीन्।	शराबी की **तरदामनी** मत देख।
अज़् दीर आमदः ईद, क़द्री **तरदहन बिकुनीद**।	बहुत देर से आये हुए हैं कुछ **जलपान कर लीजिये**।
ईन् दुनिया'स्त, ईन् जा **तरो-ख़ुश्क** बाहम मी सूज़द।	यह संसार है, यहाँ **गीला-सूखा** सब जलता है।
तर (२)	तर=तरप् प्रत्यय (२)
ईन् दिरख़्त **बुलन्दतर** अज़् आन् यकी अस्त।	यह पेड़ उस पेड़ से **अधिक ऊँचा** है।
पिसर'त् ख़ूब अस्त व दुख़्तर'त् **ख़ूबतर** अस्त।	तुम्हारा पुत्र अच्छा है और लड़की **और भी अच्छी** है।
ह़र्फ़ इ **ख़ूबतरीन** अलान् बर उफ़्तादः अस्त।	**ख़ूबतरीन** शब्द आजकल प्रयोग से बहिष्कृत है।
ईन् बिह'स्त, ऊ **बिहतर**'स्त व आन् **बिहतरीन**'स्त।	यह अच्छा है, वह **और भी** अच्छा है और वह **सबसे अच्छा** है।
बिहतरीन व बिहीन यकमाना दारद।	**बिहतरीन** और बिहीन का एक ही अर्थ है।
जायी दीदम् कि **नीकूतर** अज़् हर जाय बूद।	एक ऐसा स्थान देखा जो **हर** जगह से **अच्छा** था।
क़न्द अज़् पीश कम बूद, चुन् महमान रसीदन्द **कमतर आमद**।	मिश्री पहले से ही कम थी जब महमान आगये तो **और भी कम पड़ गयी**।
किहतरो-मिहतर हमः अज़् .हुक्म इ ऊ'स्त।	**छोटे-बड़े** सब उसी (प्रभु) की आज्ञा से हैं।
सिन इ ऊ अज़् सिन इ मन् **कमतर** अस्त।	उसकी आयु मेरी आयु से **कम** है।
कमतरीन ऐतनायी बि ऊ न कर्दन्द।	**ज़रा सा भी** ध्यान उसकी ओर नहीं दिया गया।
सादी यकी अज़् **बुज़ुर्गतरीन** शुअ़रा यि ईरान अस्त।	सादी ईरान के **महानतम** कवियों में से हैं।
तर (३)	तर=कुशलार्थक (३)
ईन् मेअ़मार ख़ेली **तरदस्त** अस्त।	यह वास्तुविद् अत्यन्त **सिद्धहस्त** है।
तरदस्ती यि कार अज़् ज़ह़मत मी आयद।	**कार्यकुशलता** परिश्रम से आती है।
तरज़बानिय'म् म नुमा।	मुझको अपनी **वाग्मिता** मत दिखा।

सूज़न्द=('सूज़द' क्रिया का बहुवचन) जलते हैं
दिरख़्त=वृक्ष, पेड़ (वृक्ष-बिरख़्त-दिरख़्त)
बिहीन=सबसे अच्छा (संस्कृत में 'अधि' से अधीन बनता है। प्राचीन भाषा में अभि से अभीन बना होगा, उसका रूप बिगड़कर अभीन-भीन-बिहीन बना है।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

तमाम।	**पूरा, समाप्त, पक्का।**
ख़ानः तक़रीबन् **तमाम** अस्त।	घर लगभग **पूरा हो चुका** है।
'वक़्त **तमाम** अस्त'—मुम्तहिन गुफ़्त।	परीक्षक ने कहा – 'समय **समाप्त** हुआ'।
कार'म् रा **तमाम कर्दम्**।	मैंने अपना काम **पूरा कर दिया**।
दू सिह चहार पंज वग़ैरः **अ़दद ड़ तमाम** अस्त।	दो-तीन-चार-पाँच आदि **पूर्ण संख्याएँ** हैं।
ऊ दैन ड़ ख़ुद रा **तमाम व कामिल** परदाख़्त।	उसने अपनी **पूरी-पूरी** देनदारी चुका दी।
बि ज़ूदी **हर चिः तमाम** कार परदाज़ीद।	**जितनी** जल्दी **हो सके** काम पूरा कर दो।
दर आसमान **माह ड़ तमाम** रख़्शीदः बूद।	आकाश में **पूरा चाँद** चमक रहा था।
बि साअ़त ड़ चहार तमाम दर पीशगाह ड़ शुमा मी आयम्।	**ठीक चार बजे** आपकी सेवा में पहुँच जाऊँगा।
माल ड़ पिदर रा **तमाम कर्द**।	बाप का **माल उड़ा दिया**।
ईन् पिसर कि न मद्रसः मी रवद न कार मी कुनद **मरा तमाम कर्द**।	इस लड़के ने, जो न पढ़ने जाता है, न काम करता है, **मेरे प्राण खा लिये**।
कार रा किः कर्द, आन् कि **तमाम कर्द**।	काम किया किसने कि **अख़ीर में हाथ लगाया** जिसने।
मरीज़ साअ़त ड़ सिह **तमाम कर्द**।	बीमार तीन बजे **मर गया**।
साख़्तमान ड़ राह ड़ आहन **तमाम शुद**।	रेलवे का निर्माण कार्य **पूरा हो चुका** है।
ख़ानः हज़ार तुमान बराय मन् **तमाम शुद**।	घर मेरे लिये एक हज़ार तुमान **का पड़ा**।
ईन् कलमः बराय ऊ ख़ेली **गरान् तमाम शुद**।	ये शब्द उसको **मँहगे पड़े**।
तमाम अहाली यि दिहात मौजूद बूदन्द।	गाँव के **सारे निवासी** उपस्थित थे।
दर तमाम मुद्दत ड़ इन्क़लाब क़त्रः यी ख़ून न रीख़्तन्द।	**पूरे** क्रान्ति काल में एक बूँद ख़ून की नहीं गिरी।
नुमायशी यि **तमामआहंग** दीदम् कि शौहर **तमाम कर्द** व ज़न ड़ ताज़ः बीवः सरायीद।	एक **सम्पूर्ण संगीत वाला** नाटक देखा कि पति **मर गया** और सद्योविधवा गीत गा रही थी।
लिबास ड़ **तमामरस्मी** लाज़िम अस्त।	**पूरी औपचारिक पोशाक** पहन कर आना आवश्यक है।
बिरादर श् **तमाम क़िमार बाज़** अस्त।	उसका भाई **पक्का जुआरी** है।

परदाख़्त=चुका दिया
रख़्शीदः=चमका हुआ, चमकता हुआ
किः=(उच्चारण की)=किसने, कौन ने, कौन
अहाली=निवासी जन (अह्‌ल का बहुवचन)
नुमायश=नाटक
क़िमारबाज़=जुआरी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

जा । — **संस्कृत-ज्या=भूमि-स्थान ।**

मद्रिसः **जा** यि **तह्सील** अस्त । — विद्यालय **पढ़ने की जगह** है ।

वराय महमान इ मुह्तरिम **जा बाज़ कुनीद** । — आदरणीय अतिथि के लिये **जगह ख़ाली कर दीजिये ।**

ईन् सवाल **बीजा** अस्त । — यह प्रश्न **असंगत** है ।

अकनून हीच **जा** यि **शिकायत** नी'स्त । — अब **शिकायत का कोई कारण** नहीं है ।

जा यि **बावर कर्दन्** अस्त कि दुश्मन बर अ़लैहि मा सरगर्म'स्त । — यह **विश्वास करने का आधार** है कि शत्रु हमारे विरुद्ध सक्रिय है ।

जा यि **शुमा** दर नुमायश ख़ाली बूद । — नाटक में **आपकी कमी** खटकती रही ।

पंज तुमान तमाम मी दिहम्, दीगर जा न दारद । — **पूरे पाँच रुपये** दूँगा और गुंजायश नहीं है ।

वराय क़ौम इ क़वीतर क़ौम इ कमज़ूर **जा ख़ाली मी कुनद ।** — बलवान् जाति के लिये निर्बल जाति **जगह ख़ाली कर देती है ?**

मह्मानहा रा कुजा **जा दादन्द ?** — अतिथियों को कहाँ **ठहराया गया है ?**

बुज़ो–गूस्फ़न्द रा **जा कुन्** । — भेड़-बकरियों को **बाड़े में बन्द कर दो** ।

जा यि **ख़ुद** रा बिगीरीद । — **अपना स्थान** ग्रहण कीजिये ।

अज़् ईन् जा कि आज़ादी यि मा नौ अस्त । — **क्योंकि** हमारी स्वतन्त्रता अभी नयी है ।

आन् चिः गुफ़्तीद **बि जा आवुर्दम्** । — जो आपने कहा **मैंने पूरा कर दिया** ।

चुन् कि पूल'श् गुमकर्दः याफ़्त ह़वास'श् **बि जा आमद ।** — जब उसका खोया हुआ धन मिल गया तो उसकी **जान में जान आई ।**

दिल'त् **बि जा न बाशद** ? — तेरी तबियत **ठीक नहीं है ?**

बि जा यि **पिदर'**त् आमदी ? — अपने **पिता की जगह** तू आया है ?

तमाम औलाद'श् **बि जा** रसीदन्द । — उसकी सब सन्तानें **अपने काम से** लग गयीं ।

जा अंगुश्ती यि ईन् माशीन इ तह्रीर जदीदतरीन अस्त । — इस टाइपराइटर का **की-बोर्ड** नवीनतम है ।

शख़्स इ हुनरवर्ज़ **जायी गीरद** । — गुणी व्यक्ति हर जगह अपने लिये **स्थान बना लेता है ।**

यक जा हमः जा, हमः जा हीच जा । — **एक जगह सब जगह; सब जगह कोई जगह नहीं ।**

बावर कर्दन्=विश्वास करना

न दारद=नहीं रखता, नहीं रखता है, नहीं है

क़वीतर=बलवत्तर, ज्यादा बली

गुमकर्दः=खोया हुआ

जदीदतरीन=नवीनतम

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

जान। — **प्राण, प्राण के समान प्रिय, सुख, सार।**

पाहाय'म् दीगर **जान न दारद।** — मेरे पैरों में और **जान नहीं है।**

ऐ ! **जान** इ **पिदर !** अज़् सुह़बत इ बदान् बाज़ आय। — ऐ ! **बाप की जान** (प्यारे बेटे) बुरों की संगत से बाज़ आ।

नसीह़त गूश कुन्, **जानान्।** — मेरे **प्यारे !** शिक्षा पर कान दे।

बि जान इ **ख़ुद'म्**, मन् ह़र्फ़ी न ज़दम्। — **मेरी जान** की **क़सम**, मैंने एक भी शब्द नहीं कहा।

भगतसिंह – "मीहन'म् ज़िन्दः बाद" गुफ़्त व **जान दाद।** — भगतसिंह ने – "मेरा देश जीवित रहे" – इतना कहा और **प्राण दे दिये।**

हमीन् हज़ार हा फ़िदाकारान् **जान तसलीम कर्दन्द।** — ऐसे ही हज़ारों देशभक्तों ने अपने **प्राण दे दिये।**

ऊ बर आवाज़ इ चंग **जान मी दिहद।** — वह चंग (ढप) की आवाज़ पर **जान देता है।**

लिबास इ पश्मीन दर ज़मिस्तान **जान मी दिहद।** — ऊनी कपड़े जाड़ों में **आराम देते हैं।**

ऊ अज़् सफ़र इ बियाबान **जान बि दर बुर्द।** — वह दुर्गम प्रदेश से **जीवित आ गया।**

यकी अज़् दूस्तान'म् अज़् ख़तरः **जान मुफ़्त बिदर बुर्द।** — मेरे मित्रों में से एक, **ख़तरे से बाल-बाल बचा है।**

जानबाज़ान् इ मा जान दर कफ़ निहादन्दो-जंगीदन्द। — हमारे **सैनिकों ने** जान हथेली पर रख ली और लड़ने लगे।

चुन् शुनीद कि पिसर'श् गुम शुद **जान बि लब'श्** रसीद। — जैसे ही सुना कि उसका पुत्र खो गया है, **जान उसके होठों पर** आ गयी।

बि जान व दिल ऊरा इस्तक़्बाल कर्द। — **अपने प्राण** और हृदय **से** उसका स्वागत किया।

दूस्त'म् **जानआज़ार** थ्साबित शुद। — मेरा मित्र **जी को सताने वाला** साबित हुआ।

ज़ीस्त अज़् **जानआफ़रीद** याफ़्त व हम ऊरा सिपुर्द। — जीवन **प्राणदाता** (परमात्मा) से पाया था और उसी को सौंप दिया।

चीज़ी चुन् आब **जानबख़्श** नी'स्त। — कोई चीज़ पानी की तरह **प्राणपोषक** नहीं है।

मुसाफ़िर इ गुर्सनः चुन् चीज़ी ख़ुर्द **जान अज़् सर** इ **नौ गिरिफ़्त।** — भूखे यात्री ने जब कुछ खाया-पिया तो **उसमें जान आगयी।**

जान इ **कलाम** ईन'स्त कि मन् बीगुनाह'म्। — **शब्दों का सार** यह है कि मैं निर्दोष हूँ।

चुन हवा पैमायान् ह़मलः आवुर्दन्द मा **दर जानपनाह** रफ़्तीम। — जब हवाई सेना ने आक्रमण किया तो हम **खाइयों में** चले गये।

ज़ह़मत कशान् अज़् सुब्ह़ ता शब **जान मी कन्दन्द।** — श्रमिकों ने सुबह से लेकर रात तक **जी-तोड़ परिश्रम किया।**

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

चि: ?	**क्या, कौनसा** ?
चि: मी गूयीद ?	(आप) **क्या** कह रहे हैं ?
चि: साज़ी मी तवानीद बिज़नीद ?	आप **कौनसा बाजा** बजा सकते हैं ?
न मी दानम् ऊ **चिहा** गुफ़्त ।	न जाने वह **क्या-क्या बातें** कह रहा था।
चि: मी शुद अगर क़द्री दीरतर मी रफ़्ती !	**क्या हो** जाता अगर कुछ और देर से चले जाते !
चि: फ़ायदः कि वक़्त न दारीद ।	**क्या लाभ** जबकि आपके पास समय ही नहीं है ।
चि: कार दारीद ?	आपको **क्या काम** है ?
चि: सान् वक़्त'म् गुज़श्त म पुर्स ।	**किस तरह** मेरा समय व्यतीत हुआ, मत पूछो।
चि: गून: ई ?	**कैसे** हो ?
क़ुरबान इ तू, तू **चि: तौरी** ?	मैं तुझ पर बलिहार, **तू कैसा** है ?
आन्चि: ख़्वास्त बि ऊ दादम् ।	**जो कुछ** उसने माँगा उसको दे दिया ।
चि: बिरवीद, **चि:** न रवीद फ़र्क़ न मी कुनद ।	**चाहे** जाओ, **चाहे** न जाओ; कोई अन्तर नहीं पड़ता ।
चि: बारान बाशद, **चि:** आफ़ताब ।	**चाहे** वर्षा हो, **चाहे** धूप ।
हवा यि ईन् जा **चि: ख़ुश** अस्त !	यहाँ का मौसम **कितना अच्छा** है !
चि: ज़ूद आमदीम !	हम **कितनी जल्दी** आ गये ।
दर अम्रहा यि ख़ुदा **चूनो-चिरा** कारी न दारद ।	ईश्वर के काम में–**"क्यों–कैसे"** से कोई लाभ नहीं ।
पिस्त: **चि: क़द्र** ?	पिस्ते **कैसे** दिये ?
चि: ! बीस्तो-पंज तुमान यक चिलू ! या ख़ुदा !	**क्या** ! पचीस रुपये किलो ! हे भगवान् !
काग़ज़ी न फ़िरिस्ताद, **चि:** फ़रामूश कर्द ?	एक भी पत्र नहीं भेजा, **क्या** भूल गया ?
व **हरचि:** ख़्वाही कुन् ।	और **जो भी** जी में आये वह कर ।
गर न मी कर्दम् **चि: मी कर्दम्** !	(मैं) अगर न करता **तो क्या करता** !

तवानीद बिज़नीद=बजा सकते हैं (आप)
न मी दानम्=(मैं) नहीं जानता हूँ (संस्कृत-न जानमि)
चिहा=(चि: का बहुवचन) क्या-क्या
दीरतर=ज़्यादा देर
म पुर्स=मत पूछ
ख़्वास्त=(उसने) चाहा
बिरवीद=(आप) जायें
न रवीद=(आप) न जायें
हवा=मौसम, आबहवा
अम्रहा= (अम्र का बहुवचन) काम
न मी कर्दम्=(मैं) अगर न करता

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

.हुक्म-.हुकूमत ।	**शासन, आदेश ।**
दर बांग्लादेश **.हुक्म** इ **निज़ामी** वुजूद दारद ।	बांग्ला देश में **सैनिक शासन** है ।
साहिब इ मन्सब **.हुक्म कर्द** ऐशान् रा हब्स कुनन्द ।	अधिकारी ने **आदेश दिया** कि इन्हें बन्द कर दिया जाय ।
वर नादिर **.हुक्म न तवान कर्द** ।	अपवाद पर उत्सर्ग के **नियम प्रवृत्त नहीं होते** ।
.हुक्म इ **ग़ियाबी** सादिर शुद: अस्त ।	**एक ग़लत आदेश** निकल गया है ।
.हुक्मरान हा यि विलायत आमदन्द ।	प्रान्तीय **गवर्नर** आये ।
वि **.हुक्म** इ **ज़रूरत** ख़र रा अज़ीज़ गूयन्द ।	**ज़रूरत के मारे** गधे को 'प्यारे' कहते हैं ।
.हुक्म आन् कि गुनाह'श् अव्वलीन अस्त ।	**क्योंकि** इसका पहला अपराध है ।
चहार सद **.हुक्म अन्दाज़** दाश्त ।	चार सौ **पक्के निशाने वाले तीरंदाज** रखता था ।
.हुक्म बरदार इ शुमा कुजा रफ़्त ?	आपका **सेवक** कहाँ गया ?
.हुक्म इ **कुतुबी** आवुर्द ।	**वारण्ट** लेकर आया ।
— .हुकूमत —	— हुकूमत —
.हुकूमत इ बहादुरशाह महदूद इ लालक़िला बूद ।	बहादुरशाह का **शासन** लालकिले तक सीमित था ।
भोज वि अदालत **.हुकूमत** नमूद ।	भोज ने न्यायपूर्वक **शासन** किया ।
दर सऊदी अरब **.हुकूमत** इ **मुतलिक:** वुजूद दारद ।	सऊदी अरब में **एकतंत्रीय शासन** है ।
दर हिन्द **.हुकूमत** इ **जमहूरी** वुजूद दारद ।	भारत में **लोकतंत्रीय शासन** है ।
दर दौलत इ फ़िरंग **.हुकूमत** इ **मिल्ली** वुजूद दारद ।	फ्रांस में **जनतंत्रीय शासन** है ।
मा तरफ़दार इ **.हुकूमत** इ **जमहूरी व मिल्ली** हस्तीम ।	हम **लोकतंत्रीय और जनतंत्रीय शासन पद्धति** के समर्थक हैं ।
दर रोम इ क़दीम **.हुकूमत** इ **अशराफ़** वुजूद दाश्त ।	प्राचीन रोम में **सामन्तवर्ग का शासन** था ।
मा दर शह्रहा **.हुकूमत** इ **महली** दारीम ।	हमारे नगरों में **नगरपालिका शासन** है ।
दर पाकिस्तान पंज साल पीश **.हुकूमत** इ **निज़ामी** वुजूद दाश्त ।	पाकिस्तान में पाँच वर्ष पूर्व **सैनिक शासन** था ।
दर दौलत इ हिन्द **.हुकूमत** इ **मशरूत:** वुजूद दारद ।	भारत में **संवैधानिक शासन** है ।

साहिब इ मन्सब=अधिकारी
हब्स कुनन्द=जेल में डाल दें

बर नादिर=अद्भुत या अपवाद के ऊपर
अव्वलीन=प्रथम ('अव्वल'+'ईन' प्रत्यय)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हक़ (१)	अधिकार, सत्य, पक्ष, शुल्क, कर्तव्य, न्याय।
ऊ हक़ बि ईन् मिल्क न दारद।	उसका इस सम्पत्ति पर कोई **अधिकार** नहीं है।
मन् हक़ न दारम् कि कसी रा चीज़ी दिहम्।	मुझे **अधिकार** नहीं है कि किसी को कोई चीज दे सकूँ।
आन्हा **यक हक़हाय** दारन्द कि दीगरान् न दारन्द।	उनको **कुछ विशेष अधिकार** प्राप्त हैं जो कि दूसरों को नहीं हैं।
हक़ रा न बायद पिनहान कर्द।	**सत्य** को छुपाना नहीं चाहिये।
दुआयी **दर हक़** इ **मन्** बि कुन्।	**मेरे लिये** प्रार्थना कर।
दर मोक़अ़ यि वुरूद **हक़्क़ी मी गीरन्द**।	प्रवेश के समय **कुछ शुल्क** लिया जाता है।
बाद अज़् दू साल ज़हमत **हक़्क़** मरा न दाद।	दो वर्ष पश्चात् मुझे मेरा **हक़** नहीं दिया।
हक़ इ **मन'स्त** कि मी र व म् बि दीदन् इ दूस्त इ बीमार'म्।	**मेरा कर्तव्य है** कि अपने बीमार दोस्त को देखने जाऊँ।
हक़ इ **वालदैन** रा अदा कुन्।	**माता-पिता के ऋण** से उऋण हो।
ऊ हम दर ईन् मुआमलः हक़ **मी बुरद**।	**उसका भी** इस लेन-देन में **हिस्सा है**।
दलील'त् हक़ **अस्त** !	आपका तर्क **ठीक है** !
हक़ **दारीद** आक़ा !	**आप ठीक कहते हैं** श्रीमान् !
हक़ **बा शुमा'स्त** आक़ा !	**आपका पक्ष ठीक है** श्रीमान् !
हक़ बि तरफ़ इ **शुमा'स्त** आक़ा !	**न्याय आपके पक्ष में है** श्रीमान् !
मन् बि शुमा हक़ मी दिहम्।	मेरे विचार में आपका पक्ष **ठीक** है।
हक़ इ **कसी रा** पायमाल कर्दन् ख़ूब नी'स्त।	**किसी का** हक़ मारना अच्छा नहीं है।
ऊ पा र वी यि हक़ गुज़ाश्त।	उसने **न्याय** की ओर से मुँह मोड़ लिया।
ऊ हक़ बि गर्दन'म् दारद।	उसका **अहसान** मेरी गर्दन पर है।
मन् पीशतर आमदः अम् पस हक़ इ **तक़दम** दारम्।	मैं पहले आया हूँ अतः मेरा **अधिकार पहला** है।
ऊ दर दफ़अ़ इ मीहन'श् जान दाद व हक़ **गुज़ाश्त**।	उसने स्वदेश की रक्षा में प्राण दे दिये और अपना **कर्तव्य निभा दिया**।

मिल्क=मिल्कियत
पिनहान कर्दन्=छुपाना
दुआयी=एक प्रार्थना
मोक़अ़ यि वुरूद=प्रवेश के समय
मुआमलः=लेन-देन, व्यापार
दलील=युक्ति, तर्क
पारवी=पैरवी
पीशतर=पहले
तक़दम=प्रधानता, प्रथमता
दफ़अ़=रक्षा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हक़ (२)	अधिकार, सत्य, परमात्मा, फ़ीस, भाड़ा ।
दर जमहूरिय्य: कसी हक़ इ **मख़सूस** न दारद ।	प्रजातन्त्र में किसी के **विशेष अधिकार** नहीं होते ।
हक़्क़ इ **दुख़ूल** बि इजाज़: अस्त ।	**प्रवेश का अधिकार** आज्ञा लेकर है ।
दौलत इ अमरीका व दौलत इ शौरवी हक़ इ **रद** दारन्द ।	अमरीका और रूस को **वीटो का अधिकार** है।
मशरूतिय्यत इ मा हर बालिग़ी रा हक़ इ **राय** मी दिहद ।	हमारा संविधान हर बालिग़ को **मताधिकार** प्रदान करता है ।
हक़ तआला रह़मत कुनाद ।	**परम सत्य** (परमात्मा) कृपा करे ।
हक़्क़ु'त्तालीफ़ सदी चन्द याफ़्ती ?	लेखक **धन** (रायल्टी) कितने प्रतिशत मिली?
हक़्क़ु'त्तालीम सद तुमान माहियान: क़रार दाश्तन्द ।	**ट्यूशन फ़ीस** सौ रुपये मासिक तय हुई ।
पन्ज तुमान **हक़्क़ु'थ्सब्त** दादम् ।	(मैंने) **रजिस्ट्रेशन फ़ीस** पाँच रुपये दी ।
दर ईन् अमल हज़ार तुमान **हक़्क़ु'ल् अमल** ऊरा दादन्द ।	इस लेन-देन में एक हज़ार रुपये **कमीशन** के उसको मिले ।
हक़्क़ु'ज्जह़मः इ ईन् तबीब शांज़्दह तुमान'स्त ।	इस डाक्टर की **देखने की फ़ीस** सोलह रुपये है ।
हक़्क़ु'ल् उ़बूर इ हवा पैमायी अज़् देहली ता तेहरान तक़रीबन् द हज़ार तुमान अस्त ।	दिल्ली से तेहरान तक का हवाई जहाज का **भाड़ा** लगभग दो हज़ार रुपया है ।
हक़्क़ु'ल् वुरूद इ ईन् नुमायश पन्ज तुमान अस्त ।	इस नाटक में **प्रवेश शुल्क** पाँच रुपया है ।
हक़्क़ु'स्सुकूत सद तुमान त़लबीद ।	**चुप रहने की फ़ीस** (रिश्वत) सौ रुपये माँगी।
ऊ **हक़्क़बीन**'स्त ।	वह **सत्य को देखने वाला** (मानने वाला) है ।
ऊ **हक़गू** नी'स्त ।	वह **सच्ची बात बोलनेवाला** नहीं है ।
क़ाज़ी **हक़नियूश**'स्त ।	क़ाज़ी केवल **सच्ची बात सुननेवाला** है ।
तू **हक़परस्त** बाश ।	तू **सत्य का पुजारी** हो ।
ता औलाद'त् नीज़ **हक़जू** बाशद ।	ताकि तेरी सन्तान भी **सत्यान्वेषणशील** हो ।
मन् **हक़्क़** इ **हमसायगी** गुज़ाश्तः अम् ।	मैंने तो **पड़ोसीधर्म** निभाया है ।
हक़ इ **तबअ़** मह़फ़ूज़'स्त ।	**प्रकाशनाधिकार** सुरक्षित है ।

जमहूरिय्य:=प्रजातंत्र
मख़सूस=विशिष्ट, विशेष
दुख़ूल=प्रवेश
दौलत इ शौरवी=रूस सरकार
मशरूतिय्यत=संविधान
कुनाद=करे (लेट् लकार का रूप, वैदिक-कृणाद्)
हवापैमायी=हवाई जहाज विषयक

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ह़ाल-ह़ालन्-ह़ालत ।	हालचाल, चैतन्य, प्रेममूर्छा, अभी, वर्तमान ।
औज़ाअ़ दर **चिः ह़ाल**'स्त ?	परिस्थितियों के **कैसे हालचाल** हैं ?
दर हर ह़ाल शुक्रगुज़ार ₇ ऊ बाश ।	**प्रत्येक अवस्था में** उस (परमात्मा) का धन्यवाद देने वाला हो ।
ह़ाल ₇ **शुमा** चिः तौर अस्त ?	**आपके हालचाल** कैसे हैं ?
इमरूज़ ह़ाल **न दारम्** ।	आज **मैं ठीक नहीं हूं** ।
ह़ाल **ईन्** कि कारी रा बिकुनम् न दारम् ।	हाल **यह है** कि कोई काम करने का मेरा मन नहीं है ।
बाद अज़् दू साअ़त **बि ह़ाल आमद** ।	दो घण्टे बाद **होश में आया** ।
चुन् दरवीश शैर रा शुनीद **अज़् ह़ाल रफ़्त** ।	जब साधु ने पद सुना तो **मूर्च्छित हो गया** ।
दर जंग ₇ मिस्र व इसराईल हनूज़ **ह़ाल** ₇ **ह़ाज़िर** बर क़रार अस्त ।	मिस्र और इसराईल के युद्ध में **अभी** यथा-स्थिति बनी हुई है ।
बि हर ह़ाल अगर मुदारा मी शवद बद नी'स्त ।	**जैसे भी हो** यदि सन्धि हो जाय तो बुरा नहीं है ।
दर ह़ाल हीच कार न बायद कर्द ता जंग दूबारः आग़ाज़ मी शवद ।	**अब** ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिससे युद्ध पुनः छिड़ जाय ।
ह़ाल व गुज़िश्तः गवा'स्त ईन् दुनिया जा यि कमज़ूर नी'स्त ।	**वर्तमान और अतीत** साक्षी है – संसार निर्बलों के रहने के लिए नहीं है ।
ह़ाल आन् कि मा आज़ादी याफ़्तीम हनूज़ मंज़िल दूरतर'स्त ।	**यद्यपि** हमें स्वतन्त्रता मिल गयी है फिर भी मंज़िल और दूर है ।
अ़र्ज़ ₇ **ह़ाल** पीश ₇ साह़िब ₇ मन्सब आवुर्द ।	**प्रार्थनापत्र** अधिकारी के समक्ष ले गया ।
अह्‌ल ₇ **ह़ाल** ह़ाल ₇ मा कुजा दानन्द ?	**आनन्द मग्न लोग** हमारा हाल कहाँ समझेंगे ?
ह़ाल बायद दीद ऊ गुनाह कर्द'स्त या नै ।	**अब** देखना चाहिये कि उसने अपराध किया है या नहीं ।
ह़ाल कि चुनीन'स्त माज़ूर'म् दारीद ।	**यदि** ऐसा है तो मुझे क्षमा कीजिये ।
बिरादर ₇ शुमा **ह़ालन्** कुजा'स्त ?	तुम्हारा भाई **आजकल** कहाँ है ?
अज़् ह़ालन् बायद ऊरा तरबियत कर्द ।	**अभी से** उसको पढ़ाना चाहिये ।
ह़ालन् कि ऊरा शनाख़्तीद बायद तौर ₇ दिगर बा ऊ रफ़्तार कुनीद ।	**अब जबकि** उसको पहचान गये हो तो दूसरी तरह उससे व्यवहार करना चाहिये ।
उश्तर बि शैर ₇ अ़रब **दर ह़ालत**'स्तो-तरब ।	ऊँट भी अरब की कविता से **आह्लादित** और तरंगायित हो उठता है ।

औज़ाअ़=(वज़्अ़ का बहुवचन) अवस्था
मुदारा=सन्धि

ह़ालत=आह्लादित (संस्कृत–ह्लाद=अ़रबी–ह़ाल, ह़ालत)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हा़जत ।	**ज़रूरत ।**
हा़जत बि गुफ़्तन् नी'स्त ।	कहने की **ज़रूरत** नहीं है ।
हा़जती बि तू न दारम् ।	तुमसे मुझे **कोई काम** नहीं है ।
दूस्त'म् **हा़जत** इ **पूल** दारद ।	मेरे मित्र को **पैसों की आवश्यकता** है ।
अज़् नईम इ दह्‌र **हा़जत ख़्वास्त** ।	विश्व के धनी (ईश्वर) से आवश्यकताऐं पूरी करने की **प्रार्थना की** ।
ख़ुदा हर कसी रा **हा़जत बर मी आवुरद** ।	ईश्वर हर किसी की (सब की) **आवश्यकता पूरी करता है ।**
ऊ **हा़जत** इ **ख़ुद'श्** पीश इ तवानगरी बुर्द ।	वह **अपनी आवश्यकता** किसी धनी के सामने ले गया ।
"गिलीम इ दीगर विदिहम्" ? – **"चि: हा़जत'स्त"** !	"एक कम्बल और दूँ ?" – **"क्या आवश्यकता है !"**
चहारपायान् हर जा **क़ज़ा** यि **हा़जत** मी कुनन्द ।	पशु हर जगह **मलत्याग** कर देते हैं ।
या ! **हा़जतरवा** मरा हा़जत'म् बिदिह ।	हे **आवश्यकता पूरी करने वाले** ! (अर्थात् परमात्मा) मेरा अभीप्सित मुझे दे ।
दर बारगाह इ ऐज़द तआ़ला कि: **हा़जतमन्द** नी'स्त ।	परमात्मा के दरबार में कौन **याचमान** नहीं है ।
पीश इ मर्दुमान् **हा़जती** म बाश ।	लोगों के सामने अपनी **आवश्यकता बताने वाला** मत हो ।
हर कि **हा़जतमन्दी नुमायद** ह़क़ीर बाशद ।	जो कोई अपनी **गर्ज बताता** है, तुच्छ हो जाता है ।
हा़जात इ बुनियादी सिह अन्द ।	मौलिक **आवश्यकताऐं** तीन हैं ।
हा़जतख़ान: चुन् इ़बादतख़ान: पाक बायद दाश्त ।	**शौचालय** पूजाघर की तरह साफ़ रखना चाहिये ।
पादशाह गुफ़्त – **'हा़जत'श्** बर आवुर्द: कुनन्द ।"	राजा ने कहा – **"इसकी ज़रूरतें** पूरी कर दी जायें ।"
चि: हा़ज़त बि दावा कर्दन् ?	लड़ने-झगड़ने की **क्या ज़रूरत है ?**
तू हा़जी ई, हनूज़ **हा़जती ई ?**	तू हाजी है, आज तक भी **माँगता है ?**
ऊ तुरा **हा़जत'त्** न दाद ?	उसने **तेरी ज़रूरत** पूरी नहीं की ?
हा़जतरवा मरा गुफ़्त – "दर हा बिज़न, मन् दर पुश्त इ हर दर मुन्तज़िर इ तू मी मानम् ।"	**आवश्यकताऐं पूरी करने वाले** ने मुझसे कहा - "दरवाज़े खटखटा, मैं हर द्वार के पीछे तेरी प्रतीक्षा में खड़ा मिलूँगा ।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ारिज।	बाहरी, बहिष्कृत।
ईन् शख्स **अत़वार** इ **खारिज** दारद।	यह व्यक्ति बड़ा **विचित्र व्यवहार** करता है।
आन् हा **दर ख़ारिज** ऐस्तादन्द।	वे लोग **बाहर** खड़े रहे।
मन् **अज़् ख़ारिज** इत्तलाआत दारम्।	मुझे कुछ **बाहरी** सूचनाऐं मिली हैं।
पम्ब: रा **बि ख़ारिज ममलुकत** हमल कर्दन्द।	रुई का लदान **विदेशों को** करवा दिया।
खारिज अज़् ईन् दू मौज़ूअ चीज़ी न पुर्सीदन्द।	इन दो विषयों **के अतिरिक्त** कुछ नहीं पूछा।
ऊरा अज़् मद्रिस: **ख़ारिज कर्दन्द**।	उसको विद्यालय से **निकाल दिया गया**।
खारिज इ **नुक़र:** अज़् हिन्दुस्तान ममनूअ'स्त।	भारत से **चाँदी का निर्यात** निषिद्ध है।
ईन् शैर **ख़ारिज अज़् बहर** अस्त।	इस पद्य में **छन्दोभंग** है।
ईन् जा आहंग इ मुतरिब **ख़ारिज अज़् मुक़ाम** उफ़्ताद।	इस जगह आकर गायक का सुर **कनसुरा** हो गया।
तक़सीम इ दह बि चि: अदद कुनीम ता **खारिज** इ **क़िस्मत** दू मी आयद।	दस को कितने से भाग दें कि **भजनफल** दो आये।
हरचि: गुफ़्त खूब गुफ़्त व **खारिज अज़् मौज़ूअ** गुफ़्त।	जो कहा वह अच्छा कहा और **विषय से असम्बद्ध** कहा।
दर **मुल्क हा** यि **ख़ारिज** जज़्ब: यि मीहन-परस्ती ज़ियाद'स्त।	**दूसरे देशों** में देश प्रेम की भावना अधिक है।
इख़्तियार इ **ख़ारिज** व दाखिल कामिलन् बि शुमा'स्त।	**परिवर्तन** और परिवर्धन **का** आपको पूरा **अधिकार** है।
हवा रा हमीश: बायद **खारिज व दाख़िल** कर्द।	हवा को सदा **जाने-आने देना** चाहिये।
चन्द अफ़राद मैली **बि तरफ़** इ **ख़ारिज** दारन्द।	कुछ लोग **बाहर की ओर** अधिक प्रवृत्ति रखते हैं।
वज़ीर इ **उमूर** इ **ख़ारिज:** यि हिन्द गुफ़्त।	भारत के **विदेशी मामलों** के मंत्री ने कहा।
ऊ **दर ख़ारिज:** तहसील कर्द: अस्त।	वह **विदेश में** पढ़ा है।
मा दर **अत़बाअ़** इ **ख़ारिज:** व माल इ हिन्दी फ़र्क़ न मी कुनीम।	हम **विदेशों से आये हुओं में** और भारतीय मूल के नागरिकों में कोई भेदभाव नहीं करते।
ईन् दवा बराय **इस्तेमाल** इ **ख़ारिजी**'स्त।	यह दवा **बाहरी** (लगाने के) **उपयोग** के लिये है।
ईन **ख़ारिज अज़् क़ायद:** अस्त।	यह **नियम के प्रतिकूल** है।

अत़वार=(तोर का बहुवचन)=रंग-ढंग
अफ़राद=(फ़र्द का बहुवचन)=लोग

इत्तलाआत=सूचनाऐं
(इत्तलाअ़ का बहुवचन)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ातिर ।	**चित्त, मन ।**
ईन् रा **दर ख़ातिर** दाश्तः बाशीद ।	इस बात को **ध्यान में** रखियेगा ।
बि ख़ातिर इ **मन्** ऊरा बख़्शीदन्द ।	**मेरे कारण** उसको क्षमा कर दिया गया ।
यक मतलबी **बि ख़ातिर'म्** आमदः अस्त ।	एक विचार **मेरे मन में** आया है ।
ऊ फ़क़त **ख़ातिर'त् ख़्वाहद** ।	वह केवल तुझे **प्रेम करता है** ।
दूस्त'म् **ख़ातिरख़्वाह** इ आन् दुख़्तर अस्त ।	मेरा मित्र उस लड़की का **प्रेमी** है ।
ख़ातिर जमअ़ हस्तम् कि कामयाब शवम् ।	मुझे **विश्वास** है कि मैं सफल होऊँगा ।
बराय ख़ातिर इ **ख़ुदा** परीशान'म् म कुनीद ।	**ईश्वर के लिये** मुझे परेशान मत करो ।
बाइ़स इ **परीशानी** यि **ख़ातिर** पिसर'श् बूद ।	उसके **चित्त की परेशानी** का कारण उसका पुत्र था ।
पिसर'श् **ख़ातिरआज़ार** बूद ।	उसका पुत्र **चित्त को दुखाने वाला** था ।
ईन् इ़त्र **ख़ातिरपिज़ीर** इ ज़नान् अस्त ।	यह सुगन्ध महिलाओं के **चित्त को स्वीकार होने वाली** है ।
मन् **ख़ातिरजमअ़** कर्दः बूदम् कि कार मुश्किल नी'स्त ।	मैंने **जाँच पड़ताल** कर ली है कि यह काम मुश्किल नहीं है ।
ऊ हम मगर **ख़ातिरजमअ़** शुद ?	लेकिन उसको भी **सन्तोष** हुआ ?
ता अज़् **ख़ातिरजमई** न दाश्तः बाशम् हर्फ़ी न ज़नम् ।	जब तक उसके प्रति **निःशंक** नहीं हो जाऊँगा, कुछ नहीं कहूँगा ।
ऊ ख़ेली **ख़ातिरनिगरान** बूद कि काग़ज़ अज़् पिसर न दाश्त ।	वह अत्यन्त **उद्विग्न** हो गया क्योंकि लड़के का पत्र नहीं मिला ।
मगर महमान रा **ख़ातिरदारी** कर्दी ?	अतिथि की **सेवा** भी की ?
ईन् रा **ख़ातिरनिशान** दारीद ।	इसको **चित्त में अंकित** कर लेना ।
ईरानियान् **ख़ातिरनवाज़** मशहूर अन्द ।	ईरानी **मृदुभाषी** प्रसिद्ध हैं ।
बि ख़ातिर इ **मन् बियावुरीद** वा ऊ सुह़बत कुनम् ।	**मुझे याद दिला देना** कि मैं उससे बातें कर लूँ ।
बि **तीब** इ **ख़ातिर** ।	बड़ी **ख़ुशी** से ।
ईन् अ़क्स इ पिदर'म् **ख़ातिरः** यि रूज़गार इ जवानी यि ऊ'स्त ।	यह पिताजी का चित्र उनके यौवन के दिनों की **यादगार** है ।

बख़्शीदन्द=(उन्होंने) क्षमा कर दिया

मतलबी=एक विचार

बाइ़स=कारण स्वरूप, कारण

ज़नान्=महिलाएँ

मगर=क्या (मैं तो ऐसा नहीं समझता था लेकिन ऐसा हुआ क्या ?) प्रश्नवाचक

काग़ज़=पत्र, चिट्ठी

अ़क्स=फ़ोटो

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ाक ।	**धूल, मिट्टी ।**
सीम इ बख़ील **अज़् ख़ाक** बि दर आयद कि ऊ **दर ख़ाक** मी आयद ।	कंजूस की चाँदी **ज़मीन से** तभी निकलती है जब वह **ज़मीन के नीचे** चला जाता है ।
अज़् ख़ाक इ **पाक** इ शीराज़ आमदः अम् ।	शीराज़ की **पवित्र भूमि से** आया हूँ ।
पीर ज़न मुर्द व ऊरा **बि ख़ाक सिपुर्दन्द ।**	बुढ़िया मर गयी और उसे **मिट्टी दे दी गयी ।**
ख़ाक शौ पीश अज़् आन् कि **ख़ाक शवी ।**	तू मिट्टी (जैसा विनीत) **बन जा,** इसके पूर्व कि **तू मिट्टी हो जाय ।**
तू **ख़ाक** इ **पिदर** रा बि ख़ून इ बिरादर सिरिश्त दादी ।	तूने **बाप की ख़ाक** को भाइयों के ख़ून से से गूँध दिया (मारकाट मचा दी) ।
तीर'श् **बि ख़ाक ख़ुर्द ।**	उसका तीर **ख़ाक चाट गया** (चूक गया) ।
चुन् सालार रा गुफ़्तन्द ता ह़मलः आवुरद ऊ **ख़ाक बर लब मालीद ।**	जब सेनापति से कहा गया कि आक्रमण करे, उसने **मना कर दिया ।**
कसी रिन्द रा पन्दी दाद ऊ **ख़ाक दर तराज़ू** यि नासिह़ **अफ़्कन्द ।**	किसी ने शराबी को उपदेश दिया तो वह उपदेशक का ही **उपहास करने लगा ।**
ख़ाक'म् बि दहन वले बाद अज़् तू कूदकान् चिः मी ख़ुरन्द ।	**मेरे मुँह में ख़ाक,** लेकिन तेरे बाद बच्चे क्या खायेंगे ।
तीमूर शह्र इ रै रा **बा ख़ाक** यकसान कर्द ।	तैमूर ने रै (आज का तेहरान) नगर को **धूल के साथ,** एक जैसा कर दिया ।
पीश इ रुस्तम हमः पहलवानान् **बि ख़ाक आमदन्द ।**	रुस्तम के सामने सारे पहलवान् **हार गये ।**
चंगीज़ख़ान बीनी यि ताज़ियान् **बि ख़ाक मालीद ।**	चंगेज़ख़ान ने अरबों की नाक **ज़मीन पर रगड़ दी ।**
ख़ाक बर सर'श् !	उसके सिर पर **ख़ाक** ! (**लानत** है उस पर) !
ख़ाक इ **आलम** बर सर'म् ।	**दुनियाँ की धूल** मेरे सिर पर ! (हाय मैं क्या करूँ !)
चिः ख़ाकी बि सर कुनम् !	मैं **कौन सी धूल** अपने सिर पर डालूँ ! (हाय मैं क्या करूँ !)
ख़ाक बर सर कुन् ग़म ई अय्याम रा ।	दिनों के ग़म के **सिर पर ख़ाक डाल ।**
ख़ाक इ **पा** यि तू दर ख़ानः यि मन् बिगुज़ार ।	अपने **चरणों की धूल** मेरे घर पर भी डालिये ।
रू पस न कर्द हर कि अज़् ईन् **ख़ाकदान** गुज़श्त ।	मुँह (इधर) फिर कभी नहीं किया जो कोई भी इस **मिट्टी के लोक** से चला गया ।
ख़ाकिस्तरदान रा पीश इ ऊ बिनिह ।	**राखदानी** (ऐश ट्रे) उसके सामने रख दो ।
ख़ाकसारी ख़ूब'स्त ता ह़द्दी कि ख़ुद्दारी बिमानद ।	**विनय** अच्छी है जब तक कि स्वाभिमान बना रहे ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ग़ज़ल इ हाफ़िज़ ।	हाफ़िज़ की एक ग़ज़ल ।
साक़िया ! बर ख़ीज़ो-दर दिह जाम रा ।	ऐ साक़ी ! खड़ा हो और जाम भर दे ।
खाक बर सर कुन् ग़म ई अय्याम रा ।।	दिनों के शोक के सिर पर धूल डाल दे ।।
साग़र ई मय बर कफ़'म् निह ता ज़ि सर ।	शराब का पात्र मेरी हथेली पर रख दे ताकि अपने सिर पर से ।
बर कशम् ईन् दलक़ इ अज़रक़फ़ाम रा ।।	खींचकर हटा दूँ इस नीलवर्ण की गुदड़ी (आकाश) को ।।
गरचिः बदनामी'स्त निज़्द ई आक़िलान् ।	यद्यपि बुद्धिमानों के निकट (हमारी) बद-नामी (होती) है ।
मा न मी ख़्वाहीम नंगो-नाम रा ।।	(पर) हम तो निन्दा-प्रशंसा चाहते नहीं ।।
दूदो-आह ई सीनः यी नालात् इ मन् ।	धुँआ और सीने की आह और मेरे विलाप ने ।
सूख़्त ईन् अफ़सुर्दगान् ई ख़ाम रा ।।	इन अपरिपक्व निराशों को जला दिया ।।
मह़रम ई राज़ ई दिल ई शैदा यि मन् ।	मेरे उन्मत्त हृदय के रहस्य का मर्मज्ञ ।
कस् न मी बीनम् ज़ि ख़ास्सो-आम रा ।।	मैं किसी को नहीं देखता हूं विशिष्ट या सामान्यजनों में ।।
बा दिलारामी मरा ख़ातिर ख़ुश'स्त ।	उस प्रिया से मेरा चित्त प्रसन्न है ।
क'ज़् दिल'म् यक बार बुर्द आराम रा ।।	जिसने मेरे हृदय से एक ही बार में आराम छीन लिया ।।
न निगरद दीगर बि सर्व अन्दर चमन ।	नहीं देखता है फिर बाग़ के अन्दर सर्व के वृक्ष को ।
हर कि दीद आन् सर्व इ सीमअन्दाम रा ।।	जिसने भी उस चाँदी के अंगोंवाली सर्व को देख लिया ।।
सब्र कुन् हाफ़िज़ बि सख़्ती यि रूज़ो-शब ।	हाफ़िज़ दिन और रात की कठिनदशा पर सब्र कर ।
आक़िबत रूज़ी बि याबी काम रा ।।	अन्त में परलोक में एक दिन तुझे अभीष्ट मिलेगा ।।

साक़िया = हे साक़ी
बर ख़ीज़ = उठकर खड़ा हो
दर दिह = दे, अन्दर दे, उँडेल दे
अय्याम = (योम का बहुवचन) दिनों
कफ़ = हथेली
निह = रख दे (संस्कृत – निधेहि)
बर कशम् = खींच कर हटा दूँ
दलक़ = गुदड़ी
अज़रक़फ़ाम = नीले आभा वाली, नीले आभा वाली गुदड़ी अर्थात् आकाश
नंग = लज्जा, लज्जाकर कार्य अर्थात् बुराई
दूद = धुँआँ (आह के लिये धुँआँ का प्रयोग फ़ारसी में होता है)
ख़ाम = कच्चा (संस्कृत – क्षाम)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

खानः ।	**घर ।**
खानः यि शुमा दर कुजा'स्त ?	आपका **घर** कहाँ है ?
खानः यी कि दर आन् जा दू कदबानू बाशद, खाक ता ज़ानू बाशद ।	**वह घर** जहाँ दो गृहस्वामिनी होंगी, वहाँ घुटने-घुटने धूल होगी ।
खानः यि **पुरशीशः** यक संगी बस अस्त ।	**काँच के घर** के लिए एक पत्थर बहुत है ।
ईन् पारचः **खानःवाफ़**'स्त ।	यह कपड़ा **घर का बना हुआ** है ।
मन् यकी ईल इ **खानः बि दूश** रा दीदम् ।	मैंने **यायावरों** का एक क़बीला देखा ।
पिसर'श् **खानःअन्दाज़** ज़ाद ।	उसका पुत्र **घर को उजाड़ने वाला** पैदा हुआ ।
ऊ रिन्द व **खानःबीज़ार** अस्त ।	वह मद्यप और **घर की चिन्ता न करने वाला** है ।
वले बिरादर'श् **खानःपरदाज़** अस्त ।	लेकिन उसका भाई **घर की सँभाल करने वाला** है ।
खानःपरवर्दः रा ज़ूर न बाशद ।	**घर के पले हुए** में बल नहीं होता ।
मयनूशी ख़ू यि **खानः-खराब-कुन्** अस्त ।	शराब पीना **घर बिगाड़ने वाली आदत** है ।
ईन् ज़न इ **खानःदार** अस्त ।	वह **सुघर** गृहिणी है ।
खानःशागिर्द रा बिगू कि कार कुनद ।	**घरेलू नौकर** से कहो कि काम करे ।
खानवादः यि आर्यान् अज़् हिन्द ता ईरान गुस्तर्दः अस्त ।	आर्यों का **वंश** भारत से ईरान तक फैला हुआ है ।
हनूज **खानःनिशीन** हस्ती ?	अभी तक **घर में बैठे हुए** हो (अर्थात् बेकार हो) ?
ईन दिह पानसद **खानवार** दारद ।	इस गाँव में पाँच सौ **परिवार** हैं ।
ईन् **मरीज़खानः** जदीदतरीन अस्त ।	यह **आतुरालय** अधुनातन है ।
खानः यि **अनकबूत** रा साफ़ कुन् ।	**मकड़ी का जाला** साफ़ कर ।
खानःखुदा रा बिगू कि दू महमान आमदः अन्द ।	**गृहस्वामी** से कह दो कि अतिथि आये हैं ।
सग व गुर्बः चहारपायान् इ **खानःख़्वाह** अन्द।	कुत्ता और बिल्ली **घरेलू पालतू** पशु हैं ।
मूश **दुश्मन** इ **खानःयकी** यि इन्सान अस्त ।	चूहा, मनुष्य का, **एक घर में (साथ) निवास करने वाला शत्रु** है ।

कदबानू=गृहिणी, गृहस्वामिनी
ता ज़ानू=घुटने-घुटने तक
यक संगी=एक पत्थर ही
बस अस्त=बहुत है
ईल=क़बीला

खानः बि दूश=घर है जिसका कन्धों पर, यायावर
मयनूशी=शराब पीना
गुस्तर्दः=फैला हुआ (संस्कृत – विस्तृतः, विस्तरितः)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़बर।	**पता, समाचार, सूचना, श्रुतिपरम्परा।**
मन् हीच अज़् ईन् मौज़ूअ़ **ख़बर** न मी दारम्।	मुझको कुछ भी इस विषय में **पता** नहीं है।
ख़बर इ **वुरूद** इ ऊरा दाश्तीम।	(हमें) उसके **आने का समाचार** मिल गया है।
अज़् रफ़्तन् इ खुद **ख़बर न दाद।**	उसने अपने आने की कोई **सूचना नहीं दी।**
दर ख़बर अस्त कि यक पादशाह बूद।	**कहते हैं** कि एक राजा था।
मरा **ख़बर दिह** कि मादर'म् चि: त़ोर अस्त।	मुझे **बताओ** कि मेरी माँ कैसी है।
चिरा मरा **ख़बर न कर्दीद ?**	मुझे **क्यों नहीं बताया ?**
ख़बर अज़् इ़श्क़ न दारद कि न दारद यारी।	उसे **प्रेम का** क्या **पता** जिसके कोई प्रेमी या प्रेमिका न हो।
अज़् अह़वाल इ ऊ **ख़बर गिरिफ़्तम्।**	मैंने उसके हालचाल **पुछवाये** थे।
क'आन् रा कि **ख़बर शुद** ख़बर'श् बाज़ नयामद।	जिसको कि उसका **पता मिल गया** उसका (खुद का) पता फिर नहीं मिला।
ख़बर बुर्दन्द बि ह़ुकूमत।	गवर्नर को **रिपोर्ट दी गयी।**
चि: ख़बर'स्त ?	**क्या बात** है ?
ख़बर रसीद कि ऊ न मी आयद।	**पता पड़ गया** कि वह नहीं आ रहा है।
चि: ख़बर दाश्तम् कि बि ईन् ज़ूदी ख़्वाहद मुर्द।	(मुझे) **क्या पता था** कि इतनी जल्दी मर जायगा।
मगर **ख़बर सह़ीह़** अस्त ?	**पक्की बात** है न ?
ख़बर ख़ुश'स्त कि यार'म् ख़्वाहद आमद।	**सुसमाचार** यह है कि मेरा मित्र आ रहा है।
ईन् मुद्दइ़यान् दर त़लब'श् **बीख़बरान**'न्द।	ये दावा करने वाले उसकी तलब में **अचेत** हो रहे हैं।
ईन् **ख़बरजू** यि ख़ारिजी अस्त।	यह विदेशी **जासूस** है।
ईन् **ख़बरनिगार** इ रूज़नाम: अस्त।	यह समाचारपत्र का **संवाददाता** है।
ख़बरदार बाश !	**सावधान** रहना।
ख़बरदिहन्द: ख़बर आवुर्द कि दुश्मन सरगर्म-अस्त।	हमारे **मुख़बिर** ने खबर दी है कि शत्रु सक्रिय हो उठा है।

ईन् मौज़ूअ़=यह विषय
वुरूद=आगमन, प्रवेश
ज़ूदी=जल्दी

दर ख़बर'स्त=कहा जाता है, हदीथ्स में (लिखा) है।
रूज़नाम:=समाचारपत्र

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़र।	**गधा-मूर्ख (संस्कृत-खर)**
हरगिज़ अज़् ऊरा **ख़रतर** कसी रा न दीदम्।	उससे **बड़ा गधा** मैंने किसी को नहीं देखा ।
ऊ ख़र ᵢ ख़ुद रा मी रानद ।	**वह अपने गधे को हाँकता रहता है।** (अपने काम से काम रखता है।)
ऊ बर ख़र ᵢ ख़ुद सवार मी शुद ।	**वह अपने गधे पर चढ़ गया।** (अपना लक्ष्य सिद्ध कर लिया।)
ऊ ख़र ᵢ ख़ुद रा अज़् पुल गुज़रानीद ।	उसने **अपने गधे को पुल पार करा दिया।** (अपना काम निकाल लिया।)
ऊ मरा बर ख़र ᵢ ख़ुद निशानीदो–रफ़्त ।	उसने मुझे **अपने गधे पर चढ़ा दिया** और ख़ुद खिसक गया ।
ख़री रा बाला ᵢ बाम म बुर।	**एक गधे को छत पर मत चढ़ा।** (अयोग्य को बहुत प्रोत्साहन मत दे।)
ख़र ᵢ करीम रा नाल कर्दः बूदीम, ह़ाला तू कुन्।	हमने **करीम मियाँ के गधे के बहुत नाल बाँधी हैं,** अब आप बाँधिये ।
ख़र'म् कि बि गिल न ख़्वाबीदः अस्त ।	**मेरा कोई गधा कीचड़ में नहीं फँस रहा है।** (जो लोगों की ख़ुशामद करूँ।)
मिथ्सल ᵢ ख़र दर गिल मी मानद ।	**कीचड़ में फँसे गधे की तरह** अड़ जाता है ।
ऊ **ख़ररंग** मी कुनद ।	वह **गधों को रँगता** फिरता है । (मूर्खों को **ठगता** फिरता है।)
अज़् ख़र शैतान पायीन आमद ।	**गधे से शैतान नीचे उतरा** (जिद छोड़ी तो सही।)
ख़र चि: दानद क़ीमत ᵢ क़न्दो-नवात !	**गधा** क़न्द और मिश्री की क़ीमत क्या जाने !
ख़र ᵢ मा अज़् कुर्र:गी दम न दारद ।	**हमारा गधा** अभी बछेड़ा होने के कारण दम नहीं रखता ।
ख़र रा **पीश ᵢ ख़र** वा मी दारन्द, हमरंग न मी शवद हमख़ू मी शवद ।	गधे को **गधे के साथ** रख दीजिये, एक रंग के नहीं होंगे तो एक स्वभाव के हो जायेंगे।
ख़री म कुन् ।	**गधापन** मत कर (मूर्खता मत कर)।
ऊ **ख़रनास** मी कुनद मन् न तवानम् ख़्वाब गिरिफ़्त ।	वह **खर्राटे** लेता है, मैं सो नहीं सकता ।
शराब ख़ुर वले **ख़रमस्त** म शौ ।	शराब पीकर **गधे की तरह उन्मत्त** मत हो ।
ऊ शख़्सी **ख़रत़बअ़्** अस्त ।	वह **गर्दभ प्रकृतिवाला** मनुष्य है ।
'ख़रवार' ᵢ ईरानी रा दर हिन्द ᵢ क़दीम 'खारी' मी नामीदन्द ।	ईरानी खरवार (**खरभार**) को प्राचीन भारत में 'खारी' कहते थे ।
खेली **ख़रफ़हम** कर्दम् वले ऊ हीच न फ़हमीद ।	मैंने बहुत गधा **समझाई** करी पर वह कुछ नहीं समझा ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़र्ज ।	**व्यय ।**
ख़र्ज'श् जियाद अस्त ।	**उसका ख़र्च** बहुत बैठेगा ।
ईन् बिना **चि: कद्र ख़र्ज** ख़्वाहद दाश्त ?	इस निर्माण कार्य में **कितना ख़र्च** बैठेगा ?
गुज़िश्त अज़् क़ीमत **ख़र्जहायी** हम दारद ।	मूल्य के अतिरिक कुछ **दूसरे ख़र्च** भी हैं ।
ऊ दर यक रूज़ हज़ार रियाल **ख़र्ज कर्द** ।	उसने एक दिन में एक हज़ार रियाल **ख़र्च कर दिये** ।
दर रूज़ इ तवल्लुद **ख़ेली ख़र्ज** कर्दन्द ।	वर्ष गाँठ के दिन **बहुत ख़र्च** हो गया ।
पूल इ जियादी **ख़र्ज शुद** ।	बहुत पैसा **ख़र्च हो गया** ।
ऊ सिक्क:हा यि क़ल्ब इ खुद रा **बि ख़र्ज दाद** ।	उसने अपने खोटे सिक्के **चला दिये** ।
रशादत इ बुज़ुर्गी दर आन् रूज़ **ख़र्ज दादन्द** ।	उस दिन बड़ी वीरता का **प्रदर्शन किया गया** ।
आन् यकी रियाल इ बद **बि ख़र्ज न रफ़्त** ।	वह एक मात्र खोटा रियाल **नहीं चला** ।
पन्दहा यि मन् **बि ख़र्ज'श् न रफ़्त** ।	मेरे उपदेश **उसने नहीं माने** ।
बराय **ख़र्ज** इ **हुतल** दू सद तुमान पीश बिदिहीद ।	**होटल के ख़र्च** के दो सौ रुपये पहले दे दीजिये ।
ख़र्ज इ **निगहदारी** ख़ेली कमतर बूद ।	**रख-रखाव का ख़र्च** बहुत कम हो गया है ।
दू हज़ार तुमान **ख़र्ज-दर-रफ़्त:** मुनफ़अ़त कर्दम् ।	(मैंने) दो हजार रुपये **ख़र्च काटकर** लाभ के कमाये ।
ख़र्ज व दख़्ल रा बरावर निगाह दारीद ।	**आय-व्यय** पर हमेशा निगाह रखिये ।
सूरत इ **ख़र्ज व दख़्ल** अलान् तब्अ़ न शुद ।	**जमा-ख़र्च का चिट्ठा** अभी छपा नहीं ।
इमरूज़ रा **ख़र्ज व दख़्ल कर्दीद ?**	आज के **जमा-ख़र्च का खाता खता लिया ?**
ख़र्जी यि **राह** पानसद तुमान बूद ।	**मार्गव्यय** पाँच सौ रुपये हुआ ।
फ़क़त **ख़र्जी** मी ख़्वाहम् ।	मैं केवल **निर्वाहव्यय** मात्र चाहता हूँ ।
चु दख़्ल'त् नी'स्त **ख़र्ज** आहिस्त:तर कुन् ।	जब तुझे आय न हो तो **व्यय** थोड़ा-थोड़ा कर ।
ख़र्जबियार इ क़ुशून इ मा दर तातील अस्त ।	हमारी सेना का **मोदी** छुट्टी पर गया है ।

बिना=आधार, भवन, निर्माण कार्य
ख़र्ज ख़्वाहद दाश्त=ख़र्च लगवायेगा-गी
गुज़िश्त: अज़् क़ीमत=मूल्य के अलावा
रियाल=भारतीय दस पैसे के बराबर ईरानी सिक्का, इसे 'क़रान' भी कहते हैं ।

तवल्लुद=पैदायश, जन्मदिवस, वर्षगाँठ
सिक्क: यि क़ल्ब=खोटा सिक्का
रशादत=वीरता
पीश=पेशगी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ुश्क ।	**शुष्क, जमा हुआ, नीरस, तोल में कम आदि** ।
बा ईन् सुर्फ़ः **ख़ुश्क** हमः शब न ख़ुफ़्तः बूदम् ।	इस **सूखी खांसी** के कारण सारी रात नहीं सो सका ।
कल्लः अश् **ख़ुश्क** अस्त ।	उसकी खोपड़ी **सूखी** है (वह **मूर्ख** है) ।
चुनान् **ख़ुश्क साली** शुद अन्दर दमिश्क ।	दमिश्क में ऐसा **अकाल** पड़ा ।
नुत्क़'श् ख़ेली **ख़ुश्क** बूद ।	उसका भाषण बड़ा **नीरस** था ।
दर यक किलू (या-चिलू) क़द्री **ख़ुश्कतर** अस्त ।	एक किलो में ज़रा सा **सूखा** (खिंचता हुआ, **कम**) है ।
ईन् फ़स्ल **फ़स्ल** ड़ **ख़ुश्की** अस्त ।	यह ऋतु **सूखी ऋतु** है ।
दस्त'श् रा बा हौलः **ख़ुश्क कर्दन्द** ।	उसके हाथ तौलिये से **पोंछ दिये गये** ।
रूय'श् **ख़ुश्क शुदः** अस्त ।	उसका मुँह **कुम्हला गया** है ।
मा पिन्दाश्तीम अज़् सरमा **ख़ुश्क ख़्वाहीम शुद** ।	हमने सोचा कि हम ठण्ड के मारे **जम जायेंगे** ।
ख़ुश्क व तर हमः बिसूख़्त ।	**सूखे-गीले** सब जल गये (**बुरे-भले** सब सताये गये) ।
सुख़ुन'श् **ख़ुश्क व ख़ाली** बूद ।	उसकी बातें **रूखी और खोखली** (**नीरस और निस्सार**) थीं ।
नानवा रा **ख़ुश्कार** बिदिहीद व नान ड़ गर्म ड़ हमवज़न बियारीद ।	नानबाई को **सूखा आटा** दे देना और समान भार की रोटियाँ ले आना ।
ऊ मर्द ड़ **ख़ुश्कअन्दाम** अस्त ।	वह आदमी **सूखे अंगों वाला** है ।
मन् चन्दी **ख़ुश्कबार** आवुर्दः अम् ।	मैं थोड़े से **सूखे फल** लाया हूँ ।
ऐ ! **ख़ुश्कदामन** ज़ाहिद ! मारा माज़ूर दार ।	हे **शुद्धाचारी** संयमी ! हमें माफ़ कर ।
ईन् दानिशपिश्ज़ूह **ख़ुश्कदिमाग़** मी नुमायद ।	यह विद्यार्थी **मूर्ख** लगता है ।
अगर बारान बि कूहिस्तान न बारद ।	यदि पहाड़ों में वर्षा न हो ।
बि साली दज्लः गर्दद **ख़ुश्करूदी** ।।	किसी साल, तो दज्ला **सूखी धारा** बन जाय ।।
शख़्सी **ख़ुश्कनिहाद** बूद ।	एक **निरुपयोगी** पुरुष था ।
अज़् बाज़ार **ख़ुश्ककुन्** बियार ।	बाज़ार से **स्याहीसोख** ले आ ।
ख़ुश्कः बा बिरूज़ः अगरचिः गंदः । मगर ईजाद ड़ बन्दः ।।	**चावल** बिरोज़े के साथ यद्यपि गन्दे हैं, पर यह (मुझ) सेवक का आविष्कार है ।

ख़ुश्कतर=ज़रा खिंचता सा, थोड़ा सा कम (प्रतिपर्याय-चर्ब, चर्बतर)

सरमा=ठण्ड (संस्कृत के पौराणिक साहित्य में 'सरमा' देवताओं की कुतिया है – इसका विवेचन इस पुस्तक के तीसरे खण्ड में करेंगे ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़त्त् ।	**लेख, सड़क, सिक्के का पहलू, नीति** ।
ज़ीर इ निविश्त: यि मन् ऊ **ख़त्त् कशीद** ।	मेरे लिखे के नीचे उसने **अधोरेखा खींच दी** ।
ख़त्त्'श् ख़्वाना अस्त ।	उसका **लिखा** (लेख) पढ़ सकने योग्य है ।
ख़त्त् इ **नागरी** ख़त्त् इ मुहिम्म इ आर्यायी हस्त ।	**नागरी लिपि** आर्यों की प्रधानलिपि है ।
ख़ुतूत इ **सियाह** रू यि सूरत इ शुमा अज़् ची'स्त ?	आपके चेहरे पर ये **काली झाँई की रेखाएँ** किस कारण से हैं ?
ख़त्त् रा बायद तामीर कर्द ।	एक **सड़क** बनानी चाहिये ।
ख़त्त् इ **शरीफ़** रा ज़ियारत कर्दम् ।	मैंने मुहम्मद साहब के **पवित्र पत्र** की तीर्थयात्रा की है ।
मन् मज़मून इ **इजार:** यि **ख़त्त्** रा तियार कर्द: बूदम् ।	मैंने **ठेके का प्रारूप** तैयार कर लिया है ।
ख़त्त् इ तबरीज़-तेहरान क़शंग अस्त ।	तबरीज़-तेहरान **मार्ग** अच्छा है ।
बिगू-शीर या **ख़त्त्** ?	बोलो, शेर या **इबारत** ? (चित्त या **पट** ?)
ख़त्त् इ **आहन** सद साल पीश दर ईरान न बूद ।	**रेलवे लाइन** सौ वर्ष पूर्व ईरान में नहीं थी ।
हरचन्द पीश मीरवी **ख़त्त्** इ **उफ़क़** नज़्दीक न मी शवद ।	कितने ही बढ़ते जाओ **क्षितिजरेखा** निकट नहीं आती ।
ख़त्त् इ **साहिली** यि कन्याकुमारी क़शंगतरीन अस्त ।	कन्याकुमारी का **समुद्रतट** सर्वश्रेष्ठ है ।
ख़त्त् इ **सब्ज़** इ ईन् पिसर निशान इ बुलूग़ मी दिहद ।	इस किशोर की **रोमराजी** इसके यौवनारम्भ की सूचक है ।
ऊ **दस्तख़त्** कर्द ।	उसने **हस्ताक्षर** कर दिये ।
ख़त्त् इ **मुस्तक़ीम** बिकश ।	एक **सीधी रेखा** खींचो ।
क़तार अज़् **ख़त्त्** इ **आहन** बीरून उफ़्ताद ।	रेलगाड़ी **पटरी** से उतर गयी ।
दरवीशान् **ख़त्त्** बि दुनिया कशीदन्द ।	साधुओं ने संसार पर **कट्टम** फेर दी । (संसारीपन त्याग दिया) ।
ख़त्त् इ **आहन** इ **दू राही** बिना कर्द: मी शवद ।	**दुहरी रेल लाइन** डाली जायगी ।
ख़त्त् इ **मशी** यि हिन्द ख़त्त् इ अम्न अस्त ।	भारत की **नीति शान्ति** की नीति है ।
मा किताबहा यि **ख़त्ती** दारीम ।	हमारे पास **हस्तलिखित** पुस्तकें हैं ।

ज़ीर इ निविश्त=लिखे के नीचे
ख़्वाना=पढ़ने योग्य, पठनीय
ख़ुतूत=ख़त्त् का बहुवचन

तामीर कर्दन्=निर्माण करना, बनाना
ज़ियारत=तीर्थयात्रा
मज़मून=प्रारूप

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़्वाब ।	**नींद, स्वप्न (संस्कृत–स्वाप)**
दीशब मरीज़ **ख़्वाब** न दाश्त ।	कल रात को मरीज़ को **नींद** नहीं आयी ।
दर आलम इ **ख़्वाब** दीद कि ऊ ज़न गिरिफ़्त ।	**सपने में** देखा कि उसकी शादी हो गयी है ।
बच्चः अलान् **बि ख़्वाब रफ़्तः अस्त ।**	बालक अभी सो रहा है। (या अभी **सोया है।**)
मन् ख़ाली नै अम्, बच्चः रा **ख़्वाब कुनम् ।**	मैं ख़ाली नहीं हूँ, बच्चे को **सुला रही हूँ ।**
ईन् दवा ऊरा **ख़्वाब ख़्वाहद कर्द ।**	यह दवा उसे **सुला देगी ।**
ख़्वाब दीदम् कि सफ़र कर्दः ईद ।	**मैंने सपना देखा** कि आप यात्रा पर चले गये हैं ।
करामत इ ऊरा मगर **दर ख़्वाब** बिबीनी ।	उसकी उदारता **सपने में** भले ही देखें ।
हमान् तोर कि गूश मी दाद **ख़्वाब'श् बुर्द ।**	सुनते-सुनते ही **सो गया।**
आया शराब **ख़्वाब मी आवुरद** यक़ीनन् न मी दानीम् ।	शराब **नींद लाती ही है** यह हम निश्चयपूर्वक नहीं जानते ।
ख़्वाब दर दीदः सूख़्त ।	**नींद आँखों ही आँखों में** जल गयी (उड़ गयी) ।
कि यकदम **ख़्वाब** दर चश्म'म् न गश्त'स्त ।	कि **नींद ने** मेरी आँखों में क्षण भर के लिये भी प्रवेश नहीं किया ।
चिरा **अज़् ख़्वाब परीदीद ?**	**नींद से** क्यों **चौंक पड़े ?**
ऊ ख़ुद रा **बि ख़्वाब ज़द ।**	उसने **सोने का बहाना किया ।**
ऊ **ताबीर** इ **ख़्वाब** इ पादशाह गुफ़्त ।	उसने राजा के **सपने का फलादेश** बताया ।
ख़्वाब इ **आशुफ़्तः** दाश्त ।	उसे **उचटती सी नींद** आयी ।
मन् **ख़्वाब** इ **राहत** दाश्तम् ।	मुझे **गहरी नींद** आयी ।
ख़्वाब इ **सग** सबुक मी शवद ।	**कुत्ते की नींद** हलकी होती है ।
ऊ **ख़्वाब** इ **ख़रगूश** मी ज़द व हर चीज़ शुनीद ।	वह **ख़रगोश की नींद** सोता रहा और हर बात सुनता रहा ।
हमः शब न ख़ुफ़्तः बूद पस **ख़्वाबआलूदः** अस्त ।	(वह) सारी रात नहीं सो सका अतः **निंदासा** (शब्दार्थ-नींद से सना हुआ) है ।
ख़्वाब'म् मी आयद, ख़ुदा हाफ़िज़ !	**मुझे नींद आ रही है,** नमस्ते ।

हमान् तोर=जैसे ही, उसी तरह }सुनते सुनते
गूश मी दाद=कान दिये, सुना }=ही

परीदीद=(आप) चौंक पड़े (शब्दार्थ–(आप) उड़ गये)

ताबीर=फलादेश, स्वप्न का अर्थ बताना

सबुक=हलकी (संस्कृत–क्षिप्र–क्षिपक)

ख़्वाब इ ख़रगूश=ख़रगोश की नींद इतनी हलकी होती है कि वह कुत्ते से भी जल्दी जाग जाता है। इसी कारण यह धारणा बन गयी है कि ख़रगोश सोता नहीं बल्कि सिर्फ़ आँखें बन्द किये पड़ा रहता है। ख़्वाब इ ख़रगूश का अर्थ है – सोने का बहाना किये पड़े रहना ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ुद ।	**(संस्कृत–स्वतः)**
किताब इ **ख़ुद रा** गुम कर्दम् ।	मैंने **अपनी किताब** खो दी ।
मन् **किताब** इ **ख़ुद'श्** रा मी ख़्वाहम् ।	मुझे तो **अपनी ही किताब** चाहिये ।
ऊ **सिह्.ह़त** इ **ख़ुद** रा अज़् दस्त दाद ।	उसने **अपना स्वास्थ्य** नष्ट कर दिया ।
ऊ **सिह्.ह़त** इ **ख़ुद'श्** रा अज़् दस्त दाद ।	उसने **अपना ही स्वास्थ्य** नष्ट किया ।
तू **सिह्.ह़त** इ **ख़ुद** अज़् दस्त दादी ।	तूने **अपना स्वास्थ्य** नष्ट कर लिया ।
तू **सिह्.ह़त** इ **ख़ुद'त्** रा अज़् दस्त दादी ।	तूने **अपना ही स्वास्थ्य** नष्ट किया ।
मगर हनूज़ **बि ख़ुद** आमदी ?	अभी **अपने आपे में** आये या नहीं ?
ख़ुदआराई कार इ दुख़्तरान् अस्त ।	**अपने को सजाना** लड़कियों का काम है ।
ईन् किताब रा नाम फ़ारसी **ख़ुदआमूज़** अस्त ।	इस पुस्तक का नाम फ़ारसी **स्वाध्याय** है ।
ख़ुदपरस्त म बाश ।	**आत्मपूजक** मत बन ।
ख़ुदपरस्ती अज़् **ख़ुदपसन्दी** मी ज़ायद ।	**आत्मपूजा अहंकार** से उत्पन्न होती है ।
ख़ुदपसन्दी अज़् **ख़ुदख़्वाही** यकी'स्त ।	**अहंकार** और **आत्मरति** एक ही हैं ।
ख़ुदरायी व **ख़ुद्दारी** फ़र्क़ी दारद ।	**अभिमान** और **स्वाभिमान** में अन्तर है ।
ईन् गियाह **ख़ुदरूय** अस्त ।	यह वनस्पति **अपने आप उगने वाली** है ।
ख़ुदसितायी रा कसान् न मी ख़्वाहन्द ।	**अपनी तारीफ़ आप करने वाले को** लोग पसन्द नहीं करते ।
ख़ुदग़र्ज़ म शौ ।	**स्वार्थी** मत हो ।
ख़ुदकर्दः रा तदबीर नी'स्त ।	**अपने किये** का कोई उपाय नहीं । (अपना किया भोगना ही पड़ता है)
ख़ुदकुशी कार इ शुजाअ़त नी'स्त ।	**आत्महत्या** वीरता नहीं ।
महात्मा गान्धी पीशवा यि **ख़ुदसूज़** बूद ।	महात्मा गान्धी **आत्माहुति करने वाले** नेता थे ।
ख़ुदी यि मन'स्त वुरूद'श् बिदिहीद ।	**मेरा आदमी है,** आने दीजिये ।

मी ज़ायद=उत्पन्न होती है
फ़र्क़ी दारद=एक अन्तर रखता है, अन्तर होता है ।
गियाह=घास, वनस्पति
तदबीर=निराकरण का उपाय
शुजाअ़त=वीरता
पीशवा=नेता

ख़ुदी=रिश्तेदार, अपना आदमी, परिचित, (ख़ुदी का प्रयोग स्वाभिमान के अर्थ में उर्दू में होता हैं जैसे कि इक़बाल का प्रसिद्ध पद है – "ख़ुदी को कर बुलन्द इतना –"; **ख़ुदी** का स्वाभिमान अर्थ फ़ारसी में नहीं होता । फ़ारसी में इसका अर्थ रिश्तेदार आदि होता है ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ुर्दन् ।	**खाना, पीना, जीर्ण करना, छूना आदि** ।
चि: मी ख़ुरीद ?" – "हीच" ।	"क्या खा रहे हो ?" – "कुछ नहीं ।"
"दर मकतब **चिः ख़ुर्दी** ?"	"पाठशाला में **क्या खाया था** ?"
"कुतक **ख़ुर्दम्** ।"	"डंडे **खाये थे** ।"
मन् क़ब्ल अज़् गिज़ा **आब मी ख़ुरम्** ।	मैं भोजन से पहले **पानी पीता हूँ** ।
ऊ **पूल** इ मरा **ख़ुर्द** ।	वह मेरा **पैसा खा गया** ।
ज़िन्हार, पूल इ मन् **ख़ुर्दनी** नी'स्त ।	याद रखना, मेरा पैसा कोई खा नहीं सकता ।
क़ाली रा मूरियानः **ख़ुर्द** ।	कालीन को कीड़े **काट गये** ।
ईन् मायअ़ कम कम आन् रा **बिख़ुरद** ।	यह तरल पदार्थ थोड़ा-थोड़ा करके उसको **जीर्ण करता जाता है** ।
चौगान बि तूप न **ख़ुर्द** ।	बल्ले ने गेंद को **नहीं छुआ** ।
कश्ती बि सख़रः **ख़ुर्द** ।	नाव चट्टान से **टकरा गयी** ।
आन् दू क़तार **बिहम ख़ुर्दन्द** ।	वे दोनों रेलगाड़ियाँ **आपस में टकरा गयीं** ।
ज़म्बूर रा **बि दस्त ख़ुर्दम्** कि ऊ नैश ज़द ।	ततैया को **मैंने हाथ से छुआ ही था** कि उसने डंक मार दिया ।
ईन् कमानः बि चर्ख़ इ मन् **न मी ख़ुरद** ।	यह टायर मेरे पहिये पर **फिट नहीं बैठता** ।
ऊ **ज़मीन ख़ुर्द** ।	वह **पटक खा गया** (बरबाद हो गया; या बेइज़्ज़त हो गया)
ईन् लिबास दीगर **बि कार न मी ख़ुरद** ।	यह पोशाक अब **काम में नहीं आती** ।
ह़र्फ़हा यि तू बि दमाग़'श् **ख़ुर्द** ।	तेरे शब्दों से उसके मस्तिष्क को **आघात लगा है** ।
ईन् जिन्स हनूज़ दस्त **न ख़ुर्दः अस्त** ।	यह चीज़ अभी हाथ से **छुई नहीं गयी** ।
अंगूर ह़ालन् **ख़ुर्दनी** नी'स्त ।	अंगूर अभी **खाने योग्य** नहीं हैं (पके नहीं हैं) ।
ख़ुरिश व ख़ुश्कः बियार ।	**स्टू** और चावल ले आओ ।
ईन् कार **ख़ुरन्दः** यि **मा** नी'स्त	यह कार्य **हमारे योग्य** नहीं है ।

कुतक=डंडे

ज़िन्हार=सावधान

ख़ुर्दनी=खाने योग्य (संस्कृत-'अनीयर्' प्रत्यय से निष्पन्न)

क़ाली=क़ालीन, ग़लीचा, रत्नकम्बल

मूरियानः=कीड़े, ज़ंग

माया=तरल वस्तु, रासायनिक घोल

सख़रः=चट्टान

ख़ुरिश=पहले ख़ुरिश और ख़ुराक का अर्थ भोजन हुआ करता था । आधुनिक फ़ारसी में ख़ुरिश का अर्थ वह खाद्य होता है जिसके द्वारा मुख्य भोजन खाया जा सके । जैसे – चावल को दाल के साथ खाया जा सकता है, तो दाल ख़ुरिश हुई । मांसरस, आबगूश्त, शूरबादार मांस, तरीदार सब्ज़ी, स्टू आदि ख़ुरिश कहलाती हैं ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ुश ।	**(संस्कृत-सु-सुख)**
ऊ बावुजूद इ थ्सरवत **ख़ुश** नी'स्त ।	धन-सम्पत्ति के होते हुए भी **प्रसन्न** नहीं है ।
ऊ हाफ़िज़ रा **ख़ुश मी ख़्वानद** ।	वह हाफ़िज़ का **पाठ अच्छी तरह करता है** ।
ख़ुश ज़ी कि न दानी कि कुजा ख़्वाही रफ़्त ।	**प्रसन्नतापूर्वक जी,** क्योंकि तुझे क्या पता कि तू कहाँ जायगा ।
ईन् सुख़ुन पादशाह रा **ख़ुश मी आमद** ।	यह बात राजा को **अच्छी लगी** ।
अज़् ऊ **ख़ुश'म् न मी आयद** ।	उससे (वह) **मुझे अच्छा नहीं लगता** ।
ख़ुश'त् मी आयद चुनान् ज़ियाद हर्फ़ बिजनी ?	**तुझे** इतना ज़्यादा बोलना **अच्छा लगता है** ?
ख़ुश दारम् कि कार इ ख़ुद रा बिकुनम् ।	**मुझे** अपना काम करना **अच्छा लगता है** ।
कसी कि **ख़ुश अस्त** दीगरान् हम ख़ुश मी कुनद ।	जो स्वयं **प्रसन्न रहता** है वह दूसरों को भी प्रसन्न करता है ।
खेली बि मा **ख़ुश गुज़श्त** ।	हमारे साथ बड़ी **अच्छी बीती** ।
ख़ुश बाशीद ।	**मस्त** रहो ।
दुर्र इ **ख़ुशाब** ऊरा दाद ।	एक **चमकीला** मोती उसको दिया ।
बराय **ख़ुश आयन्द** इ ऊ ईन् कार रा कर्दम् ।	उसकी **प्रसन्नता** के लिये मैंने यह काम किया ।
चिः ख़ुश गुफ़्त यकताश बा ख़ीलताश !	यकताश ने ख़ीलताश से **कितना अच्छा** कहा है !
ख़ुशा शीराज़ो-वज़्अ़ इ बीमिथ्साल'श् ।	**कितना सुन्दर** है शीराज़ और उसकी अनुपम अवस्थिति ।
ख़ुशहाल'म् कि ईन् रा शुनीदम् ।	मैं बड़ा **प्रसन्न** हूँ कि मैंने यह सुना ।
ईन् ग़िज़ा ख़ेली **ख़ुशमज़ः** अस्त ।	यह भोजन अत्यन्त **सुस्वादु** है ।
आन् दुख़्तर ख़ेली **ख़ुशलहजः** अस्त ।	यह लड़की बड़ी **सुकण्ठी** है ।
ऐ ! **ख़ुशवक़्त** ! चुनीन् म गू !	ओ ! **भाग्यवान्** ! ऐसा मत कह !
ख़ुशदामन'श् मुर्द ।	उसकी **सास** मर गयी ।
ईन् मुलाज़िम **ख़ुशसाबिक़ः** अस्त ।	इस मुलाज़िम की सेवा का **पूर्ववृत्त** (पिछला रिकार्ड) **अच्छा** है ।

थ्सरवत=वैभव, सम्पत्ति

ख़ुश ज़ी=मगन होकर जीता रह (संस्कृत-सुखं जीव)

दुर्र=मोती

ख़ुशाब=प्रसन्न आभावाला, चमकीला

वज़्अ़=अवस्थिति

बीमिथ्साल=अनुपम

ख़ुशदामन=जिसका दामन (गोद) एक योग्य पुत्री को जन्म देने के कारण धन्य हो गया अर्थात् सास । यहाँ सास की प्रशंसा में पत्नी की प्रशंसा छिपी हुई है ।

ख़ुशसाबिक़ः=जिसकी सेवा का पूर्ववृत्त अच्छा है ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ून ।	**रक्त, हत्या, प्राण, आक्रमण** (संस्कृत –शोण)
चिरा बीगुनाहान् रा **ख़ून कर्दी** ?	तूने क्यों निरपराधों का **रक्त बहाया** ?
बाद इ मुर्दन् इ ऊ ज़न'श् **ख़ून गिरीस्त** ।	उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी **ख़ून के आँसुओं से रोयी** ।
चुन् पिसर'श् बुज़ुर्ग शुद ऊ **ख़ून** इ **पिदर** ख़्वास्त ।	जब उसका पुत्र बड़ा हो गया तो उसने **पिता की हत्या** का बदला ले लिया ।
वर **ख़ून** इ **कस्** तीग़ म जन् ।	**किसी के प्राण** पर तलवार मत मार ।
तुरा नीज़ **ख़ून** चर्ख़ **रीज़द** बि तीग़ ।	आकाश (परमात्मा) तेरे **प्राण** भी तलवार से **लेगा** ।
गूदर्ज़ **शबख़ून** कर्द ।	गूदर्ज़ ने **रात्रि में मारकाट** मचाई ।
रुस्तम चु ईन्सान् दीद चश्महा'श् **ख़ूनगून** बूद ।	रुस्तम ने जब ऐसा देखा तो उसकी आँखें **रक्तवत्** हो गयीं ।
ख़ून'श् बि जूश आमद ।	उसका **ख़ून खौल उठा** ।
ख़ून'श् बि गर्दन इ शुमा ख़्वाहद मान्द ।	**उसकी हत्या का पाप** तुम्हारी गर्दन पर रखा रहेगा ।
पीश इ दरवीशान् बुवद ख़ून'त् मुबाह् ।	साधुओं के द्वारा **तेरी हत्या** वैध होगी ।
मग़र ख़ून इ तू अज़् ख़ून इ मन् **रंगीनतर'**स्त?	क्या तेरा ख़ून मेरे ख़ून से ज़्यादा गहरे रंग का है ? (**बहुमूल्य** है ?)
ख़ून रा **बा ख़ून न मी शूयन्द** ।	ख़ून को **ख़ून से नहीं धोया जा सकता** ।
ख़ूनाब अज़् चश्महा'श् बारीद ।	उसकी आँखों से **ख़ून** बरसने लगा ।
दुश्मन इ **ख़ूनआशाम** दर ख़ानः यि मन् ज़ाद ।	**ख़ून पीने वाला** शत्रु मेरे घर जनमा है ।
दस्तो-दामन'श् **ख़ूनअन्दूद** अस्त ।	उसके हाथ और कपड़े **ख़ून से सने हैं** ।
चश्मान् इ **ख़ूनबार** रा ख़ुश्क कुन् ।	**ख़ून के आँसू रोने वाली** आँखों को पोंछ ले ।
तीमूर पादशाह इ **ख़ूनख़्वार** बूद ।	तिमूर एक **रक्तपिपासु** राजा था ।
ऊ बा **ख़ूनसर्दी** सद हज़ार ज़िन्दानियान् रा हलाक कर्द ।	उसने **ठण्डे दिल से** एक लाख बन्दियों को मार डाला ।
मगर **ख़ून** इ तू **सफ़ीद** शुद ?	क्या तेरा **ख़ून सफ़ेद** हो गया है ?
ख़ून इ **साग़र** ख़ुर म ख़ुर **ख़ून** इ **जिगर** ।	**मधुपात्र का रक्त** (मदिरा) पी, अपने **जिगर का ख़ून** मत पी ।

मुबाह्=वैध, उचित

ख़ून रा बा ख़ून न मी शूयन्द=ख़ून से ख़ून नहीं धुलता अर्थात् वैर से वैर शान्त नहीं होता ।

सद हज़ार=एक लाख

ख़ूनआशाम=ख़ून पीने वाला (संस्कृत-आचामः=फ़ार्सी-आशाम)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ैर। — **कल्याण, दान, भलाई, प्रमाण, हित ।**

बराय **ख़ैर** इ **उ़मूम** ईन् कार कर्द । — **जनता के कल्याण** के लिये यह काम किया ।

ख़ैर'श् बि कसी न मी रसद । — उसका **दान** किसी को नहीं मिलता ।

ख़ैर वि बीनी ! — तू **भलाई** देखे ।

बख़्शीदम् ! वले अज़् ईन् कार **ख़ैरी** न मी बीनम् । — मैंने क्षमा किया ! लेकिन इस काम से मैं **कोई भलाई** नहीं देखता ।

दूस्त'म् रईस इ **दारु'ल् ख़ैर** इ **आ़मः** अस्त । — मेरा मित्र **समाज कल्याण** का विभागाध्यक्ष है ।

ख़ैर व शर रा मुन्सिफ़ ऊ'स्त । — **भले-बुरे** का न्यायकर्ता वह (परमात्मा) है ।

बि हर कार नुख़ुस्तीन **फ़ाल** इ **ख़ैर व शर** शुमुर्दे व आन्गाह माइल इ कार बूदे । — हर काम में पहले **भले-बुरे का सगुन** विचारता और तब काम में प्रवृत्त होता ।

मन् रईस इ जदीद रा **ख़ैरमुक़द्दम** ख़्वान्दम् । — मैंने नये अध्यक्ष का **स्वागत-भाषण** पढ़ा ।

ख़ैर उल् उमूर औसतहा । — मध्यम मार्ग ही **हर काम का कल्याण मार्ग है** ।

"बा मन् बिया ।" – "**न ख़ैर**" । — "मेरे साथ चल ।" – "**नहीं**" ।

शब **बि ख़ैर** । — रात्रि की **नमस्ते** ।

"**सबाह़'ल् ख़ैर**" । "**मसा'ल् ख़ैर**" । — "**प्रभात की नमस्ते** ।" – '**संध्या की नमस्ते** ।'

ईन् बीमारिस्तान **ख़ैराती** अस्त । — यह औषधालय **दातव्य** (निःशुल्क) है ।

पैग़म्बर रा यक नाम '**ख़ैर उल् अनाम**' अस्त । — पैग़म्बर का एक नाम **पुरुषोत्तम** है ।

ख़ुद: यि **ख़ैरख़्वाहान**'म् । — मैं अपने **हितैषियों** के द्वारा ही लूटा गया हूँ ।

अगर ऊ **ख़ैरअन्दीश**'स्त बदअन्दीश चिः मी कुनद । — अगर वह (परमात्मा) **हितेच्छु है** तो बुरा चीतने वाला क्या कर सकता है ।

जायिज़ः यि **ख़ैरख़्वाही** यि **उ़मूमी** यि इमसाल बि ऊ अता शुदः अस्त । — उसको इस वर्ष का **मानवकल्याण पुरस्कार** दिया गया है ।

ऊ **ख़ैरख़्वाही** ज़ियाद नमूद सूदी न दाश्त । — उसने और भी **हितचिन्ता** दिखाई किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ ।

ख़ैरख़्वाहानः ऊरा नसीह़त कर्दम् । — (मैंने तो) **हितेच्छा से** उसको उपदेश दिया था ।

ख़ैरियत अस्त ? — **ख़ैरियत** तो है ?

उ़मूम=सामान्य जनता, सर्वसाधारण

बख़्शीदम्=मैंने क्षमा किया

शर=बुराई

मुन्सिफ़=इन्साफ करने वाला

नुख़ुस्तीन=सबसे पहले

फ़ाल=शकुन, शुभाशुभ लक्षण

शुमुर्दे=गिनता (था)

आन्गाह=तब

न ख़ैर=नहीं (उच्चारण नख़े; प्रतिपर्याय–बले)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ख़ियाल ।	**काल्पनिक पदार्थ, विचार, कल्पना** ।
तू ई बराबर इ मन् या **ख़ियाल** दर नज़र'म् !	मेरे पास तू या कोई भूत-**अशरीरी वस्तु**-है !
दुनिया **ख़्वाबो-ख़ियाली** अस्त ।	संसार **स्वप्न और विचार मात्र** है ।
ईन् **ख़ियाल** अस्त हक़ीक़त न दारद ।	यह केवल एक **कल्पना** है, इसमें वास्तविकता नहीं है ।
ख़ियाल कर्दम् शुमा पूल इ लाज़िम दारीद ।	**मैंने सोचा** आपके पास केवल आवश्यक धन मात्र है ।
पीश इ **ख़ुद ख़ियाल कर्दम्** कि न बायद कज़िय्य: ईन् त़ोर बाशद ।	**मैंने अपने मन में सोचा** कि मामला इस तरह नहीं होना चाहिये ।
दू तूप रा **ख़ियाल कुनीद** कि यकी दौर इ दीगरी मी गर्दद ।	दो गेंदों की **कल्पना कीजिये** जो एक दूसरे के चारों ओर चक्कर लगा रही हैं ।
ख़ियाल मी कुनम् अज़् अस्ल ईन् पूल रा न दाश्तम् ।	**मैं सोचे लेता हूँ** कि मेरे पास शुरू से ही यह धन नहीं था ।
कुहन पीरी **बि** पीरान: सर **ख़ियाल बस्त** कि ज़ुफ़्त गीरद ।	एक प्राचीन जराजीर्ण बुड्ढे ने अपने सिर में **योजना बनायी** कि शादी कर लूँ ।
ईन् **ख़ियाल** इ **ख़ाम** अस्त ।	यह **अपरिपक्व विचार** है ।
बि ख़ियाल'म् उफ़्ताद कि दर आन् जा दावत दारम् ।	**मेरे विचार** में आया कि मुझे तो वहाँ निमन्त्रण में जाना है ।
वले, **ख़ियाली** नी'स्त ।	लेकिन, **कोई चिन्ता** नहीं ।
ख़ियाल ऊरा बर दाश्त : अस्त ।	वह **विचारों** में खोया हुआ है (शब्दार्थ-विचारों ने उसको उठा रखा है)।
बि ख़ियाल ईन् कि अगर न रवद ऊरा बर ख़ास्तन्द ।	**मान लो** अगर न जाय तो उसको निकाल दिया जाय ।
ऊ **ख़ियाल बाफ़्त** कि ऊ अज़् क़हरमानान् इ बास्तानी'स्त ।	उसने **कल्पना की** कि वह प्राचीन वीरों में से एक है ।
डौन क्विक्ज़ोट यकी **ख़ियालबाफ़** बूद ।	डौन क्विक्ज़ोट एक **स्वप्न बुनने वाला** था ।
ख़त्त् इ इस्तिवा **ख़त्त् इ ख़ियाली** अस्त ।	विषुवत् रेखा एक **काल्पनिक रेखा** है ।
मन् मर्द इ कार साज़ मी ख़्वाहम् **ख़ियाल-साज़** नै ।	मुझे काम करने वाला आदमी चाहिए **कल्पनाकार** नहीं ।
असनाम इ **ख़ियाली** रा फ़िक्र म कुन् ।	**काल्पनिक प्रियाओं** की चिन्ता मत कर ।
मुसन्निफ़ ऐच. जी. वेल्स **ख़ियालबन्द** इ बुलन्द बूद ।	लेखक ऐच. जी. वेल्स बड़ा ऊँचा **कल्पनाशील** था ।
ऊ **ख़ियाल** इ **बातिल** बस्त ।	उसने **व्यर्थ विचार** किया ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दर ।	(संस्कृत-द्वार)
लुत्फ़न् **दर** रा बिबन्दीद ।	कृपया **द्वार** बन्द कर दीजिये ।
अज़् हर दरी सुख़ुन गुफ़्तीम ।	हम वार्ता के प्रत्येक द्वार (**हर विषय**) **पर** बोले
दम इ **दर** ऐस्तादः बूदीम ।	**द्वार** पर खड़े रहे ।
ऊ **दर** इ **सुहबत** रा बाज़ कर्द ।	उसने संगति का द्वार खोला । (**प्रारम्भिक भाषण** दिया)
दर पुश्त इ **दर** ऊ ख़ुद मौजूद बूद ।	**द्वार के पीछे** वह स्वयं मौजूद था ।
अज़् **दर** इ **बुज़ुर्ग** मा वारिद इ क़लअः बूदीम ।	हम **फाटक** से किले में प्रविष्ट हुए ।
हातिम रा **दर** इ **ख़ानः** हमीशः बाज़ बूद ।	हातिम के **घर का द्वार** सदैव खुला रहता था ।
दर रा कूफ़्तन्द वले हीचकस् जवाब न दाद ।	**दरवाज़ा पीटते रहे** पर किसी ने जवाब नहीं दिया ।
दर इ **गुफ़्तो-शुनीद** गुज़ाश्त ।	**कहने-सुनने का द्वार** बन्द कर दिया ।
दर इ **दहन'त्** रा बिगुज़ार ।	तेरे **मुँह का दरवाज़ा** बन्द कर (बक-बक मत कर)।
अबु'ल् फ़ज़्ल **दरबारी** यि अकबर बूद ।	अबु'ल् फ़ज़्ल अकबर का **दरबारी** था ।
दरबान् रा बिगू कि कसी बीइजाज़ः नयायद ।	**द्वारपाल** से कह दो कोई बिना आज्ञा न आवे ।
दर बि दर गर्दीद वले काम इ दिल न याफ़्त ।	**घर घर** भटकता फिरा पर हृदय की कामना प्राप्त नहीं हुई ।
कश्ती रा **दरबस्त** इजाज़ः कर्दः अन्द ।	**पूरे** जहाज़ को उपयोग के लिये ले लिया गया है ।
दर नीमशब दर रा की ज़नद ?	**आधी रात को** दरवाज़ा कौन खटखटा रहा है?
बि दरगाह इ **हक़ तआलः** इस्तग़ाथ्सः कर्द ।	**परमात्मा के द्वार पर** गुहार लगायी ।
यकी **अज़् दर** दरामद ।	कोई **द्वार** से आया है ।
ईन् कूचः **दर** इ **रौ** न दारद ।	इस गली में से **बाहर जाने का निर्गम** (**निकास**) नहीं है ।
हर्फ़'श् **दर** इ **रौ** न दारद ।	उसकी बातों में **जाने का द्वार** (**प्रभाव**) नहीं है ।
बिदर मन् गूयम् दीवार तू गूश कुन् ।	**द्वार पर** मैं चिल्लाता हूँ, दीवार पर तू कान लगा ।

लुत्फ़न्=कृपया
बिबन्दीद=बन्द कर दीजिये
सुख़ुन गुफ़्तीम=हमने बातें कीं
ऐस्तादः=खड़े हुए
बूदीम=हम रहे, हम थे
बाज़ कर्दीम=हमने खोला
दरबस्त=पूरे का पूरा (किवाड़ बन्द करके जिसमें किसी और को आने की आज्ञा न हो ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दर ।	**विभक्तिवाचक दर***
चिरा **दर पर्दः** ह़र्फ़ मी ज़नीद ?	**पर्दे के पीछे** से क्यों बात कर रहे हो ?
ऊ **दर ख़ुर्द** इ आन् मक़ाम नी'स्त ।	वह उस स्थान के **उपयुक्त** नहीं है ।
ज़िन्दानियान् **दर रफ़्तन्द** ।	क़ैदी **भाग गये** ।
अज़् बाला उफ़्ताद, पाय'श् **दर रफ़्त** ।	ऊपर से गिर पड़ा, पैर में **मोच आ गयी** ।
बा यक दीगर **दर साख़्तन्द** ।	एक दूसरे से **टकरा गये** ।
तुफ़ंग रा **दर कर्दन्द** ।	बन्दूक़ **चलाई गयी** ।
ऊ मतलबी रा अज़् ऊ बि तदबीर **दर कशीद** ।	उसने चतुरतापूर्वक उसके **पेट में से बात निकाल ली** ।
चुन् इ़ताब नमूदम् ऊ **दम दर कशीद** ।	जब मैंने क्रोध प्रदर्शित किया तो वह दम खींच गया (**चुप लगा गया**) ।
चुन् शूरिश ज़ियाद बूद ऊ **इ़नान दर कशीद** ।	जब उपद्रव अधिक हुए उसने **लगाम कस दी** ।
दर मजलिस **गिरियः दर गुज़ाश्त** ।	सभा में ही **रोना शुरू कर दिया** ।
आतिश इ फ़ित्न: **दर गिरिफ़्त** ।	उपद्रवों की आग **भड़क गयी** ।
ख़ुदा न कुनद कसी **दर मान्दः** व मुह़ताज शवद ।	परमात्मा न करे कोई **घर में पड़ा** (निरूपाय) और परमुखापेक्षी हो ।
नाम: यि कुहन **दर निविश्तन्द** ।	पुरानी पुस्तक **हटा दी गयी** ।
दर ज़ह़मत उफ़्ताद ।	**विपत्ति में** पड़ गया ।
दर ह़ाल अज़् नज़र ग़ायब शुद ।	**सहसा** आँखों से अन्तर्धान हो गया ।
ह़ालन् **दर कार** नी'स्त ।	अभी **उपयोग** में नहीं है ।
दर अव्वल ऊरा न शनाख़्तम् ।	**पहले पहल** उसको (मैंने) नहीं पहचाना ।
दू **दर द्वाज़्दः** अस्त ।	**बारह बजने में** दो मिनट हैं ।
बि दरिया दर मुनाफ़अ़ बीशुमार अस्त ।	**समुद्र में** असंख्य लाभ हैं ।
ईन् **बि आन् दर** ।	यह **उसके बदले में** । (जैसे को तैसा) ।

---

* **यह विभक्तिवाचक दर भी द्वारवाचक 'दर' से निकला है । अर्थभेद से प्रयोगभेद हो गया है । द्वारवाचक दर से विभक्ति वाचक 'दर' का सम्बन्धार्थ नीचे दिया है ।**

दर पर्द:=पर्दे के पीछे से (शब्दार्थ – पर्दे को द्वार बनाकर)

दर ख़ुर्द=उपयुक्त (द्वार से मेल खाता हुआ)

दर रफ़्तन्द=भाग गये (द्वार से चले गये)

पाय दर रफ़्त=पैर का जोड़ उखड़ गया (पैर का दरवाजा सरक गया)

दर साख़्तन्द=टकरा गये (एक दूसरे में द्वार निकाल लिया)

दर कर्दन्द=चलायी गयी (द्वार कर दिया, खोल दिया)

दर कशीद=निकाल लिया (द्वार से खींच लिया)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दरिया ।	**समुद्र, नदी ।**
दरिया यि **अख़ज़र** ई फ़लको-कश्ती यी हिलाल ।	**हरा सागर** रूपी आकाश और अर्धचन्द्र रूपी नौका ।
दरिया यि **सियाह** तफ़रीहगाह इ शौरवी अस्त ।	**कृष्णसागर** रूस का आमोदकेन्द्र है ।
दरिया यि **माज़न्दरान्** तफ़रीहगाह इ ईरानियान् अस्त ।	**काश्यपसागर** ईरानियों का आमोदकेन्द्र है ।
दरिया यि माज़न्दरान् **दरिया** यि **गैर आज़ाद** अस्त ।	काश्यपसागर **बँधा समुद्र** है ।
दरिया यि **क़ुलज़ूम** पायीन इ **दरिया** यि **रूम** अस्त ।	**रक्तसागर भूमध्यसागर** के दक्षिण भाग में है ।
दरिया यि **उ़म्मान** पायीन इ ख़लीज इ फ़ार्स अस्त ।	**उमानसागर** फ़ारस की खाड़ी के दक्षिण भाग में है ।
दरिया यि **हिन्द** दरिया यि आज़म अस्त ।	**हिन्दसागर** एक महासागर है ।
दरिया यि **नील रूद** इ रवान अस्त ।	**नीलनदी** एक बहती हुई नदी है ।
मा बि मोक़अ़ इ **पायीन आमदन्** इ **दरिया** बि दरिया कश्ती रा अन्दाख़्तीम् ।	हमने **भाटे** के समय समुद्र में नाव उतारी ।
इंगलिसीहा दर हिन्द **अज़् राह** इ **दरिया** आमदन्द ।	अंगरेज भारत में **समुद्रमार्ग** से आये ।
लब इ **दरिया** यि कन्याकुमारी क़शंगतरीन अस्त ।	कन्याकुमारी का **समुद्रतट** सुन्दरतम है ।
बम्बई अज़् **सत्ह** इ **दरिया** बालातर अस्त ।	बम्बई **समुद्रतल** से ऊँचा है ।
हालैण्ड अज़् **सत्ह** इ **दरिया पायीनतर** अस्त ।	हालैण्ड **समुद्रतल से नीचा** है ।
दर सफ़र इ दरिया **नाख़ुशी** यि **दरिया** आ़म अस्त ।	समुदी यात्रा में **समुद्र रोग** (उलटी आना) साधारण बात है ।
दीशब **बारान** इ **दरियाबार** आमद ।	कल रात को **धारासार वृष्टि** हुई ।
ज़ाल कर्सेटजी **दरियाबेगी** यि हिन्दुस्तान अस्त ।	ज़ाल कर्सेटजी भारत के **नौसेनाध्यक्ष** हैं ।
राजसमन्द **दरियाचिः** यि क़शंग इ राजस्थान अस्त ।	राजसमन्द राजस्थान की सुन्दर **झील** है ।
दर ज़मानहा यि बास्तानी हिन्दियान् मशहूर **दरियानवर्द** बूदन्द ।	प्राचीनकाल में भारतीय प्रसिद्ध **सागरयात्री** होते थे ।
तवांगरी बि **दरियादिली** मारूफ़ बूद ।	एक धनिक अपनी **उदारता** के लिए प्रसिद्ध था ।
हैफ़ ! अज़् दरिया चीदी **दरियागूश** ।	अफ़सोस ! (तूने) समुद्र से केवल **सीपी** चुनी हैं ।

फ़लक=आकाश

कश्ती=नौका

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दस्त (१)	हाथ (संस्कृत – हस्त)
दस्त इ शुमा दराज़ कुनीद ।	अपना **हाथ** बढ़ाइये (यह चीज़ लीजिये – निमन्त्रणवाचक) ।
दस्त दर दस्त इ यक दीगर क़दम ज़दन्द ।	एक दूसरे के **हाथ में हाथ डालकर** क़दम बढ़ाये ।
मन् ऊरा **यक दस्त** इ **लिबास** दादम् ।	मैंने उसको **एक जोड़ा सूट** दिया ।
मा **चहार दस्त बाज़ी** कर्दीम ।	हम **चार हाथ बाज़ी** खेले ।
अकनून **दस्त** इ **मन्** अस्त ।	अब **मेरी बारी** है ।
मन् दर ईन् इ़ल्म **दस्ती** न दारम् ।	मैं इस विद्या में **प्रवेश** नही रखता ।
दस्त **दस्त** इ **मा** अस्त ।	अब **अपनी चढ़ बनी** है ।
अज़् **दस्त** इ **चप** बिरवीद ।	**बाईं तरफ़** को मुड़ जाइयेगा ।
खान: यि मन् **आन् दस्त** अस्त ।	मेरा घर **उस ओर** है ।
आथ्सार इ खारिज: हम दर ईन् कार **दस्ती दाश्त: अस्त** ।	विदेशी प्रभाव का भी इसमें **हाथ** है ।
ईन् कार **अज़् दस्त** इ **शुमा** अन्जाम गीरद ।	यह कार्य **आपके द्वारा** पूर्ण होगा ।
'गर **दस्त दिहद** कि आस्तीन'श् गीरम् ।	यदि **अवसर हाथ लगा तो** उसकी आस्तीन पकड़ लूँगा ।
ह़ालत इ गिरियः बि मन् **दस्त दाद** ।	मेरी रोने की सी हालत **हो गयी** ।
जंग इ सख़्ती दर आन् नुक़्त: **दस्त दाद** ।	भयंकर युद्ध वहाँ **घटित हुआ** ।
मा **दस्त बिहम दादीम** ।	हमने **हाथ मिलाये** ।
फ़ुरसत इ यतीम रा **अज़् दस्त दाद** ।	अद्वितीय अवसर **हाथ से जाने दिया** ।
दस्त न ज़न् बि गुलहा ।	फूलों को **हाथ मत लगा** ।
हमः मर्दुम अज़् ख़ुशी **दस्त ज़दन्द** ।	सारे आदमी प्रसन्नता से **तालियाँ बजाने लगे** ।
ऊ **दस्त बि हर कारी कि ज़द** मुकम्मिल शुद ।	उसने **जिस काम में हाथ डाला** वह पूरा हुआ ।
हर कारी कि **दर दस्त गिरिफ़्त** बि ख़ूबी तमाम कर्द ।	वह हर काम-जो उसने अपने **हाथ में लिया**- सुघरपन से पूरा किया ।

दराज़=बढ़ा हुआ, लम्बा
बाज़ी=खेल
दस्त इ चप=बाँये हाथ पर, बाईं ओर (संस्कृत – सव्यहस्त)
आथ्सार इ ख़ारिज:=विदेशी प्रभाव
अज़् दस्त इ शुमा=आपके हाथों, आपके द्वारा
अन्जाम गीरद=परिणाम ग्रहण करेगा, पूर्ण होगा
आस्तीन'श् गीरम्=उसकी आस्तीन पकड़ लूँगा (याचक भाव से)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दस्त (२)	**दस्त** के अन्य प्रयोग।
आन् आर्द **दस्त न ख़ुर्दः** अस्त।	वह आटा **हाथ से नहीं छुआ गया है।**
यक किताब ख़ूबी **बि दस्त आवुर्दम्।**	एक अच्छी पुस्तक मेरे **हाथ लगी है।**
हरचिः गश्तम् **बि दस्त नयामद।**	जहाँ भी गया **नहीं मिली।**
फ़ुरसत **अज़् दस्त रफ़्त।**	अवसर **हाथ से निकल गया।**
दस्त अन्दाज़ी म कुन् बि कारी कि तू न दानी।	उस काम में **हस्तक्षेप** मत कर जो तू नहीं जानता।
अज़् गुनाह **दस्त बर दाश्त।**	पाप से **हाथ हटा लिया।**
वक़्त इ मर्ग'म् आमद **दस्त अज़् मन् बर दार।**	मेरी मृत्यु का समय आ गया, **मुझ पर से हाथ हटा ले।**
वक़्त इ दस्त कशीदन् अज़् कार आमद।	कामों से **हाथ खींचने का समय** आ गया।
दर बियाबान चुन् आब न याफ़्तन्द **दस्त अज़् जान शुस्तन्द।**	जंगल में जब पानी नहीं मिला तो उन्होंने **जान की आशा से हाथ धोलिये।**
बि ज़ूदी दर हुनर **दस्त याफ़्त।**	शीघ्र ही सभी कलाओं में **पारंगत हो गया।**
दस्त कूतह ज़ि दुनिया बायद कर्द।	संसार के पदार्थों के प्रति **हाथ खींचकर** रहना चाहिये।
दस्त पीश इ लईम **दराज़ म कुन्।**	कृपण के सामने **हाथ मत फैला।**
अगर **अज़् दस्त'त् बर आयद** कसी रा दहन शीरीन कुन्।	यदि **तुझसे हो सके तो** किसी का मुँह मीठा कर।
दस्त'म् न मी रसद।	**मेरा हाथ** (वहाँ तक) नहीं पहुंचता।
ईन् कार **दस्त इ शुमा रा मी बूसद।**	यह कार्य **आपका ही हाथ चूमेगा।**
रुस्तम **दस्त बाला ज़द** व फ़त्ह् याफ़्त।	रुस्तम ने **आस्तीन ऊँची की** और विजयी हुआ।
दस्त ख़ाली बर गश्त।	**ख़ाली हाथ** (असफल) लौट आया।
दस्त पीश'श् दाश्तो-गुफ़्त – "बस कुन्।"	**उसके आगे हाथ अड़ा दिया** और कहा – "बस कर।"
दस्त बाज़ दार।	**हाथ** दूर रख।
ताज़गी **दस्त अज़् आस्तीन दर आवुर्दः** अस्त।	हाल ही में (उसने) **हाथ दिखाना शुरू किया है।**

आर्द=आटा
हरचिः=जहाँ भी
फ़ुरसत=सुअवसर
मर्ग=मृत्यु
बि ज़ूदी=जल्दी ही
हुनर=विद्या, कला
बायद कर्द=करना चाहिये
लईम=कृपण, कन्जूस

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दस्त (३)	**दस्त के कुछ अन्य प्रयोग ।**
कि दौलतो-मुल्क मी रसद **दस्त बि दस्त ।**	क्योंकि राज्य और सम्पत्ति **हाथों हाथ** चली जाती है ।
ईन् खबर **दस्तादस्त** रसानीद ।	यह खबर **हाथों हाथ** फैल गयी ।
हर दू दुज़्दान् **दस्तयकी** कर्दन्द ।	दोनों डाकुओं ने **एका** कर लिया ।
ऊ अबलह **दस्त** इ **चप** व रास्त अज़् हम तमीज़ न तवान कर्द ।	वह मूर्ख **बायें हाथ** और दायें हाथ में भी अन्तर नहीं कर सकता ।
कि **दस्त अफ़शान** ग़ज़ल ख़्वानीम ।	ताकि **हाथ नचाकर** हम प्रेमगीत गायें ।
यक चीज़ **बि दस्त'म्** उफ़्ताद: अस्त ।	एक चीज़ **मेरे हाथ** लगी है ।
चुन् नहीब दीदन्द **दस्तो-पाय** इ **ख़ुद रा गुम कर्दन्द ।**	जब ख़तरा देखा तो हाथ-पाँव खो बैठे **(हाथ-पाँव फूल गये)** ।
बिस्यार **दस्तो-पा ज़द** कारी न कर्द ।	बहुत **हाथ पाँव पीटे** कोई लाभ नहीं हुआ ।
दस्त बर दस्त निहाद व मदद इ आसमानी ख़्वास्त ।	**हाथ पर हाथ रखे रहा** और ईश्वर की सहायता चाहता रहा ।
दस्त इ **शुमा** वीबला ।	**कष्ट** के लिये धन्यवाद । (शब्दार्थ-आपके हाथ को कभी कोई कष्ट न हो)
दस्त म रीज़ाद, शाबाश ।	शाबाश ! **हाथ नीचा न हो !**
दस्त इ **ख़र** कूताह ।	अपनी **टाप** हटा ! दूर हट !
बा यक दस्त दू हिन्दुवान: बर दाश्तन् कार इ ख़िरदमन्दान् नी'स्त ।	**एक हाथ में** दो तरबूज़ उठाना बुद्धिमानों का काम नहीं है ।
ईन् **दस्त** इ **आख़िर** अस्त ।	यह **आख़िरी मौक़ा** है ।
ईन् खान: **दस्त** इ **बाला** दू हज़ार तुमान मी अर्ज़द ।	यह मकान **ज्यादा से ज्यादा** दो हज़ार तुमान के योग्य है ।
ईन् किताब **दस्त** इ **कम** सद रियाल क़ीमत दारद ।	यह पुस्तक **कम से कम** सौ रियाल की है ।
ऊ **दस्ततंग** बूद वले दिलतंग न बूद ।	वह **पैसे से तंग** हो गया पर दिल से तंग नहीं हुआ ।
दस्त इ **बुलन्द** मी गूयम् ।	**ऊँचा हाथ उठाकर** कहता हूँ । (संस्कृत-ऊर्ध्वबाहु विरौम्येष)
ऊ **दस्त** इ **कज** दारद ।	वह **खोटा हाथ** (चोरी करने वाला हाथ) रखता है ।
ख़ुशदामन'म् दुख़्तर'श् रा **दस्त अबरंजन** (या 'बिरंजन') दाद ।	मेरी सास ने अपनी लड़की को **कड़े** दिये ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दस्त (४)	**दस्त के कुछ और प्रयोग।**
दस्त अफ़ज़ार'म् रा की बिबुर्द ?	मेरे **हाथ के औज़ार** कौन ले गया ?
अलान् ऊ **दस्तबाला**'स्त।	अभी उसकी **चढ़ बनी** है।
मन् **दस्त बि दस्त** मुआमलः मी कुनम्।	मैं तो **हाथों हाथ** सौदा करता हूँ। (नक़द पैसा देता हूँ।)
जान इ कुर्द कन्द व **दस्त बि दहन** मान्द।	कुर्दों की तरह जान लगा कर खटा और **हाथ मुँह से आगे नहीं बढ़ा।**
दस्तबस्तः चुन् थ्सरवत याफ़्त **दस्तबाज़** बूद।	**निर्धन** को जब सम्पत्ति मिली वह **उदार** हो गया।
बि **दस्तबूस** इ रईस रफ़्तः बूद।	प्रधानजी को **नमस्ते करने** गया है।
कार इ आदम इ **दस्तपाचि** ख़राब मी शवद।	**उतावले** आदमी का काम बिगड़ जाता है।
ईन् शख़्स **दस्तपाक** अस्त।	यह आदमी **हाथ का साफ** (ईमानदार) है।
ईन् ग़िज़ा **दस्तपुख़्त** इ मादर अस्त।	यह भोजन माँ के **हाथों का बना** है।
दस्तदराज़ी म कुन्।	**अनधिकार चेष्टा** मत कर।
ऊ हम दर ईन् कार **दस्त दर कार** अस्त।	वह भी इस काम में **हाथ फँसाये** हुए **(लिप्त) है।**
सूरत इ रीज़ इ आन् **दस्तरस** नी'स्त।	इसकी विवरण-पत्रिका **उपलब्ध** नहीं है।
अज़् **दस्तरंज** इ ख़ुद नान पैदा मी कुनद।	अपने हाथ की **मेहनत** से रोटी कमाता है।
ऊ शख़्स इ **दस्तशिकस्तः** हस्त।	वह हाथ टूटा (बेहुनर, **गुणहीन**) व्यक्ति है।
दस्तशूय इ शुमा कुजा'स्त ?	आपका **हाथ धोने का बेसिन** कहाँ है ?
दस्तकारी यि जयपुर मारूफ़ अस्त।	जयपुर की **हस्तकला** प्रसिद्ध है।
मतलब **दस्तगीर**'श् शुद।	(वह) मतलब **समझ** गया है।
दर **दस्तमाली** शिकस्त।	**उठाया-धरी** में टूट गयी।
दस्तयारीय'म् कुनीद।	मेरे काम में हाथ लगाइये (**सहायता** कीजिये)।
ऊ **दस्ती** ईन् कार रा कर्द।	उसने **जानबूझ कर** यह काम किया है।

अफ़ज़ार=अवज़ार, औज़ार
दस्तबाला=ऊँचे हाथ वाला, प्रबल
मुआमलः=लेन-देन, सौदा
जान इ कुर्द=कुर्द जाति बहुत निर्धन और कड़ा परिश्रम करने के लिये प्रसिद्ध है।
कन्द=काटी, खटता रहा
दस्त बि दहन=(शब्दार्थ – हाथ-मुँह तक) हाथ की कमाई से पेट मात्र भर सके, इतना मात्र धन कमाने की स्थिति–अंग्रेज़ी में 'हैण्ड टू माउथ'
दस्तबस्तः=(शब्दार्थ – हाथ बँधा हुआ) निर्धनता के कारण जिसके हाथ व्यय करने में विवश हैं
थ्सरवत=समृद्धि, सम्पत्ति

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दस्तः ।	**हाथ में पकड़ने योग्य वस्तु, टोली, झुण्ड ।**
ईन् सत्ल **दस्तः** यि **आहन** दारद ।	इस बालटी का **हत्था लोहे** का है ।
ऊ बि तोर इ हदियः **दस्तः** यि **गुल** आवुर्द ।	वह भेंट के रूप में **फूलों का गुच्छा** (गुल-दस्ता) लाया ।
यक **दस्तः** यि **पर** बराय बालिश'म् ख़्वाहम् खरीद ।	मैं अपने तकिये के लिए एक **मुट्ठा परों का** खरीदना चाहता हूं ।
अज़् हैज़मफ़ुरूश यक **दस्तः** यि **चूब** खरीदम् ।	(मैंने) टालवाले से एक **गट्ठा लकड़ियाँ** ख़रीदी ।
यक **दस्तः** यि **अ़मलः** पुल रा तमीज़ कर्दन्द ।	मज़दूरों की एक **टोली** ने पुल की सफ़ाई पुताई की ।
यक दस्तः यि **मुहन्दिस** इ फ़ौजी आमदन्द ।	सैनिक **इंजिनियरों का एक दल** आया ।
यक **दस्तः** यि **काग़ज़** बियार ।	काग़ज़ों का एक दस्ता (२४ **शीट**) ले आ ।
यक **दस्तः** यि **कब्क** अज़् हवा बि ज़मीन आमद ।	**पिण्डुकियों का एक झुण्ड** हवा से ज़मीन पर उतरा ।
यक दस्तः यि **गुर्ग** ह़मलावर बूद ।	**भेड़ियों के एक झुण्ड** ने आक्रमण किया ।
यक **दस्तः** यि बुज़ुर्ग इ **माही** रा दीदन्द ।	**मछलियों का** एक बड़ा समूह दिखाई पड़ा ।
दस्तः यि **ख़न्जर** अज़् दरियागूश साख़्तन्द ।	**छुरी का बेंटा** (त्सरु) सीप का बनाया ।
दस्तः यि **तबर** मान्द ।	**कुल्हाड़ी का बेंटा** बचा ।
शागिर्दान् इ **दस्तः** यि **पन्जुम** बर ख़ीज़न्द ।	**पाँचवी कक्षा** के विद्यार्थी खड़े हो जायें ।
दस्तः दस्तः मर्दुम दर पीशगाह इ फ़रीदून आमदन्द ।	**झुण्ड के झुण्ड** आदमी फ़रीदून के दरबार में आने लगे ।
अज़् तरफ़ इ वज़ारत इ आमूज़िश मुदर्रिसान् रा **दस्तः कर्दन्द** ।	शिक्षामंत्रालय की ओर से शिक्षकों का **वर्गीकरण किया गया** ।
दस्तः यि **कश्ती** यि हिन्द तवानातर'स्त ।	भारत का **नौसेना बेड़ा** पूर्वापेक्षा बहुत शक्तिशाली है ।
दर दीगर वज़ारतहा **दस्तःबन्दी** आग़ाज़ शुदः अस्त ।	दूसरे मंत्रालयों में **वर्गीकरण** प्रारम्भ हो गया है ।
ईन् समूवार **दस्तःदार** अस्त ।	यह समोवार **दस्तेवाला** है ।
दस्तःदार इ ईन् क़ुशून की'स्त ?	इस फ़ौजी टुकड़ी का **नायक** कौन है ?
साअ़त'म् रा **दस्तः** यि **कूक** शिकस्तः अस्त ।	मेरी घड़ी की **चाबी भरने की कील** टूट गयी है ।

सत्ल=बालटी

दरियागूश=सीपी (शब्दार्थ–नदी के कान)

हदियः=उपहार (जो छोटों की ओर से बड़ों को दिया जाय ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दिल (१)	**हृदय, केन्द्र, आसक्ति, मनोभाव, ध्यान ।**
दर हर कारी **दिल बायद दाश्त** ।	हर काम में **दिल** (साहस या धैर्य) **रखना चाहिये** ।
दर **दिल इ शब** आमद ।	(वह) **आधी रात** को आया ।
यक **दिल इ ख़ाक** दीदम् ।	(मैंने) एक **खोह** देखी ।
दिल म निह् बर दुनिया व असबाब इ ऊ ।	दुनिया और उसकी सामग्री पर **दिल मत लगा** ।
दिल बि **दिल** राह मी दारद ।	**दिल की बात दिल** जान जाता है ।
अज़् **दिल बिरवद** हर आन् कि अज़् दीद: बिरफ़्त ।	आँखों ओझल, **दिल से दूर** ।
दिल'श् ख़ुनक शुद ।	(उसका) **दिल ठण्डा पड़ा** ।
दिल व ज़बान'श् यकी'स्त ।	उसका **हृदय और वाणी** एक है ।
ख़बर शुनीद: **दिल'म् रीख़्त** ।	यह ख़बर सुनकर **मेरा हृदय धक से रह गया** ।
दिल'त् पीश इ मन् नी'स्त ।	**तेरा ध्यान** मेरी ओर नहीं है ।
दिल'म् मी ख़्वाहद कि कसी दिलआज़ुर्द: न बाशद ।	**मेरा दिल चाहता है** कि कोई दुःखित चित्त न हो ।
दिल'म् बराय वत़न तंग शुद: अस्त ।	**मुझे घर की याद** आ रही है ।
न मी तवानम् अज़् आन् **दिल बर दारम्** ।	मैं उससे **दिल** नहीं **हटा** सकता ।
दुश्नाम'श् **बि दिल गिरिफ़्त** ।	(उसने) उसकी गाली को अपने **दिल में रख लिया** ।
ईन् मसल: **अज़् दिल'म्** बीरून् रफ़्त ।	यह बात **मेरे ध्यान से** निकल गयी थी ।
ख़ुदाया ! **बि दिल'श् बियन्दाज़** कि मारा बिबख़्शद ।	हे परमात्मन् ! **उसके हृदय को ऐसा प्रभावित कर दे** कि वह हमें क्षमा कर दे ।
दिल'म् ह़ाल आमद ।	**मेरे दिल को** चैन आ गया ।
दिल'श् पुर अस्त ।	**उसका दिल** भरा हुआ है । (वह भरा बैठा है – क्रुद्ध है)
दिल क़वी दार ।	**दिल को मज़बूत** रख ।
दिल दिल कुनान कामयाब न मी शवन्द ।	**ढुलमुल करने वाले** सफल नहीं होते ।

अज़् दीद: बिरफ़्त=आँख से ओझल हुआ, परोक्षस्थ
ख़ुनक=ठण्डा
दिल व ज़बान=मन और वचन
शुनीद:=सुनकर
दिल तंग शुदन्=याद में दुखी होना
दिल बर दाश्तन्=चित्त हटाना, विमुख होना
दुश्नाम=गाली
मस्अल:=विषय, बात
बिबख़्शद=क्षमा कर देवे

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दिल (२)	**दिल के कृदन्त और सामासिक प्रयोग ।**
कि अज़् बू यी **दिलावीज़** ई तू मस्त'म् ।	क्योंकि तेरी **हृदयहारी** सुगन्ध से मैं उन्मत्त हो उठा हूँ ।
माशीनरानिन्द:यी **दिलबाज़ी** रा दीदम् ।	मैंने एक **दुर्दान्त** मोटर चालक को देखा ।
दिलआज़ारी म कुन्, **दिलआसायी** कुन् ।	किसी की **दिल दुखाई** मत कर, **साहसवृद्धि** कर ।
दर दबिस्तान इ मा संस्कृत **दिलख़्वाह** अस्त ।	हमारे विद्यालय में संस्कृत **ऐच्छिक** विषय है ।
आन् चिः न पायद **दिलबस्तगी** रा न शायद ।	जो चीज़ स्थिर नहीं है वह **दिल लगाने** के योग्य नहीं है ।
दूस्त'म् **दिलबस्तः** यि ऊ दूशीज़: अस्त ।	मेरा मित्र उस लड़की पर **दिल लगाये हुए** है ।
सलीम फरज़न्द इ **दिलबन्द** इ अकबर बूद ।	सलीम अकबर का **प्यारा** बेटा था ।
चिरा चुनीन् **दिलतंग** हस्ती ?	तू ऐसा **उदास** क्यों है ?
अव्वल मरा तौबीख़ कर्द, सिपस मरा **दिल-जूयी कर्द** ।	पहले मुझे डाँटा, फिर मुझे पुचकारा ।
आवाज़ इ **दिलख़राशतर** न शुनीदः अम् ।	इससे अधिक **हृदयन्तुद** आवाज़ मैंने नहीं सुनी ।
अज़् ईन् हुर्फ़ **दिलख़ुर शुद** ।	इस बात से वह **चिढ़ गया** ।
गान्धीजी बराय फ़ुक़रा **दिलसूज़ी** मी कर्द ।	गान्धीजी निर्धनों के लिये दिल जलाते **(चिन्ता करते)** रहते थे ।
नसीम इ **दिलगुशा** वज़ीद ।	**हृदय को खोलने वाली** प्रभात पवन चली ।
ज़ाल चुन् रुस्तम रा दर ईन् हालात दीद **दिलख़ून** शुद ।	ज़ाल ने रुस्तम को जब ऐसी अवस्था में देखा तो उसका हृदय **रक्ताक्त** हो उठा ।
ख़ुदसुतूदः बि ख़ुद **दिलख़ुशी** दिहद ।	अपनी तारीफ़ करके ख़ुद **ख़ुश** हो लेता है ।
चुन् शौहर'श् दीर आमद ज़न **दिलवापिस** शुद ।	जब उसका पति विलम्ब से आया, स्त्री का **हृदय व्याकुल** हो उठा ।
बि हर सू **दिलदादः यी** ।	हर जगह **एक न एक प्रेमासक्त** (मिलेगा) ।
पीर इ हफ़्तादसाल **दिलज़िन्दः** अस्त ।	सत्तर वर्ष का वृद्ध **सतेज** है ।
रुस्तम पहलवान् इ **दिलीरअफ़कन** बूद ।	रुस्तम **वीरों का मर्दन करने वाला** मल्ल था ।
भगतसिंह वतनपरस्त इ **दिलीर** बूद ।	भगतसिंह एक **वीर** देशभक्त था ।

दिलावीज=(दिल+आवीख़्तन्) हृदय को भुलाने वाला

मस्त=उन्मत (संस्कृत-मत्त)

माशीन रानिन्दः=ड्राईवर (ईरान में मशीन मोटर को कहते हैं जब कि भारत में मशीन से सिलाई मशीन का बोध होता है

ख़ुद सुतूदः=स्वयं अपनी प्रशंसा करके, (ख़ुद=स्वतः, सुतूदः=स्तुतः)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दम ।	**साँस, साँस लेने का काल, घुटन आदि ।**
दर **ईन् दम** कि आलम हमः'ज़् आन इ मास्त ।	**इस क्षण** जबकि सारा संसार मेरी सम्पत्ति है ।
दम इ **शमशीर** दीद व बर दमीद ।	**तलवार की धार** देखते ही भाग खड़ा हुआ ।
इमरूज़ हवा **दम दारद** ।	आज हवा में **घुटन** है ।
दम इ **ईसा** मरीज़हा रा शफ़ा दाद ।	**ईसा की निःश्वास** रोगियों को स्वास्थ्य देती थी ।
दम इ **तसलीम** वसीअ़त कर्द ।	**मरते समय** उसने वसीअ़त कर दी ।
दम दर कशीद ।	**चुप लगा गया** ।
ईन्हा जुज़ई अस्त **दम** अज़् चीज़हा यि बुज़र्ग **ज़न्** ।	ये छोटी-छोटी बातें हैं, बड़ी समस्याओं पर **कुछ कहिये** ।
तू **दम** अज़् अ़क्ल मी **ज़नी** ।	अरे ! तू अक्लमन्द होने का **दम भरता है** ।
बिरादर इ मुतरिब ऊरा **दमगीरी कर्द** ।	गायक के भाई ने उसका **गायन में साथ दिया** ।
तीमूरलंग, ज़िन्दानियान् रा **अज़् दम** इ **शमशीर** गुज़रानीद ।	तैमूरलंग ने अपने वन्दियों को **तलवार के घाट** उतार दिया ।
मा **दम** इ **दर** ऐस्तादीम ।	हम **द्वार के बाहर** खड़े रहे ।
शख़्स इ **दमबाज़** रा म पसन्द ।	**ख़ुशामदी** व्यक्ति को पसन्द मत कर ।
दम दमः यी शुनीदः अम् ।	मैंने एक **अफ़वाह** सुनी है ।
ऊ हमदम व **रफ़ीक़** इ **दमसाज़** इ मन'स्त ।	वह मेरा साथी और **प्रियमित्र** है ।
अवीसिना तबीब इ **दमशनास** बूद ।	अवीसिना प्राणज्ञ (**प्राणाचार्य**) चिकित्सक था ।
दमगाह'श् रा शिकस्तन्द ।	उसकी **नाक** तोड़ दी गयी ।
दमी सब्र कुन् ।	**एक क्षण** धीरज रख ।
दमी यि **सुब्ह़** सपीदः अज़् ख़ावर **दमीद** ।	**प्रातःकाल** उषा पूर्व दिशा से उदित हुई ।
ख़ुदा रूह़ इ ख़ुद रा बर आदम **दमीद** ।	ईश्वर ने आदम में अपनी आतमा **फूंक दी** ।
दमादम बादः मी ख़ुरद ।	**निरन्तर** शराब पीता रहता है ।

हमः'ज़् आन=सारी सम्पत्ति
शमशीर=तलवार
बर दमीद=भाग खड़ा हुआ
तसलीम=सौंपना
जुज़ई=छोटी-छोटी बातें
गुज़रानीद=गुज़ार दिया

हमदम=साथी
रफ़ीक=मित्र
तबीब=चिकित्सक
सपीदः=उषा
अज़् ख़ावर=पूर्व दिशा से
रूह़=आत्मा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अशआ़र अज़् शाह्नामः यि फ़िरदौसी ।	**फ़िरदौसी के शाह्नामे के कुछ पद ।**
बि नाम ई ख़ुदावन्द इ जानो-ख़िरद ।	प्राण और प्रज्ञा के स्वामी के नामस्मरण के साथ ।
क'ज़् ईन् बरतर अन्दीशः बर न ग्ज़रद ।।	कि जिसकी अपेक्षा कल्पना और ऊँची नहीं जा सकती ।।
ख़ुदावन्द इ नामो – ख़ुदावन्द इ जाय ।	(वह) स्वामी है (सु) नाम का और (सु) प्रतिष्ठा का ।
ख़ुदावन्द इ रूज़ी दिहो-रहनुमाय ।।	(वह) जीविका प्रदान करने वाला और पथ प्रदर्शक परमात्मा है ।।
ख़िरद बिह्‌तर अज़् हरचिः ऐज़द्'त दाद ।	प्रज्ञा उस हर वस्तु से अधिक अच्छी है जो कि परमात्मा ने तुझे दी है ।
सितायश ख़िरद रा बिह् अज़् राह इ दाद ।।	प्रज्ञा की स्तुति न्यायमार्ग से भी अच्छी है ।।
ख़िरद अफ़सर ई शह्‌रयारान् बुवद ।	प्रज्ञा राजाओं का मुकुट है ।
ख़िरद ज़ीवर ई नामदारान् बुवद ।।	प्रज्ञा यशस्वियों का आभूषण है ।।
× × ×	× × ×
बर ई मादर आमद पिश्ज़ूहीदो-गुफ़्त ।	माँ के पास आया, पूछने लगा और बोला ।
कि बिगुशाय बर मन् निहान अज़् निहुफ़्त ।।	कि मुझ पर खोल दे हृदय में छुपाये हुए रहस्य को ।।
बिगू मर मरा ता किः बूद'म् पिदर ।	मुझे बता कि मेरा पिता कौन था ।
किय'म् मन् बि तुख़्म, अज़् कुदामीन गुहर ।।	मैं कौन हूँ, कौन से वंश के बीज से उत्पन्न हूँ ।।
चिः गूयम् किय'म् बर सर ई अन्जुमन ।	मैं क्या कहूँ, मैं कौन हूँ सभा के मध्य में ।
यकी दानिशी दास्तानी बिज़न ।।	यह ज्ञानपूर्ण कथा (मुझ से) कह ।।
× × ×	× × ×
चु ईन् नामवर नामः आमद बिबुन ।	जब यह प्रसिद्ध ग्रन्थ समाप्ति को प्राप्त हुआ ।
ज़ि मन् रू यि किश्वर शवद पुर सुख़ुन ।।	मुझको लेकर सारा देश चर्चा से भर गया ।।
हर आन् कस् कि दारद हुशो-रायो-दीन ।	वह हर आदमी जो होश (चैतन्य), राय (विवेक) और दीन (धर्म) रखता है ।
पस अज़् मर्ग बर मन् कुनद आफ़रीन ।।	मेरी मृत्यु के पश्चात् धन्य-धन्य कहेगा ।।
न मीरम् अज़् ईन् पस कि मन् ज़िन्दः अम् ।	नहीं मरूँगा इसके अनन्तर क्योंकि मैं अमर हो गया ।
कि तुख़्म ई सुख़ुन रा पराकन्दः अम् ।।	क्योंकि वाणी का बीज मैंने (बोने के लिये) बिखेर दिया है ।

बि नाम=नाम लेकर, नामस्मरणपूर्वक
ख़ुदावन्द=स्वामी, प्रभु
ख़िरद=बुद्धि (संस्कृत-क्रतु, क्रत)

अन्दीशः=कल्पना, विचार
रूज़ीदिह=रोज़ी देने वाला
ऐज़द=परमात्मा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दूर ।
(संस्कृत तथा फ़ारसी में दूर समानार्थक हैं)

खान: चि मन् अज़् मद्रिस: **दूर**'स्त ।
मेरा घर विद्यालय से **दूर** है ।

दूर नी'स्त कि वि र व द ।
असम्भावित नहीं है कि चला जाय ।

लिबास इ कुहन: चि खुद रा **दूर अन्दाख़्त** ।
अपना पुराना परिधान **फेंक दिया** ।

नुमायश व बाज़ी रा **दूर अन्दाख़्तन्द** ।
नाटक और खेल (जुआ) को **छोड़ दिया** ।

नातिक़ अज़् मतलब **दूर उफ़्ताद** ।
व्याख्यानदाता प्रसंग से **दूर जा पड़ा** ।

दूर शौ ।
दूर हट ।

विलायतहा चि **दूर दराज़ रा** बन्द वस्त कर्द ।
सुदूरस्थ प्रान्तों की व्यवस्था की ।

हरचि: गूयीद अज़् ऊ **दूर नी'स्त** ।
आप जो कहते हैं उससे वह **अप्रत्याशित नहीं है** ।

जायी कि मन् दीद: बूदम् **दूरादूर** अज़् ईन् जा'स्त ।
जो स्थान मैंने देखा था, इस स्थान से **बहुत दूर है** ।

बुज़ुर्जमिह्र वज़ीर इ **दूरअन्दीश** बूद ।
बुज़ुर्जमिह्र एक **दूरदर्शी** मंत्री था ।

अज़् **दूरबीन** चीज़हा चि दूर रा मी बीनन्द ।
दूरबीन से दूर की चीजें देखी जाती हैं ।

दूरबीन इ **अक्कासी** रा ईजाद कोडक कर्द ।
कोडक ने **कैमरे** का आविष्कार किया ।

दूरगू रा दर इंगलिसी तिलिफ़ून मी गूयन्द ।
दूरगू को इंगलिश में टेलीफ़ोन कहते हैं ।

दूरनिवीस रा दर इंगलिसी तिलिगिराफ़ मी गूयन्द ।
दूरनवीस को अंगरेज़ी में टेलीग्राम कहते हैं ।

अज़् ईरान बुलग़ारिस्तान दूर'स्त व आलमान **दूरतरक** ।
ईरान से बुलगारिया दूर है और जर्मनी **दूरतर** ।

क़िस्मतहा चि **दूरदस्त** इ **शह्र** इ तेहरान क़शंग अस्त ।
तेहरान के **उपनगर** सुन्दर हैं ।

दूस्त'म् **अक्स** इ **दूरनुमाहा** रा कशद ।
मेरा मित्र **प्राकृतिक तलपटों के फ़ोटोचित्र** खींचता है ।

अज़् बदान् **दूरी कुन्** ।
बुरों से **बचो** ।

बि वास्त: चि **दूरी** चि **राह** आन् जा न रफ़्तम् ।
मैं **मार्ग की दूरी के कारण** वहाँ नहीं गया ।

हनूज़ दिल्ली **दूर'स्त** ।
अभी दिल्ली **दूर है** ।

नातिक़=वक्ता, व्याख्यानदाता
विलायतहा=प्रदेश, प्रान्त
दूरादूर=बहुत दूर (संस्कृत-दूराद्दूरम्)

दिल्ली दूर'स्त=(शब्दार्थ-दिल्ली दूर है) लक्ष्यसिद्धि में अभी विलम्ब है ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दूश ।	चातुर्थिक दूश ।
ह़र्फ़ ܝ **दूश** चहार मानी दर फ़ारसी दारद ।	**दूश शब्द** के चार अर्थ फ़ारसी में होते हैं ।
दूश बि मानी ܝ शानः कि दर संस्कृत **दोस्** मी नामन्द ।	**दूश** कि जिसका अर्थ कन्धा होता है । जिसको संस्कृत में **दोस्** कहते हैं ।
दूश बि मानी ܝ शब ܝ दूशीन कि दर संस्कृत **दोषा** मी नामन्द ।	**दूश** कि जिसका अर्थ पिछली रात होता है जिसको संस्कृत में **'दोषा'** कहते हैं ।
दूश कि अम्र अज़् फ़ैल ܝ **दूशीदन्** मी शवद ।	**दूश** (**दूशीदन**=दुहना) क्रिया का आज्ञा वाचक रूप होता है ।
दूश कि अज़् ऊ आव दर ह़म्माम मी आयद ।	**दूश** कि जिससे स्नानागार में पानी आता है ।
दूश=शानः (१)	**दोस्**=कन्धा–१
मन् यकी **ख़ानः बि दूश** रा दीदम् ।	मैंने एक **ख़ानाबदोश** (यायावर) को देखा ।
दूस्त'म् कार ܝ बुज़ुर्ग रा **दूशगिरिफ़्तः** अस्त ।	मेरे मित्र ने एक बड़ा काम अपने **कन्धों पर उठा रखा है** ।
दर कारहा ܝ नातवान अशखास **दूश बिदिह** ।	असमर्थ व्यक्तियों के कार्य में **कन्धा लगा** ।
ऊ फ़रज़न्द ܝ ख़ुद रा **बर दूश** निशान्द ।	उसने अपने पुत्र को **कन्धे पर** बिठाया ।
दूश=शब ܝ दूशीनः (२)	**दोषा**=पिछली रात–२
दूश मुर्ग़ी बि सुब्ह़ मी नालीद ।	**पिछली रात** एक पक्षी सुबह के समय बोला ।
दूश दर ह़ल्क़ः ܝ मा क़िस्सः ܝ गीसू ܝ तू बूद ।	**पिछली रात को** हमारी मण्डली में तेरी अलकों की कथा चल पड़ी ।
दूश=अम्र अज़् दूशीदन् (३)	**दुह**=दुहने का आज्ञावाचक–३
गाव रा **बिदूश** ।	गाय को **दुह ले** (संस्कृत–गां धुक्ष्व–दुग्धि)
दूश (Douche) (४)	धोना (फ्रैञ्च Douche)–४
ह़म्माम दूश ख़राब शुद ।	**हमाम का फ़व्वारा** ख़राब हो गया ।
ऐज़न्	**अपरञ्च**
मगर गाव ܝ तू **दूशा**'स्त ?	क्या तेरी गाय दूध देती है ? (**दुधारू**)
गाव'म् **दूशीदनी** नी'स्त ।	मेरी गाय **दुहने योग्य** नहीं है (लात गयी है)।
दूशिन्दः दर दूशनः (मा 'दूशः') शीर **दूशानद** ।	**ग्वाला** दोहनी में दूध **दुहता** है ।
शीरदूश (या '**दूशिन्दः**') इमरूज़ नयामद ।	**ग्वाला** आज नहीं आया ।
ईन् **दूशीज़ः** की'स्त ?	यह **लड़की** कौन है ?

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दीर ।	**देर, विलम्ब** ।
दारद **दीर मी शवद** तुन्दतर राह बिरवीम ।	**देर हुई जा रही है,** हम जल्दी-जल्दी चलें ।
ऊ **दीर आमद** ।	वह **विलम्ब से आया** ।
ऊ **ख़ेली दीर** कार मी कुनद ।	वह **बहुत धीरे-धीरे** काम करता है ।
दीर ज़मानी अस्त कि शुमा रा न दीदः अम् ।	**बहुत समय से** आपको नहीं देखा है ।
यक साअ़त **दीर** शुद ।	एक घण्टा **विलम्ब** हो गया ।
न मी दानम् चिरा इमरूज़ **दीरकर्दः** अस्त ।	न जाने क्यों आज **देर कर दी** है ।
दीर ख़्वाबीदन् व **दीर ख़्वास्तन्** कार इ ख़ूब नी'स्त ।	**देर से सोना** और **देर से उठना** अच्छा काम नहीं है ।
दीर आय व दुरुस्त आय ।	भले ही **देर से आना** पर ठीक-ठाक आना ।
दर आर्कटिक शब व रूज़ **दीरबाज़** मी शवद ।	आर्कटिक में रात और दिन **लम्बे** होते हैं ।
शब इ हिजरान इ **दीरबाज़** कशीदः अस्त ।	वह वियोग की **लम्बी** रातें बिता चुका है ।
ईन् पारचः **दीरपा** नी'स्त ।	यह कपड़ा **बहुत चलने वाला** नहीं है ।
लाकपुश्त ह़यवान् इ **दीरजुम्बिश** अस्त ।	कछुआ एक **सुस्त** प्राणी है ।
ह़कीमान् **दीर दीर** मी खुरन्द ।	ज्ञानीजन **दीर्घव्यवहित** भोजन करते हैं ।
ईन् मीवः यि **दीररस** अस्त ।	यह **विलम्ब से फलने वाला** फल है ।
ऐ ! पिसर ! ख़ुशज़ी ! **दीर ज़ी** !	अरे बेटा ! ख़ुश रहो ! **चिरंजीव हो** !
दीरगाही अस्त कि अज़् शुमा न शुनीदः अम् ।	**चिरकाल से** आपका समाचार सुनने को नहीं मिला ।
पहलवान् इ क़वी **दीरग़ज़ब** बाशद ।	बली मल्ल को क्रोध जल्दी नहीं आता ।
आहन अज़् ज़र **दीरगुदाज़** अस्त ।	लोहा सोने की अपेक्षा **देर से गलता** है ।
ग़िज़ा यि **दीरगुवार** ख़ुर्द व नाख़ुश बूद ।	**दुष्पच** भोजन खा लिया और बीमार पड़ गया ।
दीर वक़्त अस्त! अलान् हीच मुमकिन नी'स्त ।	अब **बहुत देर हो चुकी है** अब कुछ सम्भव नहीं है ।

तुन्दतर=जल्दी-जल्दी
ख़्वाबीदन्=सोना
ख़्वास्तन्=उठना
लाकपुश्त=कछुआ

ह़यवान्=जानवर, प्राणी (हय=प्राण; वान्=वाला, हिन्दी में यह शब्द हैवान बन गया है)
दीरज़ी=चिरञ्जीव (दीर, दिरंग=संस्कृत-चिरम्)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दीगर-दिगर ।	**संस्कृत-इतर-ततर आदि ।**
किताव इ **दीगरी** दारम् ।	मेरे पास **एक और** **पुस्तक** है ।
ईन् सिहशम्बः नै, **सिहशम्बः दीगर ।**	इस मंगल को नहीं, **अगले मंगल को ।**
यक नफ़र दीगर रा फ़िरिस्तन्द ।	**एक दूसरे आदमी** को भेजा गया ।
हीच **चीज़ दीगर** न मी ख़्वाहम् ।	मैं **और कुछ** नहीं चाहता ।
इश्क़ **चीज़** इ **दीगर** अस्त ।	प्रेम **कुछ चीज़ ही और** है ।
दिगर न मी तवानम् राह बिरवम् ।	मैं **अब और** राह नहीं चल सकता ।
दीगर अज़् ईन् कारहा न ख़्वाहद कर्द ।	अब **आगे से** यह ऐसे काम नहीं करेगा ।
की दीगर वायद बियायद ?	**और किसको** आना है ?
दफ़अ़ः यि **दीगर** कि ऊरा दीदम् नाखुश बूद ।	**दूसरी बार** जब उसे देखा तो बीमार था ।
ईन् तवील'स्त हदीथ्स **बार** इ **दिगर** ।	यह लम्बी कथा है – **फिर कभी ।**
जा यि **दीगर'**म् इन्तज़ार बिकुनीद ।	**कहीं और** मेरी प्रतीक्षा करना ।
बाशद **बराय वक़्त** इ **दिगर** ।	**अगले समय के लिये** रहे ।
दीगर न दारम् ।	(मेरे पास) **और** नहीं है ।
अज़् तरफ़ इ **दीगर**, बि किश्वरहा यि ख़ारिजः रा बिबीनीद ।	**दूसरी ओर** विदेशों को देखिये ।
दीगर बस अस्त ।	बस **और** नहीं ।
इस्म इ **चिः शख़्सी दीगर** न निविश्तः शुदः अस्त ।	दूसरे **किस आदमी** का नाम नहीं लिखा गया है ।
मुमकिन बुवद **तौर** इ **दीगर** गुफ़्तः बाशद ।	सम्भव है उसने यह बात **और तरह** कही हो ।
दू नफ़र रफ़्तन्द **दिगरान्** मान्दन्द ।	दो आदमी चले गये **बाक़ी दूसरे** रह गये ।
"चिरा न शनवी ?" – **"दीगः"**	"तुम सुनते क्यों नहीं ?" – **"ठीक है ।"**
दीगरी गुफ़्त – "मन् हाज़िर'म् ।"	**दूसरा** बोला – "मैं उपस्थित हूँ ।"

सिहशम्बः यि दिगर=अगले
तवील=लम्बा-लम्बी
हदीथ्स=कथा, कथानक, घटना

किश्वर हा यि ख़ारिजः=विदेशों
दीगः=दीगर का एक रूप, टालनेवाला जवाब (दीगः=अर्थात् ठीक है, ठीक है ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ज़ु'ल्-ज़ी	वाला, वान्, सहित ।
ईन् आक़ा **ज़ु'ल् अह्तराम** (या **ज़ु'ल् क़द्र** या **ज़ी इज़्ज़त**) अस्त ।	ये श्रीमान् **आदरास्पद** हैं ।
शापूर पादशाह इ सासानी रा तख़ल्लुस **ज़ु'ल् अकताफ़** बूद ।	सासानवंशीय नरेश शापूर का विरुद **स्कन्धवृश्चन** था ।
ख़ुदा **ज़ु'ज्जलाल** अस्त ।	परमात्मा **वर्चस्वी** (जलालवाला) है ।
अस्व इ इमाम हुसैन रा नाम **ज़ु'ज्जनाह़** बूद ।	इमाम हुसैन के घोड़े का नाम ज़ु'ज्जनाह (**परों वाला-गरुत्मान्**) था ।
माह इ द्वाज़दहुम अरबी रा **ज़ु'ल् हज्जः** मी ख़्वानन्द ।	बारहवें अरबी महीने को ज़ु'ल् हज्जः (**हज्जवाला महीना**) कहते हैं ।
यूनुस पैग़म्बररा **ज़ु'ल् हूत** या **ज़ु'न्नून** मी ख़्वानन्द ।	यूनुस पैग़म्बर को ज़ु'ल् हूत (**मछलियों वाला**) कहते हैं ।
तीग़ इ अली रा **ज़ु'ल् फ़िक़ार** मी ख़्वानन्द ।	अली की तलवार को ज़ु'ल् फ़िक़ार (**कशेरुकावती**) कहते हैं ।
ईन् आलिम इ **ज़ु'ल् फ़ुनून** या **ज़ी फ़ुनून** अस्त ।	यह **बहुविद् विद्वान्** है ।
ज़ु'ल् क़ुरबा वक़्त इ मसाइद बि कार आयद ।	अपना (**सम्बन्धवाला**) विपत्तिकाल में काम आता है ।
सिकन्दर मुतख़ल्लिस **ज़ु'ल् क़रनैन** बूद ।	सिकन्दर का विरुद **दो सींगों वाला** था ।
माह इ याज़दहुम इ अरबी रा **ज़ु'ल् क़ादः** या **ज़ीक़ाद** मी ख़्वानन्द ।	ग्यारहवें अरबी मास **ज़ु'ल् क़ादः** या **ज़ीक़ाद** कहते हैं ।
ऊ दर दावा यि ख़ुद **ज़ी हक़्क़** बूद ।	वह अपने दावे में साधिकार (**हक़वाला**) था ।
दर मौजूद इ **ज़ी हयात** इन्सान खिरदमन्दतरीन अस्त ।	विद्यमान **सजीव प्राणियों** में मनुष्य सबसे अधिक बुद्धिमान् है ।
पील हयवान् इ **ज़ी ख़िरद** अस्त ।	हाथी एक **बुद्धिमान्** प्राणी है ।
जमशीद पादशाह इ **ज़ी रुतबः** या **ज़ी शान** बूद ।	जमशीद राजा **प्रतापी** था ।
इन्सान अगर **ज़ी शुऊ़र** नी'स्त इन्सान नी'स्त ।	मनुष्य यदि **विवेकशील** न हो तो वह मनुष्य नहीं है ।
मन् दर ईन् कार **ज़ी इलाक़ः** हस्तम् ।	मैं इस विषय में **सरुचि** हूँ ।
बुज़, आहू, गुर्ग, गाव व गूस्फ़न्द वग़ैरः हयवानात् इ **ज़ी फ़िक़ार** हस्तन्द ।	बकरी, हिरन, भेड़िया, गाय और भेड़ आदि **कशेरुकावाले** प्राणी हैं ।
ज़ी नफ़सी दर आन् ख़ानः न दीदम् ।	मैंने उस घर में किसी **सजीव प्राणी** को नहीं देखा ।
ईन् वकील **ज़ी इल्म** अस्त ।	यह वकील **विद्यासम्पन्न** (विद्वान्) है ।

ज़ु'ल् अकताफ़=(कत्फ़ का बहुवचन=अकताफ़) अरबों के कन्धे काट-काट कर जिसने ढेर लगा दिये वह राजा, अर्थात् शापूर द्वितीय सासानी, स्कन्धाधिपति या स्कन्धवृश्चन

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

राहत	**विश्राम, विश्राम देने वाला, आराम आदि।**
ईन् वक़्त इ **राहत** अस्त ।	यह **विश्राम** का समय है ।
मरीज़ **राहत** अस्त ।	रोगी **आराम से** है ।
ईन् रख़्त इ ख़्वाब **राहत** नी'स्त ।	यह खाट **सुखकर** नहीं है ।
ईन् तरतीब **राहत** नी'स्त ।	यह व्यवस्था **सुविधाजनक** नहीं है ।
मरीज़ **राहत** ख़्वाबीद ।	रोगी **आराम से** सोया ।
क़द्री ईन् जा **राहत** कुनीम ।	थोड़ा सा यहां **विश्राम** करें ।
ईन् दवा बीमार रा **राहत** कर्द ।	इस औषध ने रोगी को **स्वस्थ** कर दिया ।
बा यक ज़र्ब शीर बुज़ इ ज़ख़्म ख़ुर्द: रा **राहत** कर्द ।	एक ही थप्पड़ में शेर ने घायल बकरे को **सुला दिया** ।
दुश्मन बि सर आमद: अस्त, **चि: राहत** निशस्ती !	दुश्मन सिर पर आ गया– **आराम से क्या** बैठा है !
ईन् शर्बत **राहतअफ़ज़ा** अस्त ।	यह शर्बत **सुखवर्धक** है ।
ईन् हवा **राहतबख़्श** अस्त ।	यह हवा **स्वास्थ्यप्रद** है ।
शख़्स इ **राहततलब** बि मंज़िल'श् न मी रसद ।	**सुखार्थी** व्यक्ति अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता ।
शराब अव्वल **राहत इ जान** नमूद वले बि ज़ूदी वबाल इ जान बूद ।	शराब पहले **प्राणों का सुख** लगी पर जल्दी ही जी का जंजाल बन गयी ।
राहत बाश ।	**"स्टैण्ड ऐट ईज़"** जैसा सैनिक सम्बोधन ।
ज़िन्दानियान् रा **राहत कर्द** ।	बन्दियों को **छोड़ दिया** ।
अज़् नाराहती यि तवील मरीज़ इ पीर रा **राहत शुद** ।	लम्बी बीमारी के बाद बूढ़े रोगी को **आराम हो गया (मर गया)** ।
लुत्फ़न् **बि तौर इ राहत** बियायीद ।	कृपया अपनी **सुविधा के अनुसार** आइये ।
ईन् सन्दली **नाराहत** अस्त ।	यह कुर्सी **कष्टप्रद** है ।
वतनपरस्तान् इ **सन्दली यि राहती** रा अज़् मा दूर दार ।	**आरामकुर्सी** वाले देशभक्तों को हमसे दूर रख ।
राहती रा बियार ।	**दीवट** (दीपाधार) लाओ ।

मरीज़=रोगी
रख़्त=उपकरण, उपस्कर
रख़्त इ ख़्वाब=खाट, शयनोपस्कर
तरतीब=व्यवस्था
क़द्री=थोड़ी देर, ज़रा देर
ज़र्ब=चोट, थप्पड़
ज़ख़्मख़ुर्द:=चोट खाया हुआ, घायल
निशस्ती=(तू) बैठा हुआ है
अफ़ज़ा=बढ़ाने वाला (अफज़ायन्द: का संक्षेप)
बख़्श=बख़्शने वाला (बख़्शन्द: का संक्षेप)
मंज़िल=लक्ष्य, लक्ष्य स्थान
न मी रसद=नहीं पहुँचता

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रास्त ।	**वैदिक—ऋत** ।
खत् ḍ **रास्त** बिकश ।	**सीधी रेखा** खींचो ।
रास्त बिगू ।	**सच** बोलो ।
रास्त बिगूयीद ?	(शब्दार्थ–**सच** कहते हैं ?) **सच्ची** ?
दस्त ḍ **रास्त** बिखीद ।	**दाँये हाथ** मुड़ जाइयेगा ।
रास्त बिनिशीन ।	**सीधे** बैठो ।
रास्त रफ़्त तह ।	**सीधा** नीचे डूब गया ।
रास्त गुफ़्त'स्त कि····।	**सच** कहा है कि....।
····दिरिख़्त ḍ कज रा न तवान **रास्त कर्द** ।	····टेढ़े पेड़ को **सीधा** नहीं **किया** जा सकता ।
सग गूशहाय'श् रा **रास्त कर्द** ।	कुत्ते ने कान **खड़े कर लिये** ।
कार'श् **रास्त आमद** ।	उसका काम **सीधा** (अनुकूल) **हो गया** ।
ता मार **रास्त न शवद** तूयी यि सूराख़ न मी रवद ।	जब तक साँप **सीधा नहीं होता** बिल में नहीं जाता ।
दू रियाल दीगर'म् बिदिहीद सद रियाल **रास्तः** बिशवद ।	मुझको दो रियाल और दे दें तो **पूरे** सौ रियाल हो जायें ।
राह ḍ **रास्तान्** बिगीर ।	**सज्जनों के पथ** का अनुसरण कर ।
ऊ शख़्स ḍ **रास्तकिरदार** बूद ।	वह एक **सच्चरित्र** व्यक्ति था ।
अज़् आन् **रास्तः** ईन् चौगानबाज़ ḍ चपदस्त ख़ूब अस्त ।	उस **सीधे हाथ वाले** की अपेक्षा यह वैंहत्था बल्लेबाज अच्छा है ।
ज़र्रः यी दर आन् **रास्ती** न बूद ।	उसमें एक कण भर भी **सचाई** नहीं थी ।
रास्ती, चिः सुहबती बाहम दाश्तीद ।	**वास्तव में,** आप परस्पर में क्या बातें कर रहे थे ।
रास्ती बिगुज़ारीद बि शुमा बिगूयम् ।	**प्रशंगवशात्**, आज्ञा दें कि मैं यह कहूँ ।
सी साल **बि रास्ती** क़दमज़दः अम् ।	तीस वर्षों तक (मैं) **ईमानदारी के साथ** चलता रहा हूँ ।
ऊ दूस्त ḍ **रास्तीन** अस्त ।	वह **सच्चा** मित्र है ।

दस्त ḍ रास्त=दाँये हाथ, दक्षिणाहि
कज=टेढ़ा, अनृजु
मार=साँप
तूयी=आन्तरिक, बीच में से
सूराख़=छेद, बिल

रास्तः=सीधा हाथ जिसका पटुतापूर्वक काम करता है ।
चौगानबाज़=बल्लेबाज़
चपदस्त=वैंहत्था, सव्यसाची, खैरबंगा
ज़र्रयी=एक कणमात्र भी, कण भर भी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

राह ।	**मार्ग, पद्धति, व्यवहार ।**
राहनुमा मरा न गुफ़्त कि **राह** इ **आब** ख़ूब नी'स्त ।	**पथ-प्रदर्शक** ने मुझसे नहीं कहा कि **जलमार्ग** ठीक नहीं है ।
राह न बूद कि बिनिशीनम् ।	**जगह नहीं थी** कि मैं बैठता ।
ऊ **राहो-रस्म** मी दानद व राह इ कार कर्दन् रा बलद अस्त ।	वह **पथ परम्परा** से परिचित है और काम करने के मार्ग का ज्ञाता है ।
राही'स्त **राह** इ **रास्त** दिगर **राह** इ **रविश** नी'स्त ।	**सन्मार्ग** ही एकमात्र मार्ग है, दूसरा **मार्ग** नहीं है ।
अज़् कुदाम **राह बायद इक़दाम कर्द** ?	किस मार्ग के द्वारा **पादप्रचार करना चाहिये**?
मा अज़् हिन्दुस्तान ता ईरान **अज़् राह** इ **पाकिस्तान** रफ़्तीम ।	हम भारत से ईरान तक **पाकिस्तान होकर** गये ।
ऊ **ख़ूब** बा मन् **राह न रफ़्त** ।	उसने मेरे साथ **अच्छा व्यवहार नहीं किया** ।
मादर वच्चः यि ख़ुद रा **राह मी बुरद** ।	माँ अपने बच्चे को **राह चलाती है** ।
मंज़िल इ शुमा रा **राह न मी बुरम्** ।	मैं आपके घर का **रास्ता नहीं जानता** ।
राह बिदिहीद ख़ानुम हा बिरवन्द ।	**रास्ता छोड़िये,** महिलाएं आ रही हैं ।
ग़म रा **बि ख़ुद राह** म दिहीद ।	शोक को **अपने अन्दर आने का मार्ग** मत दीजिये ।
चिगूनः दर आन् अन्जुमन **राह याफ़्तीद** ?	आपने कैसे उस सभा में **प्रवेश का मार्ग बनाया** ?
चिः क़द्र **राह आमदः** ईद ?	आप कितना **चल चुके** हैं ?
बा मन् **न मी तवानद राह बियायद** ।	वह मेरे साथ **नहीं चल सकता** ।
राह इ **ख़ुद** रा बिगीर ।	अपनी राह पकड़ (**अपना काम** कर) ।
साअत इ शिश **राह उफ़्तादीम** ।	हम छै बजे **चल पड़े** ।
माशीन **राह उफ़्ताद** ।	मोटर **चल पड़ी** ।
पूल **राह नयुफ़्ताद** ।	पैसा **नहीं मिला** ।
राहज़न क़वी अस्त ।	**बटमार** प्रबल है ।
राह बस्तः अस्त ।	**रास्ता बन्द** है ।

बलद=परिचित
रविश=चलना, गति
अज़् कुदाम राह=किधर होकर
इक़दाम कर्दन्=पैदल चलना, पादसंचार

अज़् राह=होकर, के मार्ग से (अंग्रेजी-वाया)
पीश बिगीर=कर, पकड़
राहज़न=राजमार्ग तस्कर, सड़क पर यात्रियों को रोक कर लूटने वाला, बटमार

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रद्द ।	बदल कर, बेकार (संस्कृत-प्रति) ।
ऊ मरा **पूल** इ **रद्द** दाद ।	उसने मुझे **नक़ली नोट** दे दिये ।
मिल्क रा बि ख़ुद'श् **रद्द कर्दन्द** ।	सम्पत्ति उसी को **लौटा दी गयी** ।
आया वज्ह रा **रद्द कर्दीद** ?	क्या आपने धनराशि लौटा दी ?
दरख़्वास्त इ ऊरा **रद्द कर्दन्द** ।	उसकी प्रार्थना **ठुकरा दी गयी** ।
वकील इ मा दलाइल इ तरफ़ **रद्द कर्द** ।	हमारे वकील ने विपक्ष के तर्कों को **निरस्त कर दिया** ।
लायिह: अज़् मजलिस इ अवाम गुज़श्त बले मजलिस इ अशराफ़ ऊरा **रद्द कर्द** ।	लोकसभा से बिल पास हो गया पर राज्यसभा ने उसको **निरस्त कर दिया** ।
जिन्स रा अज़् गुमरुक **रद्द कर्दम्** ।	चीज़ों को मैंने चुंगीघर से **छुड़ा लिया** ।
रिश्त: रा अज़् तूयी यि चश्म इ सूज़न **रद्द कुन्** ।	डोरे को सुई के नाके में **पिरो दो** ।
रद्द शौ ।	**चले जाओ** ! भागो ! हटो !
अज़् पहलू यि ऊ अलान् **रद्द शुदम्** ।	उसके पास से अभी-अभी **उठकर आ रहा हूँ** ।
दर ईन् **रद्द व बदल** म कुनीद ।	इसमें **परिवर्तन और काट-छाँट** मत कीजियेगा ।
रद्द इ **पा** यि शीर गिरिफ़्त ।	शेर के **पगचिह्नों** के पीछे-पीछे चल पड़ा ।
अज़् हर अ़मल **रद्द** इ **अ़मल** पैदा मी शवद ।	हर क्रिया की **प्रतिक्रिया** होती है ।
रद्द इ **जवाब** न दाद:ई ।	तूने **प्रत्युत्तर** नहीं दिया ।
चुन् तवांगर शुद बि त़ोर इ **रद्द** इ **अहसान** हज़ार तुमान दाद ।	जब धनी हो गया तो **प्रत्युपकार के** रूप में एक हज़ार तुमान दे दिये ।
अज़् वराय तुहमत व **रद्द** इ **तुहमत** ख़ुसूमत ज़ियाद शुद ।	आरोप और **प्रत्यारोप** के कारण झगड़ा हो गया ।
ऊ **जवाब** इ **रद्द** दाद ।	उसने **निषेधात्मक उत्तर** दिया ।
दलीलहाय'श् **रद्द कर्दनी** अस्त ।	उसकी दलीलें **निरस्त करने योग्य हैं** ।
ऊ दर **रद्द** इ **सलाम** फ़क़त स़र'श् रा तकान दाद ।	उसने **प्रतिनमस्कार** में केवल अपना सिर हिला दिया ।
ईन् पारच: **रद्दी** अस्त ।	यह कपड़ा **रद्दी** है ।

पूल=धन
मिल्क=मिल्कियत, सम्पत्ति
वज्ह=धनराशि
दलायल इ तरफ़=प्रतिपक्ष की दलीलें
लायिह:=(उच्चारण-लायिहा)=बिल
मजलिस इ अवाम=लोकसभा
मजलिस इ अशराफ़=राज्यसभा
गुमरुक=चुंगीघर
रिश्त:=डोरा
चश्म इ सूज़न=सुई का नाका
पहलू=निकट, पार्श्व
तुहमत=आरोप

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रू ।	**मुँह, तल, पर** ।
दस्त व **रू** यि ख़ुद रा शुस्त ।	(उसने) अपने हाथ और **मुँह** धोये ।
ज़ियाद:तर **रू** यि **ज़मीन** ज़ीर इ आब अस्त ।	पृथ्वी का अधिकांश **धरातल** पानी के नीचे है ।
मन् **रू** यि **दीदन्** इ ऊ न दारम् ।	मेरा उसको **देखने का मुँह** नहीं है ।
अज़् चि: रूय तुरा सद तुमान बिदिहम् ?	**किस खाते में से** तुझको सौ तुमान दूँ ?
ख़ान: यि मन् **रू बि रू** यि बांक अस्त ।	मेरा घर बैंक के **आमने-सामने** है ।
आन् दू नफ़र रा बाहम **रू बि रू** कर्दीम ।	हमने उन दोनों व्यक्तियों का **आमना-सामना** करा दिया ।
रू दर रू गुफ़्त कि ईन् दुज़्दी अस्त ।	**मुँह पर ही** कह दिया कि यह तो चोरी है ।
ऊ **पीश** इ **रू** यि मन् ईन्हा न गुफ़्त ।	उसने मेरे **सामने** ये बातें नहीं कहीं ।
अज़ रू यि दुश्मनी ईन् कार रा कर्द ।	शत्रुता **के कारण** यह काम किया है ।
बि की **रू** यि **सियाह** आवुरम् !	किसके पास अपना **काला मुँह** लेकर जाऊँ !
चुन बख़्त बर गश्त दूस्तान् हम **रू गर्दानीदन्द** ।	जब भाग्य विपरीत हो गया तो मित्रों ने भी **मुँह फिरा लिए** ।
पादशाह चुन् ईन्सान शुनीद **रू दरहम कशीद** ।	राजा ने जब ऐसा सुना तो **भौंहें तान लीं** ।
रू कर्द बि मन् व गुफ़्त ।	मेरी तरफ़ **मुँह किया** और कहने लगा ।
रू पस न कर्द हर कि अज़् ईन् ख़ाकदान गुज़श्त ।	**मुँह फिर न मोड़ा** उसने कि जो इस मृत्तिका लोक (संसार) से चला गया ।
बख़्त अलान् बि ऊ **रू कर्द** ।	सौभाग्य ने उसकी ओर **मुँह फेरा है** । (उसे सौभाग्य के दर्शन हुए हैं ।)
हरगाह इख़्तिलाफ़ी **रू दिहद** ।	जब कभी झगड़ा **हो** ।
रू यि **बदान्** सियाह ।	**बुरों का मुँह** काला ।
ह़ौल: रा **रूपाक** हम मी ख़्वानन्द ।	तौलिया को **रूपाक** भी कहते हैं ।
ऊ **रूशिनास** इ मन् नी'स्त ।	वह मेरा **परिचित** नहीं है ।
ऊ हम: **रूदाद** बिख़्वान्द ।	उसने पूरा **विवरण** सुनाया ।

सियाह=काला (संस्कृत – श्याव:)

गर्दानीदन्द=फिरा लिया (गर्दीदन् का णिजन्त रूप; गर्दीदन्=फेरना, गर्दानीदन्=फिराना)

बख़्त=सौभाग्य

हरगाह=जब कभी

इख़्तिलाफ़ी=एक मतभेद

ह़ौल:=तौलिया, अंगोछा, अंगप्रौञ्छनवस्त्र

रूशिनास=(शब्दार्थ–मुँह को पहचानने वाला) परिचित

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रूज़ ।	**दिन (वैदिक-रोदस्)**
मिथ्सल इ **रूज़** रौशन अस्त ।	**दिन** की तरह स्पष्ट है ।
हमः रूज़ अज़् तबक़ः यि रूयी पायीन आयद ।	**प्रतिदिन** ऊपर की मंजिल से नीचे आता है ।
रूज़ी बि सिपासगुज़ारी बि मंजिल'तान् मी आयम् ।	**एक दिन** धन्यवाद देने के लिये आपके घर आऊँगा ।
बि चश्म व सर ! वले **दर रूज़** क़दमरंजः शौ ।	सिर आँखों पर! लेकिन **दिन** में ही आइयेगा ।
ऊ **रूज़** बराय कार व शव बराय क़रार आफ़रीद ।	उसने **दिन** काम करने के लिये और रात विश्राम के लिए बनाई ।
यकी अज़् ईन् रूज़हा चुनान् शुद कि........।	**एक दिन** ऐसा हुआ कि.... ।
रूज़ बाद चुनान् शुद कि........।	**अगले दिन** ऐसा हुआ कि.... ।
ता ईन् रूज़ बर न गश्त ।	**आज तक** लौटकर नहीं आया ।
यक रूज़ मियान अगर तप मी आयद ।	यदि **एक दिन छोड़कर** बुख़ार आता है ।
रूज़ी यक मर्तबः गुनः गुनः बिख़ुरीद ।	तो **दिन** में एक बार कुनैन खाइये ।
अबलही कू **रूज़** इ **रौशन** शमअ़ इ काफ़ूरी निहद ।	वह मूर्ख जो **प्रकाशमान दिन** में कपूर का दिया जलाता है ।
दर रूज़हा यि **ख़ुश'म्** दुनिया गुलगुस्तर्दः नमूद ।	मेरे **यौवनारम्भ के दिनों** में संसार फूल बिछा लगता था ।
बि रूज़ बीगाह मा बि मंज़िल इ ख़ुद रसीदीम ।	**सूर्यास्त से पूर्व** हम अपने घर पहुँच गये ।
हुस्न इ **रूज़ अफ़ज़ून** इ यूसुफ़ चुन् अज़ीज़ ई मिस्र दीद ।	यूसुफ़ का **नित्यवर्धिष्णु** सौन्दर्य जब मिस्र के शासक ने देखा ।
रूज़बान् ऊरा पुरसीद कि अज़् कुजा आमदी ।	**द्वारपाल** ने उससे पूछा कि कहाँ से आया है ।
अ़ज़्म इ **रूज़ख़ून** कर्दः ऐशान् ह़मलः कर्दन्द ।	**दिन में लड़ने** का संकल्प लेकर उन्होंने आक्रमण किया ।
दर **रूज़गार** इ **जवानी** बाँग बर मादर ज़दम् ।	मैं अपने **यौवन के दिनों में** माँ पर चिल्ला पड़ा ।
रूज़गारी तुन्द वज़ीद ।	**तेज़ हवा** चल रही थी ।
'कैहान' **रूज़नामः** यि मारूफ़ इ ईरान अस्त ।	कैहान ईरान का प्रसिद्ध **दैनिक पत्र** है ।
दूस्त'म् दर आन् जा **रूज़नामःनवीस** अस्त ।	मेरा मित्र वहाँ एक **पत्रकार** है ।

मिथ्सल=सदृश, के सदृश

रौशन=प्रकाशमान, सुस्पष्ट

{ तवक़ः=मंज़िल
{ तवक़ः यि रूयी=ऊपर की मंज़िल

सिपास गुज़ारी=धन्यवाद देना

क़दमरंजः=पैरों को (चलाने के द्वारा) कष्ट देने वाला

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रौशन।	**चमकीला, जलता हुआ, व्यक्त, परिस्फुट।**
इमरूज़ **रूज़ इ रौशन** अस्त।	आज **प्रकाशमान दिन** है।
चिराग़हाय हम: **रौशन**'स्तो–दिल तारीक।	दीपक **जल रहे** हैं और हृदय अन्धकार में है।
दस्त रा बि ज़ुग़ाल म ख़ुर, ज़ुग़ाल **रौशन** अस्त।	कोयले को हाथ मत लगा, कोयला **जल** रहा है।
ऊ मतलब'श् रा **रौशन कर्द**।	उसने अपना अभिप्राय **व्यक्त किया**।
वले मफ़हूम हनूज़ **रौशन नी'स्त**।	लेकिन प्रयोजन अभी तक **स्पष्ट नहीं हुआ**।
फ़रीब इ जहान **क़िस्स: यी रौशन**'स्त।	संसार का मायाजाल **प्रसिद्ध कथानक** है।
दिल'म् अज़् ईन् जिहत रौशन अस्त।	मेरा चित्त **इस विषय में आश्वस्त** है।
लाम्पा रा चिरा ख़ामूश कर्दी, **रौशन कुन्**।	दीपक बुझा क्यों दिया, उसे **जलाओ**।
आन् मुश्ज़्द: चश्म'श् रा **रौशन कर्द**।	उस सुसमाचार ने उसकी आँखों को **चमका दिया।**
आतिश रा **रौशन कर्दीम** वले सरमा ज़ियाद बूद।	हमने आग **जलाई**, पर ठण्ड बहुत ज्यादा थी।
हवा दारद **रौशन मी शवद**।	हवा **साफ़ होती जा रही** है।
चिराग़'त् **रौशन बाद**।	तेरा दीपक **जलता रहे**।
चाणक्य **रौशन बि सर** बूद।	चाणक्य **स्पष्ट द्रष्टा** (तत्व द्रष्टा) था।
ऊ शख़्स इ **रौशनराय** अस्त।	वह व्यक्ति **महाविवेकी** है।
सितार: यि ज़ुहर: **रौशनायी** ज़ियाद दारद।	शुक्र नक्षत्र में अधिक **प्रकाश** है।
रौशनान् दर आसमान **रौशन मी शवन्द**।	**तारे** आकाश में **चमक रहे हैं**।
दीरूज़ **रौशनगर** आमद।	कल **फर्नीचर पर पालिश करने वाला** आया था।
मा हि़साबहा रा **रौशन कर्दीम**।	हमने अपना हिसाब **बराबर कर दिया**।
चश्म इ शुमा **रौशन**।	तुम्हारी आँखों की **ज्योति बनी रहे**।
रौशनी तलअ़त इ तू माह न दारद।	तेरे मुख जैसी **चमक** चन्द्रमा की नहीं है।

तारीक=अन्धकारपूर्ण
मफ़हूम=प्रयोजन
फ़रीब इ जहान=संसार का मायाजाल
अज़् ईन् जिहत=इस दिशा में, इस विषय में
ख़ामूश कर्दन्=बुझा देना
मुश्ज़्द:=सुसमाचार
सरमा=ठण्ड, शीत

चिराग़'त् रौशन बाद=तेरा दीपक जलता रहे
('तेरे वंश में दीपक जलता रहे' यह आशीर्वाद है और 'तेरे वंश में कोई दीपक जलाने वाला न रहे'– यह शाप है)
ज़ुहरा=शुक्र नक्षत्र (अरबी भाषा में 'शुक्र' स्त्रीलिंग है।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रईस ।	**अध्यक्ष, मैनेजर, प्रधान ।**
रईस इ ईन् इदार: की'स्त ?	इस विभाग का **अध्यक्ष** कौन है ?
दूस्त'म् **रईस** इ **दायर:** बूद ।	मेरा मित्र इस **मण्डल का अध्यक्ष** था ।
रईस इ **ईन् बांक** फ़रार कर्द ।	**इस बैंक का मैनेजर** भाग गया ।
रईस इ **ऐस्तगाह** कुजा रफ़्त ?	**स्टेशन मास्टर** कहाँ गया ?
रईस इ **जमहूर** इ मा आला हृद्ज़रत वा. दा. जत्ती हस्तन्द ।	हमारे **प्रजातंत्र के अध्यक्ष** तत्रभवान् श्री वा. दा. जत्ती हैं ।
मुहृतरिम **रईस** इ **मजलिस** व आक़ायान् ।	माननीय **सभा प्रधान जी** ! और सज्जनो !
रईस इ **कमीसारिया** इमरूज़ बीमार अस्त ।	**मजिस्ट्रेट महोदय** आज बीमार हैं ।
रईस इ **नज़्मीय्य:** अज़् खीशान् इ मन'स्त ।	**पुलिस प्रधान** मेरे रिश्तेदारों में से एक है ।
रईस इ ईल वा पादशाह गुफ़्त....।	**क़बीले के मुखिया** ने राजा से कहा····।
रईस इ **दस्त:** यि **दुज़्दान्** रा ह़ब्स कर्दन्द ।	**डाकुओं का सरदार** पकड़ा गया ।
रईस इ **तशरीफ़ात** बर सुख़ुनरानीय'श् ऐतिराज़ कर्द ।	**उत्सव प्रधान** ने उसके व्याख्यान पर आपत्ति की ।
रईस इ **वक़्त** आन्गाह हुमायून् बूद ।	**उस समय का प्रधान** हुमायूँ था ।
रईस इ **माफ़ूक़** रा माज़ूल कर्दन्द ।	**बड़े प्रधान** को बरखास्त कर दिया गया ।
रईस इ **खानवाद:** ऊरा दावत कर्द ।	**गृहस्वामी** ने उसको बुलाया ।
रईस उल् वुज़रा यि हिन्द आग़ा मोरारजी देसाई हस्तन्द ।	भारत के **प्रधानमंत्री** श्री मोरारजी देसाई हैं ।
रईस इ **मद्रिस:** कमसिन अस्त वले आ़लिम'स्त ।	**विद्यालय प्रधान** यद्यपि अल्पवयस्क है तथापि विद्वान् है ।
रईस इ **कुर्सी** यि फ़ारसी आग़ा मुहृक़्क़िक़ हस्तन्द ।	फ़ारसी **विभागाध्यक्ष** श्री मुहृक़्क़िक़ हैं ।
मा मुदीर: गूयीम, शुमा **रईस:** गूयीद ।	हम प्राचार्या कहते हैं, आप **प्रधाना** कहते हैं ।
रऊसा यि **ऐस्तगाहान्** इ हिन्द यक जल्स: दाश्तन्द ।	भारत भर के **स्टेशनमास्टरों** का एक सम्मेलन हुआ ।
रईस: यि ईन् इदार: खानुम आ़लमआरा हस्तन्द ।	इस विभाग की **अध्यक्षा** श्रीमती आलम आरा हैं ।

इदार:=संस्था
दायर:=मण्डल
बांक=बैंक
ऐस्तगाह=स्टेशन, रेल्वे स्टेशन, बस स्टाप
जमहूर=प्रजातंत्र

आला हृद्ज़रत=तत्रभवान्, परम माननीय
मुहृतरिम=आदरणीय
मजलिस=सभा
आक़ायान्=सज्जन वृन्द ! सज्जनो !
कमीसारिया=मंत्रालय, न्यायालय

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ज़बान ।	**भाषा, जीभ, तराज़ू का काँटा ।**
ज़बान इ **फ़ारसी** बा ज़बान इ सांस्करीत राब्त: यि क़ुरबत दारद ।	**फ़ारसी भाषा** संस्कृत भाषा से निकट सम्बन्ध रखती है ।
हाफ़िज़ रा **बर नोक** इ **ज़ुबान** दारद ।	हाफ़िज़ तो उसकी **जिह्वा के अग्रभाग पर** है ।
मन् **ज़बान** इ **बूमी** न दानिस्तम् पस **ज़बान** इ हाल गिरिफ़्तम् ।	मैं **स्थानीय भाषा** नहीं जानता था अत: **संकेत भाषा** का अवलम्बन किया ।
ज़बान इ **अदब** दीगर मी शवद व **ज़बान** इ **मुहावर:** दीगर ।	**साहित्य की भाषा** और है, **बोलचाल की भाषा** और ।
ज़बान इ **बाज़ारी** रा हक़ीर म शुमर, बिदून इ ईन् ज़बान पायदार न मी शवद ।	**बाज़ारी ज़बान** को तिरस्कार योग्य मत समझ, इसके बिना भाषा स्थायी नहीं होती ।
दस्तूर इ **ज़बान** इ फ़ारसी आसानतर'स्त ।	फ़ारसी भाषा का **व्याकरण** सरल है ।
अगर दिहक़ान **बि ज़बान मी आयद** दम दर कशी ।	अगर गाँववाला **बोलने पर आ गया** तो तेरी ज़बान बन्द कर देगा ।
चुन् कि दूस्त इ मुहतरिम इ मन् **बर ज़बान आवुर्द: अस्त** ।	जैसा कि मेरे आदरणीय मित्र ने **उल्लेख किया है** ।
ईन् **अज़् ज़बान'म्** जस्त ।	यह **मेरे मुँह से** निकल गया ।
ईन् अफ़वाह **दर ज़बान** इ **मर्दुम** उफ़्ताद: अस्त ।	यह अफ़वाह **लोगों की ज़बान पर** चढ़ गयी ।
ज़बान इ मन् म बीन, **ज़बान** इ **तराज़ू** बिबीन् ।	मेरे कहने पर ध्यान मत दे, **तराज़ू के काँटे** पर ध्यान दे ।
ज़बान इ ऊ दर सुहबत मी **गीरद** ।	उसकी ज़बान बात करने में **हकलाती** है ।
ज़ालिम जुज़ **ज़बान** इ **असा** हीच ज़बान न मी फ़हमद ।	अत्याचारी **डंडे की भाषा** के अतिरिक्त और कोई भाषा नहीं समझता ।
ज़बान इ **सुर्ख** सर इ सब्ज़ रा दिहद बरबाद ।	**लाल (अशिष्ट)** ज़बान हरे सिर (बालों वाले सिर) को बरबाद कर देती है ।
ज़बान इ **ख़ुश** मार रा अज़् सूराख़ बिदर मी आवुरद ।	**मधुर वाणी** साँप को भी बिल में से निकाल लाती है ।
सहबान इ वाइल **ज़बानआवरी** यि मारूफ़ बूद ।	सहबान वाइल प्रसिद्ध **वाग्मी** था ।
यक काग़ज़ इ **ज़बानदार** बायद निविश्त ।	एक **ज़ोरदार** चिट्ठी लिखी जाय ।
ज़बानदराज़ी न बायद कर्द ।	**चबड़-चबड़** नहीं करनी चाहिये ।
ज़बान: यि **आतिश** हम: यि ख़ान: रा लीज़ीद ।	**अग्नि की जिह्वाएं** (लपटें) पूरे घर को चाट गयीं ।
ऊ **मुहब्बत** इ **ज़बानी** वरज़द ।	वह **मौखिक प्यार** जताता है ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ज़दन्	(**संस्कृत-हन् धातु**)
बच्च: रा बा चूब **ज़द** ।	बच्चे को छड़ी से **पीटा** ।
तुख़्म इ मुर्ग़ रा **बायद** अव्वल **ज़द** ।	अण्डे को पहले **फेंटना चाहिये** ।
आया सितार मी तवानीद **बिज़नीद** ?	क्या आप सितार बजा सकते हैं ?
यक किबरीत रा **बिज़न्** ।	एक दियासलाई **जला** ।
शाख़हा यि दिरख़्त रा **ज़दन्द** ।	पेड़ की शाखाऐं **छाँट दीं** ।
चि: दवायी बि आन् **ज़दीद** ?	उस पर क्या दवा **लगायी थी** ?
जीबबुर **पूल** इ मरा **ज़द** ।	जेबकट ने मेरी **जेब काट ली** ।
हर्फ़ी **न ज़दम्** ।	मैंने एक शब्द भी **नहीं कहा था** ।
दिरख़्त इ बरगद **जवान: मी ज़नद** ।	बरगद का पेड़ **नयी शाखाऐं निकाल रहा है** ।
सरमा यि यख़बन्दान् अंगुश्तहाय'श् रा **ज़द** ।	पाले की ठण्ड उसकी अँगुलियों को **मार गयी** ।
ज़ंग इ दबिस्तान रा **ज़दन्द** ।	स्कूल की घण्टी **बजी** ।
संजाक़ रा बि कुलाह'श् **ज़द** ।	पिन अपने जूड़े में **लगायी** ।
आब इ गंगा रा दर व दौर इ ख़ान: **ज़दन्द** ।	गंगाजल घर के अन्दर और चारों ओर **छिड़का** ।
ईन् मारहा **न मी ज़नन्द** ।	ये साँप **काटते नहीं** ।
ईन् रंग **बि सुर्ख़ी मी ज़नद** ।	यह रंग **लाल लाल सा लगता** है ।
बि क़ल्ब इ दुश्मन **ज़द** ।	शत्रुओं के मध्य भाग पर **प्रहार किया** ।
क़ल्ब इ मन् **तुन्द मी ज़द** ।	मेरा हृदय **तेज़ी से धड़-धड़ करने लगा** ।
ज़द तूयी यि गूश'श् ।	उसके बीच कान में घूँसा **जड़ दिया** ।
सिपस **ज़दो-ख़ुर्द** कर्दन्द ।	इसके बाद **मारपीट** शुरू हो गयी ।
ईन् कफ़्श **मी ज़नद** ।	यह जूता **काटता** है ।

चूब=लकड़ी, छड़ी
किबरीत=दियासलाई
शाख़ ज़दन्=डालियाँ काटना, शाखावृश्चनम्
सरमा यि यख़बन्दान्=पाले की ठण्ड
संजाक़=पिन, हेयरपिन, आलपिन आदि
दर व दौर=भीतर बाहर, चारों ओर
क़ल्ब=मध्यभाग, हृदय
ज़द व ख़ुर्द=प्रहार मारना और प्रहार खाना

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ज़ूद।	**जल्दी** (संस्कृत-सद्यः)
ज़ूद बाश।	**जल्दी** कर।
हाल **ज़ूद अस्त।**	अभी तो **जल्दी है।**
ज़ूद आन् रा बर दाश्तम्।	(मैं) वह **तुरन्त** समझ गया।
ज़ूद बर मी गिर्दम्।	(मैं) **जल्दी ही** आ जाऊँगा।
ज़ूद काग़ज़ी वराय ऊ फ़िरिस्तादम्।	(मैंने) **अविलम्ब** उसको पत्र भिजवा दिया था।
दीर या ज़ूद कार बि काम ह मा ख्वाहद शुद।	**देर सबेर,** काम अपनी कामना के अनुसार ही होगा।
बि ज़ूदी बिया।	**जल्दी** आओ।
ज़ूद ज़ूद बि दीदन् इ दूस्त'त् म रौ।	**जल्दी-जल्दी** अपने मित्र से मिलने मत जा।
ज़ूदाज़ूद मी आयम्।	**जल्दी से जल्दी** आऊँगा।
बि ज़ूदीज़ूद वक़्ती मी आयद कि रस्म इ बीदाद तमाम ख्वाहद शुद।	**जल्दी** ही वह समय आनेवाला है कि अन्याय की परम्परा समाप्त हो जायगी।
ज़ूद बाशद कि'श् बि शब रौग़न न बाशद दर चिराग़।	**जल्दी ही होगा** कि उसके लिये रात में भी दिये में तेल नहीं होगा।
कमज़ूर **ज़ूदग़ज़ब** मी शवद।	निर्बल व्यक्ति **शीघ्रकोपी** होता है।
दूस्त'म् **सुख़ुनरान** इ **ज़ूदअन्दाज़** अस्त।	मेरा मित्र **आशुवक्ता** है।
ज़ूदबावरी खामी यि किरदार अस्त।	**तुरन्त विश्वास कर लेना** चरित्र की अपरिपक्वता है।
पिदर'म् **ज़ूदख़ीज** बूद।	मेरे पिता **ब्राह्म मुहूर्त में उठनेवाले** थे।
ज़ूदरस मीवः शीरीन न मी शवद।	**जल्दी (ऋतु से पहले) आनेवाले** फल मीठे नहीं होते।
ऊ मर्द इ **ज़ूदफ़हम** अस्त।	वह **क्षिप्रबुद्धि** पुरुष है।
ग़िज़ा यि **ज़ूदगुवार** बिख़ुर, दीरगुवार नाख़ुश मी कुनद।	**सुपच** भोजन कर, दुष्पच भोजन बीमार करता है।
कुजा **बि ईन् ज़ूदी** मी रवी?	**इतनी जल्दी में** कहाँ जा रहे हो?
आहन शय इ **ज़ूदयाब** अस्त।	लोहा **शीघ्रता से प्राप्त होने वाला** तत्व है।

क़ाग़ज़ी फ़िरिस्तादम्=(मैंने) एक पत्र भिजवाया

बि काम इ मा=हमारी कामना के अनुकूल (फ़ारसी-बि काम=संस्कृत–अभिकामम्)

रस्म इ बीदाद=अन्याय की प्रथा

रौग़न न बाशद=तेल नहीं होगा

सुख़ुनरान=व्याख्याता

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ज़ीर।

ज़म्बील **ज़ीर** इ मीज़ अस्त।

दुश्मन रा **ज़ीरपा** यि पिदर अन्दाख़्त।

अतूबूस बच्चः रा **ज़ीरपा गुज़ाश्त।**

मुद्दती **ज़ीरपा** यि तवांगरान् निशस्त हीच न याफ़्त।

बा शौहर'श् **ज़ीरलब** गुफ़्त।

बि **ज़ीरदस्तान्** मिहरबान् बाश।

ज़ीरचश्म निगाह कर्द।

मुर्दः रा **ज़ीर** इ **ख़ाक** कर्दन्द।

ऊरा ख़ेली **ज़ीरबार** कर्दन्द।

ऊ **ज़ीरबार** इ क़र्ज़ बूद।

ऊ **ज़ीरबार** इ चीज़ी **न रवद।**

ऊ **ज़ीरपर** इ वज़ीर अस्त।

किताबख़ानः **दर ज़ीर** वाक़ै शुदः बूद।

आब **रफ़्त ज़ीर** व रौग़न आमद रू।

बिरादर'म् अज़् पुश्त इ पील **ज़ीर बिया।**

हर चीज़ **ज़ीर व ज़बर** शुद।

तमाम चीज़ **ज़ीर व रू कर्दम्** व रूमाल न याफ़्तम्।

माशीन ऊरा **ज़ीर गिरिफ़्त।**

ज़ीर इ **आब** दुश्मन रा ज़द।

लब इ **ज़ीरीन** इ ऊ फ़ुरूहश्तः बूद।

ज़म्बील=बालटी

अतूबूस=ओटोबस, मोटरबस

मुद्दती=एक मुद्दत तक, बहुत दिनों तक

ज़ीरलब=(शब्दार्थ–होठों के नीचे) ओठों ही ओठों में, फुसफुसाकर

ज़ीर इ पर=शरण, शरण में (पर के नीचे,

नीचे।

बालटी मेज़ के **नीचे** है।

शत्रु को पिता के **चरणों में** डाल दिया।

बस ने बालक को **कुचल दिया।**

बहुत दिनों तक धनिकों के **चरणों में** बैठा रहा, कुछ न मिला।

पति से **फुसफुसा कर** बोली।

अपने **अधीनस्थों** के प्रति कृपालु हो।

आँख बचा कर देखा।

मुर्दों को **मिट्टी के नीचे** दबा दिया।

उसको बहुत **लज्जित** किया।

वह ऋण से **दबा हुआ** था।

वह तो किसी बात से **नहीं दबता।**

उसे मंत्री की **शरण प्राप्त** है।

पुस्तकालय **नीचे की मंज़िल** में अवस्थित था।

पानी-पानी **नीचे बैठ गया** और तेल-तेल ऊपर आगया।

मेरे भाई! हाथी की पीठ से तो **उतरो।**

हर चीज़ **उलटी** हो गयी।

हर चीज़ **उलट-पुलट** ली पर रूमाल नहीं मिला।

मोटर ने उसे **कुचल दिया।**

छिप कर (पानी के नीचे से) **दुश्मन** को मारा।

उसका **नीचे का होठ** लटकता था।

जैसे मुर्ग़ी के पर के नीचे चूज़ा)

रौग़न आमद रू=तेल-तेल ऊपर आ गया

अज़् पुश्त इ पील=हाथी की पीठ के ऊपर से (गर्व रूपी हाथी के ऊपर से)

फ़ुरूहश्तः=नीचे लटकता हुआ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

साख़्तन् ।	(संस्कृत – साधनम्)
ईन् पारचः **साख़्त** इ **हिन्द'स्त** ।	यह कपड़ा **भारत में बना** है ।
साख़्त इ ईन् **बिना** ख़ूब नी'स्त ।	इसके **आधार की बनावट** ठीक नहीं है ।
जावः रा अज़् चिः चीज़ मी **साज़न्द** ?	सन्दूक़ किस चीज़ से **बनाते हैं** ?
चाक़ूहा यि ख़ूब दर आन् जा **मी साज़न्द** ।	वहाँ अच्छे चाक़ू **बनाये जाते हैं** ।
दरूग़ **म साज़** ।	झूठ **मत गढ़** ।
सनद साज़ रा उ़क़ूबत कर्दन्द ।	**जाली दस्तावेज़ बनाने वाले** को दण्ड मिला ।
ईन् सुख़ुन ऊरा **ख़िश्मगीन साख़्त** ।	इस बात ने उसको **चिढ़ा दिया** ।
ऊरा वज़ीर **साख़्तन्द** ।	उसको मंत्री **बना दिया** ।
हवा यि ईन् जा बि मन् **न मी साज़द** ।	यहाँ की आवहवा मुझे **अनुकूल नहीं पड़ती** ।
बायद बा ऊ **बिसाज़ीम** ।	हमें उसके साथ **बना कर रहना चाहिए** ।
ईन् दू नफ़र **बाहम न मी साज़न्द** ।	इन दोनों आदमियों की **आपस में नहीं पटती** ।
बा यकदीगर साख़्तः ऊरा बि कुश्तन् दादन्द ।	**परस्पर षड्यंत्र करके** उसको मरवा दिया ।
ऐशान् बा यकदीगर **साख़्तो-पाख़्त** कर्दः अन्द ।	उन्होंने एक दूसरे से **साँठ-गाँठ** कर रखी है ।
अशिया यि **साख़्तः** ख़्वाहीम ख़रीद ।	हम **बनी-बनाई चीज़ें** ख़रीदना चाहते हैं ।
मा ख़ानः यि **साख़्तः व परदाख़्तः** ख़रीदीम ।	हमने **सजा-सँवरा** घर ख़रीदा ।
ऊ हमः चीज़ **साख़्तः व आमादः** ख़्वाहद याफ़्त ।	वह तो हर चीज़ **बनी-बनाई** लेना चाहता है ।
अज़् दस्त इ मन् कारी **साख़्तः** नी'स्त ।	मेरे हाथ से कोई काम **पूरा** नहीं होता ।
ऊ शख़्स इ **साख़्तकार** (या साज़िशकार) अस्त ।	वह व्यक्ति **जालसाज़** है ।
ईन् शख़्स **कारसाख़्त** अस्त ।	यह व्यक्ति **काम का** है ।
ख़ुदा **कारसाज़** अस्त ।	भगवान् **कार्य सिद्धि करने वाला** है ।

बिना=आधार
जावः=सन्दूक़
उ़क़ूबत=दण्ड
ख़िश्मगीन=क्रुद्ध, कुपित
बा यकदीगर=एक दूसरे के साथ
बि कुश्तन्=मारने के लिये
अशिया=(शय का बहुवचन) चीज़ें
परदाख़्तः=सँवरा हुआ
आमादः=उपयोग के लिए प्रस्तुत

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सार ।	**चातुर्थिक सार** ।
दर फ़ारसी **हर्फ़** इ **सार** चहार मानी दारद ।	फ़ारसी में **सार शब्द** के चार अर्थ होते हैं ।
सार बि मानी यि **शुतुर** ख़्वान्द: मी शवद ।	**सार** का अर्थ **ऊँट** होता है ।
सार बि मानी यि **जा** ख़्वान्द: मी शवद ।	**सार** का अर्थ **स्थान** होता है ।
सार बि मानी यि **पुर** ख़्वान्द: मी शवद ।	**सार** का अर्थ **पूर्ण** (युक्त) होता है ।
सार बि मानी यि **वश** ख़्वान्द: मी शवद ।	**सार** का अर्थ **सदृश** होता है ।

सार=उश्तुर, शुतुर (१)

शुतुरबान् रा **सारबान्** या **सारवान्** हम मी ख़्वानन्द ।	ऊँटवाले को **'सारबान्'** या **'सारवान्'** भी कहते हैं ।

सार=जा (२)

शिग़ाली दर बीश: यि **शाख़सार** ज़िन्दगी मी कर्द ।	एक सियार किसी **वृक्षबहुल** जंगल में रहा करता था ।
ईन् ख़ित्त: यि ज़मीन **कूहसार** अस्त ।	भूमि का यह भाग **पथरीला** है ।
ईन् बूम **नमकसार** अस्त ।	यह भूमि **खारी** है ।
ईन् ज़मीन **शूर:सार** या शूर:ज़ार अस्त ।	यह ज़मीन **शोरेवाली** है ।

सार=पुर (३)

गुनह बन्द: कर्द'स्त ऊ **शर्मसार** ।	गुनाह मनुष्य करता है और **लज्जित** वह (परमात्मा) होता है ।
हर कि बीवक़्त गूयद **सबुकसार** मी शवद ।	जो असमय में वोलता है वह **अपमानित** होता है ।

सार=वश (४)

ऊ शख़्स इ **दीवसार** बूद ।	वह आदमी **राक्षस सदृश** था ।
बन्द: यि **ख़ाकसार** रा धर्मेन्द्रनाथ मी ख़्वानन्द ।	इस **रजकण सदृश** सेवक को धर्मेन्द्रनाथ कहते हैं ।

शुतुर=ऊँट (संस्कृत – उष्ट्र; शुतुर का एक रूप उश्तर भी फ़ारसी में प्रयुक्त होता है)

शुतुरबान्=ऊँटवाला

शिग़ाली=एक सियार (संस्कृत – शृगाल)

बीश:=जंगल, झाड़ी

ख़ित्त: यि ज़मीन=भूमि का भाग

शूर:ज़ार=शोरे का खेत (शोरे का खेत वह जिसमें शोरा पैदा होता है। वस्तुतः शोरासार और शोराज़ार का शब्दार्थ भिन्न है किन्तु फलितार्थ एक ही है)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

साल ।

वर्ष, वर्षगणना (कैलेण्डर)

ईन् किताब **दर चिः साल** तब्अ शुदः अस्त ?

यह पुस्तक **कौन से साल** में छपी है ?

दर **साल** इ **मीलादी** यि यक हज़ार नुह सदो-हफ़्तादो-यक ।

ईसवी संवत् एक हज़ार नौ सौ इकहत्तर में ।

ईरानियान् **साल** इ **शम्सी** दारन्द ।

ईरानी **सौर संवत्** को मानते हैं ।

ताज़ियान् **साल** इ **क़मरी** दारन्द ।

अरब **चान्द्र संवत्** को मानते हैं ।

दूस्त'म् **सालनुमा** यि इमसाल मरा दाद ।

मेरे मित्र ने इस वर्ष का **कैलेण्डर** मुझे दिया ।

पारसाल पिदर व **पीरारसाल** मादर'श् मुर्द ।

गत वर्ष उसके पिता और विगत वर्ष उसकी माँ की मृत्यु हो गयी ।

साल इ **आयन्दः** बिरादर'म् अज़् आलमान मी आयद ।

अगले वर्ष मेरा भाई जर्मनी से आ जायगा ।

चन्दसाल दारी ?

कितने वर्षों के हो ? (तुम्हारी उमर क्या है?)

बीस्तसाल दारम् ।

बीस साल का हूँ ।

दाख़िल'श् **दर साल** ची'स्त ?

एक वर्ष में (**वार्षिक**) उसकी आय क्या है ?

साली दह हज़ार तुमान मी गीरद ।

एक वर्ष में दस हज़ार तुमान लेता है ।

मन् अक़सात इ **सालियानः** हज़ार तुमान परदाज़म् ।

मैं एक हज़ार तुमान **वार्षिक** किश्त चुकाता हूँ ।

साल इ **द्वाज़्दहः माह** क़ुरआन ख़्वानी मी कुनद ।

सारे साल (साल में बारहों महीने) क़ुरान पढ़ता रहता है ।

साल इ **नौ** रा बि शुमा तबरीक मी गूयम् ।

नये वर्ष की आपकी बधाई देता हूँ ।

सदसाल बि ईन् सालहा बिरसीद ।

इस वर्ष के **सौ साल** फिर-फिर आयें ।

सालहा अस्त कि शुमा रा न दीदः बूदम् ।

वर्षों हो गये आपको देखे हुए ।

ज़नहा **साल** इ **ख़ुद रा मी दुज़्दन्द** ।

नारियाँ **अपनी उम्र कम बताया करती हैं** ।

चन्दीन् साल हा गुज़श्त आन् **पीर** इ **साल ख़ुर्दः** रा दीगर न दीदम् ।

अनेक वर्ष बीत गये उस **बुड्ढे** को फिर नहीं देखा ।

दर **बीस्त सालगी** कुश्तः बूद ।

बीस बरस की उम्र में मारा गया ।

साली कि निकू'स्त अज़् बहार'श् पैदा मी शवद ।

जो वर्ष अच्छा है उसके वसन्त में ही प्राप्ति अच्छी होने लगती है ।

साल इ मीलादी=जन्म संवत्, ईसा के जन्म का संवत्

शम्स=सूर्य

साल इ शम्सी=सूर्यसम्बन्धी, सौर

क़मर=चन्द्रमा

साल इ क़मरी=चन्द्रमा सम्बन्धी, चान्द्र

परसाल=गतवर्ष

पीरारसाल=गतवर्ष से पूर्व वर्ष, परके साल (संस्कृत-परारिवर्ष)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सबुक ।	हलका, सरल, तुच्छ, क्षुद्र, चपल, अल्प ।
चूब इ पम्ब: खेली **सबुक** अस्त ।	कार्क बहुत **हलका** होता है ।
ऊ दर सुब्हान: **ग़िज़ा** यि **सबुक** ख़ुर्द ।	उसने नाश्ते में **हलका आहार** लिया ।
आब इ ईन् जा **ख़ेली सबुक** अस्त ।	इस जगह का पानी **बहुत हलका** है ।
सबुकतर बुरद उश्तर ई मस्त बार ।	मस्त ऊँट बोझा **आसानी से** ढोता है ।
मुग़न्नी ! **सबुकतर** बिज़न् चंग रा ।	हे गायक ! चंग को **धीरे-धीरे** बजा ।
तू बार इ मरा **सबुकतर** कर्दी ।	तूने मेरा बोझा **हलका** कर दिया ।
ईन् ह़रकत ऊरा **सबुक कर्द** ।	इस काम ने उसको **नज़रों से गिरा दिया** ।
बि लुत्फ़ इ शुमा बार व ज़ह़मत इ मन् **सबुक शुद** ।	आपकी कृपा से मेरा भार और श्रम **कम हो गया** ।
चुन् प्रताप अज़् दूस्तान'श् ईन्सान् शुनीद **सबुक रफ़्त** ।	जब प्रताप ने अपने मित्रों से ऐसा सुना तो वह **शान्ति के साथ मर गया** ।
कुजा दानन्द ह़ालई मा **सबुक बारान्** इ साह़िलहा !	तट पर खड़े **भाररहित लोग** हमारी अवस्था कैसे समझेंगे !
ईन् रक़्क़ास: **सबुकपाय**'स्त ।	यह नर्तकी **चपल चरण वाली** है ।
महमूद ग़ज़नवी पिसर इ **सबुक तगीन** बूद ।	महमूद ग़ज़नवी **सबुकतगीन** का पुत्र था ।
बा **सबुकख़िरदान्** निशीनी, ऐ ! पिसर !	हे पुत्र ! तू **मन्दबुद्धि** लोगों के साथ बैठता है ।
सग ह़यवान् इ **सबुकख़ीज़** अस्त ।	कुत्ता **अल्प निद्रा वाला** पशु है ।
ऊ बा **सबुकदस्ती** हम: कार मी कुनद ।	वह बड़ी **दक्षता** से सारे काम करता है ।
सबुकसर म बाश, **सबुकदिल** बाश ।	**हलके सिर वाला** मत हो, **हलके चित्त वाला** हो ।
सरवत व दौलत अशियायि **सबुकसाय:** हस्तन्द ।	समृद्धि और राज्य **आती जाती छायाएं** हैं ।
बा **सबुकसाय:गान्** दूस्ती म कुन् ।	**सस्ते लोगों** से मैत्री मत कर ।
ऊ **सबुकसीर** अस्त ।	वह **अल्प सन्तोषी** है ।
अगर बीदावत मी र वी **सबुकी** मी बीनी ।	अगर विना बुलाये जाओगे तो **अप्रतिष्ठा** देखोगे ।

चूब इ पम्ब:=(शब्दार्थ-रुई की लकड़ी)= कार्क की लकड़ी

सबुक ख़ीज़=अल्प निद्रावाला, अल्पनिद्र: (ज़ूदख़ीज़ और सबुकख़ीज़ का अन्तर याद रखना चाहिये । ज़ूदख़ीज़ का अर्थ है–सुबह जल्दी उठने वाला, सबुकख़ीज़ का अर्थ है–खटका होते ही जाग उठने वाला)

सबुक सर=हलके सिर वाला, अस्थिरमति

सबुक दिल=हलके दिलवाला, जिसके हृदय पर कोई भार न हो, प्रसन्नचित्त

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सख़्त ।
कठिन, कठोर, कट्टर, कड़ा, दृढ ।

दर्स ३ इमरूज़ **सख़्त** बूद ।
आज हमारा पाठ **कठिन** था ।

अल्मास **सख़्ततरीन** ३ संगहा'स्त ।
हीरा पत्थरों में **सबसे कठोर** होता है ।

दुश्मन ३ **सख़्त** बियामद ।
कट्टर शत्रु आया ।

जंग **सख़्तरूय** दाद ।
लड़ाई **कड़ी** हुई ।

ईन् सुखुन बर मन् **सख़्त आमद** ।
यह बात मुझे बड़ी **कठोर लगी** ।

ईन् गिरह **सख़्तबाज़** मी शवद ।
यह गाँठ **कठिनता से खुलने वाली** है ।

ऊरा **सख़्त तम्बीह** मी कर्द ।
उसकी **कठोर ताडना** की ।

दुखानिय्यात **सख़्त क़दग़न** शुदः अस्त ।
धूम्रपान **कठोरतापूर्वक** निषिद्ध है ।

बाद ३ सरमा **सख़्त** मी वज़द ।
तेज़ ठण्डी हवा चल रही है ।

रूज़गार बि मा **सख़्त मी गुज़रद** ।
हमारे दिन **खराब चल रहे** हैं ।

दूस्त'म् **सख़्त नाख़ुश** अस्त ।
मेरा मित्र **बहुत बीमार** है ।

बिया कि क़स्र ३ अमल **सख़्त सुस्त बुनियाद**'स्त ।
आ, क्योंकि कामनाओं का भवन **बड़े निर्बल आधार वाला** है ।

ऊरा **सख़्त व सुस्त** गुफ़्त, सूदी न दाश्त ।
उसको बहुत **बुरा-भला** कहा पर कोई लाभ नहीं हुआ ।

सख़्त हर्फ़ न मी ज़नी ?
तू **कुछ** बोलता क्यों नहीं ?

चुन् ऊरा दीद **सख़्त गुफ़्तन्** आग़ाज़ निहाद ।
जब उसे देखा तो **कड़ी बातें बोलना** शुरू कर दिया ।

बर ऊ **सख़्त गिरिफ़्तन्द** कि हमराह ३ आन् हा बिरवद ।
उसको **बहुत दबाया** कि उनके साथ चला चले ।

जवानी **सख़्तपै** बायद कि अज़् आ़लम बिपरहीज़द ।
युवा को **दृढचरण** होना चाहिये ताकि संसार के प्रति अनासक्त हो ।

मन् गवाही मी दिहम् कि ईन् नौजवान **सख़्तकूश** अस्त ।
मैं प्रमाणित करता हूँ कि यह नौजवान **कठोर परिश्रमशील** है ।

रईस ३ मा **आदम** ३ **सख़्तगीरी** अस्त ।
हमारा अध्यक्ष बड़ा **कठोर व्यक्ति** है ।

मा सख़्ती कशान् क़रार अज़् कुजा याबीम !
हम **कष्ट में पड़े हुए लोग** चैन कहाँ से पायें !

अल्मास=हीरा
दुख़ानिय्यात=धूम्रपान के प्रकार, धूम्रपान
बाद ३ सरमा=हेमन्त पवन, शीत वायु
क़स्र ३ अमल=कामनाओं का भवन
सूदी=कोई भी लाभ, एक भी लाभ
अज़् आ़लम=संसार-सांसारिकता से
बिपरहीज़द=परहेज़ करे, अनासक्त रहे
गवाही मी दिहम्=प्रमाणित करता हूँ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सुख़न-सुख़न ।	**बात, भाषण, वाणी, सूक्ति ।**
अज़् **ईन् सुख़ुन** रंजीद ।	**इस बात** से वह दुखी हो गया ।
सुख़ुनरानी यि बन्दः रा उ़नवान अस्त....।	इस सेवक के **भाषण** का शीर्षक है...।
चन्दी बा ऊ **सुख़ुन दाश्त ।**	उससे थोड़ी सी **बातचीत की ।**
सुख़ुन चन्दान् दराज़ कर्द कि हमः ख़ुफ़्त ।	**इतना लम्बा बोला** कि सब सो गये ।
सुख़ुन'म् बिशनवीद ।	**मेरी बात** सुनो (मानो) ।
सुख़ुन शुनीदन् वीख़ इ दौलत'स्त ।	**बात मानना** समृद्धि का मूल है ।
बाज़ बि सर इ **सुख़ुन** मी रवम् ।	मैं फिर अपने **मूल विषय पर** आता हूँ ।
ऊ **सुख़ुन** इ **आब बरदार** गुफ़्त ।	उसने अत्यन्त **सन्तुलित भाषण** दिया ।
ऊ हमीशः **सुख़ुन** इ **पहलूदार** मी गूयद ।	वह सदा **चुभनेवाली बात** कहता है ।
सुख़ुन इ **तल्ख़** म गू ।	**कड़वी बात** मत कह ।
अज़् ईन् मक़ूलः **सुख़ुन रफ़्तः अस्त ।**	इस बात का **उल्लेख पहले हो चुका है ।**
अरबाब इ **सुख़ुन** हरचिः मी गूयन्द हदीथ्स मी शवद ।	**वाचस्पति लोग** जो कह जाते हैं उसकी कथाऐं बन जाती हैं ।
ऊ नातिक़ इ **सुख़ुनआरा** अस्त ।	वह **वाणी को अलंकृत करने वाला** वक्ता है ।
सुख़ुनवरान् इ फ़ारसी ह़ाफ़िज़ रा अह़तराम मी कुनन्द ।	फ़ारसी के **साहित्यकार** हाफ़िज़ का आदर करते हैं ।
पीरमर्द **सुख़ुनसाज़ी** बूद ।	बुड्ढा बड़ा **झूठा** निकला ।
ईन् नातिक़ **सुख़ुनसन्ज** अस्त ।	यह वक्ता **विचारपूर्वक बोलनेवाला** है ।
अज़् **सुख़ुनगुज़ारी** शुनीदम् कि दुश्मन सरगर्म शुदः अस्त ।	मैंने एक **सन्देशवाहक** से सुना है कि शत्रु सक्रिय हो उठा है ।
मर्द इ **सुख़ुनफ़ुरूश** रा ऐतिक़ाद म कुन् ।	**ख़ुशामदी** का भरोसा मत कर ।
मर्तबः यि **सुख़ुनफ़ह्म** बरतर अज़् **सुख़ुनवर** अस्त ।	**सूक्तिवेत्ता** का स्थान **सूक्तिकार** से भी ऊँचा है ।
रईस इ जलसः आगाज़ इ सुह़बत कर्द व दीगरान् **सुख़ुनगुस्तरी** कर्दन्द ।	सभाप्रधान ने चर्चा का आरम्भ किया और दूसरों ने **चर्चा का विस्तार** किया ।

रंजीद=दुखी हो गया
उ़नवान=शीर्षक
बीख़ इ दौलत=समृद्धि का मूल
अज़् ईन् मक़ूलः=इस बात से
सुख़ुन रफ़्तः अस्त=वाणी जा चुकी है
(इस बात का उल्लेख हो चुका है ।)

अरबाब=(रब का बहुवचन)=स्वामी लोग
अरबाब इ सुख़ुन=वाग्मीजन, वाचस्पतयः
सरगर्म=सक्रिय
ऐतक़ाद=भरोसा, विश्वास
बरतर=ज़्यादा ऊँचा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सर (१)	**सिरा, सिर, नायक, ढक्कन, विचार, पासंग।**
सर'श् रा बुरीदन्द।	उसका **सिर** काट दिया गया।
मुर्ग़ी **बर सर** इ **दिरख़्त** निशस्त: बूद।	एक चिड़िया **पेड़ पर** बैठी थी।
नामहाय'शान् **बर सर** इ **अंगुश्त** अस्त।	उनके नाम उसकी **अंगुलियों की नोक पर** हैं।
अज़् सर बिख़्वानीद।	**नये सिरे से** (फिर से) पढ़िये।
नख़ दू **सर** दारद।	डोरी के दो **सिरे** हैं।
मा अज़् **आन् सर** आमदीम।	हम **उस ओर** से आये हैं।
सरान् इ **सिपाह** आमदन्द।	**सेना के नायक** आये।
सर इ **ज़र्फ़** शिकस्त।	**जग** (पानी के बर्तन) **का ढक्कन** टूट गया।
ऊ **सर** इ **दावा** दारद।	उसका **झगड़ा करने का जी** है।
ईन् तराज़ू **सर** दारद।	यह तराज़ू **पासंगवाली** है।
ऊ **दहसर** अ़याल दारद।	उसके परिवार में **दस जने** हैं।
चाक़ू रा दादम् व पंज रियाल **सर दादम्**।	मैंने चाक़ू दे दिया और पाँच रियाल (ऊपर से) **दे दिये**।
मुवाज़िब बाश कि **सर** इ **सूज़न** बि दस्त'त् न रवद।	सावधान रहना कहीं **सुई की नोक** तेरे हाथ में न घुस जाय।
सर इ **सूज़न** बराबर ज़मीन हम बिदून इ जंग न मी दिहम्।	**सुई की नोक** के बराबर ज़मीन भी बिना युद्ध के नहीं दूँगा।
क़लम ईन् जा रसीदो-**सर बिशिकस्त**।	क़लम यहाँ तक पहुंची थी कि उसकी **नोक** **(निब) टूट गयी**।
सर इ **साल** ईन् चि: फ़ित्न: अस्त।	**साल के आरंभ में ही** यह क्या उपद्रव है।
सर इ **शाम** ख़ुफ़्तई ?	**शाम के शुरू से ही** सो गये।
या ! ख़ुदा **अज़् सर** इ **ख़र** मारा दूर दार।	हे परमात्मा ! हमको **बोर करने वालों** (गधा खोपड़ियों) से दूर रख।
सरापा (या 'सर ता पा') ग़लत अस्त।	**ऊपर से नीचे तक** ग़लत है।
सरासर (या 'सर ता सर' या 'सर बि सर') ख़राब अस्त।	**एक सिरे से दूसरे सिरे तक** (आदि से अन्त तक) ख़राब है।

बुरीदन्द=(उन्होंने) काट दिया
मुर्ग़ी=एक चिड़िया
निशस्त: बूद=बैठी थी-था
अंगुश्त=अँगुली (संस्कृत–अंगुष्ठ)
नख़=डोरी, धागा
सिपाह=सेना, फौज़ (संस्कृत–अश्ववाह)
दावा=झगड़ा
अ़याल=परिवारजन, परिवार में आश्रितजन
न रवद=न चली जाय, न चुभ जाय
फ़ित्न:=उपद्रव

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अशआ़र अज़् सादी ।	शेख सादी के कुछ पद ।
हर कि ऐ़ब ई दीगरान् पीशी ई तू आवुर्दो-शुमुर्द ।	जो कोई भी दूसरों के दोष तेरे पास लाता और गिनाता है ।
बीगुमान ऐ़ब ई तू पीश ई दीगरान् ख़्वाहद बुरद ।।	निश्चय ही तेरे दोषों को दूसरों के सामने ले जायगा ।।
हर सू दवद आन् कि'श् ज़ि दर ई ख़ीश विरानद ।	सब ओर दौड़ता फिरता है जिसको कि वह अपने दरवाज़े से निकाल देता है ।
व आन् रा कि बिख़्वाहद बि दर ई कस् नै दवानद ।।	और जिसको वह बुला लेता है वह किसी के दरवाज़े पर नहीं दौड़ता ।।
'गर आन्हा कि मन् दानमे कर्दमे ।	यदि वे बातें जो मैं जानता हूं, करता ।
निकू सीरतो-पारसा बूदमे ।।	तो सदाचारी और भक्त हो जाता ।।
शिगूफ़: गाह शिगूफ़'स्तो–गाह ख़ूशीद: ।	फूल कभी खिलता है, कभी मुरझा जाता है ।
दिरख़्त गाह बिरह्न'स्तो–गाह पूशीद: ।।	वृक्ष कभी नंगा होता है, कभी ढका हुआ हो जाता है ।।
नै ज़ाहिद रा दिरम बायद नै दीनार ।	संयमी को न दिरम चाहिये और न दीनार ।
चु बिसितद ज़ाहिदी दीगर बि दस्त आर ।।	यदि वह लेता हो तो दूसरे संयमी की सेवा कर ।।
दरिया यि फ़राबान न शवद तीर: बि संग ।	महासागर एक पत्थर से उद्वेलित नहीं होता ।
आ़रिफ़ कि बिरञ्जद तुनकआब'स्त हनूज़ ।।	वह मुनि जो कि उद्विग्न हो जाता है अभी तक उथले पानी वाला है ।।
हमराह गर शिताब कुनद हमरह ई तू नी'स्त ।	सहयात्री यदि जल्दी मचाता हो तो वह तेरा सहयात्री नहीं है ।
दिल दर कसी म बन्द कि दिलबस्त: यी तू नी'स्त ।।	दिल उस आदमी पर मत लगा जो कि तेरे प्रति अनुरक्त नहीं है ।।
ज़कात इ माल बिदर कुन् कि फ़ुद्ज़ल: यी रिज़ रा ।	सम्पत्ति का दायभाग निकाल दे क्योंकि अंगूरलता के अतिरिक्त अंश को ।
चु बाग़बान् बिबुरद बीशतर दिहद् अंगूर ।।	जब माली छाँट देता है तो (वह लता) अधिक अंगूर देती है ।।

ऐ़ब=दोष
आवुर्दो-शुमुर्द=लाया और गिनाया, लाता और गिनाता है
बीगुमान=निश्चय ही
ख़्वाहद बुरद=ले जायगा
हर सू=हर दिशा में, हर ओर
दवद=दौड़ता है ।
आन् कि'श्=वह जिसको कि वह (प्रभु)

CC-0. In Public Domain. Anna Gangotri Initiative

सर (२)	**आरम्भ, मुखिया, अभिभावक, पटना आदि ।**
अज़् सर इ हमान् तूप बि मा बिदिहीद ।	उसी थान **में से** हमें दीजिये ।
सुहबत **अज़् सर** गिरिफ़्तन्द ।	वार्ता **पुनः** प्रारम्भ हुई ।
मा हम ईन् **सर व सिदा** शुनीदः ईम् ।	हमने भी यह **अफ़वाह** सुनी है ।
रईस बा **सर व हमसर** आमद ।	प्रधान अपने **अनुयायियों** के साथ आया ।
बा मन्'श् हीच **सरो-कार** नी'स्त ।	मेरे साथ उसका कोई **सम्बन्ध** नहीं है ।
चिरा ईन् **बी सरो-ज़बान** रा मी ज़नीद ?	इस **असहाय** को क्यों पीट रहे हो ?
हमः गुफ़्तगूय'श् **बी सरो-पा** अस्त ।	उसकी सारी बातें **बे सिर पैर की** होती हैं ।
ईन् शख़्स **बी सरो-सामान** नी'स्त ।	यह आदमी बिलकुल **निराधार** नहीं है ।
पुरु **यक सर व गर्दन** अज़् हमः मक़्दूनियाईहा बुलन्दतर बूद ।	पुरु समस्त ग्रीक सैनिकों से **गर्दन-गर्दन** ऊँचा था ।
ईन् क़ाली **सर व तह गुस्तर्दः** अस्त ।	यह क़ालीन **उलटा बिछाया** है ।
ज़न चादर इ ख़ुद रा **सर कर्द** ।	महिला ने चादर **ओढ़ ली** ।
बा शौहर इ ख़ुद **न तवानिस्त सर कुनद** ।	उसकी अपने पति से **नहीं पट सकी** ।
ऐ ! मुर्ग़ इ सहर ! नालः **सर कुन्** ।	हे प्रभातपक्षी ! चीत्कार **शुरू कर** ।
रूज़गारी विदीन् **बि सर बुर्दीम** ।	(हमने) इसमें बहुत **समय लगाया** है ।
बाहम **न मी तवानन्द बि सर बिबुरन्द** ।	(उनकी) आपस में **नहीं पट सकती** ।
ग़ुस्सः अश् **बि सर आमद** ।	उसका शोक अन्त पर आया (**कम होने लगा**) ।
मुद्दत इ क़रारदाद **बि सर आमद** ।	ठेके की अवधि **समाप्त हो गयी** ।
दर राह **चिः बि सर'श् आमद** ?	रास्ते में ही **उसे क्या हो गया** ?
दर इल्मो-फ़न्न **सर आमद** ।	(वह) विद्याओं और कलाओं में **प्रवीण हो गया** ।
दर ईन् उमीद **बि सर शुद**, दरीग़ ! उम्र इ अज़ीज़ ।	हाय ! इसी आशा में प्यारी आयु **बीत गयी** ।

तूप=(कपड़े का) थान

सर व कार=(सरोकार)=सम्बन्ध (सर=सम्बन्ध सूत्र, कार=काम । सरोकार =कार्य सम्बन्ध)

बी सर व ज़बान=(बिना सम्बन्धवाला और बिना ज़बानवाला)=असहाय

बी सर व पा=(बी सरो पा, बी सरो तह, बी सरो बुन ये तीनों पर्यायवाचक हैं) =बे सिर पैर की बात

यक सर व गर्दन=भीड़ में से जिसका सिर और गर्दन दूर से ही दिखाई पड़ें, इतनी ऊँचाई वाला व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सर (३)	सर के गतिसंज्ञक-उपसर्गों के सदृश-प्रयोग ।
चि: खतायी अज़् ऊ **सर ज़द** ?	उससे कौनसा अपराध **बन पड़ा** ?
आफ़ताब **सर ज़द** ।	सूर्य **झाँकने** लगा ।
साअ़तहा यि मान् रा **सर दिहीम**।	अपनी घड़ियाँ **मिला लेते** हैं ।
सिह नफ़र रा **सर बुरीदन्द** ।	तीन आदमियों के **सिर कट गये** ।
सर निहाद बि कूहो–बियाबान ।	पहाड़ों और जंगलों में **सिर रख दिया** (घूमने लगा) ।
बि फ़रमान इ ऊ **सर निहादन्द ज़ूद** ।	उसकी आज्ञाऐं **तुरन्त मान लीं** ।
सर रा तकान दाद ।	(उसने अपनी) **खोपड़ी** हिला दी ।
ज़न व शौहर ईन् क़द्र दावा कर्दन्द कि **सर** इ **तिफ़्ल** इ खुद रा खुर्दन्द ।	औरत मर्द ने इतना झगड़ा किया कि **अपने बच्चे की ही जान** ले ली ।
सर फ़ुरू आवुर्द ।	(उसने) **सिर झुका दिया**।
सर बि गरीवान इ खुद: **बुर्द**: बिबीन् ।	अपने गरेवान में **मुँह डाल कर** देख ।
बाज़ क़बाइल हा यि सरहद्द **सर बुलन्द बुर्दन्द** ।	सीमाप्रान्त के क़बाइलियों ने फिर **सिर उठाया** ।
माह **सर बर आवुर्द** ।	चाँद **उग आया** ।
मन् अज़् ईन् खतूत **सर दर न मी आवुरम्** ।	मैं ये अक्षर **नहीं उखाड़ सकता** (नहीं पढ़ सकता) ।
कसी अज़् कारहा यि ईन् शख्स **सर दर न मी बुरद** ।	कोई इस आदमी के कामों को **नहीं ताड़ सकता** ।
ईन् मर्द इ खर **सर अज़् पा न मी शनासद** ।	यह गधा जैसा आदमी **सिर और पैर का अन्तर तक नहीं जानता** ।
खेली **सर'म् रा बुर्दीद**, बस अस्त ।	मेरा **सिर बहुत लूट (खा) चुके**, बहुत हुआ ।
चुन् पुर्सीदन्द कि बि शब कुजा बूदी, **सर रा खारान्द** ।	जब पूछा गया कि रात को कहाँ रहे, तो **सिर खुजाने लगा** ।
फ़ुरसत इ **सर खारान्दन्** न मी दारम् ।	(मुझे) **सिर खुजाने** तक की फ़ुरसत नहीं है ।
शीर रा **सर बि सर म गुज़ार** ।	शेर को **चिढ़ाओ मत** ।
सर इ **हर्फ़** रा बाज़ म कुनीद ।	नये सिरे से बात मत बढ़ाओ (**बात के सिरे** को मत खोलो) ।

आफ़ताब=सूर्य (मूलत: आफ़ताब का अर्थ है पानी को गर्म करने वाला; आफ़ अर्थात् आब यानी जल, और ताब माने गर्म कर देने वाला । अर्थात् समुद्र के जल को गर्म कर देने वाला या पानी को जो सुखा दे अर्थात् सूर्य । कुछ लोग आफ़त और आब के संयोग से आफ़ताब शब्द को निष्पन्न मानते हैं, यह उनकी ग़लती है ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सर (४)	**सर के गतिसंज्ञक कुछ और प्रयोग ।**
बि सर'श् ख़ेली शीरः मालीद सूदी न दाश्त ।	**उसके सिर पर** बड़ी चाशनी चुपड़ी (पर) कोई लाभ नहीं हुआ ।
सर इ ख़ुद गीर ।	अपना **काम** देखो (अपना सिर पकड़ो – शब्दार्थ) ।
ख़ून अज़् सर इ ऊ गुज़श्त ।	उसका **प्राणदण्ड** क्षमा कर दिया ।
मगर अज़् सर बच्चः ऐ ख़ुद गुज़श्तः ईद ?	**क्या** आपने अपने पुत्र का परित्याग कर दिया है ?
सर बर आसमान सूदन् ख़ूब नी'स्त ।	**आसमान से सिर टकराना** अच्छा नहीं है ।
चिः **दर सर** दारी ?	तुम्हारे **मन में** क्या है ?
यक सर व दू गूश मी आयद !	एक सिर व दो कानों वाला (**हौवा**) आ जायगा !
आब कि **अज़् सर गुज़श्त** चि यक नैज़ः चिः सद नैज़ः !	जब पानी **सिर से गुज़र गया** तो जैसा एक बाँस पानी वैसा सौ बाँस पानी ।
सर इ **बीगुनाह** पा ऐ दार मी रवद अम्मा बाला ऐ दार न मी रवद ।	**निर्दोष का सिर** फाँसी के नीचे भले ही आ जाय, फ़ाँसी के ऊपर नहीं आता ।
सर इ **कमरूज़ी** हस्त, सर इ बीरूज़ी नी'स्त ।	**कम पाने वाले** होते हैं, नितान्त न पाने वाले नहीं होते ।
सर इ **ख़िदमत** इ शुमा बूदम् ।	आपकी ही **सेवा में** था ।
सर इ **वक़्त** आमद ।	**ठीक समय पर** आ गया ।
सर इ **सुफ़रः** हमः दूस्त मी नुमायद ।	दस्तरख़ान के सिरे पर (**खाते समय**) तो सभी दोस्त लगते हैं ।
दर यक हफ़्तः **सर** इ **पा** मी शवद ।	एक हफ़्ते में **पैरों पर खड़ा** (स्वस्थ) हो जायगा ।
सर इ **सवारी** म गू कि शीर बि ख़ुर ।	**घोड़े पर चढ़ते समय** मत कहो कि दूध पी जा ।
सर इ **राह** यक दर्यूज़ः रा दीदम् ।	(मैंने) **रास्ते में** एक भिक्षुक देखा ।
सर इ **जा** ऐ **ख़ुद** बिनिशीनीद ।	**अपना स्थान** ग्रहण कीजिये ।
ऊ **सर** इ **क़ौल** इ **ख़ुद** न ऐस्ताद ।	वह **अपनी बात पर** नहीं टिका ।
नख़ रा बायद **सरहम** बिदिहीद ।	डोरी में **गाँठ** लगा दीजिये ।
बर गिर्दीम **सर** इ **मतलब** ।	**काम की बात** पर आयें ।

शीरः मालीदन्=शीरा चुपड़ना, बहुत मिठास से बातें करना

सूदन्=टकराना, टक्कर मारना

यक सर व दू गूश=(शब्दार्थ–एक सिर व दो कानों वाला) बच्चों को डराने के लिए काल्पनिक नाम, हौआ, लूलू

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सर (५)	**सर के सामासिक प्रयोग।**
ईन ज़मीन **सराज़ीर** (या 'सराशीव') अस्त।	यह ज़मीन **ढलवान** है।
ईन् क़िस्मत अज़् जाद: **सरबाला** अस्त।	सड़क का यह हिस्सा **चढ़ाई का** है।
गुर्ब: शीर रा **सराज़ीर कर्द**।	बिल्ली ने दूध **लुढ़का दिया**।
बच्च: अज़् पंजर: **सराज़ीर शुद**।	बच्चा पालने से गिर (**लुढ़क**) **गया**।
ऊ **माय:** यि **सरअफ़राज़ी** यि दबिस्तान इ मा'स्त।	वह हमारे विद्यालय का **सिर ऊँचा करने वाला** है।
सर अन्जाम इ आन् जंग चि: शुद ?	उस युद्ध का **परिणाम** क्या हुआ ?
हम: वायद वराय ईन् मिह्मानी **सरान:** बिदिहन्द।	इस भोज में सबको अपना-अपना **हिस्सा** देना चाहिये।
जवाव इ **सरबाला** बि मन् दाद।	उसने मुझको **उलटा-सीधा** जवाब दिया।
ईन् **सरबालीन** कुलुफ़्ततर अस्त, आरामदिह नी'स्त।	यह **तकिया** ज़्यादा मोटा है आरामदेह नहीं है।
वा **सर बुज़ुर्गान्** ईन् तौर न बायद गुफ़्त।	**बड़ों** से इस तरह नहीं बोलना चाहिए।
ईन् ज़र्फ़ रा **सरबस्त:** दार।	इस जग का **ढक्कन बन्द** रखो।
ईन् ज़र्फ़ **सरदार** नी'स्त; **सरखुम** न दारद।	यह जग **ढक्कन वाला** नहीं है। **ढक्कन** इस पर नहीं लगता।
सरपूश इ बुशक़ाब शिकस्त।	प्लेट का **ढक्कन** टूट गया है।
वा कसी कार न दारम्, हर्फ़ इ **सरबस्त:** ज़नम्।	किसी की तरफ़ इशारा नहीं है, **बन्द बात** (साधारण वात) कह रहा हूँ।
आन् मर्द रा **सर बि गुम** कर्दन्द।	उस आदमी को **एकदम गुम** करवा दिया (मरवा दिया)।
नाम: यी **सर बि मुहर** याफ़्तम्।	मुझे एक पत्र **सीलबन्द** मिला।
सरबन्द इ चूब इ पम्ब: ख़ूब मी शवद।	कौर्क की **डाट** अच्छी होती है।
बीस्त हज़ार तुमान **सरबहा** दाद व पिसर रा बाज़ याफ़्त।	बीस हज़ार तुमान **फिरौती** दी और पुत्र को छुड़वा लिया।
कफ़्श इ **सरपायी** पा कुन्।	**बाहर जाने के** जूते पहन ले।
दर **सरपरस्ती** यि वज़ीर बूद।	(वह) मंत्री के **संरक्षण** में था।

सराज़ीर=ढलवाँ, ढालू, ढलान युक्त, ऊपर से नीचे की ओर ढाल वाला, इसे सराशीब भी कहते हैं

सरबाला=चढ़ाई, नीचे से ऊपर जिसमें चढ़ना पड़ता हो। यह सराज़ीर या सराशीव का प्रतिपर्याय है

क़िस्मत अज़् जाद:=सड़क का एक भाग

माय:=सम्पत्ति, गौरव हेतु

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सर (६)	**सर के सामासिक प्रयोग।**
सरतीर रा बर शहतीर निहादन्द।	शहतीर के ऊपर **सरतीर** लगा दीं (सीधी के ऊपर आड़ी)।
सरतीज़ हा यि चश्म'श् सायःदार अन्द।	उसकी आँखों की **पलकें** छायादार (घनी) हैं।
ऊ मर्द **सरजुम्बान** अस्त।	वह मनुष्य **बड़ा प्रभावशाली** है।
सरजूश सर बर आमद।	दाल का **उफान** निकलने लगा।
सरचश्मः यि आबरूद इ गंगा दीदः बूदीम्।	हमने गंगा का **उद्गम** देखा है।
मीवःहा यि **सरचीन** आवुर्दम्।	मैं **चुने हुये** फल लाया हूँ।
सर इ ख़त्त् चिः निवीसम्?	पत्र पर क्या **पता** लिखूँ?
खुश बाश, **सरखुश** म बाश।	खुश रहो– **नशे** में मत रहो।
ईन् इमारत **सरदर** क़शंगी दारद।	इस भवन का **सामना** (सामने का भाग) अच्छा है।
चिरा हर्फ़ इ सर इ **रास्त** बि मन् न ज़नीद।	मुझसे **साफ़-साफ़ बात** क्यों नहीं कहते।
यक तुमान **सर इ राही** याफ़्तम्।	मुझे एक तुमान **सड़क पर पड़ा** पाया।
पिदर फ़रज़न्द इ ख़ुद रा **सरज़निश** कर्द।	बाप ने अपने पुत्र की **ताड़ना** की।
पिदर'श् मुर्द मा हम बराय **सर सलामती** बिरवीम।	उसका पिता मर गया, हम भी **शोक प्रदर्शन** के लिए गये।
पियालः रा **सरशार** म कुन्।	प्याले को ऊपर तक (**लबालब**) मत भर।
अज़् मा **सरगरान्** चिरा हस्तीद?	हमसे क्यों **कुपित** हो?
सर मक़ालः यि ईन् रूज़नामः खूब अस्त।	इस अख़बार का **सम्पादकीय** अच्छा है।
दर मीहनपरस्ती **सरमश्क** इ दीगरान् बाशीम।	हमें चाहिये कि स्वदेश-प्रेम में दूसरों के लिये **आदर्श** हों।
सरगुज़श्त इ राम मारूफ़ अस्त।	राम की **कथा** प्रसिद्ध है।
सर इ अ़मलः कुजा रफ़्त?	मज़दूरों का **मुखिया** कहाँ गया?
गिल इ **सरशूयी** हनूज़ बि कार मी आयद।	**सिर धोने की मिट्टी** (मुलतानी मिट्टी) अभी भी काम में ली जाती है।

सरतीर=आड़ी शहतीर

शहतीर=सीधी शहतीर

सरजुम्बान=प्रभावशाली (जिसके सिर हिलाने मात्र से काम हो जाय, ऐसा व्यक्ति)

सर इ ख़त्त=पत्र के ऊपर लिखने की इबारत अर्थात् पता।

सरगरान्=(शब्दार्थ–भारी सिरवाला) कुपित,कोपाविष्ट

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सुस्त ।	**निर्बल, शिथिल, शनैः शनैः, विश्रान्ति, ढीला ।**
दलाइल इ ऊ **सुस्त** बि नज़र मी आयद ।	उसके तर्क **निर्बल** लगते हैं ।
ईन् मीख़ **सुस्त** अस्त ।	यह कील **ढीली** है ।
जदीय्यत इ ऊ **सुस्त** शुद ।	उसके प्रयत्न **शिथिल** हो गये ।
बारान **सुस्त बारीद** ।	वर्षा **धीरे-धीरे** हुई ।
चिरा **सुस्त** कार मी कुनी ?	**धीरे-धीरे** काम क्यों करते हो ?
ईन् हवा आदम रा **सुस्त मी कुनद** ।	यह हवा आदमी को **विश्रान्ति देती** है ।
तनाव रा **सुस्त कर्द** ।	रस्सी को **ढीला कर दिया** ।
ईन् दवा मरीज़ रा **सुस्त कर्द** ।	इस दवा ने रोगी को **कमज़ोर** कर दिया ।
इब्तिदा ख़ेली जिद्दी बूद बाद **सुस्त बूद** ।	पहले तो बड़ा कठोर था बाद में **शिथिल हो गया** ।
तूफ़ान **सुस्त शुद** ।	तूफ़ान **थम गया** ।
दर्द **सुस्त शुद** ।	दर्द **कम हो गया** ।
ईन् मर्द **सुस्तकमर** अस्त ।	यह आदमी **नपुंसक** है ।
ईन् मर्द **सुस्तऐतिक़ाद** अस्त ।	यह आदमी **अल्पविश्वासी** (ईश्वर में विश्वास न रखने वाला) है ।
ईन् दुनिया जा यि **सुस्तबाज़ू** नी'स्त ।	यह संसार **निर्बल बाहुवालों** के लिए नहीं है ।
धिया कि क़स्र इ अमल सख़्त **सुस्त बुनियाद**'स्त ।	आ ! क्योंकि कामनाओं का भवन अत्यन्त **भंगुर आधार वाला** है ।
सुस्तपै न बायद बूद ।	**शिथिल आधार वाला** नहीं होना चाहिये ।
ज़ालिम हमीशः **सुस्तराय** मी शवद ।	अत्याचारी सदा **अविवेकी** होता है ।
दर पीरी हमः **सुस्त रग़बत** मी शवद ।	वृद्धावस्था में हर कोई **क्षीणकाम** हो जाता है ।
बहादुर शाह पादशाह इ **सुस्तनिहाद** बूद ।	बहादुरशाह **अस्थिरचित्त** राजा था ।
दर कारहा यि मुहिम्म **सुस्ती** न बायद कर्द ।	बड़े कामों में **शिथिलता** नहीं करनी चाहिये ।

बि नज़र मी आयद=दिखाई पड़ते हैं, लगते हैं

मीख़=कील

जदीय्यत=प्रयत्न

जिद्दी=कठोर, हठी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सलाम-सलामत ।

सलाम बर शुमा बाद ।

सलाम इ मरा बि मादर'तान् बिरसानीद ।

या नबी **सलाम अ़लैक** ।

शागिर्द मुअ़ल्लिम रा सलाम कर्द-**"सलाम अ़लैकुम् ।"**

मुअ़ल्लिम जवाब इ सलाम दाद- **"व अ़लैकुम् अस्सलाम ।"**

चुन् रईस इ तन्ज़ानिया आमद **तूप सलाम** रा अन्दाख़्तन्द ।

व **सलाम** इ **निज़ामी** दादन्द ।

मा बाहम **सलाम अ़लैक** दारीम ।

व'स्सलाम व नामः यि तमाम ।

सलाम इ **लुर** बीतमअ़ नी'स्त ।

आदम बि हिश्त रौज़ः यि **दार'स्सलाम** रा ।

दूस्त'म् बराय शुमा **सलाम फ़िरिस्तादः** अस्त ।

सलामत अज़् थ्सरवत बिह'स्त ।

आया पिदर इ शुमा **सलामत** अस्त ?

सलामत इ अ़क़्ल'त् बाद ।

हवा यि दरिया **सलामत** अस्त ।

"ख़ुदा हाफ़िज़ मादर जान !" –

"बि सलामत जान'म् !"

सर इ शुमा **सलामत** बाशद ।

सलामत रवी यि हिन्दुस्तान बिहतर'स्त ।

बि सलामती यि शुमा !

अ़लैक=ऊपर तेरे

अ़लैकुम्=ऊपर आपके

अरबी में 'क' का बहुवचन 'कुम्' होता है ।

व'स्सलाम (व+अल्+सलाम)=और शेष आपको प्रणाम

बी तमअ़=बिना लालच, बिना मतलब के

शान्ति, प्रणाम, कुशलता ।

आपके ऊपर **शान्ति** हो ।

मेरा **प्रणाम** अपनी माताजी से कह दीजिये ।

हे दैवदूत ! **आपके लिये शान्ति हो ।**

विद्यार्थी ने गुरुजी को प्रणाम किया–**"आपको शान्ति हो ।"**

गुरुजी ने उत्तर दिया – **"और तुमको भी शान्ति हो ।"**

जब तन्ज़ानिया के राष्ट्रपति आये तो उनको **तोपों की सलामी** दी गयी ।

और **सैनिक सलामी** दी गयी ।

हममें **नमस्कार मात्र** का परिचय है ।

शेष आपको प्रणाम और पत्र समाप्त करता हूँ ।

लुर लोगों की नमस्ते बिना मतलब नहीं होती ।

आदम ने **स्वर्ग का उद्यान** छोड़ दिया ।

मेरे मित्र ने आपको **प्रणाम कहलाया** है ।

धन की अपेक्षा **स्वास्थ्य** अच्छा है ।

आपके पिताजी **सकुशल** हैं ?

आपकी बुद्धि **ठीक** रहे ।

समुद्री वायु **स्वास्थ्यकारक** है ।

"परमात्मा आपका रक्षक हो माताजी" ! -

"सकुशल रहना बेटे !"

आपका सिर **सलामत** रहे ।

भारत की **आर्थिक अवस्था** अच्छी है ।

आपके **स्वास्थ्य की कामना** सहित !

बिहिश्त=स्वर्ग

बि हिश्त=छोड़ दिया

दारस्सलाम (दर+अल्+सलाम)= शान्तिगृह, स्वर्ग का उद्यान, जिसमें आदम रहा करता था, स्वर्ग ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

संग ।

पत्थर, बाँट, सिल्ली, शिला ।

ईन् पुल रा बि **संग** व आजुर साख़्तः अन्द ।

यह पुल **पत्थरों** और ईंटों से बनाया गया है ।

बक़्क़ाल **संग** इ **पंज किलूग्रामी** न दाश्त ।

व्यापारी के पास **पाँच किलोग्राम का बाँट** नहीं था ।

अल्मास **संग** इ **क़ीमती** अस्त ।

हीरा **बहुमूल्य पत्थर** है ।

कि'गर ज़ि कूह फ़ुरू ग़लतद **आसिया संगी** ।

यदि पर्वत से **चक्की का पाट** लुढ़कता आ रहा हो ।

संग इ **ज़ीरीन** इ **आसिया** मुतहर्रिक नी'स्त ।

चक्की का निचला पाट चलता नहीं है ।

संग इ चाक़ू **तीज़ कुन्** दारी ?

क्या तुम्हारे पास **चाकू पर धार रखने की सिल्ली** है ?

अज़् **संग** इ **चक़माक़** अख़गर इ आतिश रा पैदा मी कर्दन्द ।

चकमक पत्थर से आग की चिनगारी पैदा की जाती थी ।

ईन् **संग** इ **तराज़ू** कम अस्त ।

यह **बाँट** कम तोल वाला है ।

ऊ हमीशः **संग बि राह** इ मन् **अन्दाख़्त** ।

उसने सदा मेरी **राह में रोड़े अटकाये** ।

दर शहर इ रै **संग बर बाला** यि **संग** न मान्द ।

रै नगर में **पत्थर के ऊपर पत्थर** नहीं बचा ।

संग व सुबू बाहम कै ख़ुरद ?

पत्थर और प्याले का साथ कैसे निभे ?

तीर'श् **बि संग ख़ुर्द** ।

उसका तीर निशाना चूक गया । (**पत्थर पर लगा** ।)

कुलूख़अन्दाज़ रा पादाश **संग** अस्त ।

ढेले फेंकने वाले की सज़ा **पत्थर** है (ईंट का का जवाब पत्थर) ।

संग इ **बुज़ुर्ग**, निशानः यि न ज़दन् अस्त ।

बड़ा पत्थर उठाना पत्थर न मारने की निशानी है ।

अज़् आन् तरफ़ इ दरिया **संगबारान** कर्दन्द ।

नदी के उस पार से **पत्थर वर्षा** की ।

ऊ बि जा यि दिल **संगपारः** दारद ।

वह दिल की जगह **पत्थर का टुकड़ा** रखता है ।

यकी **संगपुश्त** (या 'लाकपुश्त') वा गवज़्नी दूस्त बूद ।

एक **कछुआ** किसी हिरन का मित्र था ।

ऊ श़ख़्सी **संगदिल** अस्त ।

वह व्यक्ति बड़ा **कठोर हृदय** (पत्थर के दिल वाला) है ।

बि अम्र इ सुलतान ऊरा **संगसार** कर्दन्द ।

राजा की आज्ञा से उसको **पत्थर मार-मार कर मार** डाला गया ।

सग रा गुशादः व **संग रा बस्तः** दारन्द ।

कुत्ते को खुला रखते हैं और **पत्थरों को (बर्फ़ में) बाँध कर** रखते हैं ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सिह ।	**तीन और तीन के सामासिक प्रयोग ।**
ऐशान् **सिह** बिरादर हस्तन्द ।	वे **तीन** भाई हैं ।
ऐशान् **हर सिह** आमदन्द ।	वे **तीनों** आये ।
ईन् गियाह **सिहबर्गः** अस्त ।	यह **तिपतिया** घास है ।
ऐशान् **सिह बि सिह** आमदन्द ।	वे **तीन-तीन करके** आये ।
दर ज़ुहर दू पा व दर ग़ुरूब **सिह पा** राह मी बुरद–बिगू चीस्त ?	दोपहर को दो पैरों से और सन्ध्या समय **तीन पैरों से** राह चलता है, बताओ क्या है ?
ऊ मर्द **सिहपहलू** अस्त ।	वह **तीन पहलूवाला आदमी** है (सोचता कुछ है, कहता कुछ है, करता कुछ है) ।
अमीर ख़ुसरू **सिहतार** रा ईजाद कर्द ।	अमीर ख़ुसरू ने **सितार** का आविष्कार किया ।
मन् दुचर्ख़ः दारम् दूस्त'म् **सिहचर्ख़ः** दारद ।	मेरे पास बाईसिकल है, मेरे मित्र के पास **तिपहिया साइकिल** है ।
पूल इ ऊ **सिह बराबर** पूल इ मन'स्त ।	उसके पास मुझसे **तीन गुना** पैसा है ।
उम्र'श् **सिहचन्दान्** अज़् उम्र इ मन'स्त ।	उसकी आयु मुझसे **तीन गुना** अधिक है ।
परचम इ मा **सिहरंग** अस्त ।	हमारा झण्डा **तिरंगा** है ।
वज़ारत इ आमूज़िश **अमल** इ **सिहज़बानः** ख़्वाहद आवुर्द ।	शिक्षा मंत्रालय **त्रिभाषा सिद्धान्त** लागू करना चाहता है ।
इमरूज़ **सिहशम्बः** अस्त ।	आज **मंगलवार** है ।
ईन् बच्चः हा **सिहक़ूलू** हस्तन्द ।	ये **तीन जुड़वाँ** बच्चे हैं ।
ईन् तनाब इ **सिला** अस्त ।	यह रस्सी **तीन बट की** है ।
ईन् इत्तलानामः **सिहमाहः** अस्त ।	यह **त्रैमासिक** रिपोर्ट है ।
सिहदन्दानः हा व क़ाशुक़ हा बियार ।	**काँटे** चम्मच लाओ ।
उज़्र इ अव्वल व दुवुम गुफ़्तः बूदम्, **सिह** दीगर, मन् ख़ुद न मी ख़्वाहम् ।	पहला और दूसरा कारण मैं बता चुका हूँ; **तीसरे** – मैं स्वयं नहीं चाहता ।
ईन् बच्चः **सिहसालः** अस्त ।	यह बालक **त्रिवर्षीय** है ।
ईन् अक्स **सिहगानः** अस्त ।	यह **त्रिपार्श्व** चित्र है ।

गियाह=वनस्पति, घास (वैदिक घास)
दर ज़ुहर=दोपहर में (यौवनावस्था में)
दू पा=दो पैरों वाला (मनुष्य यौवन में दो पैरों से चलता है)
दर ग़ुरूब=सूर्यास्त के समय (वृद्धावस्था में)
सिह पा=तीन पैरों वाला (मनुष्य वृद्धावस्था में दो पैरों और तीसरी लाठी का सहारा लेता है, अतः तीन पैरों से चलने वाला प्राणी बन जाता है)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शब । संस्कृत-क्षपा ।

दर ताबिस्तान **शब** कूताह अस्त । गर्मियों में **रात** छोटी होती है ।

हमः **शब** सुर्फ़ः मी कुनम् । मैं **सारी रात** खाँसता रहता हूँ ।

सर इ शब खुफ़्ती ? **रात होते ही** सो गये ?

नीमः शब किः दर रा ज़नद ? **आधी रात को** कौन किवाड़ खटखटा रहा है?

आख़िर इ शब खुस्वीदम् । (मैं) **रात के अन्तिम भाग में** सोया ।

फ़र्दा शब बिरादर'म् मी आयद । **कल रात को** मेरा भाई आ रहा है ।

यक शब दर मियान तप मी आयद । **एक रात छोड़कर** बुख़ार आता है ।

हमः शब नयारमीदम् । (मैं) **सारी रात** नहीं सोया ।

जश्न इ तवल्लुद इ द्वाज़्दः इमाम रा **शब इ बरात** मी ख़्वानन्द । बारहवें इमाम के जन्मोत्सव को **शब बरात** कहते हैं ।

इमशब **शब इ यल्दा** अस्त । आज की रात **सबसे लम्बी रात** है ।

शब इ फ़िराक़ ज़िन्दः दाश्त । (उसने) **वियोगरात्रि** जागकर काट दी ।

शब बि रूज़ आवुर्द । (उसने जागकर) **रात का दिन** कर दिया ।

शबो-रूज़ दर ईन् फ़िक्र बूदम् । **दिन-रात** मैं इसी चिन्ता में था ।

चुन् **शब बर सर इ चंग** आमद । जब **रात घिर कर** आयी ।

शब गुर्बः समूर मी नुमायद । **रात के अँधेरे** में बिल्ली भी समूर (सेबिल) लगती है ।

किर्म इ शब अफ़रूज़ चुन् सितारः रख़शीद । **जुगनूँ** सितारों की तरह चमक रहे थे ।

अगर हर शब **शब ई क़दर** बूदे । यदि हर रात्रि **शब इ क़द्र** होती ।

गुल इ शबाबू रा शुनीदम् । मुझे **रजनीगन्धा के फूल** की खुशबू आयी ।

रूज़ रा बा दूस्तान् **शब कर्दन्द** । उन्होंने मित्रों के साथ दिन की **रात कर दी** ।

शबानः रफ़्तन्द मंन्ज़िल इ ऊ । **रात पड़ने पर** उसके घर पहुँचे ।

कूताह=छोटी, संकुचित

सुर्फ़ः मी कुनम्=खाँसता रहता हूँ

नयारमीदम्=(मैंने) आराम नहीं किया

{ तवल्लुद=जन्म
जश्न इ तवल्लुद=जन्मोत्सव

शब इ बरात=अरबी महीना शबान की पन्द्रहवीं रात, बारहवें इमाम की पैदायश की रात

फ़िराक़=वियोग, विरह

शब वि रूज़ आवुर्द=रात को दिन तक लाया, जागते-जागते रात का दिन कर दिया ।

शब बर सर इ चंग आमद=रात अधिकार में आयी, रात घिर कर आयी

शब गुर्बः समूर मी नुमायद=रात में बिल्ली भी समूर लगती है, रात के अँधेरे में असुन्दर भी सुन्दर लगती है

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शब (२)	शब के सामासिक प्रयोग ।
दूस्त'म् **शबान्गाह्** आमद ।	मेरा मित्र **रात के समय** आया ।
दुआ यि **शबानः** कर्दम् ।	मैंने **रात्रिकालीन** प्रार्थना की ।
शबानः दह रियाल मी गीरम् ।	**रात्रि सेवा** के दस रियाल लेता हूँ ।
शबानः रूज़ सिहवह्‌लः ग़िज़ा मी ख़ुरीम ।	**रात दिन में** हम तीन बार भोजन करते हैं ।
शबानः रूज़ गिरियः मी कुनद ।	**रात दिन** रोता रहता है ।
शबानः रूज़ बीस्तो-चहार साअ़त अस्त ।	रात दिन में चौबीस घंटे होते हैं ।
दबिस्तान इ मा **शबानः रूज़ी** दारद ।	हमारे विद्यालय में **छात्रावास** है ।
दूश **शबाहंग** (या **शबख़्वान्**) मी नालीद ।	रात को **बुलबुल** बोली ।
गर न बीनद बि रूज़ **शबपरः** चश्म ।	यदि **चमगादड़** की आँख दिन में नहीं देख सकती ।
कसी बि पादशाह **गौहर** इ **शबचिराग़** दाद ।	किसी ने राजा को **रात्रि में दीपक की तरह चमकने वाला रत्न** दिया ।
पादशाह **बि शबिस्तान** रफ़्त ।	राजा **शयनागार** में गया ।
अफ़रासियाब **शबीख़ून** कर्द ।	अफ़रासियाब ने **रात में आकस्मिक आक्रमण** किया ।
अस्ब इ **शबरंग** गुज़ीद ।	(उसने) **काला** घोड़ा चुना ।
शबरौ रा ह़ब्स कर्दन्द ।	**रात में घूमने वाले** (चोर) को बन्द कर दिया गया ।
अगर शीर न ख़ुरी **शबकूर** मी शवी ।	अगर दूध नहीं पियोगे तो **रतौंधी से पीड़ित** हो जाओगे ।
अज़् **शबनम** आशामीदन् तिश्नगी तमाम न मी शवद ।	**ओस** चाटने से प्यास पूरी नहीं होती ।
मिहमानी यी ह़ातिम **दहशबः** बूद ।	हातिम की दावत **दस रात तक** चलती रही ।
शबीनः न बायद ख़ुर्द ।	**रात का बासी खाना** नहीं खाना चाहिये ।
सादी **शबख़ीज़** बूद ।	सादी **उषःकाल से पूर्व उठ जाने वाला** था ।
दूश मा दर **शबबाज़ी** रफ़्तः बूदीम ।	कल रात को हम **कठपुतली के नाच** में गये थे ।

दुआ=प्रार्थना
सिहवह्‌लः=तीन बार, त्रिकृत्वः
शबाहंग या शबख़्वान्=बुलबुल
(रात में गानेवाली)

शबरंग=(शब्दार्थ-रात्रिवर्णः)=काला या काली
शबकूर=रात में जो अन्धा हो, रतौंधी से पीड़ित

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शुदन् ।	**जाना, होना, सम्भव होना (संस्कृत-शव=गतौ)**
शुद ग़ुलामी कि आबजू आरद ।	एक ग़ुलाम नदी से पानी लेने **गया** ।
बराय **शुदगान्** हम दुआयी कुनीद	**मृतकों** के लिये भी प्रार्थना कीजिये ।
बि'ल् आख़िर ज़ुह्हाक शाह **शुद** ।	अन्ततोगत्वा ज़ुह्हाक राजा **बना** (हुआ) ।
लिबास'म् अज़् बारान **तर शुद** ।	वर्षा से मेरे कपड़े **भीग गये** ।
हवा तारीक **मी शवद** ।	अँधेरा **होता जा रहा है** ।
दर वक़्त इ **शुदन्** हज़ार पर दाश्त ।	**चलने के समय** उसके हज़ार पर थे ।
न मी शवद अज़् आन् कूह बाला रफ़्त ।	उस पहाड़ पर चढ़ना **सम्भव नहीं है** ।
ईन् कार **न मी शवद** ।	यह कार्य **असम्भव है** ।
आख़िर **नै शुद** ।	अन्त में **नहीं ही हुआ** ।
चिः शुद ?	**क्या हुआ** – क्या बात है ?
ऊरा **चिः मी शवद** ?	उसे **क्या हो जाता है** ?
ऊ **कुश्तः शुद** ।	वह **मारा गया** ।
निविश्तः शुदः अस्त ।	**लिखा हुआ है** । (शास्त्र का प्रमाण है)
ईन् मीज़ अज़् चूब **साख़्तः शुद** ।	यह मेज़ लकड़ी की **बनी हुई है** ।
ईन् कार **शुदनी** नी'स्त ।	यह काम **होने योग्य** नहीं है ।
पिदर'श् **कुश्तः शुदः** अस्त ।	उसका बाप **मारा जा चुका** है ।
ईन् कार **तै शुदः** अस्त ।	यह कार्य **तय हो चुका** है ।
दर वक़्त इ **शुदगी** चश्म'श् अश्कबार बूद ।	**विदाई** के समय उसकी आँख आँसू बहा रही थी ।

आबजू=नदी का पानी

बि'ल् आख़िर=(बि+अल्+आख़िर)=अन्ततोगत्वा

तारीक मी शवद=अँधेरा होता जाता है

शुदनी=होने योग्य (संस्कृत–शवनीय; शव+अनीयर्)

अश्कबार=आँसू बहाने वाली

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शर्त् ।	**यदि, उपबन्ध, हेतुहेतुमद्‌भूत, दाँव** ।
मन् क़ुबूल मी कुनम् **बि शर्ती** कि ऊ हम क़ुबूल बिकुनद ।	मैं स्वीकार करता हूँ **यदि** वह भी स्वीकार करे ।
शराइत् इ फ़ुरूश आसानतर साख़्त: अन्द ।	बिक्री की **शर्तें** और सरल बना दी गयी हैं ।
शर्त् आन् कि ऊ ख़ुद बियायद ।	**शर्त यह है** कि वह स्वयं आये ।
ऊ **शर्त्** इ दूस्ती रा **बि जा आवुर्द** ।	उसने मित्रता की **शर्त को निभा दिया** ।
शर्त् इ **इन्साफ़** न बाशद कि तू फ़रमान न बुरी ।	यह **न्याय की बुद्धि** नहीं है कि तू आज्ञा का पालन न करे ।
शर्त् इ **अदब** नी'स्त कि जाय'श् न दिही ।	यह **शिष्टाचार** नहीं है कि तू उसको स्थान भी न दे ।
शर्त् बाशद, इमशब बारान बियायद ।	**शर्त रही**, आज रात को मेह बरसेगा ।
ऊ **वाजिद** इ **शराइत्** इ **लाज़िमः** नी'स्त ।	वह **आवश्यक शर्तों का धारक** नहीं है (अतः अयोग्य है) ।
"अगर ऊ बिरफ़्ते" ईन् कलम: "**क़ज़ीय्यः शर्तीय्यः**" अस्त ।	"यदि वह जाता" यह वाक्यांश **हेतुहेतुमद्‌भूत** है ।
"सज़ावार शुमुर्द: बूदे" ईन कलम: "**जज़ा** यि **शर्त्**" अस्त ।	"तो योग्य ठहराया जाता" यह वाक्यांश "**फलोदय**" है ।
दर क़रारदाद **शर्त् कर्दीम** कि तामीरात बि अह्‌द इ ऊ बाशद ।	हमने ठेके में **शर्त मानी** कि निर्माण कार्य उसके निर्देश के अनुसार होगा ।
सर इ **चिः शर्त्** बिबन्दीम ?	**कितने-कितने की शर्त** रही ?
शर्त् इ **दह** रियाल **बि यक** रियाल मी बन्दम् ।	**दस और एक की शर्त** रही ।
हिन्दुस्तानियान् बा **शर्त्‌बन्दी** बि मूरीशस रफ़्तन्द ।	**शर्तबन्दी** के अन्तर्गत भारतीय मौरीशस गये थे ।
शर्त्‌नामः दर ईन् मसलः हीच न मी गूयद ।	**शर्तनामा** इस विषय में कुछ नहीं बोलता ।
"आया शराब मी ख़ुरीद ?" "बिख़ुरीद (या "बिख़ुर्दीद") नाख़ुश ख़्वाहीद शुद ।"	"क्या तुम शराब पीते हो ?" "यदि पीते हो तो बीमार हो जाओगे ।"
अज़् ईन् हर दू कलमः यि दुवुम "**वज्ह** इ **शर्ती**" अस्त ।	इन दोनों वाक्यों में से दूसरा वाक्य **सम्भावना वाचक** है ।
ईन् दवा सुर्फ़ः रा **दवा** यि **शर्तीय्यः** अस्त ।	यह दवा खाँसी की **अचूक दवा** है ।
बैअ़ शर्त ईन् तौर अस्त कि अगर बक़ियः रक़म न परदाज़म्····।	**सशर्त बिक्री** इस प्रकार हुई कि यदि शेष राशि न चुकाऊँ···· ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शैर।	**कविता, पद, छन्द।**
शैर इ हाफ़िज़ खूब अस्त।	हाफ़िज़ की **कविता** अच्छी है।
अशआर इ फ़िरदौसी खूब अन्द।	फ़िरदौसी के **पद** अच्छे हैं।
शुअरा यि फ़ारसी खूब अन्द।	फ़ारसी भाषा के **कवि** अच्छे हैं।
शैख़ मुस्लिहुद्दीन सादी शीराज़ी यकता **शायर** बूद: अस्त।	शैख़ मुस्लिहुद्दीन सादी शीराज़ी अद्वितीय **कवि** हुए हैं।
शाहनाम: यि फ़िरदौसी किताब इ **शैर** इ **रज़मी** (या हमासी) अस्त।	फ़िरदौसी का शाहनामा **महाकाव्यग्रन्थ** है।
दीवान इ हाफ़िज़ **शैर** इ **ग़िनायी** अस्त।	हाफ़िज़ का दीवान **गीतकाव्य** है।
अशआर इ **हजाई** यि फ़िरदौसी मारूफ़ अन्द।	फ़िरदौसी का **निन्दाकाव्य** प्रसिद्ध है।
सादी पादशाह इ **शैर** इ **अखलाक़ी** हस्त।	सादी **नीतिकाव्य** का बादशाह है।
कालीदास शाहन्शाह इ **शैर** इ **नुमायशी** बूद: अस्त।	कालिदास **नाट्यकाव्य** का सम्राट् हुआ है।
शैर इ **मन्थ़ूर** (या 'बीकाफ़िय:') ईजाद इ जदीद अस्त।	**गद्यकाव्य** नवीन आविष्कार है।
शैर गुफ़्तन् फ़न्न इ लतीफ़ अस्त।	**काव्यरचना** ललितकला है।
ऊ शायर खूब अस्त अम्मा **शैरख्वान** खूब नी'स्त।	वह कवि अच्छा है किन्तु **काव्यपाठी** अच्छा नहीं है।
सादी पन्दहा यि नसीहतआमीज़ रा **बि शैर दर आवुर्द**।	सादी ने शिक्षाप्रद उपदेशों को **छन्दोबद्ध किया है**।
सादी रा **शैर बि'ल्बिदाह:** हम खूब अस्त।	सादी की **आशुकविता** भी उत्तम है।
दूस्त'म् **शैरबन्द** इ **तुम्बानी** यी साख्त: अस्त।	मेरे मित्र ने एक **कुकाव्य** लिखा।
दूस्त'म् **शैरबाफ़ी** मी कुनद।	मेरा मित्र **तुक भिड़ाता** रहता है।
बि **द्ज़रूरत** इ **शैरी** 'माह' रा 'मह' कर्द: बूदम्।	**छन्द के अनुरोध** से मैंने 'माह' को 'मह' लिखा है।
शारबाफ़ी बिह्'तर'स्त अज़् **शैरबाफ़**।	**तुक्कड़** की अपेक्षा एक जुलाहा अच्छा।
काफ़िय: रा न दानी व दावा यि **शैरसाज़ी** मी कुनी।	क़ाफ़िये का ज्ञान नहीं और **पद्य रचना** का दावा करता है।
दर गुफ़्तगू **शैरबन्दी** म कुन्।	बोलचाल में कविता मत कर।

अशआर=(शैर का बहुवचन) कविताएं, दोहे

शुअरा=(उच्चारण-शौरा) शायर का बहुवचन, कविजन

यकता=अद्वितीय

रज़्मी=(रज़्म=युद्ध) युद्ध विषयक, वीरगाथा विषयक (काव्य)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शिकस्त।	**पराजय, अनुत्तीर्ण होना, तोड़ना आदि।**
उ़नवान इ सुखु़नरानी "**शिकस्त** इ मुग़ल बि दस्त इ शिवाजी" बूद।	व्याख्यान का विषय–"शिवाजी के द्वारा मुग़लों की **पराजय**" था।
शिकस्त इ तु'स्त अगर वा ऊ ह़र्फ़ न ज़नी।	यदि तू उससे नहीं बोलता तो यह तेरी **पराजय** है।
शिकस्त इ **शागिर्दान्** शिकस्त इ आमूज़गार अस्त।	**शिष्यों का अनुत्तीर्ण होना** अध्यापक का अनुत्तीर्ण होना है।
राम रावण रा **शिकस्त दाद**।	राम ने रावण को **पराजित किया**।
लताफ़त'त् गुलहा यि गुलिस्तान रा **शिकस्त मी दिहद**।	तेरी कोमलता पुष्पवन के पुष्पों को **पराजित करती है**।
क़ुशून इ दुश्मन **शिकस्त ख़ुर्दन्द**।	शत्रुसेना **पराजित हुई**।
मन् दर इम्तिह़ानइ गियाह शनासी **शिकस्त ख़ुर्दम्**।	मैं वनस्पति शास्त्र की परीक्षा में **अनुत्तीर्ण हो गया**।
तू ज़र्फ़हा रा **मी शिकनी**।	तू बर्तन **तोड़कर मानेगा**।
सद पंज **बाबत** इ **शिकस्तगी** पा यि मन् ह़िसाब कर्द।	मेरे हिसाब में से पाँच प्रतिशत **टूट-फूट** के काट लिये।
अज़् क़ज़ा आईनः यी चीनी **शिकस्त**।	दैवयोग से चीनी दर्पण **टूट गया**।
ख़ूब शुद असबाब इ ख़ुद बीनी **शिकस्त**॥	अच्छा हुआ अहंकार का उपकरण **टूट गया**॥
दिल ई शिकस्तः दर आन् कूचः मी कुनद दुरुस्त।	**टूटे हुये हृदय** को उस गली में जोड़ा जाता है।
ख़त्त इ **शिकस्तः** रा ख़्वान्दन् कार इ मुश्किल अस्त।	**घसीट की लिपि** को पढ़ना मुश्किल काम है।
शिकस्तनीहा रा आन् जा म गुज़ारीद।	**टूटनेवाली चीजों** को वहाँ मत रखो।
मुह़म्मद अ़ली फ़ूरमान रा **दरहम शिकस्त**।	मुहम्मद अली ने फ़ोरमैन को **तोड़कर रख दिया**।
ह़म क़ानून व ह़म अ़हद रा **शिकस्त**।	क़ानून और वायदा दोनों को **तोड़ा है**।
फ़न्जान उफ़्तादो–**शिकस्त**।	कप (प्याला) गिरा और **टूट गया**।
सुकूत रा **शिकस्त**।	मौन **भंग किया**।
ऊ अज़् ग़ुस्सः **शिकस्तः** अस्त।	वह शोक से **अभिभूत** हो रहा है।
अज़् बराय नारः ज़दन् **आवाज़' श् शिकस्त**।	नारे लगाने के कारण उसकी **आवाज बैठ गयी**।

उ़नवान=शीर्षक
लताफ़त'त्=तेरी कोमलता।

गुलहा रा शिकस्त मी दिहद=फूलों को पराजय देती है

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शिकम ।	**पेट, पेटूपन, गर्भ, मर्म, भूख ।**
कार्द रा **बि शिकम**'श फ़ुरू कर्द ।	उसके **पेट में** छुरी उतार दी ।
जान'श् रा **रू** यि **शिकम**'श् गुज़ाश्त ।	अपनी जान को (उसने) अपने पेट (**पेटूपन**) **पर** न्यौछावर कर किया ।
वच्च: **दर शिकम**'श् मुर्द ।	बच्चा उसके **पेट में ही** मर गया ।
चीज़ी **दर शिकम** इ **चीज़** इ **दीगर** अस्त ।	एक चीज़ **दूसरी चीज़ पर अन्योन्याश्रित** है ।
ईन् ज़न ता 'कुनून **पंज शिकम ज़ायीद:** अस्त ।	यह स्त्री अब तक **पाँच पेट (बच्चे) जन** चुकी है ।
ईन् फ़ाह़िश: **सिह शिकम उफ़्तानीद:** अस्त ।	यह दुश्चरित्रा अब तक **तीन पेट गिरा चुकी** है ।
शिकम अज़् गिज़ा **दर आवुर्द** ।	पेट को रोटी से **ठूँस लिया** ।
ईन् अबलह **शिकम बि आब मी ज़नद** ।	यह मूर्ख **ख़तरे उठाता रहता है** ।
शिकम'श् **बाला आमद** ।	उसका **पेट** (गर्भावस्था के कारण) **बढ़ गया** ।
ज़न'त् **शिकम दारद** ?	तेरी पत्नी **गर्भवती** है ?
शिकम बन्द इ दस्त'स्तो—ज़न्जीर पाय ।	**पेट** (भूख) हाथ की हथकड़ी है और पाँव की वेड़ी है ।
शिकम बन्द: नादिर परस्तद ख़ुदाय ।।	**पेट का दास** विरला ही ईश्वर का भजन करता है ।
तनूर इ **शिकम** दम बि दम ताफ़्तन् ख़ूब नी'स्त ।	**पेट की भट्टी** को बार-बार तपाना ठीक नहीं ।
शिकम'श् बि पुश्त'श् चस्वीद ।	उसका **पेट** (अनाहार से) उसकी पीठ से चिपक गया ।
ऊ अज़् तबीव **दवा** यि **शिकमरान** ख़्वास्त ।	उसने चिकित्सक से **विरेचक औषध** माँगी ।
ऊ **शिकमगिरिफ़्त:** बूद ।	उसे **मलबन्ध** (क़ब्ज़) था ।
ऊ अज़् बराय **शिकम रविश** दर बीमारिस्तान अस्त ।	वह **अतिसार** (बार-बार टट्टी लगने) के कारण अस्पताल में है ।
ऊ **शिकमगन्द:** शुद: अस्त ।	उसका **पेट निकल आया** है ।
बिरादर हम **शिकमू** अस्त ।	उसका भाई भी **तुन्दियल** है ।
अगर **जौर** इ **शिकम** न बूदे ।	यदि पेट का अत्याचार (**भूख**) न होती ।

कार्द=चाक़ू, छुरी

फ़ुरू कर्द=नीचे कर दी, उतार दी, घुसेड़ दी

रू यि शिकम=पेट के ऊपर, पेटूपन के ऊपर

गुज़ाश्त=गुज़ार दिया, न्यौछावर कर दिया

दर शिकम इ चीज़ इ दीगर=दूसरी चीज़ के पेट में, एक दूसरे पर अन्योऽन्याश्रित

CC-0. In Public Domain. Anleh Gangotri Initiative

शुमार-शुमर ।	**गणना, संख्या, मानना, दुहराना, उच्चारण ।**
याद दार, यक **रूज़ इ शुमार** हम'स्त ।	याद रखना, एक **गणना का दिन** भी है ।
शुमार कुन् व पूल'त् रा बिगीर ।	**गिनकर** अपना पैसा ले लो ।
सितारगान् **बि शुमार** न मी आयन्द ।	नक्षत्र **गणना में** नहीं आते ।
ऊ ज़ुज़्व इ शुअ़रा यि दरजः यि अव्वल **बि शुमार मी आयद ।**	वह प्रथम कोटि के कवियों में **गिना जाता है ।**
बि शुमार आवुरीद कि दख़्ल इ इमरूज़ चिः शुद ।	**गिनो** कि आज की आमदनी क्या हुई ।
हस्त शाहा वर रुआ़या मिन्नत'त् **अन्जुम शुमार ।**	हे राजन् ! प्रजा पर आपके उपकार **तारा संख्येय** (असंख्य) हैं ।
दूस्त **म शुमार** आन् कि····।	उसको मित्र **मत समझ** जो कि····।
दूस्त आन् रा **बिशुमार** कि····।	मित्र उसको **मान** जो कि····।
पूलशुमार आन् त़रफ़ अस्त ।	**रुपया गिनने वाला** (या रुपया जमा करने की खिड़की) उधर है ।
शुमारन्दः रा पूल बिदिहीद ।	**गिनने वाले** (रोकड़िया) को पैसा दे दो ।
दर शुमारः यि **अख़ीर** अफ़सानः यि जदीद बिख़्वान्दीम ।	हमने **पिछले अंक में** एक नयी कहानी पढ़ी ।
अज़् इश्तियाक़ **रूज़शुमारी** मी कुनम् ।	उत्सुकता के कारण **दिनों की गणना** करती रहती हूँ ।
पूल रा **बिशुमार ।**	रुपया **गिन लो ।**
मुशाहिदात इ ख़ुद रा **शुमुर्द ।**	जो-जो स्वयं देखा **एक-एक करके दुहरा दिया ।**
ईन् पूल रा **बराय शुमुर्दगी** आवुर्दन्द ।	यह धन **गिनने के लिये** लाया गया है ।
मन् ऊरा दर ज़ुम्रः यि शुअ़रा **न मी शुमारम् ।**	मैं उसको कवियों की कोटि में **नहीं गिनता ।**
ऐ ! पिदर ! तू मरा ह़क़ीर **शुमुर्दी ।**	हे पिता ! तू मुझे तिरस्कार के योग्य **समझता था ।**
ग़नीमत शुमर ईन् सुह़बत रा ।	इस मिल बैठने को **ग़नीमत जान ।**
क़िराअ़त शुमुर्दः न मी ख़्वानद ।	(वह) **स्फुट उच्चारण सहित** (क़ुरान) नहीं पढ़ता ।
ऊ हरग़िज न मी तवानद चीज़ी रा **शुमुर्दः** ख़्वान्द ।	वह कभी भी कोई चीज़ **स्फुट** नहीं पढ़ सकता ।

रूज़ इ शुमार=गणना का दिन (इस्लाम के विश्वास के अनुसार प्रलय के दिन पाप-पुण्य की गणना होगी ।)

क़िराअ़त=स्फुट उच्चारण (जो स्फुट उच्चारण सहित क़ुरान पढ़ता है, उसे क़ारी कहते हैं ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शूख शूखी ।	**निर्लज्जता, चटकीलापन, परिहास, नाटक ।**
वर **शूखचश्मान्** ऐतमाद न बायद कर्द ।	**निर्लज्जों** का विश्वास नहीं करना चाहिये ।
ईन् पारच: यि **शूखरंग** दरखुर'म् नी'स्त ।	यह **चटक** रंग का कपड़ा मेरे योग्य नहीं है ।
ऊ ज़न इ फ़ाहि़श: यि **शूखरूय**'स्त ।	वह दुश्चरित्रा स्त्री **निर्लज्ज मुखवाली** है ।
दुख़्तर'श् **शूखज़बान**'स्त ।	उसकी पुत्री **ज़बान लड़ाने वाली** है ।
ख़्वाहर'श् **शूख़तबअ़** अस्त ।	उसकी बहिन **परिहासप्रिय** है ।
शूख़ी कुनो !	**मज़ाक़** करते हो !
बा बुज़ुर्गान् **शूख़ी** न बायद कर्द ।	बड़ों से **परिहास** नहीं करना चाहिये ।
शूख़ी मी कुनम् जिद्दन् न मी गूयम् ।	मैं तो **मज़ाक़ कर रहा हूं**, गम्भीरता से नहीं कह रहा ।
बा आन् दूशीज़: यि मासूम ईन् **शूख़ी** मी कुनद ।	उस भोली कन्या से यह **प्रेम का नाटक** कर रहा है ।
दर सुख़ुनरानी यि ख़ुद बारहा **शूख़ी** अन्दाख़्त ।	अपने भाषण में कई बार **परिहास** किया ।
ऊ **शूख़ी** यि **कनाय:दार** कर्द ।	उसने **गूढगर्भित परिहास** किया ।
बि शूख़ी गुफ़्त कि ज़न'म् हुशदार नी'स्त ।	**परिहास करते हुए** कहा कि मेरी पत्नी चतुर नहीं है ।
दिहक़ानी रा दीदम् कि **शूख़ी** यि **ख़रकी** मी कर्द ।	मैंने एक किसान को देखा जो **भोंड़ा परिहास** कर रहा था ।
अज़् सुख़ुनी अगर तरफ़ैन लुत्फ़ न मी बुरन्द **शूख़ी** यि **बीमज़:** अस्त ।	किसी वाक्य से यदि दोनों पक्ष आनन्द न लें तो वह **नीरस परिहास** है ।
शूख़ी यि **ज़िश्त** न बायद अन्दाख़्त ।	**अश्लील परिहास** नहीं करने चाहियें ।
ऊ **शूख़ी बदतर अज़् जिद्दी** मी कुनद ।	वह **सच से भी बुरा परिहास** करता है ।
शूख़ी बि किनार, अगर पिदर'त् क़ुबूल न कुनद !	**मज़ाक़ छोड़ो**, यदि तेरे पिता ने स्वीकार न किया तो !
ऊ **शूख़ी रा बि जा** यि **बद रसानीद** ।	उसने **परिहास का मज़ा किरकिरा कर दिया** ।
लुकनत'श् **शूख़ीआमीज़** अस्त ।	उसका हकलाना **परिहासपूर्ण** होता है ।
शूख़ी शूख़ी बा ऊ गुफ़्तम् कि तनहा ख़ुर्दन् ख़ूब नी'स्त ।	**हँसी-हँसी में** मैंने उससे कह दिया कि अकेले अकेले खाना ठीक नहीं है ।

ऐतमाद=विश्वास

दरखुर'म्=मेरे योग्य

ज़न इ फ़ाहि़श:=दुश्चरित्रा स्त्री

शूख़ज़बान=ज़बान लड़ाने वाली, लड़ाका

जिद्दन्=गम्भीरतापूर्वक

शूख़ी अन्दाख़्तन्=चुटकुला सुनाना, परिहास की बात कहना

तरफ़ैन=उभय पक्ष

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शूर।

हर्फ़ ॰ **शूर** हफ़्त मानी दारद।

शूर (१)

शूर वि मानी ॰ **पुरनमक** या **नमकीन** ख़्वान्दः मी शवद।

शूर (२)

शूर वि मानी ॰ **हरारत** या **ज़ौक़** हम ख़्वान्दः मी शवद।

शूर (३)

शूर वि मानी ॰ **इज़्तराब** हम ख़्वान्दः मी शवद।

शूर (४)

शूर वि मानी ॰ **अहसास** हम ख़्वान्दः मी **शवद।**

शूर (५)

शूर वि मानी ॰ **बद** हम ख़्वान्दः मी शवद।

शूर (६)

शूर वि मानी ॰ **शुस्तन्-शूरीदन्** हम ख़्वान्दः मी शवद।

शौर (७)

शौर वि मानी ॰ **मशवरत** व **अन्जुमन** ख़्वान्दः मी शवद।

सप्तार्थक शूर।

शूर शब्द के सात अर्थ होते हैं।

शूर=नमक (१)

शूर का अर्थ **नमकयुक्त** या **नमकीन** होता है।

शूर=उत्साह, गौरव (२)

शूर का अर्थ **उत्साह** या **गौरव** भी होता है।

शूर=आन्दोलन, तुमुलता (३)

शूर का अर्थ **आन्दोलन** या **तुमुलता** भी होता है।

शूर=भावना, भाव (४)

शूर का अर्थ **भावना** या **भाव** भी होता है।

शूर=बुरा (५)

शूर का अर्थ **बुरा** भी होता है।

शूर=धोना-धुलाना (६)

शूर का अर्थ **धोना-धुलाना** भी होता है।

शौर=पंचायत, परामर्श (७)

शौर का अर्थ **पंचायत** या **परामर्श** होता है।

हफ़्त मानीहा=सात अर्थ
पुरनमक=नमकीन, नमकयुक्त
ज़ौक़=प्रेम, उत्कट प्रेम, गौरव
इज़्तराब=आन्दोलन, तुमुलता
अहसास=भावना, भाव, अनुभूति
बद=बुरा
शुस्तन्-शूरीदन्=धोना-धुलाना
मशवरत=मन्त्रणा
अन्जुमन=सभा
ख़्वान्दः मी शवद=कहा जाता है

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शूर–(१) — **शूर=खारी–(१)**

कस् न बीनद कि तिश्नगान् इ हिजाज़ ।
बर लब ए **आब** इ **शूर** गिर्द आयन्द ।।

कोई नहीं देखता कि हिजाज़ के प्यासे (हाजी यात्री) ।
खारे जल के (सागर के) तट पर घिर कर आते हों ।।

ज़मीन ए **शूर** सुम्बुल बर नयायद ।
खारी मिट्टी में सुम्बुल घास नहीं उगती ।

ईन् **शूरबा** रा अज़् शूरी न मी शवद ख़ुर्द ।
इस **शोरबा** (नमकीन यूष) को खारीपन के कारण पीना सम्भव नहीं है ।

अज़् शूरिश इ ज़ियाद **आब** इ **शूरिस्तान** ख़ुर्दनी नी'स्त ।
अत्यन्त खारीपन के कारण **खारी मिट्टी का पानी** पीने योग्य नहीं होता ।

अज़् **शूरःज़ार** (या ज़मीन इ शूरःनाक) शूरःगर शूरः मी पज़द ।
शोरे वाली ज़मीन से शोरा बनाने वाला शोरा निकालता है ।

नै बि आन् **शूरी** शूर, नै बि ईन् बीनमकी ।
न उतनी **कटुता** के साथ कटु होना उचित है न इतनी बेनमकी ही ठीक है ।

शूर–(२) — **शूर=गर्व–(२)**

ऊ **शूर** इ **जवानी** दर सर दारद ।
उसके सिर में **जवानी का गर्व** (उत्साह) है ।

जवानी बि बद्रक़ः हमराह इ मा बूद, **सिलहशूर,** बीशज़ूर ।
एक जवान हमारे रक्षक के रूप में हमारा सहयात्री था, **शस्त्रगर्व से भरा** तथा बहुत बलशाली ।

शूर–(३) — **शूर=क्रान्ति, आन्दोलन–(३)**

शूरिश इ कबीर इ फ़्रांसः हमः आ़लम रा मुतअस्सिर कर्द ।
फ्रांस की महान् **क्रान्ति** ने सारे संसार को प्रभावित किया है ।

ऊ नुत्क़ इ **शूर अंगीज़** अन्दाख़्त ।
उसने एक **भड़काने वाला** भाषण दिया ।

ऊ आदमी **शूरिशतलबी** बूद ।
वह एक विद्रोह **भड़काने वाला** व्यक्ति था ।

ईरानियान् बर ज़्ज़ुह़ह़ाक **शूरीदन्द** ।
ईरानियों ने ज़ुह़ह़ाक के विरुद्ध **विद्रोह किया** ।

अहाली रा बर ज़िद्द इ ऊ **शूरान्दन्द** ।
स्थानीय निवासियों को उसके विरुद्ध **विद्रोह के लिये उकसाया गया** ।

ह़िजाज़=ह़िजाज़ प्रान्त सऊदी अ़रब में है
बर लब=तट पर
गिर्द आयन्द=घिर कर आते हैं
बर नयायद=नहीं उभारती, नहीं उगाती
न मी शवद=सम्भव नहीं है
बद्रक़ः=संरक्षक, पथ-प्रदर्शक
हमराह=सहयात्री
सिलहशूर=शस्त्रगर्व वाला

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शूर (४)

अज़् दस्त ᵢ **शूरीदगी** सर'म् ववाल ᵢ दूश उफ़्ताद: अस्त ।

आ़शिक़ ᵢ शूरीद: रा चि: ह़ाल मी पुर्सी !

शूर (५)

आन् शख़्स **शूरचश्म** अस्त ।

शूरअख़्तर हरचि: कर्द सूदी न कर्द ।

शूरतालिअ़ रा दूस्ती वदवख़्ती मी आवुरद ।

आन् **शूरीद:मग़्ज़** अस्त ।

अज़् **शूरीद:रायी** पन्दी म ख़्वाह् ।

बा **शूरीद:ह़ाल** शूख़ी म कुन् ।

शूरीद:ख़ातिर म वाश ।

शूर (६)

ईन् जा **शुस्त-शूरी** ममनूअ़ अस्त ।

शौर (७)

शौरा दर हर मतलबी मुफ़ीद अस्त ।

शौर ᵢ अव्वल दर आन् लायिह़: गुज़श्त ।

दर आन् ख़ुसूस हमगी **ग़ौर कर्दन्द** ।

दौलत ᵢ शौरवी दूस्त ᵢ हिन्दुस्तान अस्त ।

ववाल ᵢ दूश=कन्धों की मुसीबत का कारण
उफ़्ताद: अस्त=हो गया है
आ़शिक़=प्रेमी
बदवख़्ती=दुर्भाग्य
ममनूअ़=निषिद्ध, मना किया हुआ
शौरा=विचार-विमर्श, परामर्श

शूर-भावना, उन्माद (४)

प्रेमोन्माद के कारण मेरा सिर कन्धों के लिये कष्टहेतु बन गया है ।

उन्मत्त प्रेमी का हाल क्या पूछते हो !

शूर=बुरा (५)

वह व्यक्ति **बुरी नज़र वाला** है ।

अभागे ने जो भी किया कोई लाभ नहीं हुआ ।

अभागे की दोस्ती दुर्भाग्य लाती है ।

वह **उलटी खोपड़ी वाला** (मूर्ख) है ।

एक **विवेकहीन** से शिक्षा मत ले ।

विपत्ति में पड़े हुए का उपहास मत कर ।

उद्विग्नचित्त मत हो ।

शूर=नहाना, धोना (६)

यहाँ **नहाना-धोना** मना है ।

शौर=परामर्श, विचार (७)

हर काम में **विचार-विमर्श** हितकर होता है ।

उस बिल का **प्रथम वाचन** पास हो गया ।

उस विषय पर सबने **परामर्श किया** ।

पंचायत सरकार (रूस) भारत की मित्र है ।

मुफ़ीद=हितकर, लाभकारक
ख़ुसूस=विषय, विशिष्ट विषय
हमगी=सबने
दौलत ᵢ शौरवी=रूस सरकार, पंचायत सरकार

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शीर ।	**दूध** (संस्कृत – क्षीर)
मादर बच्च: यि ख़ुद रा **शीर मी दिहद** ।	माँ अपने बच्चे को **दूध पिला रही है** ।
चाय न मी ख़ुरी, हनूज़ **शीर मी ख़ुरी** !	चाय नहीं पीते हो, अभी तक **दूध पीते हो** ।
ह़ाल बायद बच्च: रा **अज़् शीर गिरिफ़्त** ।	अब बच्चे का **दूध छुड़वा देना** चाहिये ।
शीर दूशीदन् दर अ़ह्‌द इ क़दीम कार इ दूशीज:हा बूद ।	**दूध दुहना** प्राचीन काल में लड़कियों का काम था ।
शीर इ बस्त: रा दलम: या मास्त मी ख़्वानन्द ।	**जमाये हुए दूध** को दलम: या मास्त (दही) कहते है ।
शीर इ मुर्ग़ व जान इ आदम अज़् कुजा बियारम् !	**चिड़िया का दूध** और आदमी की जान कहाँ से लाऊँ !
बनी आदम **शीर इ खाम** ख़ुर्द: अस्त !	आदमी ने **कच्चा दूध** पिया है न !
मन् **शीर इ आहक** साख़्त: अम्, तू दीवार सफ़ीद कुन् ।	मैंने **चूने की कलई** बना दी है, तू दीवार पोत दे ।
शूरबा न मी ख़्वाहम्, मरा **शीरबा** बिदिह ।	मुझे नमकीन रसा नहीं चाहिये, मुझको तो **खीर** दे ।
उ़रूसक इ मन् **शीर-बिरंज** मी ख़ुरद ।	मेरी गुड़िया **दूध-भात** खाती है ।
बच्च: यि **शीरबुरीद:** रा तुख़्म इ मुर्ग़ बिदिहीद ।	**दूध छुड़ाये बच्चे** को अण्डा दीजिये ।
शीरबन्दी यि पंजाब व हरियाना मारूफ़ अन्द ।	पंजाब और हरियाणा की **डेयरियाँ** प्रसिद्ध हैं ।
बि त़ौर इ **शीर बहा** मादर इ ज़न रा सद तुमान दाद ।	**उपहारस्वरूप** दुलहिन की माता को सौ तुमान दिये ।
बच्च: यि **शीरख़्वार** रा चिरा मी ज़नी !	**दूधपीते बच्चे** को क्यों मार रही हो !
दर अ़ह्‌द इ **शीरख़ुर्दगीय**'श् मादर मुर्द ।	उसके **दूध पीने की अवस्था** में (बचपन में ही) उसकी माँ मर गयी ।
फ़न्जान इ **शीरख़ुरी** शिकस्त ।	**दूध पीने का** कप टूट गया ।
मन् ग़लत गूयम्, **शीरसंज** ग़लत न मी गूयद ।	मैं ग़लत कहता हूँ तो **दूध नापने वाला** यंत्र तो ग़लत नहीं कहता ।
कूदक'श् **शीरमस्त**'स्त ।	उसका बच्चा ख़ूब **मोटा-ताज़ा** हो रहा है ।
बीशीर **नान** इ **शीरमाल** साख़्त: न मी शवद ।	बिना दूध के **शीरमाल रोटी** नहीं बनती ।
हनूज़ **दन्दान्** इ **शीरी** दारी बा बीशज़ूर पैगार म जू ।	तेरे अभी **दूध के दाँत** हैं, बलशालियों से मत लड़ ।

अ़ह्‌द इ क़दीम=प्राचीनकाल

दलम:=दही, मास्त=दही

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

साहिब (१)	स्वामी, लेखक, दरबारी ।
साहिब इ **खानः** कुजा रफ़्त ?	**गृह स्वामी** कहाँ गया ?
साहिब इ **शाहनामः** फ़िरदौसी अस्त ।	**शाहनामे का लेखक** फ़िरदौसी है ।
अबू हुरैरा यकी अज़् **असहाब** इ **नबी** बूद ।	अबू हुरैरा **मुहम्मद साहब के साथियों में से** एक थे ।
ज़न'श् **साहिबः** यि **अख़लाक़** बूद ।	उसकी पत्नी बड़ी **सच्चरित्र** थी ।
पिसर'श् नीज़ **साहिब** इ **इक़बाल** ज़ाद ।	उसका पुत्र भी बड़ा **प्रतापी** हुआ ।
सैयद बिरादरान् **साहिब** इ **इक़्तदार** बूदन्द ।	सैयद बन्धु **शक्तिशाली** होते गये ।
दर पय इ अकबर पिसर'श् **साहिब** इ **तख़्त** बूद ।	अकबर के पश्चात् उसका पुत्र **राज्य का स्वामी** हुआ ।
साहिब इ **तदबीर** नै ई, **साहिब** इ **तक़दीर** नै ई ।	यदि तू **उद्यमी** नहीं तो **भाग्यवान्** भी नहीं हो सकता ।
विष्णुगुप्त **साहिब** इ **राय** बूद ।	विष्णुगुप्त अत्यन्त **बुद्धिमान्** (विवेक बुद्धि) था ।
रसूल इ ख़ुदा **साहिब** इ **किताब** अस्त ।	दैवदूत (मुहम्मद सा०) **क़ुरआन वाले** हैं ।
ऐ ! **साहिब** इ **करामत** ! रूज़ी बीनवायी रा तफ़क़्क़ुदी कुन् ।	हे **परमोदार** एक दिन निर्धन के भी हाल पूछ ।
रूस्ताज़ादः रा पिसर **साहिब** इ **मक़ाम** बूद ।	किसान का बेटा **उच्चपदस्थ** बना ।
मूसा रा **साहिब** इ **यद** इ **बैज़ा** मी ख़्वानन्द ।	मूसा को **सफ़ेद हाथ वाला** कहते हैं ।
साहिब इ **इख़्तियार** इ **इदारः** कुजा मी निशीनद ?	**दफ़्तर के बड़े साहब** कहाँ बैठते हैं ?
दुख़्तरी रा बि शौहर इ **साहिब** इ **उस्तुख़्वान** दाद ।	एक पुत्री का विवाह एक **कुलीन** वर से कर दिया ।
इमाम इ द्वाज़्दहुम रा **साहिब उ'ज़्ज़मान** मी ख़्वानन्द ।	बारहवें इमाम को **लोकपति** भी कहते हैं ।
दुख़्तर'श् **साहिबः** यि **जमाल** इ यकता ज़ाद ।	उसकी पुत्री अद्वितीय **सुन्दरी** हुई ।
ऊरा **साहिब** इ **जमअ़** इ पादशाह कर्दन्द ।	वह शाही **मोदी** बना दिया गया ।
फ़क़त **साहिब** इ **जवाज़** वारिद बिशवन्द ।	केवल **अनुमति-पत्र वाले** ही अन्दर आयें ।
पादशाह ऊरा **साहिब** इ **ख़ैर** मुअ़य्यन कर्द ।	राजा ने उसको **दानाध्यक्ष** नियुक्त कर दिया ।

असहाब=(साहिब का बहुवचन) मुसाहिब लोग, दरबारी लोग, सभासद

साहिब इ करामत=उदारता के स्वामी, उदार

बीनवा=निर्धन

तफ़क़्क़ुदी=सम्प्रश्न, हाल पुर्सी

रूस्ताज़ाद=गाँव में उत्पन्न, कृषकपुत्र

साहिब इ जवाज़=अनुमति पत्र के स्वामी, प्रवेश-पत्र रखने वाले

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

साहिब (२)	**स्वामी, अधिकारी आदि ।**
दिल मी रवद ज़ि दस्त'म् **साहिब दिलान् !** ख़ुदा रा !	दिल मेरे हाथ से निकला जा रहा है, **सज्जनो** ! ईश्वर के लिये (कुछ कीजिये) ।
हुक्म अज़् इदारः ए **साहिब** ए **दीवान** ह़ाला सादिर न शुद ।	**एकाउन्टेन्ट** के कार्यालय से अभी आदेश नहीं निकला ।
साहिब ए **सायः** ए ईन् इदारः रईस ए फ़रहंग अस्त ।	इस संस्था के **संरक्षक** सांस्कृतिक विभाग के अध्यक्ष हैं ।
हरचिः **साहिब** ए **सुख़ुन** गुफ़्त, मन् ऊरा ताईद मी कुनम् ।	**वक्ता महोदय** ने जो कुछ कहा है, मैं उसका समर्थन करता हूँ ।
कसी **साहिब** ए **सरमायः** रा त़लब कुन् ।	किसी **पूँजीपति** की तलाश करो ।
साहिब ए **ग़रज़** रा बायद रफ़्त ।	**ग़रज़ वाला** जाय ।
साहिब ए **कार** ए **मा** मरा बीस्त तुमान ईदी ए नौरूज़ दाद ।	**हमारे सेठजी** ने मुझे नये वर्ष का उपहार बीस तुमान दिये ।
ऊ **साहिब** ए **करम** अज़् चि सिम्त अस्त !	वह **उदार** किस दिशा से है (अर्थात् कहीं से नहीं) !
दर ईन् या आन् **साहिब** ए **कमाल** बायद बूद ।	इसमें या उसमें (किसी न किसी चीज़ में) **पूर्णता प्राप्त** करनी चाहिए ।
क़ारून् **साहिब** ए **माल** बूद, साहिबए करम नै ।	क़ारून **धनवान्** था, उदार नहीं था ।
वर **माल** ए **साहिब** ए **मुर्दः** दस्त दराज़ी म कुन् ।	**मरे के माल** को मत हड़प ।
साहिब ए **मुल्क** ए ईन् जायदाद की'स्त ?	इस **सम्पत्ति का स्वामी** कौन है ?
पिसर'म् **साहिब** ए **मन्सब** ए **अर्शद** अस्त ।	मेरा पुत्र **कमीशन्ड सैनिक अधिकारी** है ।
ह़ाला **साहिब मन्सबी** ऊरा न दादन्द ।	अभी तक वह **राजपत्रित अधिकारी** नहीं बना है ।
रईस ए मा **साहिब** ए **नामूस** अस्त ।	हमारा अध्यक्ष **अत्यन्त आदरणीय व्यक्ति** है ।
महात्मा गान्धी **साहिब** ए **नज़र** बूद ।	महात्मा गान्धी **युगद्रष्टा** थे ।
अगर ज़र न दारी **साहिब** ए **हुनर** बाश ।	यदि धन तेरे पास नहीं है तो **हुनर वाला** हो ।
वररुचि आ़लिम ए यकता व **साहिब** ए **वुक़ूफ़** बूद ।	वररुचि अद्वितीय पंडित और **विश्रुत** विद्वान् थे ।
साहिबः ए **मुहतरिमः** ! मा शुमा रा इस्तक़बाल मी कुनीम ।	**आदरणीय महोदया** ! हम आपका स्वागत करते हैं ।
साहिबी बि दूस्तान् ए साबिक़ ए ख़ुद म नुमा ।	अपने पुराने मित्रों को अपनी **साहिबी** मत दिखा ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अशआ़र अज़् सादी ।	शेख़सादी के कुछ पद ।
मन् आन् मूर'म् कि दर पाय'म् बिमालन्द ।	मैं वह चींटी हूँ कि मुझको पैरों से रौंद देते हैं ।
नै ज़म्बूर'म् कि अज़् नैश'म् बिनालन्द ।।	मैं वह ततैया नहीं कि मेरे डंक से लोग रोने लगें ।।
चुगूनः शुक्र इ ईन् निअ़मत गुज़ारम् ।	मैं किस प्रकार इस कृपा का धन्यवाद अर्पित करूँ ।
कि ज़ूर ई मर्दुम आज़ारी न दारम् ।।	कि मनुष्यों को सताने की शक्ति नहीं रखता हूँ ।।
बि नान इ ख़ुश्क क़नाअ़त कुनीमो-जामः यि दल्क़ ।	हम सूखी रोटी से सन्तोष कर लेंगे और गुदड़ी के वस्त्र से ।
कि बार इ मिहनत इ ख़ुद बिह् ज़ि बार इ मिन्नत इ ख़ल्क़ ।।	क्योंकि अपने कष्टों का भार, संसार के उपकार भार से अच्छा है ।।
ख़ुर्दन् बराय ज़ीस्तनो – ज़िक्र कर्दन् अस्त ।	भोजन करना जीवित रहने और नामस्मरण के लिये है ।
तू मौतक़िद कि ज़ीस्तन् अज़् बह्र इ ख़ुर्दन् अस्त ।।	तू विश्वास किये बैठा है कि जीवन भोजन करने के लिये है ।।
हर कि नान अज़् अ़मल इ ख़ीश ख़ुरद ।	वह जो कि अपने परिश्रम से रोटी खाता है ।
मिन्नत ई ह़ातिम इ ताई न बुरद ।।	वह हातिम ताई का अनुग्रह भार नहीं उठाता ।।
गुर्बः यि मिस्कीन अगर पर दाश्ते ।	बेचारी बिल्ली के अगर पर होते ।
तुख़्म इ कुन्जिश्क अज़् जहान बर दाश्ते ।।	तो चिड़ियों का वंशबीज संसार से उठ जाता ।।
गरचिः बीरून् ज़ि रिज़्क़ न तवान ख़ुर्द ।	यद्यपि अपने नियत भोग से अतिरिक्त कोई नहीं खा सकता ।
दर त़लब काहिली न शायद कर्द ।।	लेकिन तलाश (उद्यम) करने में आलस्य नहीं करना चाहिये ।।
गर तू दर ख़ानः सैद ख़्वाही कर्द ।	यदि तू घर बैठे ही शिकार करना चाहता है ।
दस्तो – पाय'त् चु अ़नकबूत बुवद ।।	तो तेरे हाथ-पैर भी मकड़ी के जैसे हो जायेंगे ।।

मूर'म्=(मैं) चींटी हूँ
दर पाय'म्=(मुझे) पैरों तले
बिमालन्द=मसल देते हैं, रौंद देते हैं
नै ज़म्बूर'म्=(मैं) ततैया नहीं हूँ
बिनालन्द=रोने लगें
चुगूनः=किस प्रकार

शुक्र इ निअ़मत=कृपा का धन्यवाद
मर्दुम आज़ारी=मनुष्यों को सताना
नान इ ख़ुश्क=सूखी रोटी
क़नाअ़त=सन्तोष
जामः यि दल्क़=गुदड़ी की पोशाक
बार इ मिहनत=कष्टों का भार

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सादिर । — **बाहर निकलना, जारी करना, निर्यात करना** ।

मरासिलात इ **सादिर:** मरा बिदिहीद । — **बाहर जाने वाले** पत्र मुझे दे दीजिये ।

अह्काम इ **सादिर:** तब्अ़ ख़्वाहद शुद । — **जो आदेश निकाले जा चुके हैं वे** छपवा दिये जायेंगे ।

लुत्फ़न्, इमरूज़ **.हुक्म सादिर कुनीद** । — कृपया आज ही **आज्ञा निकलवा दीजिये** ।

.हुक्म इ इन्तिक़ाल इ ऊरा **सादिर कर्दन्द** । — उसके स्थानान्तरण का आदेश **निकल गया है** ।

मह्कम: **.हुक्म** इ **ग़ियाबी** सादिर कर्द । — अदालत ने **इकतरफ़ा हुक्म** जारी कर दिया ।

मा अम्तअ़: यि वतनी **सादिर मी कुनीम** । — हम गृह-उद्योग की वस्तुओं का **निर्यात करते हैं** ।

अह्काम ई चन्दी कि **सादिर शुद** तब्अ़ न शुद: ज़ाय: रफ़्त । — जो थोड़े से आदेश **निकले थे** वे भी न छपने के कारण व्यर्थ हो गये ।

ईन् अल्ताफ़ अज़् मुक़ाम इ किब्रियायी **सादिर मी शवद** । — ये कृपाएँ ईश्वर की ओर से **आती हैं** ।

ख़तायी अज़् ऊ **सादिर न शुद** । — उसकी ओर से कोई अपराध **नहीं हुआ** ।

अज़् मन् **चि: ख़ता सादिर शुद** ? — मुझसे **क्या अपराध हो गया** ?

बाद इ मुख़ालिफ़ कि दर शिकम इ सादी पीचीद **सादिर शुद** । — अपानवायु जो सादी के पेट में घुमड़ रही थी **निःसृत हो गयी** ।

इमसाल ख़ुश्क:बार वि रूसिय: **सादिर न शुद** । — इस साल चावल का **लदान** रूस के लिये **नहीं हुआ** ।

सादिरात इ **हिन्द** बायद बीशतर अज़् वारिदात'श् बाशद । — **भारत का निर्यात** उसके आयात से अधिक होना चाहिये ।

गुमरुक इ **सादिरात** बायद कम कर्द । — **निर्यात शुल्क** कम किया जाना चाहिये ।

हम: यि **तिजारत** इ **सादिरात** दर दस्त इ सरमाय:दारान् इ चन्द न बायद गुज़ाश्त । — समस्त **निर्यात व्यापार** कुछ पूँजीपतियों के हाथों में नहीं छोड़ देना चाहिये ।

इदार: यि **सादिर कुनिन्द:** यि अम्तअ़: यि वतनी कुजा'स्त ? — गृहोद्योग की सामग्री के **निर्यातक** का कार्यालय कहाँ है ?

मरासिलात=पत्र

अह्काम=(.हुक्म का बहुवचन) आज्ञाएँ

इन्तक़ाल=तबादला

मह्कम:=न्यायालय, अदालत

अम्तअ़:=(मताअ़ का बहुवचन) माल, सामान

ग़ियाबी=इकतरफ़ा

अम्तअ़: यि वतनी=गृहोद्योग की वस्तुएँ

तब्अ़ न शुद:=प्रकाशित न होने के कारण

ज़ाय: रफ़्त=व्यर्थ हो गया

अल्ताफ़=(लुत्फ़ का बहुवचन) कृपाएँ

मुक़ाम इ किब्रियाई=ईश्वरीय स्थान, स्वर्ग

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सदा ।	आवाज़, स्वर, शोरगुल, चिल्लाना, आहट ।
सदायी अज़् दूर शुनीदः शुद ।	**एक आवाज़** दूर से सुनायी पड़ी ।
सदा यि **नाकूस** अज़् मन्दिर हा (दैर हा) शुनीदः बूद ।	**शंख की ध्वनि** मन्दिरों से सुन पड़ती थी ।
फ़ारसी **शिश सदा** दारद ।	फ़ारसी में **छै स्वर** हैं ।
नौकर **सदा** यी **जनद** ।	सेवक **आवाज़ दे रहा है** ।
अज़् दूर ऊरा **सदा ज़दम्** ।	(मैंने) दूर से उसको **आवाज़ दी** ।
बच्चः हा ख़ेली **सदा मी कुनन्द** ।	बच्चे बड़ा **शोर-गुल करते हैं** ।
गूश इमन् **मिथ्सल** इ **जंग सदा मी कुनद** ।	मेरे कान में **घण्टी सी बजती रहती है** ।
चर्चिल **सदा** यि **ख़ुद बुलन्द कर्द व गुफ़्त**– इंगलैण्ड रा बिगुज़ार ।	चर्चिल ने **ऊँची आवाज़ में** कहा–"इंगलैण्ड की जान छोड़ दो ।"
आख़िर मर्दुम अज़् बीचारगी **सदा दर आमदन्द** ।	अन्ततः लोग बेवसी में **चिल्लाने लगे** ।
बी अ़दालत इ द्ज़ुह्ह़ाक मर्दुम रा **बि सदा** आवुर्द ।	जुह्हाक के अन्याय ने लोगों को **चिल्लाने को विवश कर दिया** ।
बा सदा यि **रसा** गुफ़्त–"ख़ुदा ह़ाफ़िज़ ।"	**स्पष्ट स्वर में** कहा–"ईश्वर रक्षा करे ।"
गिरिफ़्तगी यि **सदा** यि मन् कै दूर कुनम् ?	मैं अपनी **आवाज़ का बैठना** कैसे ठीक करूँ ?
सदाय'त् दर न वायद ।	**तुम्हें बोलने** की ज़रूरत नहीं ।
आहंग इ **सदा** यि ऊ चिः त़ोर बूद ?	उसका स्वर (**बोलने का ढंग**) कैसा था ?
सग **सदा** यि **पा** यि **मालिक** इ ख़ुद रा मी शनासद ।	कुत्ता अपने **मालिक के पैरों की आहट** पहचानता है ।
दूश **सदा** यि **राद** ख़ेली तर्सनाक बूद ।	कल रात **बिजली की तड़तड़ाहट** बड़ी भयंकर थी ।
सदा यि **ख़ुरूस** चुन् "क़ू क़ूली क़ू" मी शवद ।	**मुर्ग़ की आवाज़** "क़ू क़ूली क़ू" जैसी होती है ।
सदा कुन्जिश्क चुन् "ज़ीक ज़ीक" मी शवद ।	**चिड़ियों की चहचहाहट** "ज़ीक ज़ीक" जैसी होती है ।
सदापीच साफ़ साफ़ शुनीदः शुद ।	**प्रतिध्वनि** स्पष्ट सुनाई पड़ी ।
सदारस इ शीर ख़ेली दूरतरक अस्त ।	शेर की **आवाज़** की गूँज बहुत दूर तक सुनाई पड़ती है ।

नाक़ूस=शंख
शिश सदा=छै स्वर
मिथ्सल इ ज़ंग=घण्टी की तरह
गूश सदा मी कुनद=कान में आवाज़ आती रहती है, कान बजते रहते हैं
बी अ़दालत=अन्याय

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सर्फ़ ।	व्यय, रूप (गर्दानें), व्युत्पत्ति ।
उ़म्र इ गरान्माय: दर ईन् **सर्फ़ शुद** ।	बहुमूल्य जीवन इसी में **बीत गया** ।
सर्फ़ इ **वक़्त** दर कार इ बीफ़ायद: म कुन् ।	व्यर्थ के कामों में **समययापन** मत कर ।
पस अज़् **सर्फ़** इ **नाहार** बच्च: हा रा गिर्द कर्द ।	**भोजन** के पश्चात् बच्चों को इकट्ठा कर लिया ।
ईन् मशीन खेली बिन्ज़ीन **सर्फ़ मी कुनद** ।	यह मोटर बहुत पेट्रोल **खाती है** ।
महमानहा **नाहार सर्फ़ मी कर्दन्द** व रफ़्तन्द ।	अतिथियों ने **भोजन कर लिया** और चल पड़े ।
फ़ैल इ बूदन् रा **सर्फ़ कुनीद** ।	'बूदन्' धातु (क्रिया) के **रूप बताओ** ।
इस्म इ ज़मीर रा **चि: क़िस्म सर्फ़ मी कुनन्द** ?	सर्वनाम के **कितने भेद होते हैं** ?
ईन् मुआ़मल: बराय मन् **सर्फ़ न मी कुनद** ।	यह कार्य मेरे लिये **हितकर नहीं** है ।
दर ईन् ज़बान ह़र्फ़ इ तारीफ़ हम **सर्फ़ मी शवद** ।	इस भाषा में हर्फ़ इ तारीफ़ (जैसे अंग्रेजी का 'दी' या अरबी का 'अल्') के भी **भेद होते हैं** ।
अज़् मुनफ़अ़त इ आन् **सर्फ़ इ नज़र कर्द** ।	(उसने) उसका मुनाफ़ा **छोड़ दिया** ।
सर्फ़ इ **नज़र** अ़ज़् गरानी या अरज़ानी, मन् आन् रा लाज़िम न दारम् ।	मँहगे-सस्ते की **बात छोड़ो**, मुझे वह चाहिये ही नहीं ।
बराय तबीबान् ईन् किताब **सर्फ़ न कर्दनी**'स्त ।	चिकित्सकों के लिये यह पुस्तक **अनिवार्य** है ।
इ़ल्म इ **सर्फ़** इ़ल्म इ कामिल अस्त ।	**व्युत्पत्तिशास्त्र** एक पूर्ण विज्ञान है ।
सर्फ़ व **नह्व** इ फ़ारसी बराय हिन्दियान् मुश्किल नी'स्त ।	फ़ारसी **व्याकरणशास्त्र** भारतीयों के लिये कठिन नहीं है ।
सर्फ़ इ **बरात** दादी ?	(तूने अपनी) **किश्त** जमा कर दी ?
दर माह चन्द **सर्फ़:जूयी** मी कुनीद ?	एक मास में कितनी **बचत** कर लेते हो ?
पारच: यि पश्मी **बि सर्फ़:** नज़्दीतर'स्त ।	ऊनी कपड़ा अधिक **किफ़ायती** रहता है ।
सर्फ़न् फ़ारसी क़ुरबत बा संस्कृत दारद ।	**व्युत्पत्ति की दृष्टि से** फ़ारसी संस्कृत के अत्यन्त निकट है ।
अगर दर मुआ़मल:यी यकतुमान रा याज़्दह क़रान कुनी **बा सर्फ़**'स्त ।	यदि तू किसी व्यापार में एक तुमान के ग्यारह रियाल कर ले तो वह **लाभकर है** ।
अगर नुह क़रान मी कुनी **बी सर्फ़**'स्त ।	यदि (तू) नौ क़रान् कर दे तो वह **अलाभकर है** ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सूरत ।	**मुँह, अवस्था, सूची रजिस्टर, चिट्ठा** ।
दस्तो-सूरत इ खुद रा बिशूयीद ।	अपने **हाथ-मुँह** धो लीजिये ।
सूरत इ **अ़जीबी** रू यि आन् सिक्कः बूद ।	उस सिक्के पर एक **विचित्र आकृति** बनी हुई थी ।
आन् ह़यवान् **चन्दीन् सूरत** पैदा मी कुनद ।	वह प्राणी कई **रूप** धारण कर लेता है ।
माह **चन्द सूरत** दारद ?	चन्द्रमा की **कितनी अवस्थाऐं** होती हैं ?
सूरत इ **हिसाब** दस्तरस नी'स्त ।	**आय-व्यय-पत्रक** उपलब्ध नहीं है ।
सूरत अज़् कुतुब तहय्यः कुनीद ।	**पुस्तकों की सूची** बना लीजिये ।
दर ईन् सूरत चिः बायद कर्द ?	**ऐसी अवस्था में** क्या करना चाहिये ?
गिरिफ़्तन् इ आन् सुह़बत **सूरत** इ **खुशी** न ख्वाहद दाश्त ।	उस वार्ता को फिर से शुरू करना **ठीक** नहीं होगा ।
दर सूरत इ **इमकान** ऊरा बाहम बियार ।	**यदि सम्भव हो तो** उसको साथ ही ले आना ।
दर सूरत इ **लज़ूम** आक़ा यि सरहंग रा कुमक बिजूय ।	**यदि आवश्यक हो तो** कर्नल साहब की सहायता ले लेना ।
दर ईन् सूरत तशखीस इ मर्ज़ अज़् सर बायद कर्द ।	**ऐसी अवस्था** में रोग का निदान नये सिरे से करना चाहिये ।
खुद'श् ख़सीस बूद **दर सूरती कि** पिसर'श् बिल् ख़र्ज मी कर्द ।	स्वयं कन्जूस था **जब कि** उसका पुत्र अपव्यय करता था ।
मन् हज़ार रियाल मी दिहम् **दर सूरती कि** शुमा पानसद बिदिहीद ।	मैं हज़ार रियाल देता हूं **बशर्ते कि** (उस अवस्था में जब कि) तुम पाँच सौ दो ।
दर हर सूरत ईन् अ़मल इ निज़ामी साख़्तनी'स्त ।	**प्रत्येक अवस्था में** यह सैनिक अभियान पूरा करना ही है ।
सूरत इ **मजलिस** तब्अ़ शुदः अस्त ।	**सभा की कार्यवाही** छप चुकी है ।
सूरत इ **खुराक** बियारीद ।	**भोजन सूची** ले आओ ।
सूरत इ **ह़ाज़िर व ग़ायब** बियारीद ।	**उपस्थिति रजिस्टर** ले आओ ।
सूरत इ **खर्ज व दख़्ल** इ सालियानः बर दारीद ।	**आमदनी ख़र्च** का वार्षिक **चिट्ठा** बना डालो ।
बि'ल् आख़िर आन् कार **सूरत न गिरिफ़्त** ।	अन्ततः वह काम **नहीं ही हुआ** ।
सूरतन् ख़ूब वले सीरतन् बद अस्त ।	**रूप में** ठीक है किन्तु स्वभाव में ख़राब है ।

रू यि आन् सिक्कः=उस सिक्के पर

दस्तरस=उपलब्ध

तहय्यः कुनीद=उपलब्ध कर लीजिये, बना लीजिये

इमकान=सम्भावना

दर सूरत इ लज़ूम=आवश्यक होने की अवस्था में, आवश्यक हो तो

आक़ा यि सरहंग=कर्नल साहब

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

तरफ़ ।	की ओर, पक्ष-प्रतिपक्ष, पहलू, संवाददाता ।
दर **तरफ़** इ **रास्त** इ मीज़ निशस्त ।	वह मेज़ के **दाँयीं ओर** बैठा है ।
मा बाहम **तरफ़** नी'स्तीम् ।	हम एक दूसरे के **प्रतिपक्षी** नहीं हैं ।
तरफ़ैन आन् रा इमज़ा कर्दन्द ।	**दोनों पक्षों** ने उस पर हस्ताक्षर कर दिये ।
चन्द दक़ीक़: **दर अतराफ़** इ **मौज़ूअ** सुहबत कर्दीम ।	कुछ मिनटों तक हमने **मूल विषय के पहलुओं पर** बातचीत की ।
तरफ़ इ **मा** निविश्त: बूद कि····।	**हमारे संवाददाता** ने लिखा है कि····।
क़ुसूर **अज़् तरफ़** इ **तू** बूद ।	(इसमें) दोष **तुम्हारा** था ।
तरफ़ इ हीचकस् म गीर ।	किसी का **पक्ष** मत लो ।
अज़् हर तरफ़ ख़बर इ ख़ुश मी आयद ।	**चारों ओर से** सुसमाचार आ रहे हैं ।
अज़् हर दू तरफ़ हमल: आवुर्दन्द ।	**दोनों ओर से** हमला किया ।
अज़् तरफ़ इ **पिदर** ऊ हीच न याफ़्त ।	**पिता की ओर से** उसे कुछ नहीं मिला ।
बैन इ दौलत इ हिन्दुस्तान, **अज़् यक तरफ़**, व दौलत इ मूरीशस, **अज़् तरफ़** इ दीगर, क़रार दाश्त कि····।	बीच में, भारत सरकार के, **एक पक्ष में**, और मौरीशस सरकार के, **दूसरे पक्ष में**, निश्चित हुआ कि···।
ऊ **तरफ़** इ **ऐतिमाद** नी'स्त ।	वह **विश्वास का पात्र** नहीं है ।
बि **तरफ़** इ **मन्** निगाह कुनीद ।	**मेरी ओर** देखिये ।
बा कसी **तरफ़** म शौ ।	किसी का **प्रतिद्वन्द्वी** मत बन ।
तरफ़ इ **मुक़ाबिल** क़वीतर अस्त ।	**प्रतिपक्षी** अधिक बलशाली हैं ।
ईन् दवा दर्द रा **बर तरफ़ मी** कुनद ।	यह औषध पीडा (वेदना) को **दूर** करती है ।
मन् दर ईन् ख़ुसूस **बी तरफ़** अम् ।	मैं इस विषय में **निष्पक्ष** हूँ ।
मा सुख़ुनफ़ह्म हस्तीम, **तरफ़दार** इ ग़ालिब नै।	हम सूक्तिरसज्ञ हैं, गालिब के **पक्षधर** नहीं ।
ऊ हम **तरफ़दारान:** सुहबत मी कर्द ।	उसने भी **पक्षपातपूर्ण** बात कही ।

बाहम तरफ़=एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी, परस्पर प्रतिपक्षी
इमज़ा=हस्ताक्षर
चन्द दक़ीक़:=कुछ मिनट
अतराफ़=(तरफ़ का बहुवचन) विभिन्न पहलू
बैन =बीच में
अज़् यक तरफ़=एक ओर से
अज़् तरफ़ इ दीगर=दूसरी ओर से
क़रार दाश्त कि=समझौता किया है कि
बा कसी=(शब्दार्थ–किसी के साथ) किसी का
बी ख़ुसूस=निष्पक्ष

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

तो़र ।
प्रकार, तरह ।

चिः तो़र ई ?
कैसे हो ? (वेतकल्लुफ़ाना कुशलप्रश्न, शीराज़ की तरफ़ का ग्राम्य प्रयोग ।)

मुतरिब **चिः तो़र** मी ख़्वानद ?
गायक **कैसा** गा रहा है ?

अह़वाल इ शुमा **चिः तो़र** अस्त ?
आपके हालचाल **कैसे हैं** ?

ईन् तो़र बिगू ।
तो यह **ऐसे** कहो न ।

ईन् तो़र अशख़ास कम अन्द ।
ऐसे आदमी कम होंगे ।

आया **ईन् तो़र** अस्त ?
ऐसा हुआ क्या ?

ह़तमन् वायद **ईन् तो़र** ह़र्फ़ ज़द ।
निश्चित रूप से **ऐसे ही** बोलना चाहिये ।

हमीन् तो़र आग़ा कश्ज़दुम, **हमीन् तो़र हम** आग़ाज़ादियान'श् ।
ऐसे ही तो श्रीमान् बिच्छू महाराज, **वैसे ही** उनकी सुपुत्रियां ।

हीच तो़र ह़ाजिर नी'स्त सुल्ह़ कुनद ।
बिलकुल तैयार नहीं है सन्धि करने को ।

बि तो़री ख़स्तः बूद कि ग़िज़ा हम न तवानिस्त बिख़ुरद ।
इतना थक गया कि खाना भी नहीं खा सका ।

बि तो़री कि दर फ़स्ल इ अव्वल ज़िक्र शुद ।
जैसा कि प्रथम अध्याय में उल्लेख किया जा चुका है ।

सिपस आन् रा मी जूशानन्द **बि तो़री कि** ख़ूब पुख़्तः मी शवद ।
इसके बाद उसको **इतना** उवालते हैं ताकि अच्छी तरह पक जाय ।

हमान् तो़र कि मी ख़्वाही दीगरान् बि तू कुमक कुनन्द **हमीन् तो़र** हम बायद वि दीगरान् कुमक कुनी ।
जैसा कि तुभ चाहते हो कि दूसरे तुम्हारी सहायता करें **वैसे ही** तुमको भी दूसरों की सहायता करनी चाहिये ।

हर तो़र शुदः ईन् कार मुकम्मिल वायद कर्द ।
कैसे भी हो यह काम पूरा करना ही है ।

ऊ ईन् रा **तो़र** इ **दीगर** नक़्ल कर्द ।
उसने इसको **और तरह** वर्णित किया था ।

जुज़ ईन् कि ख़त़रनाक बाशद **तो़र** इ **दीगर** नी'स्त ।
सिवा इसके कि खतरनाक हो जाय **और कुछ** नहीं हो सकता ।

ईन् तो़र बाशद ।
अच्छा **यों** हो जाय (यों कर लो) ।

न वायद, **ईन् तो़र** बाशद ।
तुम्हारा यह मतलब तो नहीं है कि **यों** हो जाय ।

हमीन् तो़रहा ।
जैसा-तैसा ही है (ठीक-ठीक है) ।

हमीन् तो़र अस्त ।
यही बात है ।

मुतरिब=गायक
आग़ा कश्ज़दुम=श्रीमान् बिच्छू (दुर्जन का विशेषण)
अह़वाल=(ह़ाल का बहुवचन) हालचाल
हमान् तो़र कि········=जैसे कि········ ।
हमीन् तो़र हम········=वैसे ही········ ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अ़दम ।	अभाव वाचक उपसर्ग ।
इन्सान **अज़् अ़दम** बि वुजूद आमदः अस्त ।	मनुष्य **अनस्तित्व से** अस्तित्व में आया है ।
अज़् बराय **अ़दम** इ **नज़ाक़त** नौकर रा वर तरफ़ कर्दम् ।	**अशिष्टता** के कारण सेवक को निकाल दिया ।
अगर इमरूज़ **अ़दम** इ **तमायुल** अस्त फ़र्दा दर्स मी ख़्वानीम ।	यदि आज **अप्रवृत्ति** (अरुचि) है तो कल पाठ पढ़ेंगे ।
दर ह़ालत इ **अ़दम क़ुबूल** चिः ख़्वाही कर्द ?	**अस्वीकृति** की अवस्था में क्या करोगे ?
पादशाह **अ़दम रिज़ायत** रा निगाह न दाश्त ।	राजा ने **असन्तोष** की चिन्ता नहीं की ।
अ़दम मुवाफ़िक़त हुनर नी'स्त, ऐ़वी ह़स्त ।	**असहमति** कोई गुण नहीं है, एक दोष है ।
शबाहत दर **अ़दम शबाहत** ख़ुसूसियत इ हिन्दियान् अस्त ।	**भिन्नरूपता में** एकता भारतीयों की विशेषता है ।
सिफ़ारिश आवुर्दन् दर **अ़दम क़ाबिलिय्यत** शुमुर्दः मी शवद ।	सिफ़ारिश लाना **अयोग्यता** में शुमार किया जायगा ।
ईन कार अज़् **अ़दम रिअ़ायत** ख़राब शुद ।	यह कार्य **प्रमाद** (अनवेक्षण) के कारण बिगड़ गया ।
दर वज़ारत हा **अ़दम तवाफ़ुक़** न बायद बूद ।	मन्त्रालयों में **असामञ्जस्य** नहीं होना चाहिये ।
अ़दम ऐतिमाद दर बिरादरहा निशानी यि ख़ानः बरबादी'स्त ।	भाइयों में **अविश्वास** घर की बरबादी का लक्षण है ।
शहीदान् इ वत़न दर ख़ुर इ **अ़दम ह़ाफ़िज़ः** नै अन्द ।	देश के बलिदानी **विस्मृति** के योग्य नहीं हैं ।
गान्धीजी हामी यि **अ़दम तशद्दुद** बूद ।	गान्धीजी **अहिंसा** के समर्थक थे ।
अज़् **अ़दम आशनायी** मन् वा ऊ सुह़बत न कर्दम् ।	**अपरिचय** के कारण मैंने उससे बात नहीं की ।
ह़मलः अज़् त़रफ़ इ हिमालय **अ़दम इमकान** शुमुर्दः बूद ।	हिमालय की ओर से आक्रमण **असम्भव** माना जाता था ।
अज़् **अ़दम ऐतिदाल** इ तबअ़ मर्दुमान् नाख़ुश मी शवन्द ।	प्रकृतितत्वों के **असन्तुलन** के कारण मनुष्य रुग्ण हो जाते हैं ।
अज़् पीरी व **अ़दम किफ़ायत** ऊरा वर तरफ़ कर्दन्द ।	वृद्धावस्था और **असमर्थता** के कारण उसे निकाल दिया ।
बि सबब इ **अ़दम तवज्जुह** ऊ हीच न आमूख़्त ।	उसके **अनवधान** के कारण वह कुछ नहीं सीख सका ।

तबअ़=प्रकृति के तत्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु। आकाश को ईरानी तथा अरब विचारकों ने तत्व नहीं माना है)

नाख़ुश=रुग्ण, बीमारी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अ़र्ज़ ।	**चौड़ाई, निवेदन, अन्तराल, अक्ष आदि ।**
दर फ़ारसी ह़र्फ़ इ अ़र्ज़ दू मानी दारद ।	फ़ारसी भाषा में **अ़र्ज़ शब्द** के दो अर्थ होते हैं ।
अ़र्ज़ बि मानी यि **पह्ना** ख़्वान्दः मी शवद ।	अ़र्ज़ का अर्थ **चौड़ाई** होता है ।
अ़र्ज़ बि मानी यि **इराइः** हम ख़्वान्दः मी शवद ।	अ़र्ज़ का अर्थ **निवेदन** भी होता है ।
अ़र्ज़=पह्ना–१	अ़र्ज़=चौड़ाई–१
अ़र्ज़ इ मीज़ नीम मितर अज़् तूल इ ऊ कमतर अस्त ।	मेज़ की **चौड़ाई** उसकी लम्बाई से आधा मीटर कम है ।
पारचःयी **बि अ़र्ज़** इ यक मितर मी ख़्वाहम् ख़रीद ।	मैं एक मीटर **चौड़ाई** का कपड़ा ख़रीदना चाहता हूँ ।
दर अ़र्ज़ इ दू साल ख़ेली बुज़ुर्ग शुदी ।	**दो वर्षों के अन्तराल में** तू बहुत बड़ी हो गयी ।
दरजः यि **अ़र्ज़** इ करनाल व शीराज़ यकी'स्त ।	करनाल और शीराज़ का **अक्षांश** समान है ।
अ़र्ज़=इराइः – २	अ़र्ज़=निवेदन–२
अ़र्ज़ इ मारा गूश कुनीद ।	हमारी **प्रार्थना** पर ध्यान (कान) दीजिये ।
अ़र्ज़ मी कुनम् कि क़ुसूर अज़् तरफ़ इ मन् न बूद ।	**निवेदन** करता हूँ कि अपराध हमारी ओर से नहीं था ।
बि अ़र्ज़ बिरसद कि........ ।	(श्रीमान् की) **सेवा में निवेदित हो** कि···· ।
दीगर **चिः अ़र्ज़ कुनम्** !	और **क्या कहूँ** (और क्या निवेदन करूँ) !
अ़र्ज़ दारम् ।	(मुझे) **कुछ निवेदन करना है** ।
अ़र्ज़ मी शवद....... ।	**निवेदन यह है कि**···· !
अ़रीज़ः वि अ़र्ज़ इ वज़ीर न रसीद ।	**अ़र्ज़ी** मंत्री की सेवा में नहीं पहुँची ।
बा अ़र्ज़ इ **सलाम** अज़् धर्मेन्द्रनाथ ।	धर्मेन्द्रनाथ के **अभिवादन के निवेदन सहित** ।
साह़िब इ **अ़र्ज़** इ **ह़ाल** की'स्त ?	इस **प्रार्थना-पत्र का देने वाला** कौन है ?
अ़र्ज़दाश्त इ शुमा कुजा'स्त ?	आपका **प्रार्थना-पत्र** कहाँ है ?
ता बर तू **अ़र्ज़ः** दारद अह़वाल इ मुल्क इ दारा ।	ताकि दारा के राज्य वैभव की परिणति तुझे अपनी **अवस्था निवेदित** करे ।

नीम मितर=आधा मीटर
तूल=लम्बाई
पारचःयी=कोई कपड़ा
बिरसद=पहुँचे, ज्ञात हो

अ़र्ज़ दारम्=निवेदन रखता हूँ,
(मया किञ्चिन्निवेदितव्यमस्ति)
अ़र्ज़ मी शवद=निवेदन यह है कि
अ़रीज़ः=प्रार्थना-पत्र (बिगड़ा रूप-अरजी)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अक़्ब ।	**पीछे, पिछड़ा हुआ, पश्चात् ।**
नाशनाख़्तः **दर अक़्ब** ऐस्तादः बूद ।	विना पहचान में आये **पीछे** खड़ा था ।
नौकर रा **दर अक़्ब** इ दूस्त'म् **फ़िरिस्तादम्** ।	मैंने नौकर को अपने मित्र के **पीछे-पीछे भेजा** ।
बीचारः दर ज़िन्दगानी **अक़्ब मी मान्द** ।	बेचारा जीवन में **पिछड़ा रह गया** ।
साअ़त इ मन् **अक़्ब अस्त** ।	मेरी घड़ी **पीछे है** ।
अज़् अक़्ब इ **तुरा** लान ख़्वाहन्द कर्द ।	**तेरे** (मरने के) **पीछे** तुझे धिक्कारेंगे ।
नौकरहा **अक़्बतर** ऐस्तादन्द ।	**और भी पीछे** नौकर खड़े थे ।
अक़्बतरीन इ मजलिस मन् बूदम् ।	सभा में **सबसे पीछे** मैं था ।
ऊ **अक़्ब व जिलौ** क़दम ज़द ।	वह **इधर से उधर** टहल रहा था ।
गक्खड़ हा सिकन्दर रा **अक़्ब** कर्दन्द ।	गक्खडों ने सिकन्दर का **पीछा किया** ।
जमीय्यत रा **अक़्ब कर्दन्द** ।	भीड़ को पीछे **हटा दिया गया** ।
तमाशाचियान् रा **अक़्ब ज़दन्द** ।	तमाशा देखने वालों को **खदेड़ दिया गया** ।
पर्दः रा **अक़्ब बिज़न्** ।	पर्दे को **हटा दो** ।
तुफ़ंग पस अज़् दर रफ़्तन् **अक़्ब मी ज़नद** ।	बन्दूक़ चलने के बाद पीछे को **धक्का देती है** ।
क़ुशून् **अक़्ब निशस्त** ।	फ़ौज **पीछे हट गयी** ।
जलसः रा यक हफ़्तः **अक़्ब अन्दाख़्तन्द** ।	उत्सव को एक सप्ताह **आगे सरका दिया गया है** ।
दुश्मनान् इ ऊ पीशरफ़्त'श् **अक़्ब अन्दाख़्तन्द** ।	उसके शत्रुओं ने उसकी उन्नति को **पीछे सरका दिया** ।
किरायः यि **अक़्ब उफ़्तादः** रा अता कुनीद ।	**चढ़े हुए** किराये को चुका दीजिये ।
दानिशआमूज़ान् **अज़् अक़्ब** इ आमूज़गार **रफ़्तन्द** ।	विद्यार्थी शिक्षक के **पीछे-पीछे जा रहे थे** ।
कार इ **अक़्बदार** हम कमतर नी'स्त ।	**पीछे वालों** का काम भी कम नहीं है ।
पीश अज़् **फ़िक्र** इ **उक़्बा** फ़िक्र इ दुनिया कुन् ।	**परलोक की चिन्ता** के पूर्व इहलोक की चिन्ता कर ।

नाशनाख़्तः=विना पहचाना हुआ
लान=लानत, धिक्कार
तमाशाचियान्=(तमाशाची का बहुवचन) तमाशा देखने वाले
पीशरफ़्त=आगे बढ़ना, उन्नति
उक़्बा=(अक़्ब का बहुवचन) परलोक, परलोक की बातें

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अ़मल ।	काम, आचरण, आपरेशन, पचना आदि ।
दस्त अज़् **अ़मल** इ **बद** कशीद ।	उसने **दुराचरण से** हाथ खींच लिया ।
अ़मल इ **जमा** आसानतर अज़् अ़मल इ ज़रब अस्त ।	**जोड़ लगाने का काम** गुणा लगाने के काम से आसान है ।
दर ईन् बीमारिस्तान रूज़ इ पंजशम्ब: **रूज़** इ **अ़मल**'स्त ।	इस अस्पताल में बृहस्पतिवार **आपरेशन का दिन** है ।
इ़ल्म इ **बी अ़मल** फ़रामूश ख़्वाहद शुद ।	**आचरणरहित** ज्ञान विस्मृत हो जायेगा ।
दफ़्तर इ **ऐमाल** इ तू सियाह् अस्त ।	तेरी **आचरण-पुस्तिका** काली है ।
जर्राह् ऊरा **अ़मल कर्द** ।	शल्य चिकित्सक ने उसकी **शल्यक्रिया की** ।
आन्चि: मी ख़्वानद **अ़मल न मी कुनद** ।	(वह) जो कुछ पढ़ता है (उसका) **आचरण नहीं करता** ।
शिकम इ ईन् बच्च: **अ़मल न मी कुनद** ।	इस बच्चे का **पेट काम नहीं करता** ।
चीनी रा चि: त़ोर **अ़मल मी आवुरन्द** ?	चीनी के बर्तन कैसे **बनाये जाते हैं** ?
हनूज़ कबाब **बि अ़मल न मी आमद** ।	अभी मांसखण्ड **अच्छी तरह सिद्ध नहीं हुए** ।
दर मूरीशस नैशकर **बि अ़मल मी आवुरन्द** ।	मौरीशस में गन्ना **उगाया जाता है** ।
चीज़ी कि तू गूयी दर **दस्तूर उल् अ़मल** इ मा दर्ज'स्त ।	जो बात तू कहता है वह हमारी **व्यवहार पुस्तिका** में लिखी हुई है ।
ईन् पन्द अज़् रू यि क़ायद: सह़ीह़ वले **अ़मलन्** मुश्किल'स्त ।	यह शिक्षा सैद्धान्तिक रूप से ठीक है किन्तु **व्यवहार में** कठिन है ।
अ़मल: यि हवा पैमायी दर हरकत मी आमद।	**वायुयान विभाग के कर्मचारी** सक्रिय हो उठे ।
अ़मल: यि कश्ती शूरिश कर्द ।	**जलयान के कर्मचारियों ने** विद्रोह कर दिया ।
यक **त़रीक़:** यि **अ़मली** बायद पैदा कर्द ।	कोई **व्यावहारिक उपाय** ढूँढना चाहिये ।
ऊ **चश्म** इ **अ़मली** दारद ।	उसके **नक़ली आँख** है ।
ऊ नक़्श: यि ख़ुद रा **अ़मली कर्द** ।	उसने अपनी योजनाएं **पूरी कीं** ।
अ़मलिय्यात इ **साख़्तमानी** तमाम शुद: अस्त ।	**भवन** का **निर्माण कार्य** पूरा हो चुका है ।
अ़मलकर्द इ **रूज़ीन:** यि ईन् दूकान ची'स्त ?	इस दूकान की **दैनिक आय** क्या है ?

अ़मल इ जमा=जोड़ने की क्रिया, धन क्रिया
अ़मल इ ज़रब=घटाने की क्रिया, गुणक्रिया
इ़ल्म इ बी अ़मल=अनभ्यस्त ज्ञान, आचरण रहित ज्ञान
शिकम अ़मल न मी कुनद=पेट काम नहीं करता (न भूख लगती है, न पेट साफ़ होता है)
नैशकर=गन्ना
चश्म इ अ़मली=नक़ली ग्राँख (असली का प्रतिपर्याय अमली होता है ।)
अ़मली कर्द=व्यावहारिक रूप दिया (अ़मली कर्दन् में संस्कृत का च्वि प्रत्यय द्रष्टव्य है)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ड़वज़ ।	**स्थानापन्न, फल, परिवर्तन, तबादला ।**
ड़वज़ ड़ ऊ चि: कसी ख़्वाहद आमद ?	**उसकी जगह** कौन आयेगा ?
ड़वज़'श् मन् मी आयम् ।	**उसकी जगह** मैं आऊँगा ।
ख़ुदा बि शुमा **ड़वज़ बिदिहद** !	परमात्मा आपको इसका **फल दे** !
ख़ुदा ऊरा **ड़वज़ दाद ।**	परमात्मा ने उसको **फल दिया ।**
लिबास ड़ ख़ुद रा **ड़वज़ कुन् ।**	अपने कपड़े **बदल लो ।**
किताव रा **बा दफ़्तर ड़वज़ कर्दम् ।**	मैंने पुस्तक **के बदले** कापी ले ली ।
ईन् क़ौम ज़नहा रा **बाहम ड़वज़ कुनन्द ।**	ये लोग **परस्पर** में स्त्रियों को **बदल लेते हैं ।**
किशीकची रा **बायद ड़वज़ कर्द ।**	चौकीदारों को **बदल देना चाहिये ।**
सरहंग रा अज़् ईन् क़ुशून **ड़वज़ कर्दन्द ।**	कर्नल का इस फ़ौज में से **तबादला कर दिया गया है ।**
दर ड़वज़ ड़ रफ़ीक़'म् मरा हब्स कुनीद ।	मेरे मित्र **के स्थान पर** मुझे कारावास दीजिये ।
दर ड़वज़ ड़ **लाग़र** फ़रबिही रा बर दार आवीख़्तन्द ।	**पतले की जगह** मोटे को फाँसी पर लटका दिया ।
सहन: यि नुमायश रा **ड़वज़ कर्दन्द ।**	नाटक का दृश्य **परिवर्तन हो गया ।**
हरगिज़ **दर ड़वज़** ड़ **ज़नान्** अज़् शिकम ड़ मर्दुम बच्च:हा न ज़ायन्द ।	कभी भी **स्त्रियों की बजाय** पुरुषों के पेट से बच्चे नहीं होंगे ।
दर ड़वज़ ड़ **तलबीद:** हीच कसी दीगर न मीरद ।	**जिसको तलब किया गया हो उसकी जगह** कोई दूसरा नहीं मरता ।
दर ड़वज़ ड़ **पादाश** ड़ कुमक इंगलिसी रौलट ऐक्ट दादन्द ।	सहायता के **पुरस्कार के स्थान पर** अंग्रेजों ने रौलट ऐक्ट दिया ।
दर ड़वज़ ड़ **दवा** सम्म दाद ।	**दवा की जगह** ज़हर दे दिया ।
या ख़ुदा ! **दर ड़वज़** ड़ **मरकबी** ज़ीरपाय'म् कुर्र:यी बर दूश'म् दादी ।	हे प्रभो ! मेरे नीचे **सवारी देने की बजाय** मेरे कन्धों पर बछेड़ा लाद दिया ।
बि ड़वज़ ड़ **ईन् कि** मरा तशवीक़ कुनद मलामत नमूद ।	**इसके स्थान पर कि** मुझे प्रोत्साहित करता, (मेरी) भर्त्सना करने लगा ।
ऊ बि मन् कुमक कर्द, मन् **ड़वज़'श्** कुमक कर्दम् ।	उसने मेरी सहायता की, **बदले में** मैंने उसकी सहायता की ।
किताबफ़ुरूश **किताब** ड़ **ड़वज़ी** बि मन् दाद ।	पुस्तक विक्रेता ने मुझको **ग़लत किताब** दे दी ।

किशीकची=पहरेदार, चौकीदार

सहन: यि नुमायश=नाटक का दृश्य

लाग़र=दुबला, निर्बल

फ़रबिह=मोटा, स्थूल

ड़वज़ी=ग़लत चीज़ (जैसे-दवा यि ड़वज़ी=ग़लत दवा; दुआ यि ड़वज़ी=ग़लत प्रार्थना आदि)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अ़ह्द ।	**प्रतिज्ञा, सन्धि, शासनकाल, युग ।**
ऊ **अ़ह्द** इ ख़ुद रा शिकस्त ।	उसने अपनी **प्रतिज्ञा** तोड़ दी ।
नक़्ज़ इ **अ़ह्द** मूजिब इ जंग अस्त ।	**वचन भंग** युद्ध का कारण बनता है ।
दर अ़ह्द इ की ताजमहल साख़्त: शुद ?	किसके **शासनकाल** में ताजमहल बनवाया गया था ?
अ़ह्द कर्दी कि बियायी ।	**तूने तो वायद किया था** कि आयेगा ।
सिपस **बि ख़ुद अ़ह्द कर्दम्** कि दीगर दर मजलिस इ समात न बिरवम् ।	तत्पश्चात् **अपने आप से प्रतिज्ञा की** कि फिर कभी संगीत सभा में नहीं जाऊँगा ।
हर दू दौलत **अ़ह्द बस्तन्द** ।	दोनों राज्यों ने **सन्धि की** ।
मा हर दू **अ़ह्द** इ **मुवद्दत** बस्तीम ।	हम दोनों ने **मित्रता की शपथ** ली ।
चिरा **अ़ह्द** इ **ख़ुद** रा शिकस्ती ?	**अपनी प्रतिज्ञा** क्यों तोड़ दी ?
बि **अ़ह्द** इ **ख़ुद** वफ़ा कुन् ।	**अपनी प्रतिज्ञा** पूरी करो ।
अ़ह्द इ **अ़तीक़** किताब इ मुश्तरक इ यहूदियान् व नसरानियान'स्त ।	**ओल्ड टैस्टामेन्ट** यहूदियों और ईसाइयों की साझी धर्मपुस्तक है ।
अ़ह्द इ **जदीद** किताब इ नसरानियान् अस्त ।	**न्यू टैस्टामेन्ट** ईसाइयों की धर्मपुस्तक है ।
दर अ़ह्द इ **शबाब,** ख़र ख़ुद रा शीर मी दानद ।	**यौवन के दिनों में** गधा अपने आप को शेर समझता है ।
दर अ़ह्द इ **भोज** आ़लिमान् ख़ुशहा़ल बूदन्द ।	**भोज के राज्यकाल** में विद्वान् लोग बड़े प्रसन्न थे ।
अज़् अ़ह्द इ **दक़ियानूस** रस्महायी जारी हस्तन्द ।	**पुराने ज़माने से** कुछ प्रथाएं चली आ रही हैं ।
नै मारा दरमियान **अ़ह्द** इ **वफ़ा** बूद ?	क्या हमारे बीच **निभाने की प्रतिज्ञा** नहीं थी ?
जफ़ा कर्दी व **बद अ़ह्दी** नमूदी ।	तूने निर्ममता की और **वचनभंग** किया ।
वालाहज़रत रिज़ा पह्लवी **वली अ़ह्द** इ ईरान हस्तन्द ।	तत्रभवान् रिज़ा पहलवी ईरान के **युवराज** हैं ।
अ़ह्द शिकनी कार इ नीकान् नी'स्त ।	**वचनभंग** भले आदमियों का काम नहीं है ।
दर **अ़ह्दनाम:** निविश्त: अस्त कि…।	**सन्धिपत्र** में लिखा हुआ है कि…।
मा **अ़ह्दनाम: तसलीम कर्दीम** ।	हमने **सन्धिपत्र प्रस्तुत किया** ।

मूजिब=कारण, हेतु
बि ख़ुद=अपने आप, अपने आप से
मुवद्दत=प्रेम, स्नेह
किताब इ मुश्तरक=साझी पुस्तक
शबाब=यौवन

अ़हद इ दक़ियानूस=दक़ियानूस के ज़माने से, प्राचीनकाल से । दक़ियानूस (डेसियस) एक प्राचीन रोमन सम्राट् हुआ है, जो ईसवी सन् २०१ में पैदा हुआ तथा ईसवी सन् २५१ में मरा । उसने ईसाइयों पर भयंकर अत्याचार किये ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ऐ़ब ।	**दोष, अप्रतिष्ठा, आपत्ति ।**
ईन् अजनास **हीच ऐ़ब न दारद** ।	इन वस्तुओं में **कोई दोष नहीं है** ।
ईन् कार बराय मन् **ऐ़ब अस्त** ।	यह काम मेरे लिये **अप्रतिष्ठाकर है** ।
ऐ़बी न दारद ।	इसमें कोई दोष नहीं है **(कोई हर्ज नहीं है)** ।
चि: ऐ़ब दारद ?	क्या हर्ज है ?
ऐ़ब अस्त ।	**शर्म की बात** है (शर्म आनी चाहिये) ।
रूबाज़ बिमान **ऐ़ब मी कुनद** ।	ढक्कन खुला रहा तो **ख़राब हो जायगा** ।
ऐ़ब इ सादी म कुन् ।	सादी पर **दोषारोपण मत कर** ।
ऐ़ब न मी क़ुनद यक साल ।	**एक साल तक ख़राब** नहीं होगा ।
अज़् ऊ **न मी तवानीद ऐ़ब बिगीरीद** ।	इसमें **दोष नहीं** निकाल **सकते** ।
ऐ़ब बीन् म बाश ।	**छिद्रान्वेषी** मत हो ।
ख़ुदा बीनद व **ऐ़बपूशी** मी कुनद ।	परमात्मा सब कुछ देखता है और **दोषों को छिपाता** है ।
हमसाय: **ऐ़ब न मी बीनद** व ख़रूशद ।	पड़ोसी को **दोष दिखाई नहीं पड़ते** फिर भी वह चिल्लाता है ।
हुनर बि चश्म इ अ़दावत **बुज़ुर्गतर ऐ़बी'स्त** ।	शत्रुता की दृष्टि से (देखा जाय तो) गुण होना **बहुत बड़ा दोष है** ।
ऐ़बजू म बाश—**ऐ़बपूश** बाश ।	**छिद्रान्वेषी** मत हो, (दूसरों के) **दोषों को ढकने वाला** बन ।
ऐ़बजूयी अज़् दीगरान् ख़ुद रा रुसवा कर्दन् अस्त ।	**दूसरों के दोष देखना** अपनी ही निन्दा करना है ।
ऐ़बजूयी आसान'स्त, दुरुस्त कर्दन् मुश्किल'स्त ।	दोष बताना सरल है, ठीक करना मुश्किल है ।
ऐ़बचीनी रा हमसाय: कुन् ।	**निन्दक** को पड़ोसी बना ले ।
बी ऐ़ब फ़क़त ज़ात इ ऊ'स्त ।	**निर्दोष** केवल उस (परमात्मा) का व्यक्तित्व है ।
ऊ आ़दतन् अज़् मर्दुम **ऐ़ब गूयी** मी कुनद ।	वह स्वभाव से ही दूसरों का **दोषकथन** करने वाला है ।
दस्त'श् **ऐ़ब नाक** बूद ।	उसका हाथ **ख़राब (सदोष)** हो गया ।

अजनास=(जिन्स का बहुवचन) चीज़ें
ऐ़ब'स्त=बुरी बात है
बि चश्म इ अ़दावत=शत्रुता की दृष्टि से
रुसवा=निन्दित, अपमानित
ऐ़बचीनी=एक दोष चुननेवाला, एक निन्दक
हमसाय:=पड़ोसी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ग़लत़ ।

आन् मुरासिलः **दह ग़लत** दाश्त ।

ईन् कलमः **ग़लत** अस्त ।

मर.हूम हरगिज़ **कार** इ **ग़लत** न मी कर्द ।

शुमा **ग़लत** हृद्स जदीद ।

ग़लत कर्दम् ।

ग़लत गुफ़्तम् ।

ग़लत गुफ़्ती चिरा सज्जादः यी तक़वा गिरौ कर्दी ।

ग़लत म गीर ।

दूवारः **ग़लत बूद ।**

शयतान मरा **ग़लल अन्दाख़्त ।**

शुलूक़ न कुनीद, **ग़लत मी उफ़्तद ।**

शराबख़्वारी **ग़लतमशहूर** अस्त ।

'मा गुफ़्त' **ग़लत** इ **हृर्फ़ व दस्तूरी** अस्त ।

ईन् कलमः रा बि अ़मल इ 'ख़ुश' **बि ग़लत इस्तेमाल** कर्दः अन्द ।

दर आन् किताब **ग़लतात** इ **चापी** आ़म अस्त ।

हमः यि सूरत यक बर आवर्द इ गिज़ाफ़ व **ग़लतअन्दाज़ी**'स्त ।

मानी यि **ग़लती** बि मन् गुफ़्त ।

ग़लत हि़साब कर्दन् रा माज़ूर दारन्द **ग़लत कर्दन्** रा इस्तिग़फ़ार नी'स्त ।

गुर्बः रा ख़ानुम ख़्वान्दन् **ग़लत नामीदन्** अस्त ।

ग़लतनामः दर अवाख़िर इ किताब अस्त ।

अशुद्धि, अशुद्ध, कुमार्ग ।

उस पत्र में **दस अशुद्धियाँ** थीं ।

यह वाक्य **अशुद्ध** है ।

स्वर्गीय ने कभी कोई **ग़लत काम** नहीं किया ।

आपने **ग़लत अनुमान** लगाया ।

मुझसे भूल हुई ।

मैंने ग़लत कहा था ।

तूने ग़लत कहा कि पवित्रासन गिरवी क्यों रखा ।

आरोप मत लगाओ ।

फिर **ग़लत हो गया ।**

शैतान ने मुझे **कुमार्ग में प्रेरित कर दिया ।**

शोर मत करो (नहीं तो) **ग़लती कर डालेगा ।**

शराब पीना **एक स्वीकृत बुराई** है ।

'हम बोला' **शब्द और व्याकरण की ग़लती** है ।

इस शब्द का 'ख़ुश' के अर्थ में **ग़लत प्रयोग** किया गया है ।

उस पुस्तक में **छपाई की अशुद्धियाँ** सामान्य बात है ।

पूरा का पूरा चिट्ठा अतिशयोक्ति और **ग़लत अनुमान** का अनुमानपत्रक है ।

उसने मुझे **ग़लत** अर्थ बतला दिया ।

हिसाब की ग़लती माफ़ हो जाती है, **अर्थापत्ति की ग़लती** की क्षमा नहीं मिलती ।

बिल्ली को श्रीमतीजी कहना **ग़लत नाम देना** है ।

शुद्धिपत्र इस पुस्तक के अन्तिम भाग में है ।

मुरासिलः=चिट्ठी, पत्र
हृद्स=अनुमान
सज्जादः यी तक़वा=पवित्र आसन
गिरौ कर्दी=गिरवी रख दिया

शुलूक़=(उच्चारण शुलूग़) शोर, भीड़
बि अ़मल इ ख़ुश=ख़ुश के अर्थ में
ग़लत मशहूर=स्वीकृत बुराई (सब जानते हैं कि बुराई है पर जिसे फिर भी करते हैं)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ग़ैर ।	इतर, **नञ्वाचक ।**
बि **अशख़ास** इ **ग़ैर** न मी फ़ुरूशीम ।	हम **दूसरे आदमियों को** नहीं बेचते ।
ग़ैर इ **यक शख़्स** हीचकस् हर्फ़ न ज़द ।	**एक आदमी के अलावा** किसी ने कुछ नहीं कहा ।
दर **ग़ैर** इ **साअ़ात** इ **इदारी** ईन् कार रा अन्जाम दादम् ।	मैंने **कार्यालय के समय के अतिरिक्त** समय में यह काम किया है ।
बि **ग़ैर अज़् जौहरी** की गौहर रा क़द्र मी दानद ?	**जौहरी के अलावा** रत्न का मूल्य कौन जानता है ?
ग़ैर ख़ालिस वज़्न यक किलू व ख़ालिस हश्तसद ग्राम अस्त ।	**कुल भार** (बर्तन सहित) एक किलो है और ख़ालिस भार आठ सौ ग्राम है ।
मा **ग़ैर रस्मी** सुहबत कर्दीम ।	हमने **अनौपचारिक** बातें कीं ।
ईन् कार **ग़ैर शरई** अस्त ।	यह कार्य **धर्म विरुद्ध** है ।
दर कारहा यि ज़रूरी व **ग़ैर ज़रूरी** फ़र्क़ बायद कर्द ।	आवश्यक और **अनावश्यक** कार्यों में अन्तर करना चाहिए ।
ईन् बर आवुर्द **ग़ैर अ़मली** अस्त ।	यह अनुमान पत्र **अव्यावहारिक** है ।
बिन्ज़ीन रौग़न इ फ़र्रार अस्त व डीज़ल **ग़ैर फ़र्रार** ।	पेट्रोल उड़ने वाला तेल है और डीज़ल **न उड़ने वाला ।**
बह्र इ शाहनामः बह्र इ मुतक़ारिब **ग़ैर सालिम**'स्त ।	शाहनामे का छन्द बहर इ मुतक़ारिब **खण्डित** है ।
संग व ख़ाक चीज़हा यि **ग़ैर ज़ीरूह** अन्द ।	पत्थर और मिट्टी **प्राणहीन** पदार्थ हैं ।
ऊ मशग़ूल दर कारहा यि **ग़ैर क़ानूनी** बूद ।	वह **अवैधानिक** कार्यवाहियों में लिप्त था ।
ईन् ज़मीन **ग़ैर मज़रूअ़** अस्त ।	यह भूमि **बिना खेती-बाड़ी वाली (अकृष्ट)** है ।
ईन् दफ़्तर **ग़ैरमत़्लूब** अस्त ।	यह बहीखाता **नहीं माँगा** था ।
ईन् कार **ग़ैर मुफ़ीद** अस्त ।	यह कार्य **अलाभकारी** है ।
ईन् पूल **ग़ैर मुमकिन उल् वुसूल** अस्त ।	यह धन **वसूल नहीं हो सकता ।**
ईन् दूशीज़ः **ग़ैरमनकूहः** अस्त ।	यह कन्या **अविवाहिता** है ।
ईन् साख़्तमान हनूज़ **ग़ैर मुकम्मिल** अस्त ।	यह भवन अभी **अधूरा** है ।
इत्तिलाअ़ात इ **ग़ैर मुस्तक़ीम** म दिह ।	**पुरानी ख़बरें** मत बताओ ।

गौहर=मोती, रत्न

ख़ालिस=शुद्ध भार, नैट भार

रौग़न इ फ़र्रार=उड़नशील तेल जैसे पेट्रोल

ग़ैर सालिम मुतक़ारिब=खण्डित मुतक़ारिब नामक छन्द । इसका का लक्षण है :–

फ़ऊलुन् फ़ऊलुन् फ़ऊलुन् फ़ऊल्

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

फ़रा ।	संस्कृत-परा ।
मंज़िल इ मा हनूज़ **फ़रातर** अस्त ।	हमारा गन्तव्य **और भी दूर** है ।
मलिक रा **फ़राचंग** आवुर्द ।	राजा को **अपनी मुट्ठी** (वश) में कर लिया ।
ईन् हदियः **फ़राखुर** इ हर दू नी'स्त ।	यह उपहार दोनों (दाता-आदाता) के ही **योग्य** नहीं है ।
गूश बि मन् **फ़रा दार** ।	मेरी ओर **कान बढ़ा** ।
दर **फ़रादीस** चीं'स्त कि दर ईन् जा नी'स्त ।	**स्वर्गों** में ऐसा क्या है जो यहाँ नहीं है ।
बि गर्दनः यि कूह ऊरा **फ़रारसीदन्द** ।	पहाड़ के दर्रे में उसको **जा पकड़ा** ।
जज़्बः यि **फ़रारफ़्तन्** हम न दारद ।	उसमें **आगे बढ़ने** की प्रवृत्ति ही नहीं है ।
पीश इ मर्दुम हीच न गूयद, **फ़रारूय** शिकायत मी कुनद ।	लोगों के सामने कुछ नहीं कहता, **पीठ पीछे** शिकायत करता है ।
ईन् ख़बर **जान'म् रा फरासूद** (या 'फ़रसूद')	इस समाचार ने **मेरी जान ही ले ली** ।
चुन् शीर रा दीद **फ़राशा** बर ऊ उफ़्ताद ।	जब शेर को देखा तो उसको **पराहर्ष** हो गया ।
गुर्बः चुन् सग रा पीश दीद, **फ़राशीद** व ह़मलः आवुर्द ।	बिल्ली ने जब सामने कुत्ते को देखा तो **बाल खड़े कर लिये** और आक्रमण कर दिया ।
अब्रहा माह रा **फ़रागिरिफ़्तन्द** ।	बादलों ने चन्द्रमा को **पराच्छन्न कर लिया** ।
देवन इ बुज़ुर्गतर ख़ुर्दः क़र्ज़हा रा **फ़रा मी गीरद** ।	बड़ा ऋण छोटे ऋणों को **समाहित कर लेता है** ।
आहिस्तःतर बिगू कि दीवार हम **फ़रा गूश दारद** ।	धीरे बोल, क्योंकि दीवार ने भी सुनने को **आगे कान बढ़ा रखे हैं** ।
नाम इ पिसर इ रुस्तम **फ़रामुर्ज़** बूद ।	रुस्तम के पुत्र का नाम **फ़रामुर्ज़** था ।
फ़रामूश'त् न कर्द ऐज़द दर आन् ह़ाल ।	परमात्मा ने तुझको उस अवस्था में भी **विस्मृत** नहीं किया ।
दर ईन् रूदख़ानः माही **फ़रावान** अस्त ।	इस नदी में मछलियाँ **बहुत** हैं ।
फ़राहान यक शह्र दर अ़राक़ः अ़जम अस्त ।	**फ़राहान** नामक एक नगर ईरानी इराक़ में है।
हज़ार चीज़हा **फ़राहम आवुर** सिपस ऊरा ख़ानः बिख़्वान् ।	हज़ार चीज़ें **जोड़** तब उसे घर कह ।
शागिर्द रा पंज साल **फ़राहीख़्त** ।	शिष्य को पाँच साल तक **पढ़ाया** (प्रकृत अर्थ-लटकाया)

फ़ारसी में फ़रा का अर्थ आगे होता है । संस्कृत में यह उपसर्ग आगे के अलावा और अर्थों में भी प्रयुक्त होता है । फ़राशा = रोमहर्ष, पराहर्ष ● फ़रामुर्ज़ = विशालभूमि वाला फ़रामूश = भूला, विस्मृत (प्राचीनरूप–फ़रामुश्तः संस्कृत = परामृष्ट)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

फ़ुरू ।	संस्कृत – पुरस्, पुरो ।
ज़र्फ़ रा दर आब **फ़ुरू बुर्द** ।	बर्तन को पानी में **डुबाया** ।
सर बि गरीबान **फ़ुरू बुर्द** ।	सिर को अपने गिरेबान में **नीचे किया** (विचारमग्न हुआ)
दु चीज़ तीरः यि अक़्ल'स्त **दम फ़ुरू बस्तन्** बि वक़्त इ गुफ़्तन् ।	दो चीजें बुद्धि का अन्धकार है, एक तो बोलने के समय **चुप हो जाना** ।
ख़ुरशीद दर ज़ीर इ उफ़क़ **फ़ुरू रफ़्त** ।	सूर्य क्षितिज के **नीचे चला गया** ।
कश्ती **फ़ुरू रफ़्त** ।	नौका **डूब गयी** ।
ख़र'म् दर गिल **फ़ुरू रफ़्त** ।	मेरा गधा कीचड़ में **फँस गया** ।
आजुरहा यि दीवार **फ़ुरू रीख़्त** ।	भीत की ईंटें **गिर गयीं** ।
ख़न्जर रा दर शिकम **फ़ुरू कर्द** ।	ख़न्जर को पेट में **घुसेड़ दिया** ।
पै फ़ुरू ख़्वाहद कशीद ।	इसकी नींव **ढह जायगी** ।
पह्लवान् रा **फ़ुरू कूफ़्त** ।	पहलवान् को **दे मारा** ।
दर्स इ आख़िर **फ़ुरू गुज़ाश्तः** अस्त ।	अन्तिम पाठ **निकाल दिया गया** है ।
अज़् ह़ल्ल इ सवाल **फ़ुरू मान्द** ।	प्रश्न को हल करने में **असमर्थ रहा** ।
फ़ित्नः रा बि ज़ूदी **फ़ुरू निशान्दन्द** ।	उपद्रवों को तत्काल **दबा दिया गया** ।
अ़तश इ ख़ुद रा **फ़ुरू निशान्द** ।	अपनी प्यास **बुझा ली** ।
चिः चीज़ मी तवानद ह़िस इ इन्तक़ाम इ ऊरा **फ़ुरू निशान्द** ?	क्या चीज़ उसके प्रतिशोध भाव को **शान्त कर** सकती है ?
फ़ित्नः **फ़ुरू निशस्त** ।	उपद्रव **शान्त हो गया** ।
लबहा यि ज़ीरीन'श् बि गरीबान **फ़ुरूहिश्तः** बूद ।	उसका निचला होंठ उसके गरेबान तक **लटक रहा** था ।
ऊ शख़्स इ **फ़ुरूतन** अस्त, **फ़ुरूमायः** नी'स्त ।	वह **विनयशील** व्यक्ति है, **नीच प्रकृति** नहीं है ।
बा **फ़ुरू दस्तान्** करम बायद नमूद ।	अपने **अधीनस्थों** पर कृपा दिखानी चाहिये ।
ऊ मर्द इ **फ़ुरूहीदः** अस्त ।	वह **बुद्धिमान्** व्यक्ति है ।

('फ़ुरू' संस्कृत के पुरस्–पुरो का ईरानी रूप है । किन्तु पुरः का अर्थ आगे है जबकि फ़ुरू का अर्थ 'नीचे' होता है । यह अर्थभ्रंश का एक उदाहरण है ।)

फ़ुरू बुर्दन्=नीचे करना, डुबोना

सर फ़ुरू बुर्द=सिर नीचे किया, विचारमग्न हो गया (विचारमग्नावस्था में सिर नीचे हो जाता है)

फ़ुरूहीदः=बुद्धिमान, प्रधान (संस्कृत – पुरोहितः)

ख़र फ़ुरू रफ़्त=गधा फँस गया (गधे का कीचड़ में फँसना एक प्रसिद्ध ईरानी मुहावरा है। एक तो कीचड़ में फँसने के कारण गधा असमर्थता के कारण नहीं निकल पाता, दूसरे, बोझा ढोने से बचने के लिये भी वह कीचड़ से न निकल सकने का बहाना बनाता है ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़ाबिल ।
योग्य, अर्ह ।

मुहन्दिसीन इ हिन्दुस्तान **क़ाबिल** अन्द ।
भारतीय इंजिनियर बहुत योग्य हैं ।

ऊ **क़ाबिल** इ **ईन् मुक़ाम** नी'स्त ।
वह **इस स्थान के योग्य** नहीं है ।

ऊ क़ाबिल इ **हीचगूनः तग़यीर** नी'स्त ।
वह **किसी परिवर्तन के योग्य** नहीं है ।

क़ाबिल नी'स्त ।
इस योग्य नहीं है (कि आप इसका उल्लेख करें, 'मैनीशन नौट' जैसा वाक्य) ।

ईन् ग़ज़ल **क़ाबिल** इ **इसलाह** अस्त ।
यह ग़ज़ल **संशोधन के योग्य है** ।

ईन क़ानून **क़ाबिल** इ **इजरा** नी'स्त ।
यह क़ानून **लागू करने योग्य** नहीं है । (लागू नहीं किया जा सकता) ।

दुख़्तर'म् **क़ाबिल** इ **इज़्दिवाज** शुदः अस्त ।
मेरी पुत्री **विवाह के योग्य** हो गयी है ।

ईन् जर्फ़ हनूज़ **क़ाबिल** इ **इस्तिफ़ादः** अस्त ।
यह वर्तन अभी तक **प्रयोग करने योग्य** है ।

दलील'श् **क़ाबिल** इ **ऐतिराज़** अस्त ।
उसकी युक्ति **आक्षेप के योग्य** है ।

ज़र **क़ाबिल** इ **इम्बिसात** मी शवद ।
सोना **पीटने से फैलने के योग्य** होता है ।

ईन् शख़्स **क़ाबिल** इ **इन्तिक़ाल** अस्त ।
यह व्यक्ति **तबादला करने योग्य** है ।

क़न्द **क़ाबिल** इ **इनह़िलाल** दर आब अस्त ।
चीनी **पानी में घुलने योग्य** (घुलनशील) है ।

चीज़हायी **क़ाबिल** इ **बहथ्स** न मी शवन्द ।
कुछ चीज़ें **बहस के योग्य** नहीं होतीं ।

किरायः दर ईन् माह **क़ाबिल** इ **परदाख़्त** शुदः अस्त ।
किराया इस महीने में **चुकाने योग्य** हो गया है ।

शुमा ईन् कारी **क़ाबिल** इ **तह़सीन** कर्दः ईद ।
आपने यह एक काम **प्रशंसनीय** किया है ।

अत़वार इ ऊ **ग़ैरक़ाबिल** इ **तह़म्मुल** अन्द ।
उसके रंग-ढंग **असहनीय** हैं ।

फ़ैसलः यि क़ाज़ी **ग़ैरक़ाबिल** इ **तरदीद**'स्त ।
क़ाज़ी का फैसला **अपरिवर्तनीय** है ।

ईन् मिल्कियत **क़ाबिल** इ **तक़सीम** अस्त ।
यह सम्पत्ति **बँटवारे के योग्य** है ।

अ़रीज़ः यि शुमा **ग़ैरक़ाबिल** इ **तवज्जुह**'स्त ।
आपका निवेदन **ध्यान देने योग्य** नहीं है ।

चिः फ़ायदः ! ईन् शूरःबूम **क़ाबिल** इ **ज़रअ़** नी'स्त ।
क्या करूँ ! यह खारी ज़मीन **खेती के योग्य** नहीं है ।

(प्रत्येक क़ाबिल के पूर्व ग़ैर लगाकर निषेधवाचक शब्द बनाये जा सकते हैं)

मुहन्दिसीन=(मुहन्दिस का बहुवचन) इंजिनियर लोग, अभियन्ताजन
तग़यीर=परिवर्तन
हीचगूनः=किसी भी प्रकार
क़ाबिल इ इज़्दिवाज=विवाह के योग्य, वर्या
क़ाबिल इ इम्बिसात=आघातवर्धनीय, उद्वर्तन-क्षम, पीटने से बढ़ने वाला
ग़ैर क़ाबिल इ बहथ्स=बहस के अयोग्य, अवादविषयः
अत़वार=(त़ोर का बहुवचन) रंग-ढंग
चिः फ़ायदः=(शब्दार्थ-क्या लाभ) क्या करूँ !

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़बूल ।	**स्वीकृति, स्वीकृत** ।
इदारः दर **रद्दो-क़बूल** इ आन् मुख़्तार अस्त ।	प्रशासन को उसकी **अस्वीकृति-स्वीकृति** का अधिकार है ।
ईन् बाज़ी **क़बूल नी'स्त** ।	यह बाज़ी **नहीं मानी जायगी** ।
ईन् क़िस्म इ नमाज़ **क़बूल नी'स्त** ।	ऐसी उपासना **स्वीकार नहीं होगी** ।
ह़र्फ़ इ मरा **क़बूल न कर्द** ।	मेरी बात उसने **नहीं मानी** ।
ख़्वाहिशी यि मरा **क़बूल ख़्वाहीद** कर्द ?	क्या आप मेरी याचना को **स्वीकार करेंगे** ?
मन् न तवानिस्तम् ईन् शरह़ी रा कि दाद, **क़बूल** कुनम् ।	जो चिट्ठा उसने मुझे दिया मैं उस पर **विश्वास** नहीं कर सका ।
बिस्यारी **ऊरा क़बूल कर्दन्द** ।	बहुतों ने **उस पर विश्वास कर लिया** ।
दीगर शागिर्द **क़बूल न मी कुनीम**	हम और **विद्यार्थियों को नहीं लेते** ।
दू नफ़र अज़् शागिर्दहा **क़बूल न शुदन्द** ।	दो विद्यार्थी उत्तीर्ण नहीं हुये ।
दौलत इ चीनी तबरीक इ दौलत इ शौरवी रा **क़बूल न कर्द** ।	चीनी सरकार ने रूसी सरकार की बधाई को **ठुकरा दिया** ।
क़बूल दारम् ।	ठीक बात है (**मैं मानता हूँ**) ।
बि' ल् इ़वज़ इ मिह्‌र इ बीस्त हज़ार तुमान निकाह रा **क़बूल दारी** ?	बीस हज़ार तुमान के मिह्‌र के बदले विवाह सम्बन्ध **स्वीकार करती हो** ?
मन् ऊरा **काग़ज़** इ **जवाब क़बूल** फ़िरिस्तादम् ।	मैंने उसको **डाक टिकट लगा जवाबी पत्र** भिजवाया था ।
हनूज़ **क़बूलदाश्त** इ **क़ाग़ज़**'म् न रसीदम् ।	अभी तक मुझे अपने **पत्र की प्राप्ति की सूचना** नहीं मिली ।
ऊ **क़बूलदार** शुदः अस्त ।	वह **मान गया** है ।
क़बूली यि ख़ुद रा बिनिवीसीद ।	अपनी **स्वीकृति** भिजवाइयेगा ।
ईन् दुआ यि मन् **क़बूल बाद** ।	यह मेरी प्रार्थना **स्वीकार हो** ।
अज़् आन् **मक़बूलतर** बाशी कि बूदी ।	(तू) उससे भी **अधिक स्वीकार्य** होगा जितना कि पहले था ।
मिहतरी **दर क़बूल** इ **फ़रमान**'स्त ।	बड़प्पन **ईश्वर की आज्ञा को स्वीकार करने में** है ।
लाजरम दर बुज़ुर्गी **ना मक़बूल** व ना मह़बूब अन्द ।	बेशक इसीलिए बड़े होकर **अस्वीकार्य** और अप्रिय हो जाते हैं ।

मुख़्तार=अधिकारी, समर्थ, सक्षम
शरह़=चिट्ठा, आयव्यय पत्रक

बिस्यारी=बहुतों ने
बि'ल् इ़वज़=के बदले में

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़द्र ।	**मूल्य, कोटि, सम्मान, परिमाण ।**
क़द्र इ **तन्दुरुस्ती** यि ख़ुद न मी दानिस्त ।	अपने **स्वास्थ्य का मूल्य** नहीं समझा ।
शैख़ सादी यकी अज़् सितारःहा यि **क़द्र** इ **अव्वल** इ अदब अस्त ।	शेख़ सादी साहित्य के आकाश के **प्रथम कोटि** के नक्षत्र हैं ।
क़द्र इ ज़न इ बावफ़ा रा बायद दानिस्त ।	वफ़ादार पत्नी की **क़द्र** जाननी चाहिये ।
ईन् **क़द्रदानी** यि शुमा'स्त वरनः बन्दः चिः क़ाबिल'स्त ।	यह आपकी **क़द्रदानी** है वरना यह सेवक किस योग्य है ।
क़द्र इ **गौहर** जौहरी मी शनासद ।	**रत्न का मूल्य** जौहरी जानता है ।
चिः क़द्र बिरंज लाज़िम दारीम ?	हमें **कितना** चावल चाहिये ?
हर क़द्र फ़क़ीर बाशम् ज़ियारत इ इमाम रिज़ा मी कुनम् ।	मैं **कितना ही** निर्धन होऊँ इमाम रिज़ा की ज़ियारत अवश्य करूँगा ।
अगर **बि क़द्र** इ दानः यि ख़रदल ईमान दाश्तः बाशीद !	यदि तुम लोगों में एक सरसों **बराबर भी** ईमान हो !
बि क़द्र इ **इमकान** दुख़्तर'म् रा दादम् ।	**यथासामर्थ्य** मैंने अपनी पुत्री को दिया ।
बि क़द्र इ **लज़ूम** पूल बिगीरीद ।	**यथावश्यक** धन ले लो ।
हर कस् ख़र्ज **बि क़द्र** इ **इस्तताअ़त** मी कुनद ।	हर कोई अपनी **शक्ति के अनुसार** ख़र्च करता है ।
बि क़द्र इ **किफ़ायत** ज़र न दारीम ।	हमारे पास **काफ़ी मात्रा में** सोना नहीं है ।
बि क़द्र इ **किफ़ायत** ग़िज़ा न ख़रीदीद ।	(आपने) **पर्याप्त मात्रा में** भोजन नहीं ख़रीदा है ।
बि क़द्री अज़् आन् ख़्वान्दः बूदम् ।	मैंने उसमें से **थोड़ा सा** पढ़ा है ।
बि क़द्री ज़र्द अस्त ।	**ज़रा** पीला **सा** है ।
बि क़द्री सर्द अस्त कि न मी तवानम् बीरून् रफ़्त ।	**इतनी** ठण्ड है कि बाहर नहीं जाया जा सकता ।
बि क़द्री कि मादर मुहब्बत दारद हीचकस् दीगर न दारद ।	**जितना कि** माँ चाहती है उतना और कोई नहीं चाहता ।
ईन् क़द्र क़शंग बूद कि चिः अर्ज़ कुनम् !	**इतनी** सुन्दर थी कि मैं क्या बताऊँ !
मय **आन् क़दर** न बूद कि रंज ई ख़ुमार बुर्दे ।	शराब **उतनी तो** नहीं थी कि नशे में डुबाने का कष्ट उठा सकती ।
अगर हर शब शब ई क़दर बूदे, शब इ क़द्र **बीक़दर बूदे ।**	अगर हर रात 'शब इ क़दर' हो जाती तो शबक़दर का **मूल्य नहीं रहता ।**

लाज़िम दारीम=हमारे लिये आवश्यक है

दानः यि ख़रदल=सरसों का दाना

इस्तताअ़त=शक्ति, सामर्थ्य

रंज ई ख़ुमार=मदोन्मत्त करने का परिश्रम

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़दम ।	**पैर, पदसंचार, नापना, आगमन** ।
यक क़दम राह अस्त ता मंज़िल इ मा ।	हमारे घर से **थोड़ी ही दूर** है ।
बा क़दम इ **आहिस्तः** मी रफ़्त ।	वह **धीरे-धीरे चलकर** गया ।
दर आगाज़ अक़ब मान्द वले सिपस **क़दम गिरिफ़्त** ।	शुरू में पिछड़ा रहा पर बाद में **क़दम मिला लिये** ।
चन्द दक़ीक़: दर बाग़ **क़दम ज़दम्** ।	कुछ मिनटों तक **मैं** बाग़ में **घूमता रहा** ।
तूलो-अर्ज़ इ हियात रा **क़दम ज़दन्द** ।	हाते की लम्बाई-चौड़ाई में (इधर से उधर) वे **घूमते रहे** ।
दर उताक़'श् **क़दम न गुज़ाश्त** ।	उसके कमरे में उसने **पैर नहीं रखा** ।
दर मियान इ शूरिश–कुनान **क़दम म गुज़ार** ।	झगड़ा करते हुओं के बीच में **मत जा** ।
बी पुर्सीदन् इ पिदर'त् **क़दमी म दार** ।	अपने पिता से विना पूछे **कोई क़दम मत उठाना** ।
अगर यक़ीन न दारी **क़दम कुन्** ।	अगर विश्वास न हो तो **पैरों से नाप लो** ।
ख़ान: बराय ऊ **क़दम कर्द** ।	घर उसके लिये **शुभ सिद्ध हुआ** ।
क़दम'श् ख़ूब न बूद ।	**उसके क़दम** शुभ नहीं पड़े ।
क़दम इ **मौलूद** इ **ताज़:** बराय शुमा मुबारिक बाशद ।	**नये बालक का जन्म** (आगमन) आपको शुभ हो ।
नौज़ाद'श् **ख़ुशक़दम** न बूद ।	नवजात उसके लिये **शुभ सूचक चरणों वाला** (शुभनिमित्तक) नहीं हुआ ।
क़दम'श् तर बूद ।	**उसके आगमन के साथ ही वर्षा हुई** (अत: उसका आगमन शुभ हुआ) ।
क़दम'त् रंज: कुन् ।	**अपने चरणों को कष्ट दीजिये** (कृपया चलिये) ।
क़दमरंज: शौ ।	**ज़रा पैरों को कष्ट देने वाले** होइए (कृपया चलिये) ।
अगर बि करम **क़दमरंज:** शवी, मुज़्द यावी ।	यदि आप कृपया **चरणों को कष्ट देने वाले** होंगे तो पुण्य लाभ करेंगे ।
ज़न'श् ख़ेली **बदक़दम** बूद ।	उसकी पत्नी बहुत **बुरे पैरों वाली** थी ।
"ऊ कुजा रफ़्त: अस्त ?"–"**सर** इ **क़दम** रफ़्त: अस्त ।"	"वह कहाँ गया है ?"– "**शौचक्रिया से निवृत्त होने** गया है ।"
क़दम बि क़दम बिया ।	**क़दम से क़दम मिलाता हुआ** आ ।

ता मंज़िल इमा=हमारे घर से

मौलूद=पैदा होने वाला बालक

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़रार ।	**चैन, स्थिरता, समझौता, भाव-ताव, भाँति ।**
शबो-रूज़ **क़रार** न दारद ।	रात-दिन (कभी) **चैन** नहीं मिलता ।
दुनिया **क़रार व स्सबाती** न दारद ।	संसार में **चैन और स्थिरता** नहीं है ।
दुनिया हमीशः **यक क़रार** न मी मानद ।	संसार सदा **एक प्रकार का** नहीं रहता ।
क़रार इ मा ईन् न बूद ।	हमारे बीच में यह **समझौता** नहीं था ।
मुस्तनतिक़ **क़रार** इ **ख़ुद** रा निविश्त ।	न्यायाधीश ने **अपना निर्णय** लिखा ।
अज़् **चिः क़रार** ऊरा ख़रीदीद ?	**किस हिसाब से** उसे ख़रीदा ?
संगहा रा रू यि यकदीगर **क़रार दादन्द ।**	पत्थरों को एक दूसरे पर **चुन दिया ।**
चिः रूज़ी रा बराय आन् कार **क़रार दादन्द ?**	उस कार्य के लिए कौनसा दिन **निश्चित किया गया है ?**
अन्जुमन चिः **क़रार दाद ?**	सभा ने क्या **प्रस्ताव पास किया ?**
व कश्ती वर कूह इ अरारात **क़रार गिरिफ़्त।**	और (तब) नौका अरारात पर्वत पर **आ टिकी ।**
अज़् शुनीदन् इ ईन् ख़बर **क़रार गिरिफ़्तम् ।**	यह समाचार सुनकर **मुझे चैन पड़ा ।**
राय इ मा वर ईन् **क़रार गिरिफ़्त ।**	हमारी राय इस बात पर सर्वसम्मति से तय हुई ।
निर्ख़हा यि अजनास अज़् **क़रार** इ **ज़ैल** अस्त :–	सामान की मूल्य-सूची **निम्नलिखित प्रकार से** है :–
अज़् क़रारी कि मी गूयन्द :–	**सूचना मिली है कि :–**
बि क़रार इ **साबिक़** मर्तबन् दर्स मी ख़्वानीद या ख़ैर ?	तुम **पहले की ही भाँति** नियमित रूप से पाठ पढ़ते हो या नहीं ?
अज़् ईन् क़रार ऊ मरा पानसद रियाल दाद ।	**इस प्रकार** (तब) उसने मुझको **पाँच सौ** रियाल दिये ।
तफ़सील **अज़् ईन् क़रार** अस्त :–	विशेष विवरण **इस प्रकार** है :–
क़रार'श् ईन् न बूद ।	**यह अच्छा नहीं हुआ ।**
बा कसी इमरूज़ **क़रारदाद** इ **मुलाक़ात** दारम् ।	किसी के साथ आज **मिलने का समय** दे रखा है ।
क़रारदादी वा आन् शिरकत मुनअक़िद कर्दीम ।	हमने उस कम्पनी के साथ **एक समझौता** क्रियान्वित किया है ।

स्सबात=स्थैर्य, स्थिरता
मुस्तनतिक़=न्यायाधीश
निर्ख़=मूल्य, भाव
ज़ैल=निम्नलिखित

साबिक़ मर्तबन्=पहली प्रकार से
या ख़ैर=या नहीं
तफ़सील=विवरण
शिरकत=कम्पनी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़त्अ (क़त)	काटना, विच्छेद, निर्धारण करना ।
अज़् **क़त** इ **अशजार** सब्ज:ज़ार रेगिस्तान मी गर्दद ।	**वृक्षों के काटने से** हरियाली भूमि रेगिस्तान बन जाती है ।
क़त्अ म कुनीद तअ़ल्लुक़ अज़् मा ।	हमसे सम्बन्ध **विच्छेद** मत कीजिये ।
हर कि **क़त** इ **मज़ाकिर:** यि दीगरान् मी कुनद ग्रबलही यि खुद रा थ्साबित मी कुनद ।	जो दूसरों की **बात काटता** है, अपनी मूर्खता को सिद्ध करता है ।
क़त ई **उमीद कर्द:** न ख़्वाहद नईम इ दह्‌र ।	**आशा टूटा हुआ** (हताश) विश्व के धनी (प्रभु) से याचना नहीं करता ।
ह़क़ तआ़ला अज़् **क़त** इ **रहि़म** नही कर्द: अस्त ।	परमात्मा ने अपने सम्बन्धियों से **सम्बन्ध विच्छेद** का निषेध किया है ।
क़त इ **नज़र अज़् ख़वास** इ दीगर ऊ इंगलिश हम दानद ।	अन्य **गुणों के अतिरिक्त** वह अंग्रेजी भी जानता है ।
दस्तहाय'श् रा **क़तअ़ कर्दन्द** ।	उसके हाथ **काट दिये गये** ।
ऊ मज़ाकिर: यि मारा **क़तअ़ क़र्द** ।	उसने हमारी बातचीत में **विघ्न डाल दिया** ।
मन् दावा यि तरफ़ैन रा **क़तअ़ कर्दम्** ।	मैंने दोनों पक्षों का दावा **ख़ारिज कर दिया** ।
क़ीमत इ अजनास रा अव्वल बायद **क़त्अ कर्द** ।	पहले वस्तुओं का मूल्य **निर्धारण कर देना चाहिए** ।
उमीद इ ह़यात रा **क़त्अ़ कर्दम्** ।	मैंने जीवन की **आशा छोड़ दी** ।
ईन् रा कि शुनीदम् **क़त्अ़ कर्दम्** कि मुर्द: अस्त ।	जब मैंने यह सुना तो **मुझे विश्वास हो गया** कि वह मर चुका है ।
अगर **क़त्अ** इ **उ़ज़्व'म्** कुनी अज़् राह इ रास्त पसो-पीश न कुनम् ।	यदि तू **मेरे अंग-अंग काट दे** तो भी सत्य के मार्ग से इधर-उधर नहीं हिलूँगा ।
क़त इ **मुख़ाबिर:** चिरा कर्दी ?	**पत्र व्यवहार** क्यों **बन्द** कर दिया ?
हनूज़ **क़त** इ **क़ीमत** न कर्द: ई ?	अभी तक **मूल्य निर्धारण** नहीं किया ?
क़तअ़न् रंजीद: कि नयामद: अस्त ।	वह **निश्चित रूप से** बुरा मान गयी है क्योंकि नहीं आयी है ।
क़तअ़न् न गुफ़्त कि चि: बायद कर्द ।	(उसने) **निर्णीत भाव से** यह नहीं कहा कि क्या करना चाहिये ।
ऊ **क़तअ़नाम:** बि मुस्तनतिक़ दाद ।	उसने **शपथ-पत्र** न्यायाधीश को दे दिया ।
ऊ **जवाब** इ **क़तई** न दाद ।	उसने कोई **निश्चित उत्तर** नहीं दिया ।
जंग इ डंकर्क **जंग** इ **क़तई** न वूद ।	डंकर्क का युद्ध **निर्णायक युद्ध** नहीं था ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़लम ।	**लेखनी, लिखना, क़िस्में, प्रकार ।**
बा क़लम बिनिवीसीद, नै बा मिदाद ।	**क़लम से** लिखिये, पेन्सिल से नहीं ।
मन् **क़लम** इ **गच** दारम् ।	मेरे पास **खड़िया की चौक** है ।
दूस्त'म् बा **क़लम** इ **सरबी** निवीसद ।	मेरा मित्र **पैन्सिल** से लिखता है ।
दूस्त'त् **बा क़लम मू** मुसव्विरी मी कुनद ।	तेरा मित्र **बालों की कूची** से चित्रकारी करता है ।
दर ज़मानहा यि बास्तान **क़लम** इ **पर** रा इस्तेमाल मी कर्दन्द ।	प्राचीन काल में **परों की क़लम** का प्रयोग किया जाता था ।
ईन् **क़लम** इ **ख़ुद नवीस** गरान् अस्त ।	यह **फ़ाउन्टेनपैन** मँहगा है ।
सर क़लम इ ईन् क़लम ख़ूब नी'स्त ।	इस क़लम की **नोक** (निब) ठीक नहीं है ।
क़लम इ **अफ़्व** बर गुनाह'म् कश ।	**क्षमा की क़लम** मेरे अपराधों पर फेर दे ।
ईन् रक़म **अज़् क़लम** उफ़्ताद ।	यह संख्या **लिखने से** रह गयी ।
क़लम ईन् जा रसीदो–सर विश्कस्त ।	**क़लम** यहीं तक पहुंची थी (इतना ही लिख पाये थे) कि उसकी नोक टूट गयी ।
ऊ यकी अज़् **अरबाब** इ **क़लम** बूद ।	वह एक **सुलेखक** (विद्वान) था ।
आन् दू रक़म रा **क़लम बिज़नीद ।**	उन दो संख्याओं को **काट दीजिये ।**
चन्दीन् क़लम जिन्स दर मुग़ाज़: दारीम ।	हम **कई प्रकार की चीज़ें** दूकान में रखते हैं ।
यकक़लम हम: रा फ़ुरूख़्तम् ।	(मैंने) **इकट्ठा ही** सारा सामान बेच दिया ।
ईन् सूरत **क़लम बि क़लम** बायद रसीदगी शवद ।	इस सूची से **एक-एक चीज़** का मिलान कर लेना चाहिये ।
ज़न'श् बि **हफ़्त क़लम** आरास्त ।	उसकी पत्नी ने **सातों शृंगार** किये ●
दर नीम साअत दू काग़ज़ **क़लम अन्दाज़ निविश्त ।**	आधे घण्टे में दो पत्र **घसीट डाले ।**
कलम इ **क़लम ख़ुर्द रा** मुआयन: कर्दन्द ।	**काटे हुये अक्षरों का** निरीक्षण किया गया ।
ख़ुद रा **आ़लिमी क़लमदाद** मी कर्द ।	अपने आपको **प्रसिद्ध पण्डित** घोषित कर दिया ।
समरक़न्द व बुख़ारा **दर क़लम रौ** यि हिन्दुस्तान बूदन्द ।	समरक़न्द और बुख़ारा भारत के **अधिकार में** थे ।

मिदाद=पैन्सिल
गच=खड़िया, चौक
मुसव्विरी=चित्रकारी
सरब=सुरमा, सीसा (संस्कृत में सीसा धातु को नाग तथा सर्प कहते हैं । सर्प का अरबी उच्चारण सरब है)
दर क़लम रौ=लेखनी के आदेश की सीमा में, शासन के अधिकार में

● फ़ारसी में सात शृंगार का प्रयोग होता है, संस्कृत में सोलह शृंगार की परम्परा है । ईरानी नारियों के सात शृंगार इस प्रकार हैं– १. हिना (मेंहदी), २. वस्म: (भौं के ऊपर लगायी जाने वाली नील), ३. सुर्ख़ाब (ललाई), ४. सफ़ीदाब (सफ़ेद पाउडर, पराग), ५. सुर्म: (काजल), ६. ज़र वर्क़ (सोने की पत्ती), ७. ख़ाल (नक़ली तिल) इसे 'हरहफ़्त' भी कहते हैं ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अशआ़र अज़ सादी ।

हर कि बर ख़ुद दर इ सवाल कुशद ।
ता विमीरद नियाज़मन्द बुवद ।।
आज़ विगुज़ारो–पादशाही कुन् ।
गर्दन ई वी तमअ़ बुलन्द बुवद ।।

× × ×

मीराथ्स इ पिदर ख़्वाही, इ़ल्म ई पिदर आमूज़ ।
क'ईन् माल इ पिदर ख़र्ज तवान कर्द बि दह रूज़ ।।

× × ×

म कुन् नमाज़ बर आन् हीचकस् कि हीच न कर्द ।
कि उ़म्र दर सर इ तह़सील इ माल कर्दो–न ख़ुर्द ।।

× × ×

दिरख़्त ई करम हर कुजा वीख़ कर्द ।
गुज़श्त अज़् फ़लक शाख़ो-वाला यि ऊ ।।
गर उम्मीदवारी क'ज़ू बर ख़ुरी ।
बि मिन्नत म निह अर्रः बर पा यि ऊ ।।

× × ×

शुक्र ई ख़ुदाय कुन् कि मुवफ़्फ़क़ शुदी बि ख़ैर ।
ज़ि'इनआ़म इ फ़द्ज़्ल ऊ नै मुअ़त्तिल गुज़ाश्त'त् ।।
मिन्नत म निह कि ख़िदमत इ सुलतान् हमी कुनम् ।
मिन्नतशनास अज़ू कि वि ख़िदमत विदाश्त'त् ।।

सादी के कुछ पद ।

जो अपने ऊपर याचना का द्वार खोलता है ।
जब तक मरता है याचक ही रहता है ।।
लोभ छोड़ दे और बादशाही कर ।
निर्लोभ की गरदन ऊँची होती है ।।

× × ×

(यदि तू) पिता का उत्तराधिकार चाहता है तो पिता की विद्या सीख ।
क्योंकि यह पिता का छोड़ा हुआ धन दस दिन में खर्च हो सकता है ।।

× × ×

उस नीच के (जनाज़े) पर नमाज़ मत पढ़ जिसने कि कुछ नहीं किया ।
जिसने कि जीवन भर माल जोड़ा पर उसका भोग नहीं किया ।।

× × ×

कृपा का वृक्ष हर कहीं जड़ जमा लेता है ।
उसकी शाखाएं और फुनगियाँ आकाश से भी ऊपर चली जाती हैं ।।
यदि तू चाहता है कि उस (कृपावृक्ष) से फल खाये ।
(तो) अहसान जताकर उसकी जड़ पर आरा मत चला ।।

× × ×

परमात्मा को धन्यवाद दे कि उसकी कृपा से तू सफल हो गया ।
तथा उसने दया के पुरस्कार से तुझे वञ्चित नहीं किया ।।
अहसान मत जता कि मैं राजा की सेवा कर रहा हूँ ।
उसका अहसान मान कि (उसने) तुझको सेवा में रखा ।।

दर इ सवाल=याचना का द्वार
कुशद=खोलता है
ता=जब तक (संस्कृत–यावत्–तावत्)
नियाज़मन्द=याचक
आज़=लोभ
विगुज़ार=छोड़ दे
वी तमअ़=निर्लोभ (व्यक्ति)
मीराथ्स=उत्तराधिकार

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़ौल ।	**वचन, वीसा ।**
तू अज़् **क़ौल** इ ख़ुद तख़ल्लुफ़ नमूदी ।	तूने अपने **वचन** से विपर्यास प्रदर्शित किया ।
मन् **क़ौल दादम्** कि बि दीदन् इ ऊ बिरवम् ।	मैंने **वचन दिया** कि (मैं) उससे मिलने आऊँगा ।
क़ौल मी दिहम् ख़ूब बाशद ।	(मैं) **वचन देता हूँ** कि यह ठीक रहेगा ।
अज़् ऊ **क़ौल गिरिफ़्तम्** कि फ़र्दा बियायद ।	(मैंने) **उससे वचन ले लिया** कि कल आयेगी ।
बि क़ौल इ **ख़ुद** वफ़ा कुन् ।	**अपने कहने के अनुसार** पूरा कर ।
ऊ **क़ौल** इ **ख़ुद** रा शिकस्त ।	उसने **अपना वचन** भंग किया ।
तू हम **क़ौल** इ **ख़ुद** रा अन्जाम न दादी ।	तूने भी **अपना वचन** पूरा नहीं किया ।
चिरा **अज़् क़ौल** इ **ख़ुद** बर गश्त ?	(वह) क्यों **अपने वचन से** फिर गया ?
तज़किर: रा क़ून्सूल **क़ौल कशीद** ।	कौन्सुल ने पासपोर्ट पर **वीसा दे दिया** ।
ईन् आदम कि **क़ौल न दारद** ।	यह आदमी कभी **वचन पूरा नहीं करता** ।
"**क़ौल** इ **शर्फ़**" ? – "वले" ।	"**पक्की बात ?**" – "हाँ ।"
क़ौल व फ़ेल'श् यकी'स्त ।	उसके **वचन और कर्म** एक जैसे हैं ।
हर दू **क़ौलो-क़रार** कर्द ।	दोनों ने **वचन-प्रतिवचन** किये ।
बि क़ौल इ **शख़्सी** – मार रा ऐतबार कुन् दरूग़ज़न रा म कुन् ।	**जैसा कि किसी ने कहा है** – साँप का विश्वास कर लेना, झूठे का नहीं ।
बि क़ौल इ **क़ुदमा** – "बिरादर कि दर बन्द इ ख़ीश'स्त, नै बिरादर नै ख़ीश'स्त ।	**जैसा कि पुराने लोगों का कहना है** – "वह भाई जो अपने काम से काम रखता है - न भाई है न अपना है ।"
बि क़ौली दू नफ़र, **बि क़ौली** सिह नफ़र बूदन्द ।	**कोई कहता है** दो आदमी थे, **कोई कहता है** तीन आदमी थे ।
क़ौल'श् क़ौल बूद ।	**उसका वचन वचन था** (पक्का वचन था) ।
क़ौलो-बौल इ ईन् शख़्स यकी'स्त ।	इसकी **बात और मूत्र** एक जैसे हैं (हिन्दी - इसकी बात और कुत्ते की लात) ।
बा ख़ुशक़ौली हर रूज़ मी आयद ।	प्रतिदिन **नियमित रूप से** आता है ।
नक़्ल इ **क़ौल** रा दर क़ल्ब कर्दन्द ।	**सूक्ति** को इन्वर्ट ("........") कर दिया ।

तख़ल्लुफ़=विपर्यास, विरोध
वफ़ा कुन्=(वचन) पूरा कर
अन्जाम न दादी=(तूने) पूरा नहीं किया
तज़किर:=पासपोर्ट
क़ून्सूल=कौन्सुल

क़ौल=वीसा (उच्चारण, ग़ुल)
वले=हाँ
दरूग़ज़न=झूठ बोलने वाला
कुदमा=(क़दीम का बहुवचन) पुराने लोग
दरबन्द इ ख़ीश=अपने काम में फँसा हुआ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़ुव्वः ।	**शक्ति, सामर्थ्य ।**
हर चिः दर **क़ुव्वः** यि ऊ बूद कर्द ।	जो कुछ उसकी **सामर्थ्य** में था उसने किया।
क़ुव्वः यि **निज़ामी** यि हिन्द अफ़ज़ूदःतर मी बायद ।	भारत की **सैन्यशक्ति** बढ़ायी जानी चाहिये।
ईन् माशीन **क़ुव्वः** यि **ज़ियादी** दारद ।	यह कार **अधिक शक्तिशाली** है ।
वच्चः यि नौज़ाद **क़ुव्वः** यि नातक़ः न दारद ।	नवजात वालक में **बोलने की शक्ति** नहीं होती ।
क़ुव्वः यि **माशीन** खराब शुदः अस्त ।	**मोटर की बैटरी** खराव हो गयी है ।
दर ज़ईफ़ी **क़ुव्वः** यि **बासिरः** कम मी शवद ।	बुढ़ापे में **दृष्टि शक्ति** कम हो जाती है ।
ऊ कर बूद, **क़ुव्वः** यि **सम्अः** न मान्द ।	वह वहरा हो गया, **श्रवण शक्ति** नहीं रही।
इमरूज **क़ुव्वः** यि **ज़ायक़ः** यि मन् खराब शुदः अस्त ।	आज मेरी **आस्वाद शक्ति** ख़राव हो रही है।
क़ुव्वः यि **शामः** यि सग खेली ज़ियाद बाशद ।	कुत्ते की **घ्राण शक्ति** वहुत अधिक होती है ।
क़ुव्वः यि **लामसः** यि कूरी ज़ियाद बाशद ।	एक अन्धे की **स्पर्श शक्ति** बढ़ ज़ाती है ।
क़ुव्वः यि **हाफ़िज़ः** यि तू खूब अस्त ।	तेरी **स्मरण शक्ति** अच्छी है ।
क़ुव्वः यि **ज़ाब्तः** अगर न दारी हीच न दारी ।	यदि तेरी **धारणा शक्ति** नहीं है तो तू कुछ नहीं रखता ।
तमस अदीसून **क़ुव्वः** यि **मुतख़य्यिलः** ज़ियाद दाश्त ।	टामस ऐडीसन की **कल्पना शक्ति** बहुत बढ़ी चढ़ी थी ।
गुरु गोविन्द सिंह **क़ुव्वः** यि **इरादः** दाश्त ।	गुरु गोविन्द सिंह में **संकल्प शक्ति** थी ।
क़ुव्वः यि **हयवानिय्यः** हर जा वि कार न मी आयद ।	**पाशविक शक्ति** हर जगह काम नहीं देती ।
क़ुव्वः यि **मैल बि मरकज़ रा** 'सेन्ट्रीपैटल पौवर' मी ख़्वानन्द ।	**केन्द्राभिमुख शक्ति** को सेन्ट्रीपेटल फ़ोर्स कहते हैं ।
अज़् **क़ुव्वः** यि **फ़रार अज़् मरकज़** अ़स्ल मी गीरन्द ।	**केन्द्रापसारी (सेन्ट्रीफ़्यूगल) शक्ति** से शहद इकट्ठा करते हैं ।
ईन् माशीन **क़ुव्वः** यि **बीस्तो-पंज** अस्ब दारद ।	यह कार पच्चीस **अश्वों की शक्ति** रखती है।
ज़मीन **क़ुव्वः** यि **मक़नातीस** दारद ।	पृथ्वी **आकर्षण शक्ति** रखती है ।
क़ुव्वः अश् न मी रसद कि····।	यह **उसकी सामर्थ्य** में नहीं है कि····।

क़ुव्वः=(उच्चारण-गुव्वे)=क़ुव्वत, शक्ति
निज़ामी=सेना सम्बन्धी
अफ़ज़ूदःतर=वढ़ी हुई
नातक़ः=वाणी, बोलना

माशीन=मोटरकार (भारत में माशीन कहने से सिलाई मशीन का बोध होता है, ईरान में माशीन कहने से मोटर-कार का बोध होता है)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़ैद ।	**जकड़, ठेका, बन्धन, शर्त, क्रियाविशेषण** ।
सह़्हाफ़ किताब रा **दर क़ैद** गुज़ाश्त ।	जिल्दसाज़ ने पुस्तक को **दाब में** लगा दिया ।
क़ैद ड़ **हमसायगी** व दूस्ती रा ख़ियाल कुन् ।	**पड़ोसीपन** और मैत्री बन्धन का विचार कर ।
ईन् क़रारदाद **क़ैदहायी** हम दारद ।	इस ठेके में **कई शर्तें** भी हैं ।
यक चुनीन् माद्दःयी **बायद क़ैद कर्द** ।	ऐसा एक परिच्छेद भी इस अनुबन्ध में **शामिल कर देना चाहिये** ।
दर क़ैद ड़ **मुहब्बत** बूद ।	वह **प्रेम बन्धन में** बँधा हुआ था ।
क़ैद'श् बिज़न् ।	**इसकी चिन्ता छोड़** ।
आलमगीर शिवाजी रा **दर क़ैद गुज़ाश्त** ।	आलमगीर ने शिवाजी को **बन्दी बना लिया** ।
आज़ादी अज़् हर **क़ुयूद** तब्अ़ ड़ इन्सानी अस्त ।	**हर प्रकार के बन्धनों से** मुक्ति मनुष्य का स्वभाव है ।
अरूपा **दर क़ैद** ड़ बी **क़ैदी** गिरिफ़्तः अस्त ।	यूरोप आज **उन्मुक्तता के बन्धन** में बन्दी है ।
बा क़ैद ड़ **ईन्** कि····।	**इस शर्त के साथ** कि····।
बिदून ड़ हीच **क़ैदी** बिगू ।	**बिना किसी बन्धन के** कहो ।
क़ैद ड़ **हयातो**–बन्द ड़ ग़म हर दू यकी'स्त लाजरम ।	**जीवन का बन्धन** और दुःखों का बन्धन एक ही वस्तु है ।
अज़् क़ैद ड़ **हयात** रुस्त ।	(वह) **जीवन के बन्धन से** मुक्त हो गया ।
दुनिया बाज़ीचिः ख़ानः नी'स्त, **क़ैदख़ानः** हस्त ।	संसार खेल की जगह नहीं **बन्दीगृह** है ।
क़ैदी फ़रार कर्द ।	**बन्दी** भाग गया ।
ईन् **हर्फ़** ड़ **क़ैद कर्दः** चिः मानी दारद ?	इस **इन्वर्ट किये हुये** शब्द का क्या अर्थ है ?
या ख़ुदा ! चिरा मरा हनूज़ **दर क़ैद** ड़ **हयात'म्** दारी !	हे परमात्मन् ! किसलिये मुझ को आज तक **जीवित** रखा है !
क़ैद रा 'ज़र्फ़' हम मी नामीदन्द ।	**क्रियाविशेषण** को 'ज़र्फ़' भी कहा गया है ।
क़ैद रा दू क़िस्मतहा यि ख़वास हस्तन्द ।	**क्रियाविशेषण** के दो विशेष भेद हैं ।
क़ैद ड़ **ज़मान** व **क़ैद** ड़ **मकान** ।	**कालवाची क्रियाविशेषण** और **देशवाची क्रियाविशेषण** ।

सह़्हाफ़=जिल्दसाज़, दफ़्तरी
माद्दःयी=एक उपवन्ध, एक परिच्छेद
क़ुयूद=(क़ैद का बहुवचन)=बन्धनों
बाज़ीचिः ख़ानः=खेल की जगह, क्रीड़ा स्थल
क़ैदकर्दः=(पर्याय—दर क़ल्ब कर्दः) कोष्ठक में रखा हुआ, इन्वर्ट किया हुआ
क़ैद ड़ ज़मान=कालवाची क्रियाविशेषण, जैसे–तब, अब, जब, कब आदि
क़ैद ड़ मकान=देशवाची क्रियाविशेषण, जैसे–वहाँ, यहाँ, जहाँ, कहाँ आदि

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कार (१)	काम (संस्कृत–कार्य)
इमरूज़ दर इदारः कारी न दारम् ।	आज मुझे दफ़्तर में कोई काम नहीं है ।
ईन् यक कार आक़िलानः न बूद ।	यह काम बुद्धिमानी का नहीं हुआ ।
ईन् कारी बि आन् न दारद ।	इसका उससे कोई सम्बन्ध नहीं है ।
ह़ाला कारी न मी तवान कर्द ।	अब कुछ नहीं हो सकता ।
ईन् माशीन चिः त़ोर कार मी कुनद ?	यह मशीन किस तरह काम करती है ?
इमरूज़ चन्द कार कर्दी ?	आज क्या कमाया ?
दर यकसाल कार अज़् पीश न बुर्द ।	एक वर्ष में काम पहले से अधिक नहीं बढ़ा।
गुफ़्तन् ज़ि मन्, अज़् तू कार बस्तन् ।	निवेदन मेरा है, काम करना तेरे हाथ में है ।
बा शुमा कार दारम् ।	आप से कुछ काम है ।
ऊ कार रा तमाम कर्दः अस्त ।	उसने काम पूरा कर लिया है ।
कार'श् साख़्तः शुद ।	उसका काम तमाम हो गया (वह पूरी तरह बरबाद हो गया) ।
कार'श् बाला गिरिफ़्तः अस्त ।	उसका काम चल निकला है ।
ईन् कार ़ इ मन् नी'स्त ।	यह मेरा काम नहीं है ।
कारी न दारद ।	यह तो कुछ काम ही नही है (मामूली सी बात है) ।
कारी वा ऊ न दाश्तः बाश ।	उससे कोई सम्पर्क मत रखो (या "उसे तंग मत करो") ।
कार अज़् कार गुज़श्त ।	जो हो गया सो हो गया ।
माशीन रा बि कार अन्दाख़्तन्द ।	मशीन को चालू कर दिया ।
चश्म'श् अज़् कार उफ़्तादः अस्त ।	उसकी आँखें काम से गयी (आँखें खराब हो चुकी हैं) ।
ईन् अफ़ज़ार रा बराय चिः कार मी बुरन्द ।	इस औज़ार को किस काम में लेते हैं ।
पन्द ़ इ ऊ दर ईन् मौरिद बि कार आमद ।	उसकी शिक्षा इस अवसर पर काम आयी ।

आक़िलानः=बुद्धिमानों के योग्य, पण्डितार्हः

अज़् तू कार बस्तन्=(शब्दार्थ–तुझसे है कार्य सिद्धि), काम करना तेरे अधिकार में है ।

कार'श् साख़्तः शुद=यह वाक्य दो विपरीत अर्थों में प्रयुक्त होता है । १–उसका काम सिद्ध हो गया । तथा, २– उसका काम बिगड़ गया । प्रायः 'उसका काम बिगड़ गया' इस प्रसिद्ध अर्थ में प्रयोग होता है ।

मौरिद=अवसर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कार (२)	**काम (संस्कृत-कार्य)**
बुख़ारीसाज़ बुख़ारी रा **कार गुज़ाश्त** ।	बुख़ारी ठीक करने वाले ने बुख़ारी (स्टोव) को **ठीक कर दिया** ।
ऊ दर ईन् इदारः **सर ए कार** बूद ।	वह इस कार्यालय में बहुत **महत्वपूर्ण** हो गया है ।
ईन् कार ए **आबो-आतिश** अस्त ।	यह काम आग पानी का (अत्यन्त **नाज़ुक**) **काम** है ।
कार ए बीकारी मी कुनद ।	**बेकार के काम** करता रहता है ।
ईन् **कार गिरहख़ुर्दः** अस्त ।	वह **काम उलझा हुआ** है ।
कार ए नीकू कर्दन् अज़् पुर कर्दन् अस्त ।	**अच्छी तरह काम** अभ्यास से होता है ।
"**कार रा** किः कर्द ?"–"आन् कि तमाम कर्द ।"	**काम** किया किसने कि अख़ीर में हाथ लगाया जिसने ।
कारी बि कुन् बि हर थ्सवाब । नै सीख़ बिसूज़द, नै कबाब ।।	हर एक की **वाह वाही लूट** । न शूल तपे न मांस भुने ।। (चोर से कह चोरी कर– साहू से कह जागता रह ।)
कार ए हर बुज़ नी'स्त ख़िरमन कूफ़्तन् । गाव ए नर मी ख़्वाहदो-मर्द ए कुहन ।।	बकरे से दाँय नहीं होती । इसके लिये ऊँचा पूरा बैल और पक्का पोढ़ा आदमी चाहिये ।
बि कारहा ए गरान् मर्द ए कारदीदः फ़िरिस्त ।	**गुरु कार्यों के लिये** अनुभवी आदमी को भेजो ।
गह गह चुनान् **बि कार नयायद** कि हंज़ली ।	कभी-कभी (मिश्री) **उतना काम नहीं करती**, जितनी कि ऊँट कटेरी ।
कार ए इमरूज़ बि फ़र्दा म फ़कन् ।	**आज के काम को** कल पर मत छोड़ो ।
ज़न'श् **कारकुन्** अस्त ।	उसकी पत्नी बड़ी **कार्यशील** (कमेरी) है ।
बाफ़िन्दः **कारगर** न दाश्त ।	जुलाहे के पास कोई **कारीगर** नहीं था ।
दवा **कारगर शुद** ।	दवा ने अपना **असर दिखा दिया** ।
ईन् मीज़ **कारकर्दः** अस्त	यह मेज़ **बरती हुई** (सैकिण्डहैण्ड) है ।
ऊ **कारपरदाज़** अस्त ।	वह **कार्य-व्यवस्थापक** है ।
शुमा **चिःकारः** ईद ?	तुम **किस काम के** हो ? ("क्या काम करते हो?")
मन् **ईन् कारः** नी'स्त'म् ।	मैं **इस तरह** का आदमी नहीं हूँ ।
ज़ख़्म ए कारी ख़ुर्द ।	उसके **घातक घाव** लगा ।

बाफ़िन्द=बुनने वाला (बाफ़िन्दः, कुनिन्दः, बख़्शिन्दः जैसे शब्दों में 'शतृ प्रत्यय' द्रष्टव्य है । संस्कृत में शतृ प्रत्ययान्त रूप वयन्-वयन्तौ-वयन्तः आदि बनते हैं । संस्कृत के बहुवचनान्त रूप फ़ारसी के एक वचनान्त रूप के समकक्ष रख कर देखने से इनकी तुल्यरूपिता का भान हो सकता है ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

काग़ज़ । — **काग़ज़, पत्र, पतला छिलका** ।

काग़ज़ी बराय'श् निविश्तम् । — मैंने उसको **एक पत्र** लिखा ।

ऊ मरा **काग़ज़** न फ़िरिस्ताद । — उसने मुझ को **पत्र** नहीं लिखा ।

बाज़ी अज़् शार्गिदान् **काग़ज़** इ **सफ़ीद** मी ख़्वाहद । — विद्यार्थियों में से कोई **सफ़ेद** (**सादा**) **काग़ज़** चाहता है ।

बाज़ी **काग़ज़** इ **खत्तकशीदः** मी ख़्वाहद । — कोई **लाइनदार काग़ज़** चाहता है ।

दूस्त'म् यकदस्तः **काग़ज़** इ **तहरीरी** ख़रीद । — मेरे मित्र ने एक दस्ता **लिखने का काग़ज़** ख़रीदा ।

यकबन्द **काग़ज़** इ **ख़ुश्ककुन्** रा चिः मी कुनी ? — एक रीम **ब्लाटिंग पेपर** का तू क्या करेगा ?

काग़ज़ इ **वा गीरः** न मी दारीम । — हमारे पास **ब्लाटिंग पेपर** नहीं है ।

आया **काग़ज़** इ **सूज़नज़दः** दारीद ? — आपके यहाँ **स्टेन्सिल पेपर** है ?

काग़ज़ इ **बातिलः फ़ुरूश** आमदः अस्त । — **रद्दी काग़ज़ बेचने वाला** आया है ।

चुन् तरफ़ैन जंगीदन्द **काग़ज़पारः** रा कि सुल्हनामः मी ख़्वान्दन्द तफ़ावुत न कर्दन्द अज़् **काग़ज़** इ **तहारत** । — उभयपक्ष ने, जब वे युद्धरत हो गये तो उस **काग़ज़ के टुकड़े** को जिसे कि वे सन्धिपत्र कहते थे **शौचालय के काग़ज़** से भिन्न नहीं माना ।

काग़ज़ इ **ज़र** रा बरात हम मी ख़्वानन्द । — **चैक** को बरात भी कहते हैं ।

अकनून् **पूल** इ **काग़ज़** दर कार मी आयद । — आजकल **नोट** चलते हैं ।

ईन् **वज़न** इ **काग़ज़** इ बिलूर चिः क़द्र अस्त । — यह काँच (विलौर) का **पेपरवेट** कितने का है ?

हरचिः गूयीद **दर काग़ज़** बियावुरीद । — आप जो कह रहे हैं उसे **काग़ज़ पर** उतार (लिख) लीजिये ।

ऊ कार्तहा यि तबरीक रा **दर काग़ज़ पीचीद** । — उसने बधाई-पत्रों को **काग़ज़ में लपेट दिया** ।

दर हिन्दुस्तान ख़ेली **काग़ज़ख़ानःहा** यि बुज़ुर्ग हस्तन्द । — भारत में कई बड़ी **पेपर मिलें** हैं ।

दर मुग़ाज़ः यि मा **काग़ज़गीर** न मी फ़ुरूशीम । — हम अपनी दूकान में **पेपर क्लिप** नहीं बेचते ।

ईन् **गिर्दू** यि **काग़ज़ी** चिः क़द्र ? — ये **काग़ज़ी अख़रोट** कैसे दिये ?

शीर इ **काग़ज़ी** तर्सनाक न मी शवद । — **काग़ज़ का शेर** भयानक नहीं होता ।

यकदस्तः=एक दस्ता अर्थात् २४ कागज

सुल्हनामः=सन्धिपत्र

तफ़ावुत न कर्दन्द=भिन्न नहीं माना

बन्द=रीम अर्थात् २० दस्ता कागज़ या ४८० शीटें

गिर्दू=अख़रोट

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

काम ।

दर ज़बान इ फ़ारसी हर्फ़ इ **काम** सिह मानी हा दारद ।

काम दर मानी यि सक़फ़ इ दहान मी आयद ।

काम दर मानी यि दहन हम मी आयद ।

काम दर मानी यि आरज़ू हम मी आयद ।

काम=सक़फ़ इ दहान–१

ऊ **नाखुशी** यि **कामी** दारद ।

काम=दहन–२

ग़व्वास गर अन्दीश: कुनद **काम** इ **निहंग** ।

काम=आरज़ू–३

मुतरिब त्रिगू कि कार इ जहान शुद **बि काम** इ **मा** ।

कामो-नाकाम ईन् कार लाज़िमकर्दनी'स्त ।

ऊ **काम** इ **दिल** रसीद (गिरिफ़्त, याफ़्त) ।

पादशाह **काम** इ **दिल'श्** रसानीद (दाद, बख़्शीद)

ऊ **काम** इ **दिल** जुस्त (ख़्वास्त), वले न याफ़्त ।

शख़्सी कि **काम** इ **दिल'श्** मी रानद, कामरान मी शवद ।

शख़्सी कि **काम** इ **दिल** मी बीनद कामबीन मी शवद ।

ऊ दर हर कारी कि तअ़ह्हुद मी कुनद **कामयाब** मी शवद ।

ऊ **नाकाम** मुर्द ।

ऊ शख़्स इ **ख़ुदकाम** बूद ।

काम व नाकाम=चाहो या न चाहो (तौअन् व करहन्)

कामरान=आप्तकाम, अपनी कामना की वस्तु जिसे मिल गयी हो, वह व्यक्ति

त्र्यर्थक 'काम' शब्द ।

फ़ारसी भाषा में **'काम' शब्द** के तीन अर्थ होते हैं ।

काम 'तालु' के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

काम 'मुख' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है ।

काम 'कामना' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है ।

काम=तालु–१

उसको **तालु रोग** है ।

काम=मुख–२

ग़ोताखोर यदि **मगर के मुँह** से डरता रहे ।

काम=कामना–३

हे गायक ! कह, कि संसार **हमारी कामना के अनुसार** हो गया है ।

चाहो या न चाहो, यह कार्य अवश्यकर्तव्य है ।

उसने **हृदय की कामना** पा ली ।

राजा ने उसको **उसकी कामना की वस्तु** दिला दी ।

उसने अपने **हृदय की कामना** की खोज की पर उसे वह नहीं मिली ।

वह व्यक्ति जो कि **अपने हृदय की कामना** को पा लेता है, 'कामरान' कहलाता है ।

वह व्यक्ति जो कि अपने **हृदय की कामना को** प्रत्यक्ष देख पाता है 'कामबीन' कहलाता है ।

वह जिस काम को लेता है उसी में **सफल** हो जाता है ।

वह **असफल** ही मर गया ।

वह **स्वार्थी** पुरुष था ।

निहंग=मगर

कामबीन=दृष्ट काम, कामना की वस्तु को जिसने देख लिया हो वह व्यक्ति

नाकाम=असफल, अनाप्तकाम

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कुजा ।	**कहाँ, जहाँ (संस्कृत – क्व + ज्या)**
कुजा मी रवीद ?	(आप लोग) **कहाँ** जा रहे हैं ?
कुजा हरगिज़ ईन् कार रा ख़्वाहद कर्द ?	वह यह काम **कब** करेगा ?
कुजा'त् दर्द मी कुनद ?	तेरे दर्द **कहाँ** होता है ?
दर कुजा इक़ामत कर्दी ?	**कहाँ** ठहरे हो ?
अज़् कुजा आन् रा ख़रीदीद ?	उसे **कहाँ से** ख़रीदा ?
अज़् कुजा बायद बिरवीम ?	हम **किधर से** चलें ?
अज़् कुजा ईन् त़ोर मुतमव्विल शुद ?	वह **कहाँ से** इतना धनी हो गया ?
अज़् कुजा कि बीमार न बाशद !	**कहीं** बीमार न हो गया हो !
दीरूज़ **ता कुजा** ख़्वान्दीम ?	कल हमने **कहाँ तक** पढ़ा था ?
ऊरा **दर कुजा** दीदी ?	उसे **कहाँ** देखा था ?
हीच न शुनीदीद ! **कुजा** बूदी !	कुछ नहीं सुना ! **कहाँ थे** ! (ध्यान कहाँ था !)
बा शुमा अर्ज़ मी कुनम्; **कुजा हस्तीद** ?	आपसे ही कह रहा हूँ, **कहाँ हो** ? (ध्यान कहाँ है ?)
शुमा **अह्ल इ कुजा ईद** ?	आप **कहाँ के निवासी हैं** ?
ईन् कुजा व आन् कुजा !	**कहाँ यह** और **कहाँ वह** !
अज़् कुजा'स्त ता बि कुजा !	**कहाँ से कहाँ तक** ! (कितना अन्तर है !)
तू कुजा ! व ईन् ह़र्फ़ हा !	**तू** ! और ये शब्द ! (तेरे मुँह से ये शब्द !)
हर कुजा रफ़्त क़रार न याफ़्त ।	**जहाँ भी** गया चैन नहीं पाया ।
हर कुजा चश्मः इ बुवद शीरीन ।	जहाँ भी मीठे जल का स्रोत होता है ।
बि हर कुजा नाज़ सर बर आरद ।	**जहाँ कहीं भी** नाज़ (रूप का गर्व) होता है ।
ईन् शख़्स **कुजाई** अस्त ?	यह आदमी **कहाँ का** है ?

कुजा = कहाँ (यह शब्द दो शब्दों के योग से बना है । एक है कु दूसरा है जा । कु संस्कृत के क्व का समानार्थक है । क्व का अर्थ है कहाँ । यह क्व संस्कृत में भी कु के रूप में बदल जाता है जैसे कुत्र । जा या जाय का अर्थ फ़ारसी में स्थान और भूमि है । संस्कृत में ज्या का भी यही अर्थ है । अतः संस्कृत के क्व ज्या में फ़ारसी के कुजा की निष्पत्ति छुपी हुई है । स्मरण रहे क्वज्या शब्द प्रक्रिया मात्र बताने के लिये है । संस्कृत में क्वज्या शब्द का प्रयोग कहीं नहीं हुआ है । संस्कृत में कुजा के अर्थ में कुत्र शब्द का प्रयोग होता है ।

इक़ामत = ठहरना, उतरना

अह्ल = निवासी, वासी, (निवास करने वाला)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कस् ।	आदमी, कोई, किसी (संस्कृत–कस्–कः) ।
कसान् इ ख़ुद रा बि कुमक ख़्वास्त ।	अपने **आदमियों** (नौकरों) को सहायता के लिये पुकारा ।
कसी रा दर राह दीदी या ख़ैर ?	**किसी को** रास्ते में देखा या नहीं ?
ख़ैर, **कसी रा** न दीदः अम् ।	नहीं, **किसी को** नहीं देखा ।
कसी कि मुह़ब्बत न दारद हीच न दारद ।	**जिसको कि** प्रेम नहीं मिला उसको कुछ नहीं मिला ।
हीच कस् बि ईन् ज़ूदी न ख़्वाहद आमद ।	इतनी जल्दी **कोई** नहीं आ पायेगा ।
वले, मर्द **आन् कस्** अस्त अज़् रू यि तह़क़ीक़ ।	हाँ, वीर **वह आदमी** है विवेक की रू से ।
राज़ इ ख़ुद रा **बा हमः कस्** म गू ।	अपने रहस्य को **हर किसी से** मत कह ।
हरकस् कि ख़ुदा रा दूस्त दारद बन्दः यि ऊरा नीज़ दूस्त दारद ।	**जो कोई भी** ईश्वर से प्रेम करता है, उसके बन्दों को भी प्यार करता है ।
कसो–नाकस् रा पीश इ ख़ुद ख़्वान्द व गुफ़्त ।	**बड़े-छोटे** सभी को अपने पास बुलाया और कहा ।
दर ख़ानः अगर **कस्** अस्त यक ह़र्फ़ बस अस्त ।	अगर घर में एक **समझदार** है तो एक ही शब्द काफ़ी है ।
चुन् **कसान्** इ **ऊ** शुनीदन्द ह़मलः आवुर्दन्द ।	जब **उसके सम्बन्धियों ने** सुना तो उस पर आक्रमण कर दिया ।
चुन् पादशाह मुर्द, **कसो-कार'श्** अज़् तूरान आमदन्द ।	जब राजा मर गया तो **उसके सम्बन्धी** तूरान से आये ।
चुन् ऊ ख़रूशीद, **कसो-कूय'श्** बि दर आमदन्द ।	जब वह चिल्लाया तो **उसके गली मुहल्ले वाले** निकल आये ।
ख़ुश गुफ़्त पर्दःदार कि **कस्** दर सराय नी'स्त ।	ठीक ही कहा दरबान ने कि घर में **कोई आदमी** नहीं है ।
शमशीर इ नीक'ज़् आहन इ बद चुन् कुनद **कसी** ।	अच्छी तलवार **कोई** बुरे लोहे से कैसे बनाये ।
ना कस् बि तरबियत न शवद, ऐ ह़कीम ! कस् ।	हे पण्डित ! **मनुष्येतर प्राणी** शिक्षा से मनुष्य नही बन जाता ।
कस् न बीनद कि तिश्नगान् इ हिजाज़····।	**किसी ने** नहीं देखा कि हिजाज के प्यासे····।
कस् नयायद बि ख़ानः यी दरवीश ।	**कोई** नहीं आयगा निर्धन के घर ।
ता तवानी **दरून** इ **कस्** म ख़राश ।	जहाँ तक हो सके **किसी का दिल** मत दुखा ।
कस् न दानद बख़ील इ फ़ाज़िल रा ।	कृपण विद्वान् को **कोई** नहीं जानता ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कश्ती ।	नाव, जहाज़ ।
कश्ती ग़र्क़ न शुदः बूद ।	**नाव** डूबी नहीं थी ।
दर अह्द इ क़दीम मा **कश्तीहा** यि **बादी** मी साख़्तीम् ।	प्राचीन काल में हम **पालवाली नौकाऐं** बनाते थे ।
दरियापैमायी बा **कश्ती** यि **बुख़ार** आसानतर शुदः अस्त ।	समुद्रयात्रा **स्टीमर** से आसान हो गयी है ।
मा **कश्तीहा** यि **जंगी** ख़ुद मी साज़ीम ।	यह **युद्धपोत** स्वयं बनाते हैं ।
कश्तीहा यि **तिजारती** हम लाज़िम अस्त ।	**व्यापारिक जहाज़** भी आवश्यक हैं ।
कश्तीहा यि **ह़मल** इ **आब** रौग़न मी बुरन्द ।	**टैन्कर जहाज़** तेल ले जाते हैं ।
लाज़िम अस्त कि मा **कश्तीहा** यि **तह़्त उल् बह़री** नीज़ ख़ुद बिसाज़ीम ।	यह आवश्यक है कि हम **पनडुब्बियाँ** भी स्वयं बनायें ।
मा **कश्तीहा** यि **माहीगीरी** अज़् नारवे ख़रीदीम ।	हमने **मछलीमार नौकाएँ** नौरवे से खरीदीं ।
फ़र्दा मा **कश्ती** यि **नौ** बि आब ख़्वाहीम अन्दाख़्त ।	कल हम **नयी नौका** पानी में उतारेंगे ।
मा अजनास **बा कश्ती ह़मल कर्दीम** ।	हमने माल **जहाज़ पर लदवाया** ।
दर बन्दर अब्बास मा **कश्ती रा ख़ाली कर्दीम** ।	हमने बन्दर अब्बास पर **माल उतरवाया** ।
अ़मलः यि **कश्ती** हमः रूज़ कार मी कुनद ।	**जहाज़ के कर्मचारी** सारे दिन काम करते हैं ।
कश्तीबान् दूस्त इ मन'स्त ।	**कप्तान** मेरा मित्र है ।
कश्तीरानहा यि **जहाज़** ख़ेली ख़ुशपूश'न्द ।	**जहाज़ चलाने वालों** की पोशाक बड़ी अच्छी है ।
कश्तीसाज़ी कार इ आबो-आतिश अस्त ।	**जहाज़ बनाना** बड़ा नाज़ुक काम है ।
कश्तीगाह इ बम्बई ख़ेली बुज़ुर्ग़ अस्त ।	बम्बई का **बन्दरगाह** बहुत बड़ा है ।
कश्तीगाह इ कलकत्ता हमः साल क़ाबिल इ कश्तीरानी नी'स्त ।	कलकत्ते का **बन्दरगाह** पूरे वर्ष ज़हाज़रानी के योग्य नहीं है ।
अजदाद इ मा **कश्तीरानी** दौर इ दुनिया मी कर्दन्द ।	हमारे पूर्वज विश्व भर में **जहाजरानी** करते थे ।
ईन् जहाज़ **कश्तीरानी दर तूल** इ **साह़िल मी कुनद** ।	यह जहाज़ **तटवर्ती समुद्र क्षेत्र पर ही चलता** है ।
कश्ती **शिकस्तगानीम्**, ऐ ! वाद इ शुरत़ः बर ख़ीज़ ।	हम **भग्न नौका वाले** हैं, हे अनुकूल पवन ! उठ खड़ी हो ।

बिआब अन्दाख़्तन्=पानी में उतारना
ह़मल कर्दीम=(हमने) माल लादा
ख़ाली कर्दीम=(हमने) माल उतरवाया
बाद इ शुरतः=अनुकूल पवन

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कशीदन् ।	खींचना, घसीटना, तोलना (संस्कृत-कर्षण) ।
ख़त्ती रू यि आन् **कशीद** ।	उसके ऊपर **एक रेखा खींची** ।
बदन इ ऊरा दर दौर इ शह्र **कशीदन्द** ।	उसके शरीर को सारे नगर में चारों ओर घसीटा गया ।
ईन् लोकूमूतिव चन्द तन **बार मी कशद** ?	यह इन्जिन कितने टन **भार खींचता है** ?
क़न्द रा **बि तराज़ू बिकशीद** ।	मिश्री को **तराज़ू से तोलो** ।
शीरः यि आन् मीवः रा **मी कशन्द** ।	उस फल से गाढ़ा **शर्बत निकालते हैं** ।
मा **सीगार न मी कशीम** ।	हम **सिगार नहीं पीते** ।
चिरा **सुह्बत रा मी कशीद** ?	**बात को लम्बी क्यों खींच रहे हो** ?
मन् यक **तसवीर कशीदम्** ।	मैंने एक **तसवीर खींची** ।
ख़र, शुतुर व गाव हा **बार मी कशन्द** ।	गधे, ऊँट और बैल **बोझा ढोते हैं** ।
गुलहा **हशरात् रा मी कशन्द** ।	फूल **कीड़ों को आकृष्ट करते हैं** ।
लश्कर **बिदान् नाहियः कशीद** ।	सेना को **उस प्रदेश में घुसा दिया** ।
राह इ आहन दर अ़स्र इ पह्लवी **कशीदः शुद** ।	पहलवियों के शासनकाल में रेलवे लाइन **डाली गयी** ।
सख़्तीहा यि बिस्यार **कशीदम्** ।	मैंने बड़े **कष्ट उठाये** ।
ईन् कार दू **रूज़ ख़्वाहद कशीद** ।	यह काम **दो दिन ले लेगा** ।
क़न्द इ मा **बीश अज़् दह रूज़ न मी कशद** ।	हमारी चीनी **दस दिन से अधिक नहीं चलती** ।
कार इ बद **बि जा** यि **बद मी कशद** ।	बुरे काम का **बुरा परिणाम होता है** ।
दूस्त'म् अज़् आन् ख़ानः **पा कशीदः अस्त** ।	मेरा मित्र उस घर से **पैर खींच चुका है** ।
ऊ **सूरत** इ **कशीदः** दारद ।	उसका **चेहरा लटका हुआ है** ।
क़द्द'श् कशीदः अस्त ।	उसका **लम्बा क़द** है ।
आन् हा **दर कश म कश** बूदन्द ।	वे **असमंजस में** पड़े थे ।

हशरात=कीड़े-मकोड़े

नाहिय्य:=प्रदेश

राह इ आहन=रेल की पटरियाँ

अ़स्र इ पह्लवी=पह्लवी वंश के शासन काल में

पा कशीद:=(शब्दार्थ – पैर खींचा हुआ) आना-जाना बन्द किया हुआ

कश म कश=(शब्दार्थ – खींच मत खींच) एक बार दिल कहता है खींच ले अर्थात् कर डाल, एक बार कहता है मत खींच यानी मत कर । करें या न करें की स्थिति । असमंजस । कश म कश का एक अर्थ संघर्ष और झड़प भी है ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कम (१)	कम, थोड़ा, घटाना, बीतना ।
मन् पूल **कम** दारम् ।	मेरे पास **बहुत थोड़ा** पैसा है ।
सिन ़ मन् अज़् सिन ़ ऊ **कमतर** अस्त ।	मेरी अवस्था उसकी अवस्था **से कम** है ।
यक अंगुश्त ़ ऊ **कम** अस्त ।	उसकी एक अंगुली **कम** है ।
हीच चीज़ **कम नी'स्त** ।	किसी चीज़ की **कमी नहीं है** ।
ईन् पूल **यक रियाल कम** अस्त ।	इस रक़म में **एक रियाल कम है** ।
तुख़्म ़ मुर्ग़ **सद दू कम** अस्त ।	मुर्ग़ी के अण्डे **दो कम सौ** हैं ।
ऊ **कम तग़यीर कर्द** ।	वह **बहुत थोड़ा बदला है** ।
कम ह़र्फ़ बिज़न् ।	**कम** बोला करो ।
मा **यक कमी** पनीर दारीम ।	हमारे पास **ज़रा सा** पनीर है ।
ऊ **यक कमी** अज़ीय्यत शुद ।	वह **ज़रा सा** घायल हुआ है ।
ऊ संग **कम** दारद ।	उसके बाँट **खोटे** हैं ।
ऊ **कमोबीश** (कमाबीश) कार मी कुनद ।	वह **थोड़ा बहुत** काम करता ही है । (वह आकाशीवृत्ति पर निर्भर है)
ह़ुक़ूक़'श् रा **कम कर्दन्द** ।	उसका वेतन **कम कर दिया गया है** ।
चहार रा अज़् दह **कम कुनीद** ।	चार को दस में से **घटाइये** ।
ज़ह़मत रा **कम कुनीद** ।	अधिक **कष्ट न करें** । (आज्ञा दीजिये हम जायें)
ईन् कार ज़ह़मत ़ शुमा रा **कम ख़्वाहद कर्द** ।	यह आपका परिश्रम **कम कर देगी** ।
बिरंज **कम आमद** ।	चावल **बीत गये** ।
ऊ ख़ुद रा **कम ज़नद** ।	वह अपने आपको **बहुत कम लगाता है** ।
दस्त कम ऊरा दू साल ह़ब्स ख़्वाहन्द कर्द ।	**कम से कम** उसको दो साल की जेल मिलेगी ।
कम मान्दः बूद कि कुश्तः शवद ।	उसके मरने में **थोड़ी सी कसर बची थी** ।

संग=(मूल अर्थ–पत्थर) पहले पत्थर के बाँट काम में लिये जाते थे, इसलिये अब लोहे के बाँटों का प्रचलन होने पर भी, बाँटों के लिये ईरान में संग का ही प्रयोग होता है ।

संग कम दाश्तन्=खोटे बाँट रखना

ह़ुक़ूक़=(ह़क़ का बहुवचन) ह़क़ और ह़ुक़ूक़ का भारत में प्रचलित अर्थ 'अधिकार' है । ईरान में ह़क़ और ह़ुक़ूक़ का अर्थ वेतन या भाड़ा होता है ।

बिरंज कम आमद=(शब्दार्थ – चावल कम पड़ गये; यह शिष्टाचार की बोलचाल है । यह कहना अशिष्टता मानी जाती है कि कोई चीज़ ख़त्म हो गयी । ख़त्म हो गयी के स्थान पर कहा जाता है अमुक चीज़ कम पड़ रही है)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कम (२)

अंगूर हनूज़ **कमआब** अस्त ।

उस्ताद इ मुअ़ल्लिम चु बुवद **कमआज़ार** ।

ईन् पारच: **कमबर** (=कमअ़र्ज़) अस्त ।

कफ़्श इ कि ख़रीदी **कमबहा** अस्त ।

दर फ़स्ल इ वर्ग रीज़ान दिरख़्तान् **कमपर** मी शवन्द ।

कमतर कसी अस्त कि वा ऊ बितवानद ज़िन्दगी कुनद ।

बन्द: यि **कमतरीन** अम् ।

ऊ **कमजुरअत** बूद ।

रेगिस्तान **कमजमीय्यत** मी शवद ।

अज़् बह्.र इ **कम.हुरमती** नयामद: बूद ।

हम: अज़् **कमहौसलगी** यि ऊ परीशान ह़ाल शुद ।

साख़्तन् इ यक चुनीन् खान:यी **कमख़र्ज** ख़्वाहद बूद ।

ऊ **कमख़र्ज** बालानशीन बूद ।

अज़् मर्द इ **कमख़िरद** दूर बाश ।

ऊ दर ज़ईफ़ी **कमख़्वाब** शुद ।

ईन् कार खेली **कमदख़्ल** अस्त ।

मन् **चाय** इ **कमरंग** मी ख़ुरम् ।

गाव इ कूहिस्तान **कमशीर** मी बाशद ।

ऊ आ़लिम इ **कममाय:** अस्त ।

गौहर **कमयाब**'स्त पस गरान'स्त ।

कम के सामासिक प्रयोग ।

अंगूर अभी **कम रसीले** हैं ।

अध्यापक गुरु जब **कम पीटने वाला** हो ।

यह कपड़ा **कम अ़र्ज़ वाला** है ।

वह जूता जो कि तू ने खरीदा है **सस्ता है** ।

पतझड़ (शरद्) की ऋतु में पेड़ **कम पत्तों वाले** रह जाते है ।

बहुत कम लोग होंगे जो उसके साथ जीवन निर्वाह कर सकें ।

मैं तो अत्यन्त **तुच्छ सेवक** हूँ ।

वह **अल्प साहसी** था ।

रेगिस्तान **कम बसा** हुआ होता है ।

असम्मान के कारण वह नहीं आया ।

उसकी **आशुकोपिता** के कारण सब उससे दुखी हो गये ।

ऐसा घर बनाने से **व्यय कम** होगा ।

वह **कम खर्च करके भी** उच्च स्थान में बैठने वाला था ।

कमअक़्लों ने दूर रहो ।

वह बुढ़ापे में **कम निद्रावाला** हो गया ।

यह कार्य बहुत **कम आमदनीवाला** है ।

मैं **हलकी चाय** पीता हूँ ।

पहाड़ी गायें **कम दूध देने वाली** होती हैं ।

वह **अल्प-पठित** विद्वान् है ।

मोती **कम मिलता है** अतः मँहगा है ।

मुअ़ल्लिम= पढ़ाने वाला, अध्यापक

कमतरीन=क्षुद्रतम, तुच्छतम, सबसे छोटा

कम खर्ज़ बाला नशीन=कम ख़र्च करके भी उच्च पद पर आसीन होना । दूसरा अर्थ है–क्वालिटी भी अच्छी और दाम भी कम ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

किह-कि: (की)–कि-कि । — चातुर्थिक–'कि' ।

दर ज़बान इ फ़ारसी हर्फ़ इ 'कि:' चहार मानी दारद । — फ़ारसी भाषा में 'कि' शब्द के तीन अर्थ होते हैं ।

'किह्' दर मानी यि 'कूचक' शुमुर्दः मी शवद । — 'किह' का 'छोटे' के अर्थ में प्रयोग होता है ।

'कि:' दर मानी यि 'कि कुदामिय': शुमुर्दः मी शवद । — 'कि:, का 'कौन सा' के अर्थ में प्रयोग होता है ।

'कि' दर मानी यि 'आन् कि' शुमुर्दः मी शवद । — 'कि' का 'जो कि' के अर्थ में प्रयोग होता है ।

'कि' दर मानी यि 'कि फ़क़ती' शुमुर्दः मी शवद । — 'कि' का 'केवल कि' के अर्थ में प्रयोग होता है ।

किह (१) — किह=छोटा (१)

रफ़्तन्द पीश'श् किहानो-मिहान् । — उसके सामने छोटे-बड़े सब गये ।

ऊ रब इ हर किहतर व मिहतर अस्त । — वह छोटे-बड़े सबका स्वामी है ।

कि: (उच्चारण की) (२) — कि:=कौन सा (२)

कि: (की) बा मन् ख़्वाहद आमद ? — मेरे साथ कौन आयेगा ?

कीहा मुक़स्सिर अन्द ? — अपराधी कौन-कौन हैं ?

कि: रा दीदी ? — तुमने किस किसको देखा था ?

बि कि: हर्फ़ ज़दीद ? — आप किससे बातें कर रहे थे ?

माल इ कि: रा दुज़्दीदन्द ? — किसका माल चोरी चला गया ?

कूचक=छोटा (संस्कृत–कूर्चक)

कुदामियः=कौनसा का वाचक (संस्कृत–कतमीयः)

फ़क़ती=केवल वाचक, केवलार्थक

मुक़स्सिर=क़सूरवार, अपराधी

दुज़्दीदन्द=(शब्दार्थ–उन्होंने चुरा लिया)=चुरा लिया गया, चोरी चला गया

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कि (३) हवालिय्यः । — **कि=जो कि, आदि (३)**

मर्दी **कि** ईन् जा आमद दूस्त इ मन् बूद ।	वह आदमी, **जो कि,** यहाँ आया था, मेरा मित्र था ।
मिदादी **कि** बा आन् निविश्तीद चिः रंग बूद ?	पेन्सिल से, **जिससे कि,** आपने लिखा था, किस रंग की थी ?
हंगामी **कि** (वक़्ती कि) ऊ रफ़्त, मन् ख़ुफ़्तः बूदम् ।	उस समय, **जब कि,** वह गया, मैं सोया हुआ था ।
दर अ़स्री **कि** ख़्वान्दन् व निविश्तन् मामूल न बूद ।	उस युग में, **जब कि,** पढ़ना और लिखना प्रचलित नहीं हुआ था ।
जायी **कि** ऊ शहीद बूद अकनून ज़ियारतगाह अस्त ।	उस जगह, **जहाँ कि,** वह शहीद हुआ, अब तीर्थस्थल है ।
मह़ल्ली **कि** जिनायत वाक़अ़ शुद ।	वह स्थान, **जहाँ कि,** अपराध घटित हुआ था ।

कि–फ़क़ती (४) — **कि–केवल कि (४)**

मी आयी कि बिया ।	**आते हो तो** आओ ।
मन् कि न मी आयम् ।	**मैं तो** नहीं आऊँगा ।
ईन् कि कारी न दारद ।	**यह तो** कोई काम ही नहीं है (छोटा सा काम है) ।
मन् ख़ियाल कर्दम् **कि** दीर अस्त ।	मैंने सोचा **कि** देर हो गयी है ।
मन् रफ़्तम् **कि** ऊरा दीदनी कुनम् ।	मैं गया **ताकि** उससे मिल लूँ ।
आन् चुनान् ख़स्तः बूद **कि** ग़िज़ा हम न मी तवानिस्त ख़ुर्द ।	वह इतना थक गया था **कि** भोजन तक नहीं कर सका ।
ह़ाला कि न मी आयद मा शुरूअ़ मी कुनीम ।	**अब जब कि** वह नहीं आ रहा है, हम शुरू करते हैं ।
काश कि मी तवानिस्तम् रफ़्त ।	**काश कि** मैं जा सकता ।
चुनान् कि ऊ आमद गिरिफ़्तार शुद ।	**जैसे ही कि** वह आया, गिरिफ़्तार हो गया ।
कि चिः ?	अब कहो ? (**कि क्या ?** क्या ख़याल है ? क्या मतलब ? क्यों ?)
बि क़द्री **कि** मादर मुह़ब्बत कुनद हीच न कुनद ।	जितना **कि** माँ प्यार करती है, कोई नहीं करता ।

मामूल=(अ़मल भाव, भावी मामूल)
मामूल न बूद=प्रचलित नहीं हुआ था
मह़ल्ली=एक स्थान
जिनायत=अपराध, पाप
वाक़अ़ शुद=घटित हुआ
दीदनी कुनम्=दर्शन करूँ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

गर्दीदन्-गर्दान्दन् ।	घूमना (संस्कृत-वर्तन) ।
हर्फ़ इ **गिर्द** दर फ़ारसी दू मानीहा दारद ।	**गिर्द शब्द** के फ़ारसी में दो अर्थ होते हैं ।
गिर्द बि मानी कि **शह्‌र** मी शवद ।	**गिर्द** शहर या **देश** के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।
गिर्द बि मानी कि **दौर** या **मुदव्वर** नीज़ मी आयद ।	**गिर्द घूमना या गोल** के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है ।
गिर्द (१)	**गिर्द**=शह्‌र, प्रदेश, देश (१)
यज़्दगिर्द व **दाराबगिर्द** शह्‌रहा कि मारूफ़'न्द ।	**यज़्द गिर्द** और **दाराब गिर्द** प्रसिद्ध नगर हैं ।
दर संस्कृत वर्त* (आवर्त) शबाहत वा **गिर्द** दारद, **आर्यावर्त= आर्यागिर्द** ।	संस्कृत का **वर्त** (आवर्त) **गिर्द** से समानता रखता है जैसे **आर्यागिर्द** या **आर्यावर्त** ।
गिर्द (२)	**गिर्द**=गोल, घूमना (२)
ज़मीन गिर्द अस्त ।	ज़मीन **गोल** है ।
ज़मीन गिर्द इ **ख़ुरशीद** मी गर्दद ।	पृथ्वी **सूर्य के चारों ओर** घूमती है ।
ऊ माल इ फ़रावान् **गिर्द कर्दो**-मुर्द ।	उसने बहुत सा माल **जोड़ लिया** और मर गया ।
लश्करियान् दूबारः **गिर्द'श् आमदन्द** ।	सैनिक पुनः **उसके चारों ओर एकत्र हो गये** ।
गिर्दाबी चुनीन् हायल बूदः अस्त ।	**भँवर** ऐसे पड़ रहे हैं ।
सिन् मिज़ाज'श् ख़्वाहद **गिर्दान्द** ।	आयु उसकी प्रकृति को **बदल देगी** ।
ईन् मुज़्दः मरा **ख़ुशहाल गिर्दानीद** ।	इस सुसमाचार ने मुझको **प्रसन्न कर दिया** ।
ईन् कार रूज़गार'श् रा **सियाह गिर्दानीद** ।	इस काम ने उसके जीवन को **कलुषित कर दिया** ।
दूकान रा ऊ न मी तवानद गर्दानद ।	दूकान को वह **नहीं चला सकता** ।
ज़मीन दौर इ मिह्‌वर इ खुद **गर्दिश मी कुनद** ।	पृथ्वी अपनी धुरी के चारों ओर **परिक्रमा करती है** ।
ऊ बराय गर्दिश इ **बालीन** रफ़्तः अस्त ।	वह अपना **तकिया बदलने** गया है । (रात में कहीं ओर सोने को)
अज़् राह इ रास्त **म गिर्द** ।	सत्य के मार्ग से **मत हट** ।
ऐ ! **गर्दून** इ **गर्दान** चिः मी ख़्वाही क़र्द !	ऐ ! **घूमते हुए आकाश** ! तू क्या करेगा !

*यही वर्त कुछ प्रदेशों में गर्त होकर भी लगता है जैसे त्रिगर्त आदि । कालान्तर में वर्त-गर्त का अपभ्रंश गढ़ हो गया । आज के कुशलगढ़, लोहागढ़, रामगढ़ आदि में लगा हुआ गढ़ वही गर्त या वर्त है जिसे फ़ारसी में गिर्द कहते हैं । नगर के चारों ओर खाई खोद कर बीच में बसी हुई बस्ती को वर्त, गर्त गढ़, तथा गिर्द कहा जाता था । कालान्तर में गढ़ का अर्थ हो गया परिखा से घिरा हुआ दुर्ग, गर्त का अर्थ हो गया खाई या गड्ढा जैसे पतन का गर्त, वर्त-आवर्त का अर्थ हो गया जाति विशेष का निवास स्थान और उधर फ़ारसी में गिर्द का अर्थ हो गया चारों ओर से गोल घेरे से घिरा हुआ प्रदेश ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

गिरिफ़्तन् (१)	लेना, पकड़ना, धारण करना, जीतना, छीनना।
किताब रा अज़् मन् **बिगीर**।	किताब मुझसे **ले लो**।
गुर्ब: मूश **मी गीरद**।	बिल्ली चूहा **पकड़ती है**।
मुज़्द ॼ ख़ुद रा **गीरीद**।	अपनी तनख़्वाह **ले लीजिये**।
अशरार रा **गिरिफ़्तन्द**।	बदमाशों को **पकड़ लिया**।
सिकन्दर ख़्वास्त दुनिया रा **बिगीरद**।	सिकन्दर ने चाहा कि दुनियाँ को **जीत ले**।
सिह नफ़र उ़ज़्व **गिरिफ़्त: ईम**।	(हमने) तीन आदमी **सदस्य के रूप में लिये हैं**।
ज़न न **गिरिफ़्त: ई**?	(तूने) **शादी** नहीं की?
ज़नहा रू यि **ख़ुद रा मी गीरन्द**।	नारियाँ **अपने मुँह को ढक लेती हैं**।
अख़्तियार रा अज़् **गिरिफ़्तन्द**।	उसके **अधिकार छीन लिये गये**।
हम: **शिकाफ़हा रा गिरिफ़्तन्द**।	सारे **छेद भर दिये गये**।
हम: यि **वक़्त** ॼ **मरा गिरिफ़्त**।	मेरा सारा **समय ले लिया**।
आब ईन् **नाहिय्य: रा गिरिफ़्त**।	पानी ने यह **सारा क्षेत्र ढक लिया**।
राह ॼ आब रा **बायद बिगीरीद**।	पानी का स्रोत **बन्द किया जाना चाहिये**।
आन्हा चि: **ईदी मी गीरन्द**?	वे कौन सा **त्यौहार मनाते हैं**?
ईन् सग **न मी गीरद**।	यह कुत्ता **काटता नहीं**।
गिरिफ़्तम्, ईन् तौर बायद बूद।	**मानता हूँ**, ऐसे ही होना चाहिये।
ईन् हर्फ़ **मरा गिरिफ़्त**।	इस बात से **मुझे चोट लगी**।
फ़र्दा **माह गिरिफ़्त: मी शवद**।	कल **चन्द्रग्रहण होगा**।
सदा यि ऊ **गिरिफ़्त:** अस्त।	उसकी **आवाज बैठी हुई है**।
ज़बान'श् **मी गीरद**।	उसकी **ज़बान हकलाती है**।

मूश=चूहा (संस्कृत–मूष:, मूषक:। यह शब्द मुष=स्तेये धातु से बना है। अर्थात् वह पशु जो चोर हो)

मी गीरद=पकड़ती—पकड़ता है (संस्कृत-गृह्णाति)

मुज़्द=(हु.क़ूक़)=वेतन

अशरार=(शरीर का बहुवचन)=दुष्टजन, दुरात्मा लोग

सिह नफ़र=तीन आदमी

उ़ज़्व=अंग, अंगस्वरूप, सदस्य

ज़न गिरिफ़्तन्=विवाह करना (संस्कृत-दार परिग्रह:)

शिकाफ़हा=छेद, बहुत से छेद

राह ॼ आब=जल का स्रोत

चि: ईदी=कौन सा त्यौहार

माह गिरिफ़्तन्=चन्द्रग्रहण
आफ़ताब गिरिफ़्तन्=सूर्यग्रहण

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

गिरिफ़्तन् (२)	घुटना, सुलगना, प्रभावित करना, आदि ।
हवा **गिरिफ़्तः** अस्त ।	हवा **रुकी** हुई है ।
हैज़म तर अस्त **न मी गीरद** ।	ईंधन गीला है, **सुलगता नहीं** ।
पन्द इ मन् दर ऊ **न गिरिफ़्त** ।	मेरे उपदेश का उस पर **प्रभाव नहीं पड़ा** ।
दास्तानी कि ऊ तालीफ़ कर्दः बूद, **न गिरिफ़्त**।	वह कथा जो उसने लिखी थी **लोकप्रिय नहीं** हुई ।
शूख़ी यि ऊ **न गिरिफ़्त** ।	उसका चुटकला **नहीं चला** ।
सिपस बर मन् **म गीर** ।	फिर मुझे दोष **मत देना** ।
बर ख़ुद **म गीर** ।	अपने ऊपर **मत लो** ।
ज़न'श् **बार गिरिफ़्त** ।	उसकी पत्नी **गर्भवती** हुई ।
सवाल ह़ल न शुद **अज़् सर गिरिफ़्तम्** ।	सवाल हल नहीं हुआ, **नये सिरे से उसको** **किया** ।
दीगरी रा वियन्दाज़ ता मन् **इ़बरत गीरम्** ।	किसी दूसरे को फेंक ताकि **मैं शिक्षा लूँ** ।
दर ईन् रूज़हा ख़ेली **गिरिफ़्तार'म्** ।	मैं इन दिनों अत्यन्त **व्यस्त हूँ** ।
सर अन्जाम क़ातिल रा **गिरिफ़्तार कर्दन्द** ।	अन्ततः हत्यारे को **पकड़ लिया गया** ।
बदजूरीयी **गिरिफ़्तार शुदः** अस्त ।	वह एक बुरी स्थिति में **फँस गया है** ।
गिरिफ़्तारी यि ऊ मरा हम **गिरिफ़्तार कर्द** ।	उसके पकड़े जाने से मैं भी **संकट में पड़ गया**।
चिरा चुनीन् **दिल गिरिफ़्तः** ई ?	ऐसा **उदास** क्यों है ?
गिरिफ़्तार इ इ़श्क़ हस्ती ?	क्या (तू) **प्रेम ग्रस्त** है ?
नँ, **गिरिफ़्तार** इ क़र्ज़ हस्तम् ।	नहीं, (मैं) **ऋण ग्रस्त** हूँ ।
दूस्त'म् **बीनीगिरिफ़्तः** अस्त ।	मेरे मित्र की **नाक** (जुकाम के कारण) **बन्द** **हो गयी** है ।
ऊ अज़् मन् क़ौल **गिरिफ़्त** ।	उसने मुझ से **वचन ले लिया** ।
परतव इ नीकान् **न गीरद** हर कि बुनियाद'श् बद'स्त ।	भलों का आचार **ग्रहण नहीं करता** जिसकी कि बुनियाद बुरी है ।

न मी गीरद=नहीं सुलगता (शब्दार्थ–नहीं पकड़ता)

शूख़ी न गिरिफ़्त=चुटकुला नहीं चला (उस पर कोई नहीं हँसा)

बर ख़ुद म गीर=अपने ऊपर मत लो (यह बात तुमको लक्ष्य करके नहीं कही गयी ।)

बद जूरी=बुरी परिस्थिति

परतव इ नीकान्=भलों का आचार, सद् वृत्त, सदाचार

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

गीर ।

गीरी **गीर**, म गीर ।
माहीगीरी रा दीदम् ।
दस्त'म् **गीर** न दारद ।

मीव: यि ख़ूब **गीर नयावुर्दम्** ।
सर अन्जाम ख़ूनी रा **गीर आवुर्दन्द** ।
काग़ज़ इ ख़ूब **गीर न मी ग्रायद** ।
दुज़्दहा **गीर नयामदन्द** ।
दर वदजूरी **गीर ग्रामद:** (उफ़्ताद:) अम् ।
दुज़्द रुफ़क़ा यि ख़ुद रा **गीर अन्दाख़्त** ।
दर तर्जुम: यि गुलिस्तान इ सादी हीचगाह **गीर न मी कर्दम्** ।
पाय'श् वि संग **गीर कर्द** ।
ज़बान'श् **गीर मी कुनद** ।
क़ायिक़हा **बिहम गीर कर्दन्द** ।
रीसमान इ बादबादक वि शाख़: यि दिरख़्त **गीर कर्द** ।

नाम इ **गीरिन्द:** बिगू ।
ऊ **सदा** यि **गीरिन्द:** दारद ।
आन् सग इ **गीरिन्द:** अस्त ।
शराब इ **गीरिन्द:** बिदिह ।
दर आन् **गीरो-दार** रुफ़क़ा यि ख़ुद रा गुम कर्दम् ।
ऊरा दर ऐ़न इ इर्तिकाब इ अ़मल **गीर आवुर्दन्द** ।

रुफ़क़ा=(रफ़ीक़ का बहुवचन)=प्रियजन, मित्रगण, साथी लोग
क़ायिक़हा=नावें
रीसमान=डोरी

गिरिफ़्तन् के कृदन्त रूप ।

लेता हो तो ले, नहीं मत ले ।
मैंने **एक मछुआ** देखा ।
मेरे हाथ में **पकड़** (पकड़ने की सामर्थ्य) नहीं है ।

मुझे अच्छे फल **नहीं मिले** ।
अन्तत: हत्यारे को **पकड़ लिया गया** ।
अच्छा काग़ज़ **नहीं मिल** रहा ।
चोर **नहीं पकड़े गये** ।
मैं मुश्किल में **फँस गया** हूँ ।
चोर ने अपने साथियों को ही **धोखा दे दिया** ।
(मैं) गुलिस्तान इ सादी के अनुवाद में कहीं **नहीं अटका** ।
उसका पैर पत्थर से **टकरा गया** ।
उसकी ज़बान **हकलाती है** ।
नावें एक **दूसरे से टकरा गयीं** ।
पतंग की डोरी पेड़ की शाखा में **अटक गयी** ।

जिसको पैसा मिलना है, उसका नाम बता ।
उसका कण्ठ **श्रुतिमधुर** है ।
वह **कटखना** कुत्ता है ।
तेज़ नशेवाली शराब दे ।
उस **लेना-पकड़ना** (हड़बड़ी) में मैं अपने मित्रों को ही खो बैठा ।
उसको रंगे हाथों **पकड़ लिया** गया ।

गीरो-दार=(शब्दार्थ–लेना और रखना)= लेना पकड़ना, शोरगुल, हड़बड़ी
ऐ़न इ इर्तिकाब इ अ़मल=रंगे हाथों

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

गर्म ।	**उष्ण, महँगा, प्रेम ।**
इमरूज़ हवा **गर्म** अस्त ।	आज हवा **गर्म** है ।
बाज़ार इ गन्दुम हाला **गर्म नी'स्त** ।	गेहूँ के **भाव पर** अभी **तेजी नहीं है** ।
ऊ **असलह्**: यि **गर्म** व असलह्: यि सर्द दारद ।	उसके पास **गर्म हथियार** (बन्दूक आदि) और ठण्डे हथियार (तलवार, भाला आदि) हैं ।
मियानः यि शौहरो-ज़न **गर्म अस्त** ।	पति-पत्नी के **बीच में बड़ा प्रेम** है ।
नफ़स'श् गर्म अस्त ।	उसका **भाषण बड़ा प्रभावशाली** है ।
ईन् दुख़्तर **सूरत** इ **गर्मी** दारद ।	इस कन्या का **रूप आकर्षक** है ।
खुद'श् रा पहलू यि आतिश **गर्म कर्द** ।	उसने अपने आपको आग के पास बैठ कर **गर्म किया** ।
ह्माम **गर्म कुनीद** ।	हमाम **गर्म कर लीजिये** ।
अज़् सुब्ह् **हवा गर्म मी वज़द** ।	सबेरे से **गर्म हवा चलने लगती है** ।
गर्म'म् अस्त ।	**मुझे गर्मी लग रही है** ।
पीरमर्दी **गर्मो-सर्द** इ **जहान** चशीदः बूद ।	एक वृद्ध पुरुष **संसार का भला-बुरा** देखे हुए थे ।
बिस्तर'श् **गर्मो-नर्म** बूद ।	उसका बिस्तर **गर्म और कोमल** था ।
ईन् पिसर बा आन् दुख़्तर **गर्म गिरिफ़्तः** अस्त ।	यह लड़का उस लड़की से **अन्तरंग हो चुका है** ।
दर **गरमा** यि **ताबिस्तान** ऊ बि शिमला मी रवद ।	**गरमियों की गरमी** में वह शिमला जाता है ।
दर तेहरान **गर्माबः** बिस्यार अन्द ।	तेहरान में **गर्म पानी के स्नानागार** कई हैं ।
ऊ **गर्माज़दः** अस्त ।	उसे **लू लग गयी** है ।
ईन् **गरमासन्ज** ख़ूब नी'स्त ।	यह **थरमामीटर** ठीक नहीं है ।
ऊ हलवः **गर्मागर्म** ख़ुर्द ।	वह **गर्मागर्म** हलवा खा गया ।
तू ख़ेली **गर्मरफ़्तार** हस्ती ।	तू **बहुत तेज़** चलता है ।
मन् ख़ेली परीशानहाल अज़् **गरमीदानः** हस्तम् ।	मैं **मरोड़ियों (घमौरियों)** से बड़ा दुखी हूँ ।

बाज़ार=भाव (हिन्दी में मुहावरा है 'बाज़ार भाव' जो कि वस्तुतः पर्यायानुवचन का उदाहरण है । पर्यायानुवचन के दूसरे उदाहरण हैं – लाल सुर्ख़, सफेद झक, काला सियाह । इसे कुछ लोग बाज़ार का भाव समझते हैं वह सही नहीं है ।)

असलह्:=शस्त्र, अस्त्र-शस्त्र ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

गूश–गूशः ।	**कान, कोना ।**
हूशदार ! दीवार हम **गूश दारद** ।	सावधान ! दीवार के भी **कान होते हैं** ।
नसीहत **गूश कुन्** ।	उपदेश को **सुन** (मेरी बात मान) ।
बि आमूज़गार **गूश न दिहद** ।	अध्यापक की बात (वह) **नहीं सुनता** ।
ऊ हीच न शुनीद; **पम्बः दर गूश गुज़ाश्त** ।	उसने कुछ नहीं सुना; **कान में रुई ठूँस रखी थी** ।
पम्बः अज़् गूश आवुर ।	**कान से रुई निकाल ले** ।
ऊ **गूश बर दर** दाश्त ।	उसके **कान दरवाजे पर** लगे थे ।
गूश'म् अज़् ईन् हर्फ़हा **पुर'स्त** ।	मेरे **कान** यह सुनते-सुनते **पक गये हैं** ।
चुन् ज़िक्र इ जमील शुनीद **गूश'श् ऐस्ताद** ।	वह सुन्दर कथा सुनी तो **उसके कान खड़े हो गये** । (ध्यान से सुनने लगा)
ऊ दुज़्दान् रा हम **गूशबुर'स्त** ।	वह तो चोरों के भी **कान काटने वाला** है (बहुत बड़ा ठग है) ।
गूशमाली ख़्वाही ?	**कान मलवाना** (डाँट खाना) चाहते हो ?
गूश रा चिरा ख़ारी, जवाब बिदिह ।	**कान क्यों खुजाता है**, जवाब दे ।
गूश'श् संगीन'स्त ।	वह **ऊँचा सुनता** है ।
गूश इ **गर्दून** कर ।	**आकाश के कान** बहरे हो जाएँ ।
गूश इ तू दू दादन्द व ज़बान इ तू यक ।	(परमात्मा ने) तुझ को **कान** दो दिये और जीभ एक (इसीलिये सुन ज्यादा और बोल कम) ।
गूश ता गूश ख़ून-ख़राबः दीद ।	**इस कोने से उस कोने तक** ख़ून-ख़राबा देखा ।
ईन् मतलब रा **गूशज़द** (गूशगुज़ार) कर्दम् ।	(मैंने) यह बात उसके **कान में डाल दी** थी ।
ईन् मीज़ **चहार गूश** न दारद, **सिह गूश** दारद ।	इस मेज के **चार कोने** नहीं हैं – **तीन कोने** हैं ।
ऊ **हर्फ़हा** यि **गूशःदार** मी गूयद ।	वह **कोने वाली बात** बोलता है (जो किसी को खटक जाय) ।
ऊ **गूशःनशीन**'स्त व अल्लाह अल्लाह मी कुनद ।	वह **कोने में** (निवृत्तभाव से) **बैठा** है और रामनाम जपता है ।
दर गूशः निहाद व फ़रामूश कर्द ।	**कोने में पटक दिया** और भूल गया ।

पम्बः दर गूश गुज़ाश्त=कान में रुई ठूँस ली (जानबूझ कर जो नहीं सुनता उसके लिये रूपकार्थक प्रयोग)

पम्बः अज़् गूश आवुर=कान से रुई निकाल ले (ध्यान देकर सुन)

गूश पुर शुदन्=किसी चीज़ को सुनते-सुनते ऊब से कान भर जाना

ज़िक्र इ जमील=सुन्दर कथा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

मैल । — रुचि, प्रवृत्ति ।

बर हु़स्ब इ **मैल** इ ऊ कार कर्दम् । — मैंने तो उसकी **इच्छा के अनुसार** कार्य किया था ।

बा कमाल इ **मैल शर्फ़याब** ख़्वाहम् रफ़्त । — मैं **अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक** जाऊँगा ।

आब मैल दारीद ? — **पानी** की **रुचि** रखते हैं ?

मैल दारम् शुमा बिरवीद । — **मैं चाहता** हूँ अब आप पधारें ।

सीब मैल फ़रमायीद । — सेब लीजिये (**सेब की ओर प्रवृत्ति** कीजिये) ।

चाय मैल न फ़रमूदीद । — आप ने चाय नहीं ली । (**चाय की ओर प्रवृत्ति** नहीं की)

ऊ **मैल** इ **ग़िज़ा** न मी कुनद । — उसकी **भोजन** की **रुचि** नहीं है ।

चिः मैल दारीद ? — क्या लीजियेगा ? (**क्या प्रवृत्ति** रखते हैं ?)

हीच मैल न दारम् । — मेरी **कुछ भी** लेने की **इच्छा** नहीं है ।

मैल इ **शुमा**'स्त । — **आपकी मर्जी** है ।

हर चिः मैल दारीद बिकुनीद । — **जो इच्छा** हो कीजिये ।

मैल दाश्तम् बिदानम् । — **मैं** जानना **चाहता था** ।

मैल'म् कशीद कि बिरवम् । — **मेरा मन** हुआ कि जाऊँ ।

क़ुव्वः यि **मैल बि मरकज़** रा सैन्ट्रीपैटल फ़ोर्स मी ख़्वानन्द । — **केन्द्रोन्मुख शक्ति** को सैन्ट्रीपैटल फ़ोर्स कहते हैं ।

दूस्त'म् बि ज़न इ ऊ **बी मैल अस्त** । — मेरा मित्र अपनी पत्नी के प्रति **रुचि नहीं रखता** ।

मन् **वर्ज़िश माइल**'म् । — मेरी **व्यायाम में रुचि** है ।

माइल'म् ऊरा बिख़रम् । — **मेरा मन** उसको ख़रीदने को **करता** है ।

ऊ **माइल बि ज़र्द**'स्त । — वह कुछ **पीलापन लिये हुए** है ।

ऊ **मैली** अज़् ख़ानः बि दर रफ़्त, नै इजबारी । — वह **अपनी मर्जी से ही** घर के बाहर गया है, लाचारी से नहीं ।

तमाइल इ **मन्** बीशतर बि मुसाफ़िरत अस्त । — **मेरी रुचि** यात्रा में अधिक है ।

बी मैल = उदासीन, विरक्त (हिन्दी में बेमेल शब्द बीमैल से ही आया है । इसको पुनः गढ़ कर अर्थभ्रंश कर दिया गया है । जिनका आपस में मेल नहीं मिलता जैसेकि – मोटी पत्नी और दुबला पति अथवा वृद्ध पति और किशोरी पत्नी; हिन्दी में उसको बेमेल कहते हैं । फ़ारसी में बीमैल का अर्थ है जो पति पत्नी एक दूसरे के प्रति अनुरक्त न हों ।)

माइल = मैल रखने वाला, प्रवृत्ति रखने वाला किसी चीज़ की ओर झुका हुआ ।

माइल बि ज़र्द = पीलेपन की ओर झुका हुआ, पीताभ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ना ।	संस्कृत 'ना', 'न' ।
मर्द इ **नाआज़मूदः** रा म फ़िरिस्त ।	**अनुभवहीन** पुरुष को मत भेज ।
दूस्त इ **नाउस्तुवार** दुश्मनसार अस्त ।	**ढुलमुल मित्र** शत्रु के समान ही है ।
सीज़र चु ब्रूटस रा दीद **नाउमीद गश्त** ।	सीज़र ने जब ब्रूटस को देखा तो वह **निराश** हो उठा ।
तरबियत **नाअह्‌ल** रा चुन् गिर्दगान् बर गुम्बद'स्त ।	**अयोग्य** को शिक्षा देना गुम्बद पर अखरोट रखने के समान है ।
ईन् कार **नाबाब** शुद ।	यह एक **अयोग्य कर्म** हो गया ।
मनकूहः **नाबालिग़** बूद ।	विवाहिता **अल्पवयस्का** थी ।
लिबास इ **नाबिसूद** ऊ रा दाद ।	उसको **नये (न पहने हुए) कपड़े** दिये ।
ऐ ! **ना-बि-कार !** अज़् नज़र'म् दूर शौ ।	अरे ! **धूर्त** ! मेरे सामने से चला जा ।
तीमूरलंग रैं शह्‌र रा **नी'स्त-नाबूद** कर्द ।	लंगड़े तैमूर ने रैं नगर को ऐसा कर दिया कि **न है, न कभी था** ।
उस्ताद दर पीरी **नाबीना** बूदन्द ।	अध्यापक वृद्धावस्था में **अन्धे** हो गये ।
ज़न इ **नापाक** नमाज़ न मी कुनद ।	**अशुद्ध नारी** उपासना नहीं करती ।
दुनिया **नापायदार** अस्त ।	संसार **अनित्य है** ।
आश ह़ाला **नापुख़्तः** अस्त ।	खिचड़ी अभी **बिना पकी** है ।
ईन् रा गुफ़्त व **नापिदीद** शुद ।	इतना कहा और **अदृश्य** हो गया ।
नापरहीज़गारी गुनाह अस्त ।	**असंयम** पाप है ।
ज़ाहिदी रा रिन्दी **नापसन्द** आयद व रिन्दी रा नसीह़त ।	संयमी को मद्यपान **अरुचिकर** लगता है और मद्यप को उपदेश ।
ऊ मिथ्सल इ **गौहर** इ **नातराशीदः** अस्त ।	वह **बिना तराशे रत्न** की भाँति है ।
नातर्स बिनिशीन ।	**निर्भय होकर** बैठ ।
ईन् साख्तमान इ **नातमाम** अस्त ।	यह **अपूर्ण** भवन है ।
पीर मर्द **नातवान** बूद ।	वृद्ध पुरुष **असमर्थ** हो गया ।

(ना का क्षेत्र बहुत विस्तृत है । संस्कृत के नञ् की तरह इसका प्रयोग होता है । विशेषण, संज्ञा, क्रिया सबमें इसकी प्रवृत्ति हो सकती है)

म फ़िरिस्त=मत भेज
आज़मूदः=परीक्षित
उस्तुवार=स्थिर (संस्कृत-स्थविर, स्थिर)
दुश्मनसार=शत्रुसदृश
नमाज़=उपासना (संस्कृत-नमस्)
ना उमीद=हताश, निराश (ना उमीद को नौमीद भी बोलचाल में कहते हैं ।)
पायदार=स्थिर, हमेशा रहने वाली
पुख़्तः=पकी हुई–पका हुआ (संस्कृत-पच्+क्त=पक्वः)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

निज़्द–नज़्दीक ।	निकट ।
ऊ **निज़्द** इ मन् निशस्त ।	वह मेरे **निकट** बैठा ।
किताब इ तू **निज़्द** इ **मन**'स्त ।	तेरी पुस्तक **मेरे पास** है ।
दर आयिन्दः नज़्दीक तग़ायीर इ हाल न मी शवद ।	**निकट भविष्य** में स्थिति में परिवर्तन नहीं होगा ।
दर शह्र व **नज़्दीक दिहात** बारान न बारीद ।	नगर में और **निकटवर्ती गाँवों** में वर्षा नहीं हुई ।
फ़ाल इ ऊ **हद्स** इ **नज़्दीक** बूद ।	उसका कथन **निकट अनुमान** था ।
ऊ **बि मा नज़्दीक** अस्त ।	वह **हमारा रिश्तेदार** है ।
यकी **अज़् नज़्दीकान्** इ **मा** बि दीदन् इ मन् आमद ।	हमारा **एक रिश्तेदार** मुझको देखने आया ।
अगर पीलज़ूरी व'गर शीर चंग ।	भले ही तू हाथियों के ज़ोर वाला हो और चाहे शेर के पंजे वाला हो ।
बि नज़्दीक इ **मन्** सुल्ह् बिह्तर ज़ि जंग ।।	**मेरे विचार से** युद्ध से सन्धि अच्छी है ।।
ख़ुदाया ! दिलहा यि मारा **बाहम नज़्दीक कुन्** ।	हे ईश्वर ! हमारे हृदयों को **निकट कर दे** ।
हदियः यि ख़ुद रा **नज़्दीक आवुर्द** ।	वह अपनी भेंट **निकट लाया** ।
मर्ग **नज़्दीक मी शवद** ।	मृत्यु **निकट आती जाती है** ।
नज़्दीक बूद बियुफ़्तद ।	**निकट ही था** कि गिर जाय ।
नज़्दीक अस्त बिरसन्द ।	(बस) **आने ही वाले हैं** ।
अज़् नज़्दीक पैकान ज़द ।	**पास आकर** भाला मारा ।
अज़् दूर व नज़्दीक शुनीदः अस्त कि इस्तीफा दादः अस्त ।	**चारों ओर** सुनाई पड़ता है कि उसने त्यागपत्र दे दिया है ।
दूस्त **नज़्दीकतर** अज़् मन् बि मन् अस्त ।	मेरा मित्र (प्रभु) मुझ से मेरी अपेक्षा भी **निकटतर** है ।
ऊ कूर न शुद वले **नज़्दीकबीन** शुदः अस्त ।	वह अन्धा नहीं हुआ बल्कि **निकटदृष्टि** हो गया ।
नज़्दीकी यि **राह** कुमक इ बुज़ुर्गी अस्त ।	**पन्थ की निकटता** एक बड़ी सहायता है ।
दर आन् नज़्दीकी कसी रा न मी शिनाख़्तम् ।	**उस क्षेत्र में** मैं किसी को नहीं पहचानता था ।
दर ईन् नज़्दीकीहा चीज़ी शुनीदी ?	(तूने) **इन दिनों** एक बात सुनी है ?

निज़्द=निकट (फ़ारसी का निज़्द, संस्कृत का निकट, अंग्रेजी का नैक्स्ट एक समान अर्थ और रूपवाले हैं ।)

तग़ायीर इ हाल=स्थिति में परिवर्तन

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अशआर अज़् सादी।

बा मर्दुम इ सहलजू दुश्वार म गूय।
बा आन् कि दर ई सुल्ह् ज़नद जंग म जूय।।

चु दस्त अज़् हमः ह़ीलती दर गुसिस्त।
हलाल'स्त बुर्दन् बि शमशीर दस्त।।
दुश्मन चु बीनी नातवान लाफ़ अज़् बुरूत ई
खुद म ज़न।
मग़ज़ी'स्त दर हर उस्तुख़्वान् मर्दी'स्त दर
हर पैरहन।।
अगर ज़ि दस्त इ बला बर फ़लक रवद बदख़ू।

ज़ि दस्त इ ख़ू यि बद ई ख़ीश दर बला बाशद।।

बुलबुला ! मुश्ज़दः यी बहार बियार।
ख़बर इ बद बि बूम बाज़ गुज़ार।।
तरह़ुम वर पलंग ई तीज़दन्दान्।
सितमगारी बुवद बर गूस्फ़न्दान्।।
हज़ार बार चरागाह ख़ुशतर अज़् मैदान।

वलेक अस्प न दारद बि दस्त इ ख़ीश इ़नान।।

कुहन जामः यी ख़ीश पैरास्तन्।
बिह'ज़् जामः थी आ़रियत ख़्वास्तन्।।

सादी के कुछ पद।

सरल व्यक्ति से कटु शब्द मत बोल।
उसके साथ जो कि सन्धि का द्वार
खटखटाता हो युद्ध की तलाश मत कर।।
जब हाथ समस्त उपायों से गुज़र जाय।
तो हलाल है तलवार पर हाथ रखना।।
शत्रु को जब (तू) असमर्थ देखे तो अपनी
मूँछें मत मरोड़।
हर हड्डी में गूदा होता है, हर परिधान में
एक वीर हो सकता है।।
यदि विपत्ति के हाथ से (बचकर) बुरी
प्रवृत्ति वाला आकाश में भी चला जाय।
अपनी दुष्प्रवृत्ति के द्वारा (पुनः) विपत्ति में
पड़ जायेगा।।
हे बुलबुल ! वसन्त का सुसमाचार ला।
बुरी ख़बर उल्लू के लिये छोड़ दे।।
तेज़ दाँतों वाले बाघ पर दया करना।
भेड़ों के प्रति अत्याचार होता है।।
चरागाह, मैदान (युद्ध भूमि) की अपेक्षा
हज़ार बार अच्छा है।
लेकिन घोड़े के अपने हाथ में अपनी लगाम
नहीं है।।
अपना पुराना कपड़ा सी लेना।
बिहतर है कपड़ा (दूसरों से) उधार माँगने से।।

सहलजू=सरलता तलाश करने वाला, सरल
व्यक्ति
दुश्वार=कठोर (शब्द)
दर इ सुल्ह्=सन्धि का द्वार
म जूय=(तू) तलाश मत कर
ह़ीलती=उपाय
दर गुसिस्त=गुज़र जाय
हलाल=वैध, धर्मसम्मत
बुर्दन्=उठाना
लाफ़=डींग मारना, दम्भ चेष्टा
बुरूत=मूँछ
मग्ज़=गूदा, मज्जा (संस्कृत-मज्जा)
उस्तुख़्वान्=हड्डी (संस्कृत-अस्थि)
पैरहन=वस्त्र (संस्कृत-परिधान)
पलंग=शेर (संस्कृत-पलंगः; पलं गृह्णातीति
पलंगः)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

निस्बत।	सम्बन्ध, अनुपात, अपेक्षाकृत।
ईन दू मौज़ूअ **बाहम निस्बती न दारन्द।**	इन दोनों विषयों का **आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है।**
निस्बत बि दीगरान् चि; तसमीमी गिरिफ़्तीद ?	**दूसरों के विषय में** आपने क्या निर्णय किया ?
निस्बत इ **सिह बि शिश** ची'स्त ?	**तीन और छै में** क्या **अनुपात** है ?
मा **बाहम निस्बत दारीम।**	हम **परस्पर** रिश्तेदार हैं।
मन् **निस्बत** इ **अ़ददी** मी दानम्।	मैं **गणित (अंकों)** का **अनुपात** जानता हूँ।
निस्बत इ **हिन्दसः** न मी दानम्।	**ज्यामितिक अनुपात** नहीं जानता हूँ।
ईन् काग़ज़ **निस्बत बि काग़ज़** इ **दीगर** बिह्‌तर'स्त।	यह काग़ज़ **दूसरे काग़ज़ से** अच्छा है।
निस्बत बि आन् कार हीच इक़दाम न कर्द।	**उस कार्य के विषय में** उसने कोई कार्यवाही नहीं की।
निस्बत बि हमः मिह्‌रबान बूद।	वह **सबके लिये** कृपालु था।
हमः यि आन् सिफ़ात रा बि ख़ुदा **निस्बत मी दिहन्द।**	उन समस्त गुणों को परमात्मा में **आरोपित करते हैं।**
बिस्यारी ईन् जुर्म रा बि तमअ़ इ फ़ितरी **निस्बत मी दिहन्द।**	बहुत से लोग इस अपराध का हेतु प्राकृतिक लोलुपता **को बताते हैं।**
हर गुनाह बि शयतान **निस्बत मी कुनन्द।**	सब पापों का सम्बन्ध शैतान से **जोड़ा जाता है।**
बि निस्बत इ ऊ ईन् कुलुफ़्ततर'स्त।	**उसकी अपेक्षा** यह ज़्यादा मोटा है।
दर्स इ इमरूज़ **निस्बतन्** आसानतर'स्त।	आज का पाठ **अपेक्षाकृत** सरलतर है।
ख़ूबी व बदी **चीज़हा** यि **निस्बी** अस्त।	अच्छाई और बुराई **तुलनात्मक वस्तुएँ** हैं।
अहमीय्यत इ हर चीज़ **निस्बी** अस्त।	हर चीज का महत्व **आपेक्षिक** है।
दर ईन् नज़्दीकी हा **शिरकत** इ **निस्बी** थ्सब्त शुदः अस्त।	इन दिनों एक **तुलनात्मक दायित्ववाली कम्पनी** खुली है।
ऊ बा मा **मन्सूब** अस्त।	वह हमसे **सम्बन्धित** है। (हमारा रिश्तेदार है)
'निस्वत' व 'मन्सूब', ईन् हर दू वाश्जः **बाहम मन्सूब** अन्द।	'निस्वत' और 'मन्सूब'–ये दोनों शब्द–**परस्पर सम्बद्ध** हैं।
हर कि बि मयख़ानः बिरवद **मन्सूब शवद** बि मय ख़ुर्दन्।	जो कोई मधुशाला जाता है उसका शराब पीने से **सम्बन्ध जोड़ा जाता है।**

चि: तसमीमी=क्या निर्णय

इक़दाम=क़दम उठाना, कार्यवाही

तमअ़ इ फ़ितरी=स्वाभाविक लोलुपता

थ्सब्त शुदः=रजिस्ट्री किया हुआ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

निशस्तन् ।	**बैठना** ।
ऊ **निशीनद** – तू **निशीनी** – मन् **निशीनम्** ।	वह **बैठता है** – तू **बैठता है** – **मैं बैठता हूँ** ।
बियायीद, **बिनिशीनीद** (या 'बिफ़रमायीद')	आइये, **बैठिये** (या विराजिये) ।
मन् रू यि ज़मीन **निशस्तम्** ।	मैं धरती पर **बैठ गया** ।
फ़ित्न: **निशस्त** ।	उपद्रव शान्त **हो गया** ।
शन् **आन्** इ **तह निशस्त** ।	धूल उसके **पैंदे में बैठ गयी** ।
ऊ **जानिशीन** इ पीर अस्त ।	वह पीर का **उत्तराधिकारी** है ।
निशस्तो-बर ख़ास्त'श् बा आ़लिमान् अस्त ।	उसका **उठना-बैठना** विद्वानों के साथ होता है ।
निशस्त इ **दीवार** मज़बूत नी'स्त ।	**दीवार का आधार** दृढ नहीं है ।
ख़ाक रीज़ **निशस्त कर्द** ।	छाई हुई धूल **बैठ गयी** ।
इ़मारत **निशस्त मी कुनद** ।	भवन **धँसा जा रहा है** ।
रू यि सत्ल इ शीर पारच: बियन्दाज़ ता बर आन् **गर्द न निशीनद** ।	दूध की बालटी पर कपड़ा ढक दो ताकि उस पर **धूल न बैठे** ।
दर ईन् ख़ान: **कि: मी निशीनद** ?	इस घर में **कौन रहता है** ?
आन् आब बि ईन् ज़मीन **न मी निशीनद** ।	वह पानी इस धरती पर **सिंचाई नहीं करता** ।
निशस्तगाह इ ह़ाकिम कुजा'स्त ?	अधिकारी के **बैठने का स्थान** कहाँ है ?
यक रीश बर **निशस्तगाह**'श् बूद ।	एक फोड़ा उसके **नितम्ब** पर हो गया ।
ऊरा रू यि पील **निशस्त:** दीदम् ।	मैंने उसको हाथी पर **चढ़े** देखा ।
दर ह़ालत इ **निशस्त:** आमूज़द ।	(वह) **बैठकर** पढ़ाता है ।
निशस्त: मुर्द ।	(वह) **बैठे बैठे** ही मर गया ।
बारहा दर आन् गुर्फ़: **निशस्त: अम्** ।	बहुत बार मैं उस खिड़की पर **बैठा हूँ** ।
अज़् ज़ह़मत इ सख़्त **अ़रक़ निशस्त:** अस्त ।	कड़े परिश्रम के कारण उसे **पसीना आ गया है** ।

बिफ़रमायीद=विराजिये (उपचारवचन)
रू यि ज़मीन=धरती पर
शन्=धूल
आन् इ तह=पैंदे में
जानिशीन=स्थानापन्न, उत्तराधिकारी
निशस्त व बरख़ास्त=उठना-बैठना
फ़ारसी में मुहावरा 'बैठना-उठना' है;
हिन्दी में मुहावरा 'उठना-बैठना' है

ख़ाकरीज़=छाई हुई धूल
रू यि सत्ल=बालटी के ऊपर
रीश=फोड़ा
रू यि पील=हाथी के ऊपर
गुर्फ़:=खिड़की, झरोखा
ज़ह़मत इ सख़्त=कठोर परिश्रम
अ़रक़=पसीना

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नज़र ।	दृष्टि, अपेक्षा, इच्छा, विचार ।
शाख़ ई बुरीदः रा **नज़री** बर बहार नी'स्त ।	कटी हुई शाखा को **कोई भी अपेक्षा** वसन्त से नहीं होती ।
दर नज़र इ पादशाह् इल्तिफ़ात याफ़्त ।	(उसने) राजा की **दृष्टि में** कृपा पायी ।
बि नज़र इ **शुमा** वा गुज़ार मी कुनम् ।	(मैं) इसको **आपकी मर्ज़ी पर** छोड़ता हूँ ।
अज़् नज़र इ **इक़्तिसादी** ईन् कार सूदमन्द नी'स्त ।	**आर्थिक दृष्टिकोण से** यह कार्य लाभप्रद नहीं है ।
या ख़ुदा ! बर मन् **नज़र कुन्** ।	हे प्रभो ! मुझ पर **कृपादृष्टि कर** ।
बख़्त इ बीदार **बर ऊ नज़र कर्द** ।	सौभाग्य ने **उस पर दृष्टि डाली** ।
यक नज़र इ **इजमाली** बि आन् वियन्दाज़ीम् ।	(हम) उस पर एक **सरसरी दृष्टि** डालें ।
दर नज़र न दारम् चिः वक़्त रफ़्त ।	**मुझे याद नहीं** वह कब गया ।
ईन् चीज़ रा **दर मद्द** इ **नज़र** न दाश्त ।	इस चीज़ को **दृष्टिगत** नहीं रखा ।
ईन् नुक्तः **दर नज़र गिरिफ़्तः** फ़ैसलःयी कुनीद ।	इस विचार को **दृष्टिगत रखते** हुए कोई निर्णय कीजिये ।
ईन् गुर्बः ख़ेली मिस्कीन **नज़र मी आयद** ।	यह बिल्ली बड़ी दीन **नज़र आती है** ।
यक फ़िक्री **बि नज़र'म् रसीद** ।	**(मुझे)** एक विचार **सूझा है** ।
वज़ीर बि दुज़्द-पिसर **ह़ुस्न** इ **नज़र** दाश्त ।	मंत्री डाकू के लड़के के विषय में **अच्छे विचार** रखता था ।
ऊरा अज़् नज़र दूर बिसाज़ ।	उस बात को **भूल जाओ** ।
नज़र बि ईन् कि फ़ाहि़शः बूद ऊरा तलाक़ दाद ।	**क्योंकि** वह दुश्चरित्रा थी उसको तलाक़ दे दिया ।
अज़् तह़सील इ हुनर **सर्फ़** इ **नज़र कर्द** ।	(वह) पढ़ने से **विरत हो गया** ।
दर अन्ज़ार इ **उ़मूमी** ईन् कार ख़ूब न बाशद ।	**लोगों की दृष्टि में** यह काम अच्छा नहीं होगा ।
तू **नज़रबाज़** नेई वरनः तग़ाफ़ुल निगह'स्त ।	तू **दृष्टि का अर्थ समझने वाला नहीं** है, नहीं तो उसकी उपेक्षा ही कृपादृष्टि है ।
मुद्दत इ **नज़रबन्दी** तमाम शुद ।	**नज़रबन्दी** की अवधि समाप्त हुई ।
नज़रिय्यः यि शुमा दर ईन् बाब ची'स्त ?	इस विषय में आपका **दृष्टिकोण** क्या है ?

शाख़ ई बुरीदः=कटी हुई डाली
इल्तिफ़ात=कृपाभाव
वा गुज़ार मी कुनम्=(मैं) छोड़ता हूँ
इक़्तिसादी=आर्थिक
बख़्त इ बीदार=जागरित भाग्य
वियन्दाज़ीम=(हम) डालें

तह़सील इ हुनर=विद्योपार्जन, पढ़ना-लिखना
अन्ज़ार=(नज़र का बहुवचन)=दृष्टियाँ
अन्ज़ार इ उ़मूमी=लोगों की दृष्टियाँ
तग़ाफ़ुल=उपेक्षा
निगह'स्त=कृपा की दृष्टि है
दर ईन् बाब=इस विषय में

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नफ़स । — **साँस, क्षण, भाषण** ।

बाज़ी अज़् योगियान् **नफ़स** इ खुद रा हब्स मी कुनन्द । — कुछ योगी अपनी **साँस** रोक लेते हैं ।

नफ़सी बि मन् मुहलत दिहीद । — **एक क्षण भर** की मुझे छुट्टी दीजिये ।

दर मौजूदगी यि मुअल्लम **नफ़सी न** कशीद । — अध्यापक की उपस्थिति में उसने **साँस तक** नहीं ली ।

अलान् मी तवानीम **यक नफ़सी** बिकशीम । — अब हम **थोड़ी देर** विश्राम कर सकते हैं ।

अगर **नफ़स बर आवरी** शिकस्त ख़ुर्दः ख्वाही बूद । — अगर (तेरी) **साँस भर गयी है** तो तू हार जायगा ।

ऊ दवान आमद व **नफ़स नफ़स ज़द** । — वह दौड़ा-दौड़ा आया और **हाँफने लगा** ।

नफ़स फ़ुरू बुर्द व जान'श् दाद । — **अन्तिम साँस ली** और प्राण त्याग दिये ।

नफ़स इ **वापिसीन** रिहा कर्दो-मुर्द । — **अन्तिम साँस** ली और मर गया ।

नफ़स इ **आख़िर रा कशीदो**-जान इ शीरीन रा सिपुर्द कर्द । — **अन्तिम श्वास लिया** और प्रिय प्राण परमात्मा को सौंप दिये ।

अज़् नफ़स उफ़्ताद व शिकस्त ख़ुर्द । — **साँस टूट गयी** और हार गया ।

दक़ीक़ी **नफ़स ताज़ः बिकुनीद** । — ज़रा **ताज़ादम हो लीजिये** । (विश्राम लेकर और कुछ खाकर)

नफ़स'त् बिगीर ! — **चुप रहो** !

नफ़स'श् बि मन् ख़ुर्दः अस्त । — **उसके चरित्र ने** मुझ पर प्रभाव डाला है ।

महात्मा गान्धी **ता आख़िरीन नफ़स** इताअत इ ख़ुदा मी कर्द । — महात्मा गान्धी **अन्तिम श्वास तक** ईश्वर की आज्ञा का पालन करते रहे ।

ऊ मरीज़ इ **तंगी** यि **नफ़स अस्त** । — वह **दमे का मरीज़** है ।

दराज़नफ़सी रा दीदम् कि नुत्क़ रा ख़ेली तूल मी कशीद । — मैंने एक **दीर्घवक्ता** को देखा जो भाषण को बहुत लम्बा खींचता था ।

ज़िन्हार ! ता **बि यक नफ़स'**श् न श्कनी बि संग । — सावधान ! ताकि (कहीं तू) उसको **सहसा** पत्थर से न तोड़ दे ।

दीदम् कि **नफ़स'म् दर न मी गीरद** । — मैंने देखा कि **मेरी बात का उस पर कोई असर नहीं हो रहा** ।

नफ़सकश कुजा'स्त ? — **रैन बसेरा** कहाँ है ?

अनफ़ास इ चन्द ज़द व रफ़्त । — **कुछ शब्द** कहे और चल पड़ा ।

हब्स मी कुनन्द=रोक लेते हैं
मुहलत=अवकाश
शिकस्त ख़ुर्दः=पराजित
बि मन् ख़ुर्दः अस्त=मुझ पर प्रभाव डाला है
आख़िरीन (आख़िर+ईन)=अन्तिम
जान इ शीरीन=प्यारे प्राण

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

निगाह-निगह । — दृष्टि, दृष्टिपात, देखना, देखभाल ।

निगाह इ **खिश्मआलूद** बियन्दाख़्त ।	(उसने) **क्रोधपूर्ण दृष्टि** डाली ।
बि मन् **निगाह कुन्** ।	मेरी तरफ़ **देखो** ।
निगाह'त् बि मन् बाशद ।	,, ,, । (तेरी दृष्टि मेरी ओर हो)
बि आयिन्द: **निगाह मी कुनम्** ।	मैं भविष्यत् की ओर **देखता हूँ** ।
तबीब ज़ख़्म रा **निगाह कर्द** ।	चिकित्सक ने घाव की **जाँच की** ।
निगाह कुन्, ज़र्फ़ नयुफ़्तद !	**देखना,** बरतन गिर न जाय ।
निगाह दूख़्त: चि: मी बीनी ?	**आँखें गड़ाये** क्या देख रहे हो ?
निगाह दुज़्दीदो – गुफ़्त…।	**आँखें चुराकर** (कनखियों से देखकर) बोली ।
सर इ ज़ंजीर रा मुह्‌कम **निगाह दार** ।	रस्सी का सिरा मज़बूती से **पकड़े रहना** ।
ऊरा दर ह्‌ब्स **निगाह दाश्तन्द** ।	उसको जेल में **डाल दिया** ।
ऊ वालदैन इ सालख़ुर्द: यि ख़ुद रा **निगाह मी दारद** ।	वह अपने वृद्ध माता-पिता की **देखभाल करता है** ।
पिदर'म् अज़्रफ़्तन् **निगाह दाश्त** ।	पिताजी ने मुझको जाने से **रोक दिया** ।
चिराग़ अज़् वह्‌्र इ तारीकी **निगाह दार** ।	अँधेरे के लिए दीपक **बचा रख** ।
ख़ुद रा न मी तवानद **निगाह दारद** ।	(वह)अपनी **देखभाल** स्वयं नहीं कर सकता।
तरफ़ इ ज़ालिम रा **निगाह दाश्तन्** ख़ूब नी'स्त ।	अन्यायी का **पक्ष लेना** अच्छा नहीं है ।
निगहदारी यि ख़ान: बि उ़ह्‌्द: यि चीं'स्त ?	घर की **देखभाल** किसके जिम्मे है ?
बर आवुर्द इ **मुख़ारिज** इ **निगहदारी** यि ख़त्त चि: क़द्र'स्त ?	सड़क के **रख-रखाव के ख़र्च** का तख़मीना कितना हुआ ?
अगर ऊ **निगहबान**'स्त हीच बाक नी'स्त ।	यदि वह (परमात्मा) **रक्षक** है तो कुछ भय नहीं ।
मुसलमान **रूज़:** **निगाह दारद** ।	मुसलमान **रोज़े रखता है** ।
ख़ुदा **निगहदार** !	भगवान् तुम्हारी **रक्षा करें** (विदा) ।

खिश्मआलूद=क्रोध में सनी, क्रोधपूर्ण
बि आयन्द:=आगत की ओर, भविष्य की ओर
तबीब=चिकित्सक
निगाहदूख़्त:=निगाहें सिये हुए, नजरें गड़ाये, टकटकी बाँधकर
निगाह दुज़्दीद=निगाहें चुराईं, आँखें चुराईं
सर इ ज़ंजीर=रस्सी का सिरा
मुह्‌कम=मज़बूती से, दृढतापूर्वक
वालदैन=माता-पिता
साल ख़ुर्द:=बुड्ढे
अज़् बहर इ तारीकी=अन्धकार के लिए
बि उ़ह्‌्द:=के जिम्मे
मुख़ारिज=ख़र्चा
बाक=भय

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नमक । — **नमक, सुन्दर, चिढ़ाना, कृतज्ञता, वेतन ।**

नमक इ **तआम** बर सुफ़रः निहाद ।	**खाने का नमक** खाने की मेज़ पर लगा दिया ।
नमक इ **तुर्की** रा दर हिन्दुस्तान **सेंधानमक** मी ख़्वानन्द ।	**तुर्की नमक** को भारत में **सेंधानमक** कहते हैं ।
गाही-बि-गाही **नमक** इ **मीवः** मी खुरद ।	(वह) कभी-कभी **फ्रूट साल्ट** लेता है ।
इमरूज़ **नानो-नमक** बा मन् ख़ुरीद ।	आज **रोटी-नमक** मेरे साथ खाइये ।
ईन् माही यि **नमकज़दः** अस्त ।	यह **नमक लगाई हुई** मछली है ।
नमक बर ज़ख़्म'म् म पाश ।	मेरे **घाव पर नमक** मत छिड़क ।
जायी कि नमक ख़ुरी **नमकदान** म शिकन ।	जहाँ तू नमक खाये वहाँ **नमकदान** मत तोड़ ।
पिसर'श् **बानमक** अस्त ।	उसका पुत्र **बहुत सुन्दर** है ।
दर **बीख** इ दिरख़्तान् **नमकाब** म रीज़ ।	पेड़ों की जड़ों में **खारी पानी** मत सींच ।
ऊ **नमक बि हराम** बूद ।	वह **कृतघ्न** हो गया ।
मन् **नमकपरवर्दः** यि तू अम् ।	मैं तेरे **नमक से पला हुआ** हूँ ।
हमः यि अज़् **नमकख़्वारान्** गिर्द कर्द ।	सारे **नमकख़्वारों** को इकट्ठा कर लिया ।
ज़न'श् **नमकदार** बूद ।	उसकी पत्नी **बहुत सुन्दर** थी ।
ईन् कार इ **नमकशनासी** न बूद ।	यह काम **कृतज्ञता** का नहीं हुआ ।
दर **नमकज़ार** हीच न रूयद ।	**खारी भूमि** में कुछ नहीं उगता ।
शूरःबूम रा **नमकसार** हम मी ख़्वानन्द ।	खारी भूमि को **नमकसार** भी कहते हैं ।
ख़ियार इ **नमकसूद** ख़ुर्द ।	**नमक लगी ककड़ी** खायी ।
राजपूत हा **नमकगीर** इ मुग़ल बूदन्द ।	राजपूत लोग मुग़लों के **वेतनभोगी** हो गये ।
नमकनाशनास म वाश ।	**कृतघ्न** मत हो ।
ऊ सुख़ुन इ **नमकीन** मी गूयद ।	वह बड़ी **चटपटी** (मज़ेदार) बातें करता है ।

तआम=भोजन

नमक इ तुर्की=चट्टानी नमक को भारत में सैन्धव या सैंधा नमक कहते हैं क्योंकि पहले सिन्धु प्रदेश से यह नमक निकाला जाता था । ईरान में यह नमक तुर्की से आता है, इसलिए वहाँ चट्टानी नमक को तुर्की नमक कहते हैं ।

नानो-नमक=रोटी नमक (हिन्दी में मेहमान को निमंत्रित करते समय अपने भोजन को विनयपूर्वक रूखी सूखी रोटी कहने का रवाज है । ईरान में अपने भोजन को महमान को निवेदित करते समय नानो-नमक कहने का उपचार (तकल्लुफ़) प्रयुक्त होता है)

नमकदान=खाने की मेज़ पर रखी जाने वाली नमक छिड़कने की छोटी सी डिबिया ।

नमकदार=सुन्दरी, लावण्यवती (भारत और ईरान दोनों ही जगह सुन्दरता को नमक कहा जाता है । ईरान में नमक-दार और भारत में लावण्यवती)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नौ । | **संस्कृत – नव ।**

हनूज़ **लिबास** इ **नौ** न कर्दी ?	अभी तक **नये कपड़े** नहीं किये (पहने) ?
चुन् **माह रा नौ कर्दन्द ।**	जब उन्होंने **नवचन्द्र को देखा** (चाँद को नया किया) ।
ख़ान: रा ख़राब कर्द: **अज़् नौ साख़्तन्द ।**	घर को ढहा कर **नये सिरे से बनवाया ।**
दुनिया **नौ बि नौ** मी मानद ।	संसार **सदा नया** रहता है ।
ईन् पिसर अलान् **नौआमूज़** अस्त ।	यह लड़का अभी **नौसिखिया** है ।
अंगूर इ **नौआवुर्द:** तुरुशतआम बुवद ।	**नया लाया हुआ** (ताज़ा तोड़ा हुआ) अंगूर ज़रा खट्टा होता है ।
ज़न इ **नौआयिन्द:** चि: तोर अस्त ?	**नयी आयी** वधू कैसी है ?
वक़्त इ **नौबहार** बूद ।	**नव वसन्त** का समय था ।
गीलास इ **नौबर** हनूज़ शादाब नी'स्त ।	**नये** गीलास फल (चैरी) अभी रसीले नहीं है ।
ज़िन्दगानी 'गर बिमानद **नौजवानीय'**त् कुजा'स्त !	ज़िन्दगानी भी रही तो **नौजवानी** फिर कहाँ !
नौख़ास्तगान् (या 'नौ बाविगान्') बुज़ुर्गान् रा अह़तराम कम कुनन्द ।	**नयी पीढ़ी के लड़के** बड़ों का आदर कम करते हैं ।
ईन् पिसर **नौदन्दान**'स्त ।	इस बच्चे के **दाँत हाल ही में निकले हैं ।**
पिसर'म् **नौरफ़्तार** अस्त ।	मेरे पुत्र ने **हाल ही में चलना सीखा है ।**
अंगूर इ **नौरस** बुख़ुरीद ।	यह **नया लाया हुआ** अंगूर खाइये ।
ईद इ **नौरूज़** शिशरूज़ बाद मी आयद ।	**नौरूज़ पर्व** छै दिन बाद आयेगा ।
नौज़ाद इ शुमा ख़ूब अस्त ?	आपका **नवजात** पुत्र कुशलपूर्वक है ?
ग़ुन्च: यि **नौशिकुफ़्त:** दर बाग़ दीदनी'स्त ।	**नवस्फुट** कुसुम उपवन में दर्शनीय हैं ।
आन् इ़मारत **नौसाख़्त:** अस्त ।	वह भवन **नवनिर्मित** है ।
अजनास इ **नौज़ुहूर** रा दूस्त दारी ?	**नयी चीज़ें** पसन्द आयीं ?
नौअ़रूस बीव: शुद ।	**नववधू** विधवा हो गयी ।

नौ बि नौ=चिरनूतन, नयी की नयी, नित नयी

तुरुशत्आम=खाने में खट्टा

नौरस=नया पहुँचाया हुआ, नया लाया हुआ, नया

नौरूज़=नव वर्ष का प्रथम दिन, चैत्र प्रतिपदा (ईरानी केलेण्डर के हिसाब से)

नौज़ाद=नया जन्मा हुआ बालक (संस्कृत – नवजात)

दीदनी=दर्शनीय (दीद+अनीयर् । यह वही अनीयर् प्रत्यय है जो कमनीय, रमणीय आदि में दिखाई देता है; अन्तर केवल इतना है फ़ारसी में अनीयर् का अन्तिम यकार भी गिर जाता है ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नीक ।	**भला, नेक ।**
ऊ **सीरत** इ **नीक** दारद ।	उसके **गुण** अच्छे हैं ।
नीक **सह्ल**'स्त ज़िन्दः बीजान कर्द ।	जीवित को निर्जीव करना **बड़ा आसान** है ।
परतव इ **नीकान्** न गीरद हर कि बुनियाद'श् बद'स्त ।	**भलों के लक्षण** स्वीकार नहीं करता जिसकी कि बुनियाद बुरी है ।
वुजूद इ **नीको-बद** ता बि अबद ।	**भले और बुरे** का अस्तित्व सदा रहेगा ।
दुख़्तर इ **नीकअख़्तर**'त् कुजा'स्त ?	आपकी **सौभाग्यवती** पुत्री कहाँ है ?
हर आन्चिः कुनद **नीकअन्जाम** ख़्वाहद बूद ।	वह जो कुछ करेगा **सुपरिणामवाला** होगा ।
ऊ **नीकअन्दीश** इ खानः यि मा'स्त ।	वह हमारे परिवार का **शुभचिन्तक** है ।
ऐ **नीकबख़्त** ! कुजा रफ़्ती ?	हे **सुभगे** ! (पत्नी के लिये सम्बोधन) कहाँ गयी ?
पिसर इ नौज़ाद'श् **नीकपै** बूद ।	उसका नवजात पुत्र **अच्छे चरणवाला** हुआ ।
अगर तू **नीकख़ू** बाशी बदान् रा बाक कै बाशद !	यदि तू **सुस्वभाव वाला** हो तो बुरों का भय कैसे होगा !
अगर तू **नीकदिल** हस्ती म तर्स अज़् जिश्तनामी हा ।	यदि तू **अच्छे हृदयवाला** है तो बदनामियों से मत डर ।
ऊ **नीकनिहाद** इन्सान बूद ।	वह **सज्जन** व्यक्ति था ।
नाम इ पिसर रा **नीकरूज़** निहादन्द ।	लड़के का नाम **नीकरूज़** (सौभाग्यशाली) रखा गया ।
बि **निकू किरदार** इ ऊरा मथ्सल मी ज़दन्द ।	उसके **अच्छे चालचलन** का उदाहरण दिया जाता था ।
निकूयी बा बदान् कर्दन् चुनान् अस्त ।	बुरों के साथ **भलाई** करना ऐसा ही है ।
कि बद कर्दन् बि जाय इ **नीक मर्दान्** ।।	जैसे कि **भद्रपुरुषों** के साथ बुराई करना ।।
निकू गुफ़्ती ।	आपने **ठीक** कहा ।
ऊ पादशाह इ **निकूकार** बूद ।	वह **परोपकारी** राजा था ।
निकूयी गर हमी ख़्वाही ।	यदि तू **भलाई** चाहता है ।
नीकी कुनो-दर चाह बियन्दाज़ ।	(तो) **नेकी** कर–कूए में डाल ।

बुनियाद=जन्म की बुनियाद
नीक अख़्तर=अच्छे हैं अख़्तर यानी नक्षत्र जिसके, भाग्यवान्–भाग्यवती
ऐ नीकबख़्त=हे सुभगे ! हे सुलक्षणे ! (पत्नी के लिये सम्बोधन)
नीकअन्दीश=शुभचिन्तक, नीकख़्वाह, हितैषी
नीकपै=अच्छे चरणवाला, जिसका आगमन शुभ हुआ हो
नीक निहाद=सज्जन, अच्छे आधार वाला, कुलीन
मथ्सल मी ज़दन्द=उदाहरण दिया जाता था
चाह=कुआ, कूप

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नीम । — आधा (संस्कृत-नेम) ।

नीमी अज़् आन् रा बि मन् दाद । — उसमें से **आधा** मुझको दे दिया ।

दिल'श् **दू नीम** कर्द । — उसके दिल के **दो टुकड़े** कर दिये ।

ऊ **नीम साअ़त बाद अज़् ज़ुह्र** आमद । — वह **दोपहर के साढ़े बारह बजे** आया ।

ह्र दू **नीमो-नीम** गिरिफ़्तन्द । — दोनों ने **आधा-आधा** बाँट लिया ।

"चि: साअ़त'स्त ?" – **"सिहोनीम ।"** — "क्या बजा है" ? – **"साढ़े तीन"** ।

बा चश्मान् इ **नीमबाज़** निगाह मी कर्द । — **अधखुली** आँखों से उसे देखा ।

तुख़्म इ मुर्ग़ **नीमपुख़्तः** (नीमपज़) मी ख़ुर्द । — उसने **अध उबला** अण्डा खाया ।

तू **तुख़्म इ मुर्ग़ इ नीमरू** ख़ुर्दी ? — तूने **एक तरफ़ सिका हुआ अण्डा** खाया ?

द्रोण चुन् ख़बर इ मर्ग इ पिसर'श् याफ़्त **नीमजान** (नीममुर्दः) बूद । — द्रोण को जब पुत्र के मरने की ख़बर मिली तो वह **अधमरा** हो गया ।

न ख़ुरद शीर **नीमख़ुर्दः** यि सग रा । — शेर, कुत्ते का **अधखाया** (जूठा) नहीं खाता ।

अगर **नीमराह** तू बियायी, **नीमराह** ख़ुदा मी आयद । — यदि **आधीराह** चलकर तू आयेगा तो **आधीराह** चल कर प्रभु आयेगा ।

रफ़ीक़ इ **नीमराह** रा दूस्त म शुमार । — **सुख के साथी** को साथी मत मान ।

मीवः ह़ाला **नीमरस** अस्त । — फल अभी **अधपके** हैं ।

ज़ालिमी रा ख़ुफ़्तः दीदम् **नीमरूज़** । — मैंने एक ज़ालिम को **दोपहर** में सोता देखा ।

यूसुफ़ (अ़लैहि'स्सलाम) दर साल इ क़ह्तसाली **नीमसीर** ख़ुर्दे । — यूसुफ़ (उन पर शान्ति हो) अकाल के दिनों में **अधपेट** खाते थे ।

ईन् जा आहंग इ सफ़ीद या **(नीमगिर्द)** बायद गुज़ाश्त । — यहाँ **कोमल स्वर** लगना चाहिये ।

नीम मन क़न्द बिदिहीद । — **आधा मन** (डेढ़ किलो) चीनी दीजिये ।

कार **नीमः मान्दः** अस्त । — काम **अधूरा** हुआ है ।

नीमः यि **रूज़** गुज़श्तः अस्त । — **आधा दिन** बीत गया है ।

बिनाय रा **नीमः कारः** गुज़ाश्त । — उसने मकान का **आधा काम** छोड़ दिया ।

नीमी=एकार्धभाग, आधाभाग, एक अद्धा

दू नीम=दो टुकड़े, एक साबुत चीज़ को काट कर दो अद्धे करना

नीम साअ़त बाद अज़् ज़ुह्र=आधा घण्टा दोपहर बाद, दिन के साढ़े बारह बजे

रफ़ीक़ इ नीमराह=आधे रास्ते का साथी, सुख का संगी, फ़ेयरवैदर फ़्रैण्ड

नीम रस=अधपका, अर्धपक्व, अपक्व, शलाटु

क़ह्तसाली=अकाल

आहंग इ सफ़ीद=(या आहंग इ नीमगिर्द) कोमल स्वर, जैसे – कोमल गान्धार

नीम मन=(ईरानी मन या बतमन तीन सेर का होता है)=डेढ़ सेर

नीमोनीम (या नीमानीम)=आधा-आधा

नीम पुख़्तः (या नीम पज़)=अधपका, अध उबला (संस्कृत-नेम पक्व)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वर । — त्र्यर्थक 'वर'।

दर ज़बान ॽ फ़ारसी हर्फ़ ॽ वर सिह मानी दारद ।
फ़ारसी भाषा में 'वर' शब्द के तीन अर्थ होते हैं ।

वर कि वि मानी ॽ दार मी आयद ।
'वर' जिसका कि अर्थ वाला होता है ।

वर कि वि मानी ॽ व अगर ख़्वान्दः मी शवद ।
'वर' जिसका कि अर्थ 'और अगर' तथा 'भले ही' होता है ।

वर कि वि जा ॽ बर मी आयद ।
'वर' जो कि बर के स्थान पर प्रयुक्त होता है ।

वर–(१) — वर=वाला–१

सुख़ुनवरी चुन् ग़ालिब दीगर न बूद ।
ग़ालिब के समान सूक्तिकार दूसरा नहीं हुआ ।

जानवर आन् बाशद कि जान दारद, अम्मा दीन न दारद ।
जानवर वह है जो कि जान रखता है, धर्म नहीं रखता ।

उमरख़य्याम शायर ॽ हुनरवर बूद ।
उमरख़य्याम बड़ा गुणी कवि था ।

पीशःवरी गुर्सनः न ख़ुस्बद ।
एक पेशा जानने वाला भूखा नहीं सोता ।

व'र–(२) — वर=भले ही (व+अगर)–२

वस्फ़ ॽ तुरा'गर कुनद व'र न कुनद अह्ल ॽ फ़ज़्ल ।
विद्वान् लोग तेरी प्रशास्ति करें या भले ही न करें ।

व'र निविश्त'स्त पन्द बर दीवार ।
भले ही उपदेश दीवार पर ही क्यों न लिखा हुआ हो ।

वर–(३) — वर=पर, के ऊपर–३

तम्ब्र ॽ पुस्त कि चस्बान्दः बूदीद वर आमदः अस्त ।
जो डाक टिकट अपने चिपकाया था, वह उखड़ आया है ।

नान ॽ वर आमदः ख़ुशमज़ः मी शवद ।
ख़मीरी रोटी स्वादिष्ट होती है ।

सर ता पाय ऊरा वर अन्दाज़ कर्द ।
सिर से पैर तक उसको घूर कर देखा ।

इन् ताजिर वर शिकस्तः अस्त ।
यह व्यापारी दिवालिया हो गया ।

वर=वाला (संस्कृत में इसे वरच् प्रत्यय कहते हैं–संस्कृत के ईश्वर, नश्वर, विकस्वर आदि में यह द्रष्टव्य है ।

व'र=और अगर, भले ही (व+अगर=वर, चूँकि यहाँ भाषा के प्रवाह से 'अग' का लोप हुआ है अतः हमने ऐपौस्ट्रौफ़ी या लोप वाचक चिह्न लगाया है ।

वर=पर (यह वर 'बर' नामक उपसर्ग का एक रूप है । अर्थ प्रायः बर का ही होता है । जो थोड़ा सा प्रयोग भेद है उसे हमने अन्तिम चार वाक्यों में दिखाया है ।)

सुख़ुनवरी=एक सूक्तिकार

तम्ब्र ॽ पुस्त=डाक टिकट

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वक़्त ।	**समय ।**
वक़्त गुज़श्त, दस्त अज़् दफ़ातिर बर दारीद ।	**समय हो गया**, कापियों से हाथ हटा लीजिये ।
वक़्ती याद दारम् ।	**एक समय**, मुझे याद आता है कि ।
वक़्ती कि मरा दीद पिनहान शुद ।	**जिस समय** मुझे देखा तो छुप गया ।
ता वक़्ती कि मुम्तहिन आन् जा बूद ख़ामूश बूदन्द ।	**जब तक कि** परीक्षक वहाँ रहा, वे लोग चुप रहे ।
वक़्त रसीदः अस्त कि ईन् राज़ रा बि तू गूयम् ।	**वह समय आगया है** जब कि यह रहस्य तुझको बता दूँ ।
वक़्त अस्त कि जान'त् बि सलामत बिबुरी ।	**अभी समय है कि** तू अपनी जान बचा कर ले जा सकता है ।
बि वक़्त इ **जंग** मर्द इ जंग आज़मूदः बि कार आयद ।	**युद्ध के समय** युद्ध में परीक्षित व्यक्ति ही काम देता है ।
बि वक़्त इ **ख़ुद** कार तमाम मी शवद ।	**अपने उचित (प्राप्त) काल में** काम पूरा हो जायगा ।
वक़्तो-बीवक़्त चिरा सदा मी कुनी ?	**समय-असमय** क्यों चिल्लाती रहती है ?
ख़ेली वक़्त'स्त कि तुरा न दीदम् ।	**बहुत दिन हुए** तुझे देखा नहीं था ।
चन्द वक़्त अस्त ?	**कब की बात है** ?
चन्द वक़्त पीश अज़् ईन् ऊरा दीदम् ।	**अब से कुछ समय पूर्व** उसको देखा था ।
ख़ेली वक़्त पीश अज़् ईन् ऊरा दीदम् ।	**बहुत समय पूर्व** उसको देखा था ।
वक़्तहा दर खानः यि ऊ रफ़्तः बूदम् ।	**बहुत बार** मैं उसके घर जा चुका हूँ ।
हीच वक़्त न मी ख़न्दद ।	वह **कभी** नहीं हँसती ।
हर वक़्त कि गुर्ग रा दीद लरज़ीद ।	**जब भी** भेड़िये को देखती, काँपने लगती ।
हमः वक़्त ख़ुरद व ख़ुस्बद ।	(वह) **हर समय** खाता है और सोता है ।
सर इ **वक़्त** ऊरा गिरिफ़्तार कर्दन्द ।	**सहसा** उसको पकड़ लिया ।
अवक़ात'म् तलफ़ म कुनीद ।	**मेरा समय** नष्ट मत कीजिये ।
ऊ शख़्स इ **वक़्तशनास** अस्त ।	वह **अवसरवादी** व्यक्ति है ।

अज़् दफ़ातिर=कापियों से

चन्द वक़्त अस्त=कितना समय हुआ ? कब की बात है ?

अवक़ात=(वक़्त का बहुवचन; कुछ लोग इसकी औक़ात कहते हैं जो कि अशुद्ध है) समय

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हर ।	**हर, प्रति (संस्कृत – सर्व)** ।
हर दफ़अ़ (या 'हर बार') मया ।	**बार-बार** मत आओ ।
हर यक बि नौबत ड़ ख़ुद ह़र्फ़ ज़द ।	**हर एक ने** अपनी बारी पर कहा ।
हर कुदाम अज़् ईन्हा रा मी ख़्वाहीद इन्तख़ाब कुनीद ।	इनमें से **जो-जो** चाहिये चुन लीजिये ।
हर कस् ईन् रा मी दीद, मी ख़न्दीद ।	**जिस किसी ने** इसको देखा, हँस पड़ा ।
हर कि कार कर्द, बुर्द ।	**जिसने** काम किया, उसने विजय प्राप्त की ।
हर कार कि कर्द, बुर्द ।	उसने **जो भी** काम किया, उसी में विजय प्राप्त की ।
हर चिः दाश्तम् हमीन् बूद ।	**जो कुछ** मैं रखता था, यही (इतना ही) था ।
हर चिः ज़ूदतर बिह्‌तर ।	**जितना जल्दी हो**, उतना ही ठीक है ।
बि सुरअ़त **हर चिः तमामतर** ।	**जितनी** भी जल्दी हो सकेगा ।
हर चिः बादा बाद ।	**जो होना है सो** हो जाय ।
हर वक़्त शुमा बिरवीद मन् हम मी आयम् ।	**जब भी** आप चलेंगे मैं भी साथ चलूँगा ।
बि हर कुजा नाज़ सर बर आरद ।	**जहाँ कहीं** रूपगर्व आविर्भूत होगा ।
हर आन् कि पुरसद, **हर आन् चिः** पुरसद, जवाब मी दिहम् ।	**कोई भी** पूछे, **कुछ भी** पूछे मैं उत्तर दूँगा ।
ऊ अज़् **हर जिहत** क़ाबिलतर अस्त ।	वह **हर प्रकार से** अधिक योग्य है ।
हर आईनः बि शुमा मी गूयम् ।	**निश्चिततः** मैं आपसे कहता हूँ ।
हरजा गिर्दी म कुन् व **हरजायी** म बाश ।	**ठौर-कुठौर** मत घूम और **आवारा** मत बन ।
हरचन्द लाज़िम न दाश्तम् आन् रा ख़रीदम् ।	**यद्यपि** उसकी मुझे आवश्यकता नहीं थी, पर मैंने उसे ख़रीद लिया ।
शौहर **हर-दम-ख़ियाल** अस्त व जन **हर-दम-बील** ।	पति **सनकी** है और पत्नी **सिद्धान्तहीन** ।
हरगाह बि ख़ानः बियायद ।	**जब कभी भी** वह घर में आये ।
हरगाह अजनास दर मौइ़द ड़ मुअ़य्यन तह़वील न गर्दद····।	**यदि** वस्तुएँ निश्चित अवधि में न दी जायें तो····।
अ़रूस ड़ नौ **हर हफ़्त कर्दः** आमद ।	नयी दुलहन **सातों शृंगार किये** आयी ।

बि नौबत ड़ ख़ुद=अपनी बारी पर
हर कुदाम=जो जो
हर चिः=(हर चीज़ का संक्षेप) जो कुछ
हर जिहत=हर तरफ़ से, हर प्रकार से

(जिहत=संस्कृत – दिशात:, दिश:)
हर जा=हर जगह, ठौर कुठौर
हरगाह=जब कभी भी, जब भी (हर वक़्त का पर्यायवाचक)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हम-हमान्-हमीन् ।	भी–ही ।
दर ख़्वाब **हम** क़रार न गीरद ।	नींद में **भी** चैन नहीं लेता ।
बा हम (या 'बा हम दीगर') दुश्मन अन्द ।	**एक दूसरे के** शत्रु हैं ।
हम ऊ आमद **हम मन्**; हम शौहरो हम ज़न ।	**वे भी** आये **मैं भी** आई; जहाँ पति वहाँ पत्नी ।
हम ख़ुरमा व हम सवाब ।	**खजूर के खजूर और पुन्न का पुन्न** ।
हमान्=(हम+आन्)	**वही**
दूबार: **हमान्** हर्फ़ रा ज़द ।	उसने फिर **वही बात** कही ।
ईन् **हमान्** शख़्स अस्त ।	यह **वही** व्यक्ति है ।
आन्हा कि कार मी कुनन्द **हमान्हा** पीश ख़्वाहन्द बुर्द ।	जो काम करेंगे **वे ही** विजय लाभ करेंगे ।
मुलाक़ात इ मा बा यकदीगर **हमान्** बूद ।	हमारी एक दूसरे से **वही** (उतनी सी) भेंट हुई ।
दूस्ती यि मा **हमान्** बूद ।	हमारी मैत्री **उतनी ही** चली (फिर नहीं चली) ।
हमान् हस्त कि गुफ़्तीद ।	**वही हुआ** जो कि आपने कहा था ।
शुनीदन'श् ख़बर इ मर्ग इ शौहर रा **हमान्**, व मुर्दन'श् **हमान् बूद** ।	उसका पति की मृत्यु का समाचार सुनना **जैसे ही** हुआ, **वैसे ही** उसकी मृत्यु हो गयी ।
हमीन्=(हम+ईन्)	**यही**
हमीन् बूद ।	**यही (इतनी सी) बात** थी ।
हमीन् तौर मन् गुफ़्तम् ।	**ऐसे ही** मैंने कह दिया ।
हमीन् इमरूज़ कार तमाम मी शवद ।	**आज की आज** काम पूरा होगा (होना चाहिये) ।
हमीन् फ़र्दा पूल इ कुल्ली बिदिहीद ।	**कल की कल** पूरी रकम दे दीजियेगा ।
हमीन् कि मरा दीद फ़रार कर्द ।	**जैसे ही** मुझे देखा भाग खड़ा हुआ ।
नै हमीन् व बस बल्कि····।	**इतना ही नहीं**, बल्कि····।
हमचु-हम चुनान्-हम चुनीन	**सदृश् – उतना, इतना**
हमचु चीज़ी पीश अज़् ईन् न दीदः बूदम् ।	**ऐसी कोई चीज़** मैंने इसके पूर्व नहीं देखी थी ।
गर उमीद ई वस्ल बाशद **हम चुनान्** दुश्वार नी'स्त ।	यदि मिलन की आशा हो तो (जीवन) **इतना** दुर्वह न हो ।
हम चुनीन् अगर अक़सात रा बि मोक़े न रसानद ?	**और यदि,** (वह) किश्तें समय पर न चुकाये ?

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हम ।	संस्कृत – सम ।
सुहराब रुस्तम रा **हमआवर्द** बूद ।	सुहराब रुस्तम का **प्रतिद्वन्द्वी** था ।
हर साज़ **हमआहंग** बायद बूद ।	हर एक साज़ **सुर में मिला** हुआ चाहिये ।
हर सिह **हमबूय** अन्द ।	ये तीनों **एक गन्ध वाले**-समान प्रकृति के-हैं ।
फ़ूर इ हिन्दी सिकन्दर रा **हमपायः** बूद ।	पुरु सिकन्दर की **समान कोटि** का था ।
पहलवान् इ दीगर **हमता** यि रुस्तम न बूद ।	दूसरा मल्ल रुस्तम की **जोड़ का** नहीं था ।
हर पंज **हमजिन्स** अन्द ।	ये पाँचों **एक थैली के चट्टे-बट्टे** हैं ।
पाकिस्तान **हमजवार** इ मा'स्त ।	पाकिस्तान हमारा **पड़ौसी** है ।
मा बा तिब्बत **हमहुदूद** ईम् ।	हम तिब्बत के साथ **समान सीमा वाले** हैं ।
हिन्दू व मुसलमान **हममन्ज़िल** अन्द ।	हिन्दू और मुसलमान **एक घर के निवासी** हैं ।
हमदस्त (या 'हमदास्तान') इ तू की'स्त ?	**षड्यन्त्र** में तेरा **भागीदार** कौन है ?
ऊ **हमरौ** (या 'हमनवर्द') इ मन् अस्त ।	वह मेरा **सहयात्री** है ।
हुमायून व तहमास्प **हमअस्त्र** बूदन्द ।	हुमायूँ और तहमास्प **समकालीन** थे ।
मगर हर दू **हमसिन** अन्द ?	क्या वे दोनों **समान आयु के** हैं ?
कौशल्या, सुमित्रा व कैकेयी **हमशूय** बूदन्द ।	कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी **सौतें** थीं ।
'ल', 'त' व 'स' हर्फ़हा यि **हमसदा** अन्द ।	'ल'-'त'- और 'स' **सवर्ण** अक्षर हैं ।
हमगिनान् रा पीश इ खुद ख्वान्द ।	अपने **साथियों** को अपने पास बुलाया ।
हिन्दू व बौद्ध हर दू **हमकीश** अन्द ।	हिन्दू और बौद्ध दोनों **समानधर्मावलम्बी** हैं ।
हर नुह कुर्रः यि शम्सी **हममरकज़** अन्द ।	सूर्य के नवों ग्रह **समान केन्द्र वाले** हैं ।
हर्फ़हा यि **'हममज़हब'** व 'हमकीश' **हममाना** अन्द ।	'हममज़हब' और 'हमकीश' **समानार्थक** (या पर्यायवाची) शब्द हैं ।
'हम' बि मानी यि 'नीज़' व 'हम' बि मानी यि 'बराबर' **हमनाम** अन्द ।	'हम' जिसका अर्थ 'भी' होता है, और 'हम' जिसका अर्थ 'बराबर' होता है, **समनाम** (होमोनिम) शब्द हैं ।

हमआवर्द = (शब्दार्थ – युद्ध में बराबर) प्रतिद्वन्द्वी

हमआहंग = सुर मिला हुआ, समान स्वरवाला

हमपायः = समकोटिक, समान कोटि वाला

हमता = समस्थ, समान स्थिति वाला

हमजिन्स = एक जैसे (हमपायः अच्छे आदमियों के लिये प्रयुक्त होता है । हमजिन्स ख़राब आदमियों के लिये कुत्सार्थक प्रयोग में आता है ।)

हमशूय = समान पतिवाली, सपत्नी सौत

हमजवार = समद्वार, बराबर का पड़ोसी, बग़ल का पड़ोसी

हमगिनान् = साथी जन ('हमः' शब्द का अर्थ सम्पूर्ण है जैसे कि संस्कृत का सर्ववाचक 'समः' । उसका बहुवचन 'हमःगान्' बनता है, जिसका अर्थ होता है 'सारे' । इस हमःगान् का लोकभाषा के अनुरोध से पुनः बहुवचन बन गया है – 'हमगिनान्' जिसका प्रकृत अर्थ से भिन्न अर्थ 'साथी लोग' हो गया है ।)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हीच ।	कुछ, कुछ नहीं, कोई, कोई नहीं, नहीं ।
हीच न ख़ुर्द ।	उसने **कुछ नहीं** खाया ।
हीच ऊरा न दीदम् ।	मैंने उसे **बिलकुल नहीं** देखा ।
हीच दीगर आन् जा तवक़्क़ुफ़ न कर्दम् ।	मैं वहाँ **फिर और** नहीं ठहरा ।
हीच सफ़र इ फ़िरंगिस्तान न कर्दः अम् ।	मैंने **कभी** योरुप की **यात्रा** नहीं की ।
हीच कस् ऊरा मानिअ़ न शुद ।	उसको रोकने वाला **कोई भी** न था ।
हीच यक अज़् आन्हा रा न मी ख़्वाहम् ।	उनमें से मुझे **एक भी** नहीं चाहिये ।
हीचगून: उ़ज़्री पिज़ीरफ़्त: न ख़्वाहद शुद ।	**किसी तरह का कोई** बहाना स्वीकार नहीं किया जायगा ।
हीच वज्ह अज़् ऊ राज़ी नै अम् ।	मैं उससे **ज़रा सा भी** ख़ुश नहीं हूँ ।
हीच गाह वि वक़्त इ मुअ़य्यन न मी आयद ।	वह **कभी भी** निश्चित समय पर नहीं आता ।
फ़र्दा **हीच कार** न मी कुनम् ।	कल मैं **कोई काम** नहीं करूँगा ।
हीच शबाहत बा ऊ न दाश्त ।	इसके साथ उसकी **कोई समानता** नहीं थी ।
इ़ल्म इ मा वि निस्बत इ ऊ **हीच अस्त** ।	हमारा ज्ञान उसकी तुलना में **तुच्छ** है ।
कसी रा **हीच** म शुमर ।	किसी को **अकिञ्चन** मत समझ ।
आया **हीच पूल** दारी ?	तेरे पास **कुछ धन** है ?
आया **हीच अज़् आन् मीव:** ख़ुर्द: ईद ?	कभी **इन फलों में से भी कुछ** खाया है ?
हीच मी शुनीदीद ?	अजी, **कुछ** सुना है ?
हिच न बाशद !	**कुछ** न हो (तो भी कम से कम इतना तो हो) !
चुन् **हीच व पूच** शुद, दुश्मन बर ऊ ग़ालिब आमद ।	जब वह **अकिञ्चन और दुर्बल हो** गया तो शत्रु ने उसको दबा लिया ।
ऊ मर्द इ **हीचकार:** बूद ।	वह **बेकार का** (निकम्मा) आदमी है ।
ऊ मर्द इ **हीच-म-दान** अस्त ।	वह **महामूर्ख** आदमी है ।

हीच=कुछ भी (नहीं) (हीच के पीछे प्राय: 'नहीं' आता है ।

हीच=बिलकुल भी (नहीं)

तवक़्क़ुफ़ न कर्दम्=मैं नहीं ठहरा

फ़िरंगिस्तान=यूरोप, हरिवर्ष

मानिअ़=मना करने वाला

पिज़ीरफ़्त:=स्वीकृत

हीच शुनीदी ?=कुछ सुना भी है ?

हीच व पूच=अकिञ्चन और दुर्बल (अंग्रेज़ी - हौच पौच)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

याद ।	**स्मरण, शिक्षण ।**
याद'श् आवुर्दम् कि फ़र्दा चिः कार कर्दनी'स्त ।	**मैंने उसको याद दिलाया** कि कल क्या काम करना है ।
याद दारम् कि दर अय्याम ॾ तुफ़ूलीय्यत मुतअ़ब्बिद बूदम् ।	**मुझे याद आता है** कि बचपन के दिनों में मैं बड़ा प्रार्थना-परायण था ।
दुचर्ख़ः सवारी रा **बि ऊ याद दादम्** ।	मैंने **उसको** साइकिल पर चढ़ना **सिखाया** ।
यक हि़कायत ॾ सादी रा **याद गिरिफ़्तम्** ।	मैंने सादी की एक कथा **याद कर ली** ।
ईन् अज़् याद'म् रफ़्त ।	यह **मेरी याद से चला गया** ।
याद'म् नी'स्त ।	**मुझे याद नहीं है** ।
हरगाह आन् जा रवीम शुमा रा **याद मी कुनीम** ।	जब कभी वहाँ जाते हैं आपको **याद करते हैं** ।
नाम ॾ ऊरा **बि बदी याद मी कुनन्द** ।	उसके नाम को **बुराई के साथ याद करते हैं** ।
याद'म् न बूद ।	**मुझे याद नहीं रहा** ।
फ़ौरन् **याद'म् उफ़्ताद** ।	मुझे तुरन्त **याद आ गया** ।
आन् वाअ़दः **याद'श् न मान्द** ।	वह वायदा उसे **याद नहीं रहा** ।
गरचिः दूरीम **बि याद** ॾ तू क़दह़् मी नूशीम ।	यद्यपि हम दूर हैं पर **तेरी याद कर कर के** शराब पी रहे हैं ।
याद'श् बि ख़ैर !	**उसकी स्मृति जीवित रहे !**
याद'श् बाद !	**उसकी याद हरी रहे ।**
याद बाद आन् रूज़गारान् **याद बाद** ।	**याद रहें** वे दिन, **याद रहें** ।
सई़ मी कुनम् फ़रामूश न कुनम् वले **याद आवरी कुनीद** ।	चेष्टा करूँगा कि भूल न जाऊँ पर **याद दिला दीजियेगा** ।
ईन् अ़क्स **यादबूद** (या 'यादगार') ॾ अ़हद् ॾ गुज़िश्तः अस्त ।	यह चित्र गुज़रे ज़माने की **यादगार** है ।
दफ़्तर ॾ **याददाश्त** व **दस्तः** यि **याददाश्त** कुजा'स्त ?	**नोट बुक** और **लिखने का पैड** कहाँ गया ?
हरचिः गुफ़्त **याददाश्त कर्दम्** ।	उसने जो भी कहा मैंने **लिख लिया** ।
गुलदानी **बि रस्म** ॾ **यादगार** गुज़ाश्त ।	वह एक फूलदान **बतौर यादगार** छोड़ गया ।

याद'श् आवुर्दम्=(मैं) उसकी याद में लाया, मैंने उसे याद दिलाया

अय्याम=(यौम का बहुवचन) दिनों

तुफ़ूलिय्यत=बचपन

मुतअ़ब्बिद=प्रार्थना परायण

हि़कायत=कथा

अज़् याद'म् रफ़्त=मेरी याद से उतर गयी

याद'म् न बूद=मुझे याद नहीं रहा, मैं भूल गया

क़दह़्=शराब

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

यख़ ।	बर्फ़, पाला, जमना ।
हौज़ **यख़बस्तः** अस्त ।	तालाब **जम गया** है ।
इमरूज़ यख़ मी ज़नद ।	आज तो **जमे जा रहे हैं ।**
दस्तहाय'म् **यख़ कर्द ।**	मेरे हाथ **बर्फ़ हो गये हैं ।**
बर यख़ चि: मी **निवीसी** ?	(तू) **बर्फ़ पर** क्या **लिख रहा** है ?
बरात बर यख़'म् म दिह ।	मुझको **बर्फ़ पर लिखा चैक** मत दे ।
कूह इ **यख़** शिश यक आशकार व यक बर शिश पिनहान मी शवद ।	**तुषारगिरि** का छठा भाग प्रकट और छै गुणा भाग अप्रकट रहता है ।
रूदख़ानः यि **यख़** रा सीलान इ यख़ हम मी ख़्वानन्द ।	**हिमनद** (ग्लेशियर) को सीलान इ यख़ भी कहते हैं ।
माही यि सैदकर्दः रा **अज़् यख़** पूशान्दन्द ।	शिकार की हुई मछली को **बर्फ़ से** ढक दिया ।
माही यि क़िज़िल आला दर **आब** इ **यख़** ज़िन्दगी मी कुनद ।	ट्राउट मछली **बर्फ़ानी पानी** में रहती है ।
यक मिलियून साल पीश **अस्त्र** इ **यख़** बूद ।	दस लाख वर्ष पूर्व **हिमयुग** था ।
दर ज़मिस्तान **यख़ बाज़ान्** यख़ बाज़ी मी कुनन्द ।	जाड़ों में **बर्फ़ पर फिसलने वाले** बर्फ़ के खेल खेलते हैं ।
दर **फ़स्ल** इ **यख़बन्दान्** मा वि शिमला मी रवीम ।	**बर्फ़ के मौसम** में हम शिमला जाया करते हैं ।
ईन् **यख़चाल** इ मसनूयी चि: तोर ख़रीदी ?	यह **फ्रिज** कितने का ख़रीदा ?
दीशब **यख़चिः** बारीदन्द ।	कल रात **ओले** पड़े ।
यख़दान इ मा शिकस्तः अस्त ।	हमारा **बर्फ़ख़ाने का बक्सा** टूट गया है ।
बाद अज़् नाहार **यख़-दर-बिहिश्त** रा आवुर्दन्द ।	भोजन के पश्चात् **ठण्डी खीर** परोसी गयी ।
अन्टार्कटिका यक **यख़ज़ार** इ बुज़ुर्ग अस्त ।	अन्टार्कटिका एक विशाल **हिमकान्तार** है ।
अज़् **यख़ फ़ुरूश** यख़ बियारीद ।	**बर्फ़ बेचने वाले** से बर्फ़ ले आओ ।
अंगूर इ **यख़कर्दः** ख़राब न मी शवद ।	**ठण्डे किये हुए अंगूर** ख़राब नहीं होते ।
ईन् **कफ़्श** इ **यख़बाज़ी** चि: क़द्र अस्त ?	यह **स्केटिंग के जूते** कितने के है ?

हौज़=तालाब

बर यख़ निविश्तन्=बर्फ़ पर लिखना (आपस में झगड़ पड़ने वालों को भड़काना । बर्फ़ पिघलते ही पानी के ऊपर कोई चिह्न नहीं रहता । ऐसे ही निकट के बन्धुओं के एक होने पर बर्फ़ की कोई लिखावट नहीं रहेगी ।)

बरात बर यख़=(शब्दार्थ – बर्फ़ पर चैक) =झूठा वायदा

कूह इ यख़=तुषारगिरि, आइसबर्ग

आशकार=प्रकट

पिनहान=छुपा हुआ, अप्रकट

रूदख़ान: यि यख़=ग्लेशियर, हिमनद

सीलान इ यख़=ग्लेशियर, हिमनद

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative